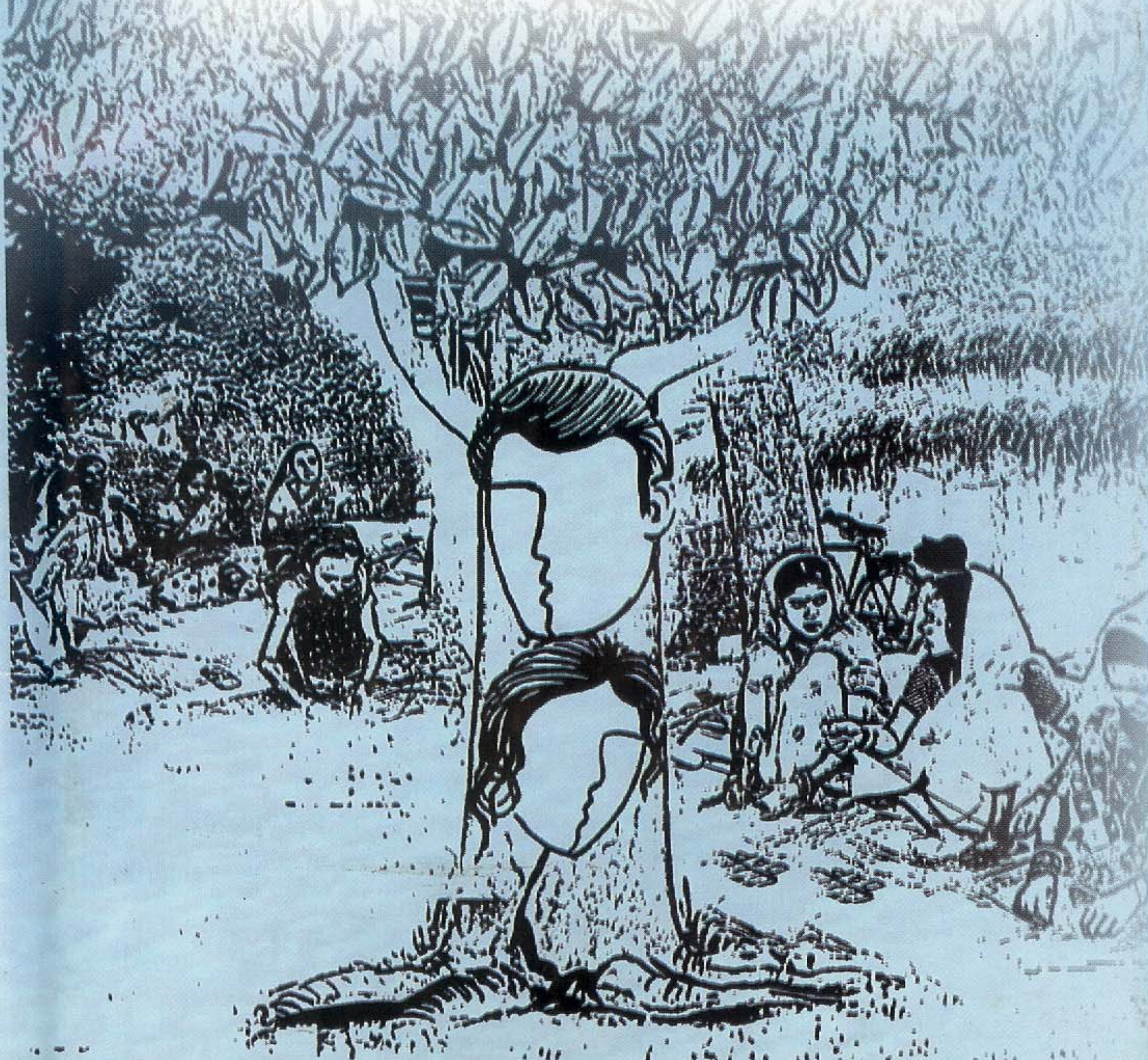
झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय लोक-कथाएँ

डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा



झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय लोक-कथाएँ

आदित्य प्रसाद सिन्हा

विकल्प प्रकाशन
दिल्ली-110090

ISBN : 978-93-82695-67-7

मूल्य 300 / —रू0

प्रथम संस्करण : 2017

प्रकाशक : विकल्प प्रकाशन
2226/बी, प्रथम तल, गली नं. 33,
पहला पुस्ता, सोनिया विहार,
दिल्ली–110090
मोबाइल : 9211559886

आवरण : एम. सलीम

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली–110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली–110093

Jharkhand Ki Pramukh Janjatiya Lok-Kathey
by *Aditya Prasad Sinha*

भूमिका

(झारखण्ड की जनजातियों के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में–'जनजातीय लोक कथाओं का महत्त्व')

प्रत्येक राज्य की अपनी पहचान होती है, एक अलग प्रकार की विशेषता जिसका सम्बन्ध उस राज्य की भौगोलिक स्थिति या परिवेश से होता है। वहाँ के निवासियों का रहन-सहन, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, खान-पान आदि उसी परिवेश के अनुरूप होता है। राज्य या प्रदेश की विशेष पहचान में ये ही तत्व मूल रूप से वर्तमान रहते हैं।

झारखण्ड अपने देश का एक नव-गठित राज्य है। मात्र सोलह वर्ष पूर्व बिहार से अलग होकर यह एक अलग राज्य बना। जंगल, पहाड़ एवं झरनों की बहुलता के कारण इस प्रदेश में झाड़-झंखाड़ों की भी भरमार रही, इसीलिए नाम पड़ा 'झारखण्ड'।

नैसर्गिक सम्पदाओं ने इस राज्य को जितना सम्पन्न बनाया है उतना ही यहाँ की जनजातियों को उनपर निर्भर रहने की बाध्यता भी प्रदान की है।

जल, ज़ंगल, पहाड़ों से जुड़ी इस राज्य की जनजातियाँ जो यहाँ के मूल निवासी हैं, उनका इतिहास बहुत पुराना है। जितना पुराना है, उतना ही रोचक भी इसीलिए उनका अध्ययन भी उतना ही अनिवार्य हैं, जितना ज्ञानवर्धक। जनजातियों की भाषा, उनके पर्व-त्योहार, रस्म-रिवाज, नृत्य एवं संगीत यानि उनकी सम्पूर्ण जीवन-शैली यहाँ के अन्यान्य निवासियों की जीवन-शैली से सर्वथा भिन्न है।

पुरातन काल से चली आ रही अपनी परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों का निर्वाह करते रहना, यहाँ की जनजातियों का प्रमुख गुण है। उनके प्रति उनका लगाव या मोह, उनके खून में रमा है, उनके रग-रग में है। तभी तो नए युग के आधुनिक प्रभावों के बावजूद यहाँ की जनजातियाँ आज भी अपनी पुरातन परम्पराओं का निर्वहन करती है और करती हैं बड़े सम्मान और गर्व से। इसी का परिणाम है कि झारखण्ड की जनजातियों की एक विशिष्ट पहचान है। ऊपर वर्णित सम्पूर्ण विशिष्टताओं का इतिहास उनकी लोक-कथाओं में संरक्षित हैं।

झारखण्ड की जनजातियों का प्रकृति के प्रति विशेष रुझान देखने को मिलता है, यह स्वाभाविक भी है क्योंकि प्रकृति की गोद में बसे झारखण्ड से उनका जन्मजात जुड़ाव रहा है। वे प्रकृति पर जितने निर्भर रहे हैं उतने ही उसके प्रति अनुरक्त भी। उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि जीवन के विभिन्न पक्षों, इनकी धार्मिक अवधारणा और लोक-विश्वास आदिकाल से उनकी लोक-कथाओं में संरक्षित है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा की रुचि आरम्भ से ही झारखण्ड की जनजातियों के प्रति रही है। जब तक ये प्रशासन की सेवा में रहे, झारखण्ड के विभिन्न जिलों में पदस्थापित होते रहे। आस-पास के इलाकों, गाँवों एवं कस्बों में जनजातियों को निकट से देखने-परखने एवं समझने का इन्हें अवसर मिला। संयोग से अवसर के साथ-साथ लोगों का सहयोग और प्रोत्साहन भी भरपूर मिला। अतः इन्होंने इस भूखण्ड की जनजातियों के जीवन के विविध पहलुओं का अध्ययन किया। मात्र अध्ययन ही नहीं किया वरन् उनकी भाषा, उनके रीति-रिवाज एवं कलाकृतियों पर अत्यन्त गम्भीर एवं शोधपरक पुस्तकें भी लिखीं। ये सभी पुस्तकें जनजातियों की जीवन-प्रणाली एवं संस्कृति को समझने के लिए बड़ी उपयोगी हैं।

'झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय लोक-कथाएँ' पुस्तक, इसी संदर्भ में लिखी गई डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा की नवीनतम कृति है। इस पुस्तक में झारखण्ड की जनजातियों के बीच प्रचलित लोक-कथाओं का संकलन है। किसी भी क्षेत्र को या वहाँ के निवासियों को सम्पूर्णता से जानने और समझने के लिए वहाँ की लोक-कथाओं से परिचित होना आवश्यक होता है, क्योंकि लोक-कथाओं में ही लोक-जीवन प्रतिबिम्बित होता है।

साहित्य जीवन एवं समाज का दर्पण होता है तो लोक-साहित्य, लोक-जीवन का दर्पण उसी में प्रतिबिम्बित होता है। उस क्षेत्र की समस्त लोक-जीवन यानी स्थानीय जन-जीवन, उनके खान-पान, शादी-ब्याह के रस्म-रिवाज, उनके देवी-देवता एवं उनकी पूजा-उपासना के विधि-विधान भी लोक-कथाओं में स्वतः अभिव्यक्त हो जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित 86 जनजातीय लोक-कथाओं के माध्यम से झारखण्ड की जनजातियों के जीवन को और अधिक प्रकाश में लाने का अत्यन्त श्रमसाध्य कार्य किया है। उनके द्वारा संकलित लोक-कथाओं में विषयवस्तु एवं पात्र की दृष्टि से काफी विविधता है। मानव के अतिरिक्त पशु-पक्षी, देवी-देवता, परी, राक्षस आदि भी पात्र के रूप में कथाओं को रोचक एवं रोमांचकारी बनाते हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से इन लोक-कथाओं में आख्यान, मिथक, धर्मगाथा, परी-कथा, नीति-कथा आदि को प्रमुखता दी गई है। अतः मनोरंजन के साथ-साथ अध्ययन, शोध, विश्लेषण आदि की दृष्टि से भी डॉ. सिन्हा की प्रस्तुत पुस्तक 'झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय लोक-कथाएँ' महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती है। डॉ. सिन्हा द्वारा संकलित लोक-कथाओं के संकलन का यह कार्य प्रशंसनीय है। मेरी अशेष मंगल कामनाएँ हैं उनके लिए।

'अध्ययन-लेखन के क्षेत्र में आप इसी तरह सतत् सक्रिय रहें और अपनी कृतियों के साहित्य-संसार को निरंतर समृद्ध करते रहें।' इसी कामना के साथ।

- डॉ. माधुरी नाथ
(से. नि. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग)
राँची विश्वविद्यालय।

पुरोवाक्

लोक-कथाओं का आदिस्रोत भारतीय वाङ्मय की पौराणिक कथाओं में मिलता है। पुराणों और वेदों में अनेक कथाएँ भारतीय साहित्य की धरोहर है। बुद्ध के जन्म के पूर्व की जातक कथाएँ, पंचतंत्र आदि जैसे बहुत ग्रन्थों में लोक-कथाओं का विशाल संग्रह संरक्षित है। जनजातीय समाज एवं उनके लोकजीवन में मौखिक परम्परा से चली आ रही लोक-कथाएँ प्रचुर संख्या में उपलब्ध हैं। इन कथाओं में जनजातीय जीवन का इतिहास, उनकी सामाजिक व्यवस्था, उनकी आदिम संस्कृति, धार्मिक अवधारणा, लोक-विश्वास आदि का अवलोकन किया जा सकता है। आदिकाल से जनजातीय लोक-कथाएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती चली आ रही हैं। झारखण्ड में बसने वाली प्रायः सभी जनजातियों की लोक-कथाओं में उनके देवी-देवता, पर्व-त्योहार, मेला-जतरा, संगर या शिकार आदि का जीवन्त एवं मनोरंजक वर्णन मिल जाता है।

लोक-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान श्री चन्द्र जैन ने अपनी पुस्तक 'लोक कथा विज्ञान' में लोक-कथाओं के महत्त्व एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि लोक-कथाएँ लोक-संस्कृति की संरक्षिका हैं। इनमें एक ओर लोक-मानस विविध रूपों में प्रतिबिम्बित होता है तो दूसरी ओर लोक संस्कृति के समस्त उपकरण मुखरित हुए हैं। लोक-कथा लोक-साहित्य का एक प्रमुख अंग है। मानव के सुख-दुःख, प्रीत-शृंगार, वीर भाव, रहन-सहन, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, पूजा, उपासना आदि की प्रचुरता इन लोककथाओं में मिल जाती है।

श्री जैन के अनुसार लोक-कथा की विशिष्टता यह है कि वह परम्परागत होती है। यह परम्परा (अनुश्रुति) विशुद्ध रूप से मौखिक भी हो सकती है। लोक कहानी सुनी जाती है और बार-बार दुहराई जाती है। उनके अनुसार लोक-कथाओं में पशु-पक्षी कथा, ऐतिहासिक कथा, आख्यान, मिथक आदि विविध प्रकार की कथाएँ मिलती हैं।

श्री जैन ने कई विद्वानों द्वारा प्रस्तुत लोक-कथाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार दर्शाया है–

1. डॉ. सत्येन्द्र–1. गाथाएँ, 2. पशु संबंधी अथवा पंचतंत्रीय, 3. परी की कहानियाँ, 4. विक्रम की कहानियाँ, 5. बुझौवल (पहेली), 6. निरीक्षण गर्भित

कहानियाँ, 7. साधू-पीरों की कहानियाँ, 8. दैत्य कथा आदि।

2. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय–1. उपदेशात्मक, 2. मनोरंजनात्मक, 3. वृत्तात्मक, 4. प्रेमात्मक, 5. वर्णनात्मक, 6. सामाजिक।

श्री जैन के अनुसार आदिवासियों की कथाएँ उनके सुख-दुःख को प्रदर्शित करती हैं तथा धार्मिक विश्वासों का एक विस्तृत इतिहास बताती हैं। संसार कैसे बना? वृक्ष किस प्रकार धरती पर खड़े हो गए? आकाश चारों ओर कैसे फैल गया आदि-आदि।

इन अरण्यवासियों की कथाएँ कौतुहल से परिपूर्ण हैं क्योंकि चमत्कार इन काननवासियों को अधिक प्रिय है। ये कथाएँ वैदिक साहित्य से भी प्रभावित हैं तथा विभिन्न भारतीय दर्शनों से भी इनका सम्बन्ध दिखाई देता है। सतत साहचर्य के कारण वृक्ष-पुष्प, पशु-पक्षी, नदी-नाले, छोटे-छोटे पर्वत आदि इन कथाओं के अभिन्न अंग बन गए हैं।

वस्तुतः लोक-कथाएँ आदिवासी जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। कहानी कहने की प्रवृत्ति का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना स्वयं मनुष्य की वाणी का। इन लोक-कथाओं में आदिवासी जीवन का अंतरंग झलकता है।

इन कथाओं में कथानक सरल और सुबोध हैं जिनमें किसी भी प्रकार की जटिलता परिलक्षित नहीं होती है। पात्रों की संख्या इन कहानियों में सीमित देखी गई हैं।

इन कथाओं के पात्र पशु-पक्षी मानव की बोली बोलते हैं तथा वृक्षादि इन्सान की भाँति व्यवहार करने लगते हैं। देवता-दानव आदि अद्‌भुत कार्य करके सबको चकित कर देते हैं। इन कथाओं का उद्‌देश्य मनोरंजन के साथ-साथ जातीय एवं सामाजिक रीति-रिवाजों को जीवित रखना तथा धार्मिक विश्वासों को अधिक प्रभावशाली बनाना है।

अभिप्राय लोक-कथा का एक विशिष्ट तत्व है। यही कथा में अलौकिकता उत्पन्न करता है तथा कथावस्तु में ऐसे कई परिवर्तनों को अनायास समाविष्ट कर देता है जो समाज विशेष की मान्यताओं की ओर संकेत करते हैं। वस्तुतः आदिवासी संस्कृति तथा सभ्यता के अध्ययन के लिए ये कथाएँ (लोक-कथाएँ) बहुत उपयोगी हैं।

विद्वान लेखक श्री जैन द्वारा जनजातीय लोक-कथाओं के संदर्भ में प्रस्तुत तथ्यों के आलोक में झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय लोक-कथाओं के सैद्धान्तिक पक्ष के साथ-साथ उनमें आदिकाल से प्रचलित विविध प्रकार की प्रमुख लोक कथाओं को इस कथा-संग्रह में संकलित करने का प्रयास किया गया है। इन कथाओं में विविध विषयक कथाओं–मिथक आख्यान, धर्मगाथा, नीति कथा, पशुकथा,

दैत्य या राक्षस कथा, परी कथा, धूर्त कथा, हास्य-मूर्ख कथा आदि को प्रस्तुत करने का यथेष्ट प्रयास किया गया है। ज्ञातव्य है कि झारखण्ड में 32 जनजातियाँ निवास करती हैं जिनमें संताल, मुण्डा, हो, खड़िया, खरवार, उराँव आदि बहुसंख्यक जन-जातियाँ हैं। इसके अतिरिक्त 9 अल्पसंख्यक आदिम जनजातियाँ--असुर, बिरहोर, कोखा, परहिया आदि हैं जो अभी भी आदिम संस्कृति से जुड़ी हुई हैं। कई ऐसी जनजातियाँ हैं, जो आदि संस्कृति (मूल जनजातीय संस्कृति) से दूर होकर पर-संस्कृति को अपना चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय लोक-कथाएँ' में बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक जनजातियों के बीच प्रचलित एवं लोकप्रिय लोक-कथाओं को संकलित किया गया है। विषय-वस्तु की दृष्टि से ऊपर वर्णित विषयों से सम्बन्धित लोक-कथाओं को प्रमुखता दी गई। इन कहानियों में वे सभी पात्र मिल जायेंगे, जिनकी पूर्व में चर्चा की गई है। इस कथा-संग्रह में कुल 86 लोक-कथाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिनकी जनजातिवार संख्या निम्न प्रकार है :-

1.	हो लोक कथाएँ	17
2.	संताल लोक कथाएँ	11
3.	मुण्डा लोक कथाएँ	13
4.	खड़िया लोक कथाएँ	10
5.	खरवार लोक कथाएँ	6
6.	उराँव (कुडुख) लोक कथाएँ	10
7.	असुर लोक कथाएँ	6
8.	बिरहोर लोक कथाएँ	8
9.	परहिया लोक कथाएँ	5

ज्ञातव्य है कि इस प्रकार सम्पूर्णता में झारखण्ड की विभिन्न जनजातियों की लोक कथाओं का संकलन अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। आशा है, सुधी पाठकगण इन लोक कथाओं के माध्यम से सम्बन्धित जनजातियों के जीवन के सम्पूर्ण लोक पक्ष से अवगत हो सकेंगे। लोक कथाओं पर शोध करने वाले शोधार्थियों को भी यथेष्ट सामग्रियाँ उपलब्ध हो सकेंगी।

- आदित्य प्रसाद सिन्हा

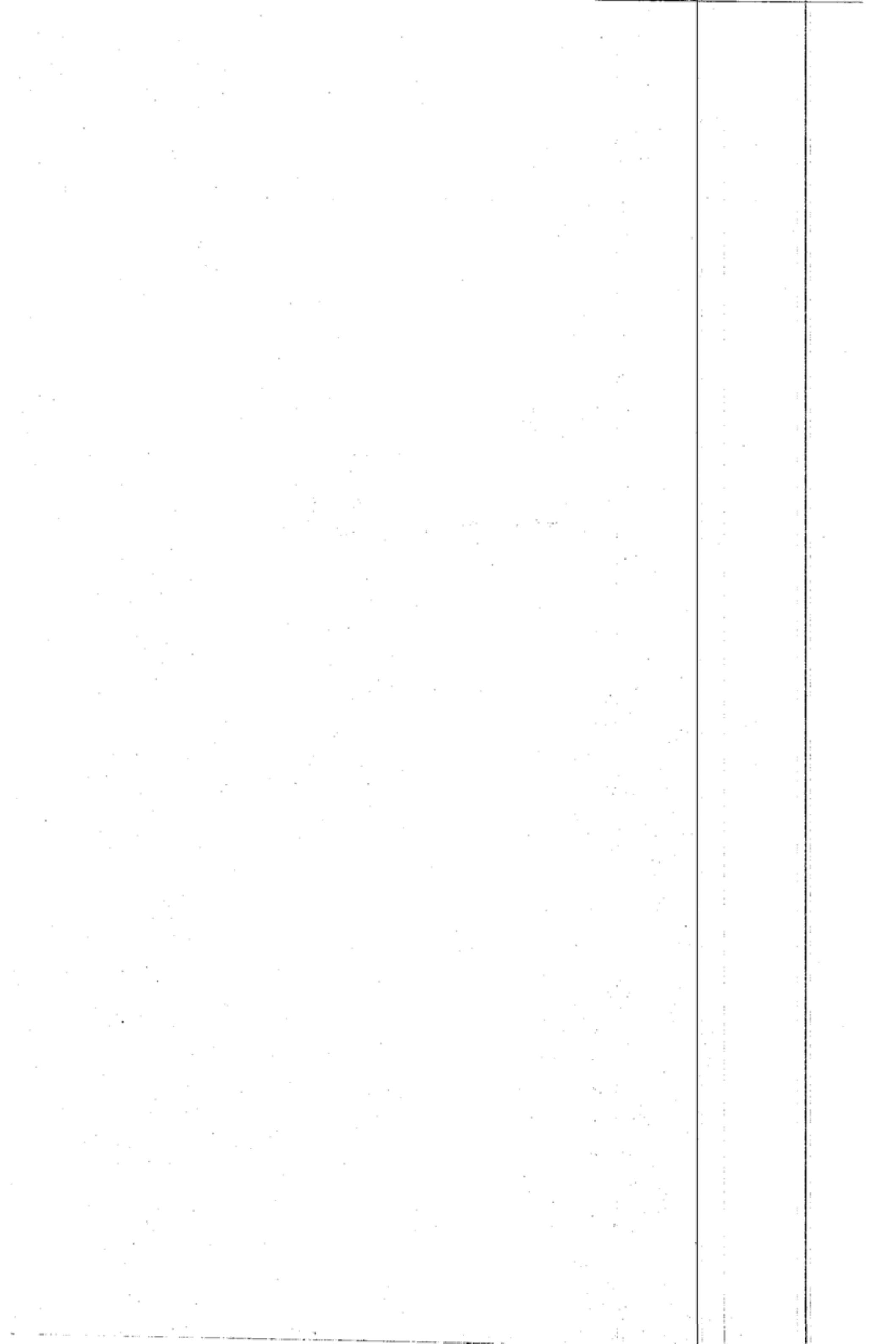
अनुक्रम

भूमिका v
पुरोवाक् vii
(क) हो लोककथाएँ 13
1. धरती बनने की कथा 15
2. पेड़-पौधे और जीवधारियों का सृजन 17
3. मानव के सृजन की कथा 18
4. असुर कथा 21
5. हेरो पर्व 29
6. डोंड़ साँप (पानी का साँप) 31
7. दो बहनों की कथा 33
8. एक नवयुवती 36
9. वीर चेंडेया 38
10. रितुई गोन्डाई 40
11. तुङ राजा की पंचायत 42
12. एक घड़ियाल दामाद 44
13. दो सियार, एक बाघ और एक बन्दर 46
14. फूल की परी 48
15. एक सांभर धातृ 50
16. वधू का चुनाव 52
17. जंगल के देवता : बीर बोंगा 55
(ख) संताल लोककथाएँ 59
1. सूरज, चाँद और तारे 60
2. सोहराय पर्व की कथा 62
3. बेझा की कथा 64
4. दमगुड़गुड़िया और मालिन बुढ़िया 67
5. जुड़वाँ भाई-बहन 75
6. चरवाहा और बाघ 79
7. जभी बयार, तभी जाड़ा 82
8. सात भाई और एक बहन 84

9. तीरंदाज का घमंड 87
10. एक महाजन और एक गरीब आदमी 89
11. अंधविश्वास 91
(ग) मुंडा लोककथाएँ 93
1. महाप्रलय 94
2. धरती की बेटी 95
3. मुंडाओं की उत्पत्ति 98
4. सोय गोत्र 102
5. केरकेटा गोत्र 103
6. सोहराई पर्व 105
7. पेरवा घाघ का देवता 107
8. हड़िया का जन्म 109
9. डोम का ऋण 110
10. बाघराय बाचराय 114
11. लीमन और राक्षस 117
12. हीरा राजा 119
13. महाजन और कर्जदार 122
(घ) खड़िया लोककथाएँ 125
1. करम जतरा 126
2. डैनेवाले घोड़े 128
3. वनरंगी रानी 129
4. सात भाई और भाजी साग 134
5. सात भौजाई और ननद 137
6. एक साही और बूढ़े की कहानी 139
7. सात भाई और राक्षसी 141
8. आलसी लड़का 145
9. बाघ और बन्दर 148
10. बन्दर और राजकुमारी 150
(ङ) खरवार लोककथाएँ 152
1. खरवार की उत्पत्ति 153
2.. रोहिताश्व की कथा 154
3. भस्मासुर की कथा 156
4. भुजबल राय की कथा 158
5. झांपी का बूढ़ा 159

6. ऊँट और सियार 161
(च) उराँव (कुडुख) लोककथाएँ 162
1. सिरजन-बिरजन गही खीरी (सृष्टि कथा) 163
2. बोंगदा पहाड़ और पकरा के देवता 165
3. बाल हृदय 168
4. अच्छा भाई 174
5. भाई-बहिन 176
6. अन्धा-अन्धी राजा-रानी 178
7. बूढ़ा और बुढ़िया 180
8. तुरता बूढ़ा आउर बंडा सियार 182
9. पेटू हुँडार 184
10. लेदा चराई (ढेला पक्षी) 186
(छ) असुर लोककथाएँ 191
1. मानव की उत्पत्ति 192
2. देवदूत असुर 193
3. धरम राजा और असुर 194
4. असुर राजा-रानी 196
5. दुष्ट प्रेतों की उत्पत्ति 198
6. धौला गिर और मैना गिर 200
(ज) बिरहोर लोककथाएँ 201
1. बिरहोर रामायण 202
2. हनुमान और बिरहोर 208
3. चम्पा और केदली 210
4. दो प्रेमियों की बहादुरी 213
5. घांसी युवक और राक्षस 216
6. भाग्यशाली राजकुमार और राजकुमारी 221
7. दलेल सिंह और मकुन्द सिंह 225
8. राजकुमार और उसके कृतघ्न भाई 227
(झ) परहिया लोककथाएँ 230
1. परहिया की उत्पत्ति कथा 231
2. तुलवा की माय 232
3. एतो बड़ो बाघ 235
4. एक रोमांचक युद्ध 237
5. फटहा टाँड़ का नागराज 239

(क) हो लोककथाएँ



1

धरती बनने की कथा

विश्व की सृष्टि के पूर्व जंगल, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि नहीं थे। केवल पानी-ही-पानी था। ईश्वर (सिंगबोंगा) ने विचार किया, ''यह पानी कैसे हटे और धरती का कैसे निर्माण हो।''

उन्होंने सर्वप्रथम एक कछुए का सृजन किया। वह पानी के भीतर घुसा और नीचे से मिट्टी लाकर डालना शुरू किया। वह बार-बार मिट्टी को पानी के ऊपर लाकर छोड़ देता। परंतु इससे मिट्टी एकत्र नहीं हो सकी और धरती का निर्माण नहीं हो सका।

ईश्वर ने सोचा, ''कौन मिट्टी को भीतर से लाकर इस प्रकार जमा कर सकता है कि धरती बन जाय।'' कछुआ बोला, ''मैं अकेला हूँ और एक हाथ से मिट्टी लाता हूँ। एक बड़ा हाथ दें तो पूरी (अधिक) मिट्टी ले आऊँगा।''

तब ईश्वर ने एक केकड़ा बनाया जिसको पाँच हाथ दिये। केकड़ा पानी के भीतर चला गया और मिट्टी लाने लगा। वह मिट्टी पूरी-की-पूरी ले आता था। परंतु मिट्टी पानी में घुल जाती थी। इस प्रकार केकड़ा से भी धरती का निर्माण नहीं हो सका।

तब ईश्वर ने पुनः विचार किया, ''मिट्टी ऊपर तक कैसे आयेगी, पानी भरा हुआ है'' ईश्वर ने जाँघ से मैल छुड़ाकर दो ''चेरा'' पैदा किया और एक को स्त्री तथा दूसरे को पुरुष बनाया। दोनों चेरों को पानी में छोड़ दिया। इन दोनों ने मिलकर कुछ भी काम नहीं किया। उस पर ईश्वर सोचने लगे, ''इन चेरों ने मिलकर कुछ भी काम नहीं किया। ये मिट्टी नहीं लाये और बिना काम किये रह गये।'' लेकिन चेरों ने पानी के भीतर मिट्टी खा-खाकर उस मिट्टी से पहाड़ बनाना शुरू कर दिया था। इस तरह ऊपर से नहीं, नीचे से ही मिट्टी निकालना शुरू किया। इसकी जानकारी इन्होंने सिंगबोंगा (ईश्वर) को नहीं दी। इन चेरों से और बच्चे हुए और सबने मिलकर धरती बनाने का काम शुरू किया। इस प्रकार कालक्रम से मिट्टी पानी के बाहर आ गयी। धीरे-धीरे मिट्टी पानी के ऊपर आती

गयी और पानी भीतर-भीतर सूखता गया। थोड़ी-थोड़ी मिट्टी बनते-बनते कुछ समय बाद मिट्टी का पर्वत बन गया। कुछ दिनों के बाद यह मिट्टी जमकर (सूखकर) कड़ी हो गयी और इस प्रकार धरती का निर्माण हो गया। जहाँ कहीं गड्ढ़ा रह गया, वह समुद्र बन गया।

अभी भी चेरा सिङ्बोंगा के आदेशानुसार मिट्टी से पहाड़ बनाता रहता है। कछुआ और केकड़ा अब पानी में या किनारे पर रहते हैं।



2

पेड़-पौधे और जीवधारियों का सृजन

जब धरती का निर्माण हो गया और कहीं-कहीं पानी भी शेष रह गया, लेकिन धरती पर इनके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था, केवल खाली और ऊबड़-खाबड़ धरती थी। तब सिंगबोंगा (ईश्वर) ने विचार किया कि यह धरती किस प्रकार अच्छी होगी। उन्होंने चेरा, कछुए और केकड़े को बुलाया। उन्होंने विचार किया कि धरती कहीं ऊँची और कहीं नीची है, यह एक तरह से समतल नहीं है। सिंगबोंगा ने सोचा कि उन्हें (चेरा, कछुआ और केकड़ा) हाथ और पैर नहीं है। ये धरती को समतल कैसे करेंगे।

तब सिंगबोंगा ने हाथ-पैर (दो हाथ दो पैर) देकर "सुरमि-दुरमि" का सृजन किया। इन्होंने थोड़े दिनों में ही धरती को समतल कर दिया। तब वे सिंगबोंगा से बोले, "हमने धरती को समतल कर अपना काम खत्म कर दिया।" सिंगबोंगा बोल, "अच्छा तुमलोगों को मदद करने के लिये बाघ, भालू, बनैला भैंसा, हिरन, हाथी आदि का सृजन करता हूँ, जिन्हें जोतकर धरती को तुमलोग उपजाऊ बना लोगे।" इस प्रकार सिंगबोंगा ने इन जीवों को बनाया। सुरमि-दुरमि ने इन्हें जोतकर धरती को खेत बनाया और इस पर पेड़-पौधों को रोप दिया। इस प्रकार पहाड़ बन गया और समतल जमीन खेत बन गया।"

ऐसी किंवदन्ती है कि सुरमि-दुरमि ने कई पोखरे भी बनाये थे। पहाड़ियों पर या पहाड़ियों से घिरे अभी भी ऐसे पोखरे हैं। ऐसा विश्वास है कि पहाड़ियों से घिरे अभी भी ऐसे पोखरे के आसपास बड़े-बड़े देवी या देवता रहते हैं। कहीं-कहीं असुर भी रहे हैं। आज भी ओझा-गुनि लोग असुर देवता और सुरमि-दुरमि की पूजा करते हैं और "हो" समाज में ये दुष्ट प्रेतात्मा की तरह माने जाते हैं।

●

3

मानव के सृजन की कथा

धरती के निर्माण के पश्चात् पेड़-पौधा आ जाने से सभी ओर अत्यधिक सुन्दर दृश्य देखकर सिंगबोंगा बहुत प्रसन्न हुए। तब सिंगबोंगा ने विचार किया, ''धरती कितनी सुन्दर है। इसकी रक्षा के लिए किसका सृजन किया जाय'' उन्होंने सुरमि-दुरमि को कहा, ''तुम लोगों ने बहुत काम और सेवा की है। इसी के बल पर तुम लोग राजा बनोगे।''

इसके बाद सिंगबोंगा ने मिट्टी से मूर्ति बनायी और नाक-आँख आदि बनाकर उसमें जीवन डाल दिया। सिंगबोंगा ने इसका नाम ''लुकु'' (लुकुहड़म) रखा। सिंगबोंगा ने उसे धरती समर्पित कर दी। ''लुकु'' अन्य सभी जीवधारियों से अलग रहता था।

सुरमि-दुरमि ने सिंगबोंगा से कहा, ''आपने सभी जीवों की दो-दो (जोड़ी) बनाया है। इसलिए आप इस मानव की भी जोड़ी बनाइये।''

इसपर सिंगबोंगा ने उस आदमी को सुला दिया। लुकु के सो जाने के बाद सिंगबोंगा ने उसकी बायीं पसली की हड्डी को निकाल कर एक ''स्त्री'' का सृजन किया और उसे मानव का रूप दिया। इस प्रकार लुकु को एक नया जीवन साथी मिला। जग जाने पर लुकु ने सिंगबोंगा से पूछा कि यह कौन है, सिंगबोंगा ने जवाब दिया, ''यह तुम्हारी जोड़ी है। अब तुम लोग साथ रहोगे। इसका नाम ''लुकुमि'' (लुकुबुढ़ि) होगा।''

लुकु बुढ़ा लुकुमि बुढ़ि पेड़ों के फल-फूल खाकर रहने लगे। उस समय फल-फूल काफी होता था। ईश्वर ने उन्हें ''जोजो'' (इमली) का फल खाने से मना किया था। वे इसके अलावा अन्य फलों को खाकर रहने लगे। लेकिन ''इमली'' के फल को देख-देखकर वे ललचाते रहे। एक दिन दोनों ने विचार किया, ''इस पेड़ के फल को खाने से क्यों मना किया गया, देखने में यह कितना अच्छा है। यह अच्छा है और खाने के योग्य हैं।'' ऐसा कहते हुए उन दोनों ने ''जोजो'' फल खा लिया।

इमली (जोजो) फल खाने पर दोनों के दाँत कटकटाने लगे, वे सिहरने लगे और शर्म का अनुभव करने लगे। इससे दोनों में आत्मज्ञान आ गया और वे अपने को खाली और नंगा महसूस करने लगे। इसपर दोनों ने अपने को पेड़ के पत्तों से ढक लिया।

इसपर ईश्वर ने दोनों को बुलाया। सिंगबोंगा ने सोचा कि इन दोनों ने मेरे आदेश का उल्लंघन किया है। उन्होंने कहा, ''तुम दोनों जोजो का फल खाकर शर्म और भय का अनुभव कर रहे हो। तुम लोगों ने मेरी बात नहीं मानी।'' सिंगबोंगा ने उन्हें ग्रीष्म ऋतु आदि के कष्टों को झेलते हुए जीवन बिताने के लिए भेज दिया।

इसके बाद लुकुबुढ़ा और लुकुमी बुढ़ी खेत में काम करके अपना भरण-पोषण करने लगे। दूसरे-दूसरे जो जीवधारी थे, उन्होंने बहुत-से बच्चों को पैदा किया। लेकिन ये दोनों कुछ भी पैदा नहीं कर सके। सिंगबोंगा ने उन्हें देखकर विचार किया, ''जब तक ये दोनों एक साथ खाट बनाकर नहीं सोयेंगे, उन्हें संतान नहीं होगी।'' एक दिन सिंगबोंगा एक वृक्ष का रूप धरकर आये और बोले, ''तुम लोग डियङ् (हंड़िया) बनाकर धरती पर गिरा कर पीयो।'' सिंगबोंगा ने उन्हें रानू जड़ी-बूटी लाकर दी और हंड़िया बनाने की विधिक बता दी।

इसके बाद उनलोगों ने धान से भूसी अलग कर चावल बनाया और उससे हंड़िया तैयार की। वे हंड़िया धरती पर गिराकर पीने लगे। वे खाट बनाकर एक साथ सोने लगे। कुछ दिनों के बाद उनके बच्चे हुए।

सिंगबोंगा से लमटा घास बोली, ''हे सिंगबोंगा, मैंने ''हो'' मानवों को पाप करते देख लिया है। अब मैं क्या करूँ।'' सिंगबोंगा ने कहा, ''तुम इनके शरीर में सट जाओ और उनको वस्त्र प्रदान करो। जो भी तुमसे होकर गुजरे, उसमें तुम सट जाया करो।'' इस प्रकार लमटा घास मनुष्य के निर्वस्त्र शरीर पर वस्त्र की तरह सट गयी।

कुछ समय बाद कोई लड़का बीमार पड़ गया। वे सिंगबोंगा को खोजने निकल गये। सिंगबोंगा एक बूढ़े के वेष में रहते थे और उन्हें कभी-कभी देख आया करते थे। सिंगबोंगा बूढ़े के रूप में उन्हें मिल गये। सिंगबोंगा ने कहा, ''तुम लोग सिंगबोंगा बूढ़े के नाम से एक सफेद मुर्गे की बलि दो इससे तुम्हारा लड़का ठीक हो जायेगा।''

इस पर लुकु ने कहा, ''हे दादा, तुम मुर्गे की बलि लेकर पूजा कर दो और मुर्गे को खा लो।''

सिंगबोंगा बोले, ''नहीं, मैं यह कार्य नहीं करूँगा। तुम ही पूजा करो और मुर्गे को बलि देने के बाद खाओ।''

इस पर लुकु बूढ़ा ने चावल लाकर जमा किया और पूजा की। उसने मुर्गे की बलि देकर उसके रक्त को चावल में डाल दिया और यकृत् तथा प्लीहा को काट कर चढ़ा दिया। वह घर आ गया। पुनः लौटकर जाने पर उसने दादा को (सिंगबोंगा को) चावल और मुर्गे का जिगर और प्लीहा को खाते देख लिया।

यह देखकर सिंगबोंगा ने कहा, ''अब तुम दोनों हमको प्रत्यक्ष नहीं देख सकोगे।'' ऐसा कहकर उन्होंने उनकी आँखों को भेलवा से दाग दिया। उनकी सफेद आँखें काली हो गयीं और तब से वे सिंगबोंगा को नहीं देख सके।

●

4

असुर कथा

बूढ़े लोग कहते हैं कि पुरातनकाल में "असुर" रहते थे। उस जमाने में सुरमि-दुरमि भी रहते थे। उनलोगों ने पेड़-पौधा, झाड़ी आदि को साफ कर धरती (जमीन) को समतल बनाया था और इसी कार्य के लिए सिंगबोंगा ने उनका (सुरमि-दुरमि) का सृजन किया था।

इस काल में मनुष्य "हो" की तरह "असुर" भी रहते थे। वे देखने में असुन्दर थे। उनका सिर-कान, हाथ-पैर आदि बहुत बड़े-बड़े या बहुत छोटे-छोटे (बेडौल) होते थे। उनको देखकर भय की अनुभूति होती थी। वे मनुष्यों "हो" के बीच में नहीं रहते थे। सिंगबोंगा ने उन्हें बलवान् बनाया था।

सिंगबोंगा ने "हो" को खेती का काम सिखाया और असुर को लोहा गलाने का। कुछ समय बाद असुरों की बुद्धि खराब हो गयी और वे दम्भी हो गये। असुरों के पास काफी सोना-चाँदी, रुपया-पैसा जमा हो गया और वे सम्पत्ति वाले धनवान् बन गये। वे लोगों को मारने और उनकी हत्या करने लगे। वे किसी से भी डरते नहीं थे और सिंगबोंगा (ईश्वर) से भी नहीं भय खाते थे। उनके इस कुकृत्य के कारण सिंगबोंगा ने उनका नाश करने का निश्चय किया।

असुर बड़े-बड़े कच्चे पेड़ों को काटकर रात-दिन लोहा गलाते थे। कच्ची लकड़ी की आग से चारों तरफ जलन की अनुभूति होने लगी। जंगल के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी खत्म होने लगे। बाँध और तालाब का पानी सूखने लगा। जंगल के जीव-जन्तु को पानी और चारा नहीं मिलने लगा। जीव-जन्तु जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगे और सिंगबोंगा को पुकारने लगे। कुछ समय बाद ईश्वर (सिंगबोंगा) ने भी आग की गर्मी का अनुभव किया और चीख-पुकार सुनी। सिंगबोंगा ने विचार किया, "असुर धन इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। भट्ठी की आग किस तरह फैल गयी। इससे पेड़-पौधे नहीं बचेंगे और सभी जीव-जन्तु मरकर नष्ट हो जायेंगे।"

सिंगबोंगा ने पानी में रहने वाली एक चिड़िया को बुलाया और कहा, "तुम

असुरों के पास जाकर बोलों कि वे रात-दिन लोहा गलाने का काम न करें। यदि वे दिन में गलावें तो रात में छोड़ दें और यदि रात में गलावें तो दिन में छोड़ दें। जंगल में पेड़-पौधे सब नष्ट हो रहे हैं, बाँध-तालाब सूख रहे हैं और सभी जीव-जन्तु नष्ट हो रहे हैं। उन्हें चारा नहीं मिल रहा है और पानी भी किसी को नहीं मिल रहा है।''

इस पर वह चिड़िया उड़कर असुरों के पास गयी और कहा, ''हे असुर लोग, सिंगबोंगा ने यह सन्देश भेजा है कि आप रात-दिन लोहा नहीं गलावें। दिन में गलावें तो रात में छोड़ दे और रात में गलावें तो दिन में छोड़ दें। जंगल के पेड़-पौधे सभी खत्म होते जा रहे हैं। बाँध और पोखरा का पानी सूख गया है और जंगल के जीव-जन्तु नष्ट हो रहे हैं।''

असुरों ने उस चिड़िया को पकड़ लिया और उसे कोयले की राख से काला कर दिया और कहा, ''हमलोग सिंगबोंगा को नहीं मानेंगे। हमलोग उसे नहीं जानते।''

इस प्रकार वह अपना काला शरीर लिये सिंगबोंगा से जाकर बोली, ''ये लोग आपको नहीं मानते। उन लोगों ने कोयला मलकर मुझे काला कर दिया।''

तब सिंगबोंगा ने ''दिऊरी तथा हंस'' चिड़िया को बुलाया और उन्हें असुरों से अपना सन्देश कहने के लिये भेजा। असुर उन दूतों पर भी बिगड़ गये। उन लोगों ने दिऊरी चिड़िया को गर्दन खींच कर खाली बाँस में भर दिया। हंस की गर्दन और पैर को खींचकर लम्बा कर दिया और उस पर धूल छिड़क दिया। उसे तीर से भी बाँध दिया। ये दोनों भी सिंगबोंगा के पास वापस आकर इन सब घटनाओं को बताया।

इसके बाद सिंगबोंगा ने ''नीलकण्ठ और चाड़'' चिड़िया को बुलाया। इन लोगों ने भी असुरों के पास जाकर सिंगबोंगा का सन्देश कह सुनाया। पर असुरों ने उनकी बात न मानकर उन्हें पकड़ लिया। ''चाड़'' का आग की राख में लपेट दिया और नीलकण्ठ को पकड़कर नीला पानी में डुबा दिया। इस प्रकार ''चाड़'' ''चेटे-चेटे'' और नीलकण्ठ ''टोंय-टोंय'' बोलते हुए भागकर सिंगबोंगा के पास आये और सारी घटना साफ-साफ सुना दी।

इसके बाद सिंगबोंगा ने ''लाङ्'' और ''बोचो'' चिड़िया को बुलाया और उन्हें भी अपना सन्देश असुरों को सुनाने के लिये दूत बनाकर भेजा। लेकिन असुरों ने इनकी बात भी नहीं मानी। इनको भी असुरों ने पकड़ लिया। ''लाङ्'' चिड़िया की पूछ उखाड़कर उसमें मुर्गा का पंख खोंस दिया और ''बोचे'' को हल्दी के पानी में डुबो दिया। ये दोनों भी सिंगबोंगा के पास आकर आपबीती सुना आये।

इसके बाद सिंगबोंगा ने सोना दीदी और चन्दाकुई को बुलाया और असुरों

के पास भेजा। परन्तु असुरों ने इनकी बात भी नहीं मानी और गुस्से में भरकर उन्हें पकड़ लिया। सोना दीदी पर गर्म माँड़ फेंक दिया और चन्दाकुई के ललाट पर कुछ लगा दिया। इन दोनों ने भी सिंगबोंगा के पास आकर अपनी आपबीती सुनायी।

कुछ समय बाद सिंगबोंगा ने अपने उड़ने वाले घोड़े को बुलाया और सोचा कि शायद असुर उसकी बात मान लेंगे। वह असुरों के पास जाकर सिंगबोंगा का सन्देश सुना दिया।

इस पर असुरों ने कहा, ''हमलोग सिंगबोंगा को नहीं जानते हैं और उसकी बात नहीं मानेंगे।'' ऐसा कहकर सिंगबोंगा के घोड़े को पकड़ लिया और उसके पैर (खुर) को दो भागों में फाड़ दिया। वह अभागा घोड़ा भागकर सिंगबोंगा के सामने जाकर खड़ा हो गया और अपनी व्यथा-कथा सुना दी।

सिंगबोंगा ने तय किया कि अब असुरों का नाश अवश्य करना होगा। सिंगबोंगा ने ऐसा सोचा कि अब किसी को बुलाना या कहना ठीक नहीं है। अब किसी दूत को भेजना भी ठीक नहीं है।

ऐसा विचार कर सिंगबोंगा ने खुजली रोग से ग्रस्त नौकर लड़के का रूप धारण कर लिया। वे असुरों की बस्ती में चले गये। असुरों के गाँव में जाकर नौकर के काम के लिये कहने लगे, ''आप सज्जन लोग (महाशय) हमें अपने यहाँ नौकर रख लो। मैं सभी काम कर दूँगा।''

इस पर असुर लड़कियाँ आपस में कहती, ''ऐ लड़की! देखो, इसको नौकर रखेगी'' दूसरी उत्तर देती, ''हमलोग इस तरह के खुजली रोग वाले नौकर को नहीं रखते। हमलोग इस लड़के को नहीं जानते (पहचानते) हैं।''

इस प्रकार वह सभी असुरों के घर गया और उसे ऐसा ही जवाब मिला। इसके बाद पूछ-पूछ कर वह एक बूढ़ा-बूढ़ी के पास पहुँचा। उन्हें संतान नहीं थी। उनसे खुजली वाले लड़के ने पूछा, ''ऐ दादा-दादी, क्या आप हमें नौकर रखेंगे? मैं आप लोगों के धान को मुर्गी से रक्षा करूँगा।''

इस पर बुढ़िया बोली, ''अच्छा, रहो। मैं खेत पर काम करने जाऊँगी। तब तुम घर पर धान को फैलाकर सुखाना।'' इस प्रकार वह खुजली वाला लड़का उस बूढ़ा-बूढ़ी के यहाँ नौकर हो गया।

जब दोनों खेत पर काम करने जाते तो वह धान को पसारता और सुखाता। वह धान कूटकर चावल भी बना देता था। इस प्रकार बूढ़ा-बूढ़ी के वापस आने पर उन्हें भूसी रहित चावल मिलता।

एक दिन खुजली वाले लड़के ने कहा, ''ऐ दादा-दादी, आज एक मुर्गा का अण्डा लाओगे। मुझे बहुत-सा फोड़ा-फुंसी हो गया है। मैं उससे मलहम बनाकर लगाऊँगा।''

इस पर इन्होंने एक अण्डा ला दिया। अण्डा मिलने पर वह असुर लड़कों का लट्टू नचाने का खेल देखने चला गया। वे सभी लोहे के लट्टू से खेल रहे थे। असुर लड़कों ने उसे भी खेल में शामिल होने के लिये कहा। ''तुम्हारा लट्टू कहाँ है'' असुर लड़कों ने पूछा।

इस पर उसने मुर्गी के अण्डे को निकाला। उसने उस अण्डे को नचाया। मुर्गी के अण्डे वाले लट्टू की मार से असुर लड़कों के लोहे के लट्टू फट गये। परंतु अण्डे के लट्टू को कोई नहीं फोड़ सका। खुजली वाले लड़के ने बारी-बारी से सभी के लट्टुओं को फोड़ दिया। इसके बाद असुर लड़कों ने उसे लट्टू के खेल में सम्मिलित नहीं किया।

उन लड़कों ने बूढ़ा-बूढ़ी से खुजली वाले लड़के की शिकायत की, ''ऐ बूढ़ा-बूढ़ी! जब धान सूख रहा था तो यह नौकर हमलोगों के साथ लट्टू खेलने चला गया था और काफी धान मुर्गियाँ खा गयीं।''

लेकिन खुजली वाले लड़के ने मुर्गियों को भगा दिया था और धान को जमा कर पूरा एक सूप नाप कर ला दिया था। इसने उसे कूट दिया था जिससे और चावल कम नहीं हुआ। इस प्रकार खुजली वाले लड़के को डाँट नहीं पड़ी।

दूसरे दिन उसने मालिक और मालकिन से कहा, ''ऐ दादा-दादी! आज आटा की रोटी खाने को मन ललच रहा है। थोड़ा गेहूँ पीस कर लायेंगे।''

इसके बाद कूट-पीसकर आटा की एक रोटी बनाकर वह असुर बच्चों के पास गया। आज वहाँ छुरी की लड़ाई का खेल हो रहा था। खुजली वाला लड़का भी वहाँ चला गया। वहाँ वह खाली हाथ से छुरी की लड़ाई के खेल में शामिल हो गया और हाथ से ही मार-मार कर बारी-बारी से सभी की छुरियाँ तोड़ डालीं।

इसपर उन लोगों ने उसके मालिकों से शिकायत की, ''यह खुजली वाला लड़का आज दिन-भर हमलोगों के साथ छुरी की लड़ाई का खेल खेलता रहा है और चटाई का धान सब मुर्गियों ने खाकर खत्म कर दिया है।''

नौकर लड़के ने बाकी बचे धान को इकट्ठा कर लिया, वह एक सूप हो गया। उसे कूट कर वह पाँच पैला (दस सेर) चावल ले गया। चावल देखकर घर के मालिक-मालकिन खुश हो गये और उसे नहीं डाँटा।

इसके बाद सिंगबोंगा (खुजली वाला लड़का) ने असुरों के लोहे के उत्पादन को कम कर दिया। असुर बहुत जोर-जोर से भाँथी चलाकर लोहा गलाते, पर वह पूरा नहीं होता।

इसपर असुर लोग खुजली वाले लड़के के मालिक के पास गये और बोंगा पूजा के लिए कहने लगे, ''ऐ बूढ़ा-बूढ़ी! लोहा ठीक से नहीं गल रहा है। थोड़ा देख लीजिए।''

उनलोगों ने कहा, "वह नौकर बहुत विद्या जानता है। वह पाँच पइला धान से पाँच पइला चावल निकाल देता है। उसी के पास तुमलोग जाओ और बोंगा की पूजा कराओ।"

इस पर असुर लोग उस खुजली वाले लड़के के पास गये और बोले, "तुम बहुत विद्या जानते हो। थोड़ा चलकर तुम देख लो, लोहा ठीक से नहीं गल रहा है।"

"मेरा घाव सब अभी ठीक कहाँ हुआ है। मैं नहीं देख सकता हूँ।" उसने कहा।

इसके बाद वह फिर सोचकर बोला, "अच्छा, आज पानी और चावल छोड़ जाओ। कल सुबह आओ तो बताऊँगा।"

दूसरे दिन सुबह असुरों के आने पर उसने कहा, "जाओ और एक सफेद मुर्गी सिंगबोंगा के नाम से बलिदान करो। लोहा ठीक से गलने लगेगा।"

इसपर उनलोगों ने सफेद मुर्गी की बलि दी और लोहा अच्छी तरह गलने लगा।

कुछ दिन बीत जाने पर फिर लोहा गलना बन्द हो गया। वह पानी की तरह पतला होकर बेकार में बह जाता।

असुर फिर चावल लेकर नौकर लड़के के पास दिखाने आ गये।

"चावल को छोड़ दो और कल सुबह आना।" उसने उनसे कहा।

दूसरे दिन सुबह आने पर उसने कहा, "खस्सी देना होगा। एक सफेद बकरा की बलिदो। लोहा ठीक से गलने लगेगा।"

इस पर असुरों से कहा, "एक सफेद बकरा की बलि दो। लोहा ठीक से गलने लगेगा।"

इस पर असुरों ने एक सफेद बकरा की बलि सिंगबोंगा के नाम पर दी और उसके बाद लोहा ठीक से गलने लगा।

परंतु कुछ दिनों के बाद लोहा का ठीक से गलना फिर बन्द हो गया। वह गलने पर पानी की तरह पतला होकर बह जाता। इसपर फिर असुर लोग उस नौकर लड़के के पास गये और बोले, "चावल देख लो। लोहा फिर नहीं बन पा रहा है।" लड़के ने चावल को छोड़ जाने और दूसरे दिन आने के लिए कहा।

"असुर लोगों को नर-बलि देनी होगी" लड़के ने कहा। इस पर असुर लोग चिन्तित और उदास होकर चले गये।

असुर लोग बहुत विचार करने लगे कि बलि के लिए आदमी को कहाँ से लायेंगे। बहुत विचार करने पर तय हुआ कि उस खुजली वाले नौकर को ही बलि दे दी जाय।

उसके मालिक के पास काफी रुपया-पैसा इकट्ठा करके गये। ''हमलोगों को बलि के लिए कोई आदमी नहीं मिला। हमलोग आपके नौकर को लेंगे। कितना रुपया देना होगा।''

उनलोगों ने कहा, ''यह खुजली वाला लड़का धान-चावल ठीक से रखता है और सभी की भलाई के लिए काम करता है। उसकी बलि दे देने से कौन यह सब काम करेगा। इसलिए हमलोग उसे नहीं देंगे।'' असुर लोग दुःखी होकर चले गये।

असुरों को जब कोई आदमी अन्त तक नहीं मिला तो उस नौकर लड़के को जबरदस्ती बलि चढ़ाने के लिए ले आये। इस पर वह लड़का बोला, ''आपलोग सिंगबोंगा को पूजना चाहते हैं। लेकिन आपलोग गला रेत कर मुझे बलि नहीं दे। मैं लोहा गलाने की भट्टी में प्रवेश करूँगा और आप लोग मुझे जला देंगे। एक सफेद बकरा का चमड़ा साफ करके आइये। धान का आटा और कोदो का आटा कुमारी लड़की कूट-पीस कर तैयार करेगी और हमारे भट्ठी में घुसने के बाद उस आटा से भट्ठी को लीप-पोत कर आग जला देंगे। रात-दिन भट्ठी को पैर से चलाते रहेंगे। इसके बाद नया सूत के बीठे पर घड़ा के पानी लायेंगे और आम के पत्ता से भट्ठी के आग पर छिड़केंगे।''

असुर लोगों ने लोहे की भट्ठी को खूब अच्छी तरह से बनाया और उनको चारों तरफ से अच्छी तरह बंद कर दिया। खुजली वाले नौकर के भट्ठी में घुसने के बाद कुमारी युवतियाँ आटा का लेप बनाकर और मिट्टी से भट्ठी के दरवाजे को बन्द कर दिया। सफेद बकरा के चमड़ा से बने भाँथी को असुर कन्याएँ रात-दिन चलाती रहीं। इसके कई दिन बाद सूत के बीठा पर नये घड़े के पानी लेकर आम के पत्ता से भट्ठी की आग पर छिड़काव करके भट्ठी को बुझाया गया।

सबने आश्चर्य से देखा, यह क्या चमत्कार हो गया। खुजली वाला नौकर लड़का सोना-चाँदी के आभूषण से सजकर दमकता हुआ रूप लेकर बाहर आया। उसका पूरा शरीर सोने के गहनों से भरा था।

उसे देखकर असुरों को प्रलोभन हुआ। इस प्रकार के सुन्दर सोने के आभूषण और शृंगार के साधन तो असुरों के पास भी नहीं थे।

वह दिव्य रूप वाला लड़का बोला, ''आपलोगों ने मुझे जलाने के लिए भट्ठी में डाला और मैं सोने के गहनों को लेकर बाहर आया।''

उसे देखकर सभी कहने लगे, ''देखो, खुजली वाला लड़का कितना गहना लेकर आया है। इसके गहनों को हमलोग ले लें।''

''यह भला कैसे होगा, आपलोग भी पूरा लायेंगे। आपलोग भाई-बन्धु के साथ भट्ठी में घुसे और इसे प्राप्त करें।'' लड़के ने ऐसी बात कही।

यह बात सुनकर अधिकांश स्त्रियाँ इस काम में लग गयीं और सभी असुर

भट्ठी में प्रविष्ट होने लगे। सभी असुरों को भट्ठी में घुस जाने के बाद उस लड़के ने असुर स्त्रियों से कहा, "अच्छा, अब तुम लोग लोहा और कोयला को राख से पीसकर भट्ठी के द्वार बंद कर दो।"

इस पर असुर स्त्रियों ने लोहा और कोयला की राख से भट्ठी के दरवाजे को बन्द कर दिया। सफेद बकरा के चमड़े की भाँथी को रात-दिन चलाती रहीं। आग पूरी तरह लग जाने पर भीतर से लोग (असुर) खेत के चूहे की तरह हल्ला करने लगे। इस पर असुर स्त्रियाँ उस लड़के से पूछने लगीं, "भीतर में किस प्रकार का हल्ला-गुल्ला हो रहा है?"

लड़के ने कहा, "असुर लोग सोना-चाँदी की छीना-झपटी कर रहे हैं। सब में सोना लेने की होड़ लगी हुई है।"

भाँथी खूब जोर-जोर से चलती रही। भट्ठी के दरवाजे से खून बहने लगा। यह देखकर असुर स्त्रियों ने पूछा, "तुम धोखा तो नहीं दे रहे हो दरवाजे से खून क्यों बह रहा है?"

लड़के ने कहा, "कोई बात नहीं है असुर महिलाओं! आपलोगों के पुरुष पान खा रहे हैं। इसी से हल्का लाल रंग बह रहा है। आपलोग चिन्ता न करें और जोर-जोर से भाँथी चलावें।"

इस प्रकार कई रात और कई दिनों तक भाँथी चलने से भट्ठी जलकर खत्म हो गयी। इसके बाद भट्ठी को तोड़ा गया। उसके टूटने पर केवल मानव-अस्थियाँ खट-खट करती बाहर निकली।

असुर स्त्रियाँ रो-रोकर कहने लगीं, "अरे लड़का! तुमने हमलोगों को धोखा दिया और सभी मर्दों को जला दिया।"

"हाँ, तुमलोगों को समझाने के लिए मैंने चिड़ियाँ और घोड़ा भेजा था। परन्तु तुमलोगों ने बात नहीं मानी।"

ऐसा कहकर सिंगबोंगा सूत का रास्ता पकड़कर ऊपर उठने लगे। परंतु असुर स्त्रियों ने उनका पैर पकड़ लिया।

सिंगबोंगा ने उनसे कहा, "तुमलोग भी धरती पर अन्य लोगों की तरह अपना भरण-पोषण करो। देवा (पुजारी) के लड़के की तरह तुमलोग भी बलि देकर सिंगबोंगा की पूजा करो। अब से तुमलोग भी सरसों और धान के दाना को पैरों से मीसकर छुड़ाओगी। सिर के केश को बाँधकर धरती पर सब मिल-जुलकर अनाज को सभी तरफ बोकर लगाओ। बीज छींटने पर इस प्रकार पहाड़ पर गिरने पर पहाड़ के देवता का नदी में गिरने पर नदी के देवता का, गढ़ा में गिरने पर गढ़ा के देवता का और झाड़ी-झरना जहाँ भी गिरेगा, वहाँ से देवी-देवता तुम्हारा नुकसान नहीं करेंगे। उनकी पूजा करोगी तो किसी को कोई बीमारी नहीं होगी और किसी

आदमी को बुरी आत्माएँ नहीं पकड़ेंगी।''

इसके बाद असुर स्त्रियों ने मुर्गी, सुअर, भेड़, बकरा आदि की बलि दी।

इस प्रकार असुरों का सिंगबोंगा द्वारा नाश नहीं किया जाता तो पेड़-पौधे, जीव-जन्तु आदि नहीं बचते और मनुष्य भी जीवित नहीं रह पाते। असुरों के नाश के लिए सिंगबोंगा खुजली वाला नौकर बनकर बूढ़ा-बूढ़ी के घर में आये और असुरों का छल द्वारा नाश किया और सभी जीव-जन्तु मानव आदि को अथवा समस्त सृष्टि की रक्षा की।

●

5

हेरो पर्व

प्राचीन काल में एक गाँव में चार भाइयों का एक ''हो'' परिवार रहता था। सभी भाई कुंआरे थे और एक ही साथ रहते और खाते-पीते थे। उनके घर से कुछ दूरएक अन्य परिवार रहता था जो ''हेरो'' पर्व मनाया करता था। इस पर्व में चावल पीसकर आटा बनाकर उससे रोटी बनाते थे और उसी आटा को घोलकर दीवार पर मानव और घोड़ा की आकृति बनाते थे।

एक दिन बड़ा भाई गाँव में गया और एक नारी का भीत्तिचित्र देखा। उसने उसी प्रकार की लकड़ी की मानव आकृति बनाकर रात में उसी भीत्तिचित्र पर चिपका दिया। उसने इस सम्बन्ध में किसी को कुछ नहीं बताया।

दूसरे दिन दूसरा भाई जब गाँव में घूमने गया तो उसने काठ की मूर्ति को देखा। जब रात हो गयी तो उसने चुपके से जाकर उस काठ की मूर्ति पर मिट्टी का लेप चढ़ा दिया। तीसरा भाई ने भी उस मूर्ति के देखा और रात में जाकर उसे विभिन्न रंगों से रंग दिया और मोतियों से सजा दिया। सबसे छोटा भाई चौथे दिन वहाँ गया और सोचा कि क्यों न उस सुन्दर मूर्ति में प्राण डाल दें। उसने इतनी तन्मयता और भक्तिपूर्वक सिंगबोंगा की प्रार्थना की कि उन्होंने प्रसन्न होकर उस मूर्ति में प्राण डाल दिया। वह मूर्ति शीघ्र ही एक सुन्दर युवती में परिवर्तित हो गयी। छोटा भाई उसे घर ले आया और अपने कमरे में उसे रख दिया।

दूसरे दिन अन्य तीनों भाइयों ने उस युवती को देखा। तीसरे भाई ने पूछा कि क्या उसने उस युवती को उसी घर से प्राप्त किया है, जहाँ मूर्ति बनी थीं।

जब छोटे भाई ने हामी भर ली तो तीसरे भाई ने कहा, ''अच्छी बात है। उस पर में मेरा अधिकार होना चाहिए क्योंकि मैंने ही उस मूर्ति को सजाया था।''

दूसरे भाई ने अपना अधिकार जताते हुए कहा, ''यह मेरी है क्योंकि लकड़ी के मूर्ति का लेप लगाने का कार्य मैंने किया था।''

इस प्रकार वह सुन्दर एवं आकर्षक युवती को लेकर चारों भाइयों में काफी संघर्ष होने लगा। अन्त में यह बात गाँव की पंचायत में गयी। पंचों ने अपना

फैसला बड़े भाई के पक्ष में दिया और अन्य भाइयों को इस फैसले को स्वीकार करना पड़ा। उसी समय से ''हो'' लोग ''हेरो'' पर्व धूमधाम से मनाते हैं और सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाते हैं।



6

डोंड़ साँप (पानी का साँप)

एक लड़की जंगल में पत्तियाँ तोड़ने और जलावन की लकड़ी चुनने गयी थी। जब लकड़ी चुन रही थी, उसे दो अण्डा दिखायी पड़ा और वह उन्हें मोरनी का अण्डा समझकर उठाकर घर ले आयी। वास्तव में वे अण्डे पहाड़ी साँप के थे।

जब वह दूर खेतों पर काम करने गयी थी, उसके छोटे भाई ने उन अण्डों को देख लिया। उसने उन अण्डों को तोड़ दिया और तलकर खा गया। जब वह घर वापस आयी तो उसके छोटे भाई ने सारी बातें उसे बता दी।

बहन ने कहा, ''प्रिय भाई! यह तुमने क्या किया, मैं उन्हें मोरनी का अण्डा समझकर ले आयी थी। पर पता नहीं, वे किसके अण्डे थे। तुमने बहुत जल्दबाजी कर दी।''

दो-तीन दिनों के बाद उस लड़के को एक अजीब अनुभूति होने लगी। उसे ऐसा लगा कि उसमें कुछ परिवर्तन हो रहा है और वह धीरे-धीरे एक साँप के रूप में रूपान्तरित हो रहा है। उसने अपनी अनुभूति अपनी बहन से बतायी। उसके अनुरोध पर उसकी बहन ने उसे टोकरी में रखकर ढक्कन को बन्द कर दिया और उसे जंगल के भीतर ले चली। उसने जंगल में जाकर उस टोकरी को रख दिया। उसके भाई ने टोकरी के भीतर से कहा, ''अब मैं साँपों के बीच में ही रहूँगा। तुम थोड़ी देर जाकर कहीं पर अपने को छिपा लो ताकि पहाड़ी साँप तुम्हें देख न सकें।''

तदनुसार वह सुरक्षित स्थान पर चली गयी तब लड़के ने गीत गाना शुरू किया--

''नाइङ् दो, नाइङ् दो, बुरूबीङ किङ् नो लिङ्
नाइङ् दो, नाइङ् दो, सांगस उरूकिङ ने डिङ आना।''

(मैं अब पहाड़ी साँपों के घर में जा रहा हूँ। वे दो पहाड़ी साँप मुझे अपने घर ले जा रहे हैं।)

जैसे ही उसने गीत गाना शुरू किया चट्टानों की दरार से दो साँप निकल आये और अपने भयंकर फनों से टोकरी को मारना प्रारम्भ किया। पर वे ढक्कन

को खोल नहीं सके। इस प्रयास में उन्हें खरोंच भी आ गयी।

जब वे चले गये तो उस सर्प लड़के ने अपनी बहन से किसी जंगल के तालाब या कुण्ड में उसे ले चलने को कहा। उस लड़की ने वैसा ही किया। जब उसने टोकरी को ले जाकर पानी में रख दिया तो उसके भाई ने कहा, ''अब मैं हमेशा पानी के सर्प के रूप में रहूँगा। तुम समय-समय पर इस कुण्ड में मछली मारने आया करोगी। तुम हमेशा पानी के किनारे ही रहोगी।'' इस प्रकार वह लड़का प्रथम ''डोड़ साँप'' (जल-सर्प)।

●

7

दो बहनों की कथा

एक "हो" की दो लड़कियाँ थीं। वह उन्हें बहुत प्यार करता था और उन्हें लड़के की तरह पाला-पोसा। लड़कियाँ जब बहुत छोटी थीं तो उनकी माँ मर गयीं और वही उनके लिए माता-पिता दोनों था।

एक दिन जब वह जंगल में लकड़ी काटने गया तो तिरिल का पका फल खाया। कुछ पके फल उसके केशों में फँस गये। घर लौटने पर उन फलों का पता तब चला जब उसकी लड़कियाँ उसके सिर से जूँ (ढील) निकाल रही थीं।

"पिताजी! यह कौन-सा फल है" एक लड़की ने पूछा।

"यह तिरिल का फल है मेरी बच्ची।" पिता ने कहा। उन लड़कियों ने फल को चखा और उन्हें इतना अच्छा लगा कि और फल की माँग करने लगीं। उन दोनों ने पिता के साथ जंगल में जाकर भरपेट उस फल को खाने की इच्छा व्यक्त कीं।

दूसरे दिन सुबह वह दोनों लड़कियों को जंगल ले गया और फल से भरे तिरिल पेड़ उन्हें दिखा दिया। लड़कियाँ पेड़ से फलों को तोड़कर खाने लगीं और वह लकड़ी काटने लगा। लड़कियाँ एक पेड़ से दूसरे पेड़ के फलों को खाती हुई भटक गयी और घने जंगल में चली गयीं। उनके पिता ने उन्हें काफी खोजा और जोर-जोर से चिल्लाकर उन्हें पुकारा। पर कोई फायदा नहीं हुआ। उसने पहले सोचा कि लड़कियाँ जंगल में खो गयी हैं। पर काफी खोजने पर जब नहीं मिलीं तो उसके मन में विचार आया कि शायद वे उसे नहीं पाकर घर चली गयीं। परंतु घर लौटने पर जब वे नहीं मिलीं तो वह बहुत दुःखी हुआ।

लड़कियों ने भी अपने पिता को जंगल में बहुत खोजा। परंतु उनका सब प्रयास व्यर्थ गया। वे घूमते-घूमते थक गयीं और उन्हें जोरों की प्यास मालूम हुई। वे पानी को देखने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गयीं ताकि उन्हें पानी का कोई कुण्ड (या झरना) दिखलायी पड़े। अन्त में एक दिशा से एक बगुला उड़कर आता हुआ दिखायी पड़ा। बड़ी बहनपेड़ के नीचे उतरी और उस दिशा की ओर चल दी जिधर से बगुला आया था। छोटी बहन पेड़ पर ही रह गयी।

काफी दूर जाने के बाद उसे एक सरोवर मिला जो एक राजा का था। उस

समय राजा का पुत्र राजकुमार, उस झील के किनारे टहल रहा था। राजकुमार ने उसे देखा और उसके सौन्दर्य पर मोहित हो गया और उसे पत्नी के रूप में प्राप्त करने का निश्चय किया। जैसे ही वह प्यासी लड़की पानी पीने के लिए सरोवर की ओर बढ़ी, राजकुमार ने उसे पानी पीने से मना कर दिया। उसने कहा कि जब तक वह उसकी पत्नी बनने का वादा नहीं करती, तब तक वह उसे पानी पीने नहीं देगा। वह प्यास से मरी जा रही थी। अतः अपनी सहमति देने के अलावा कोई उपाय नहीं था। राजकुमार उसे अपने महल में ले आया और वह उसकी पत्नी बन गयी।

इधर उसकी छोटी बहन उसका इंतजार पेड़ पर करते-करते थक गयी। उस पेड़ पर बन्दरों के उछल-कूद से भी वह परेशान हो गयी। वह जैसे ही पेड़ के नीचे उतरी, जंगली जानवर उसे मार कर खा गये।

इस दुःखद घटना के कुछ दिनों के बाद एक चरवाहा अपने मवेशियों के साथ वहाँ आया। उसने उस लड़की की हड्डियों को चुनकर उन्हें सारंगी में लगा दिया। सारंगी में हड्डियों के लग जाने के बाद वह इतनी सुरीली हो गयी कि जो भी सुनता वह मन्त्रमुग्ध हो जाता। उस चरवाहे ने गाय चराने का काम छोड़ दिया और घूम-घूमकर सारंगी बजाने लगा। उसे सारंगी सुनने वालों से काफी पैसा मिल जाता।

एक बार वह घूमते-घूमते गायक के रूप में राजमहल की ओर चला गया। जहाँ बड़ी बहन रानी के रूप में रहती थी। उस सारंगी के संगीत ने राजपरिवार के सभी सदस्यों को तुरंत मोहित कर लिया। सुनने वालों में बड़ी बहन (रानी) भी थी। इस संगीत का उसपर बड़ा उदासी भरा प्रभाव पड़ा जब उस विचित्र सारंगी से इस गीत का बोल निकल पड़ा–

"हमलोगों के प्यारे पिता
देने गये जंगल में
हमलोगों को तिरिल फल।
हाय! हमलोगों ने खो दिया उन्हें
हमेशा-हमेशा के लिये।
बड़ी बहन गयी पानी लाने
वह कभी नहीं लौटी और
राजकुमारी बन गयी।
अब शेष हैं मेरी हड्डियाँ।
सारंगी में इस अजनबी के
हमेशा के लिये खो गये
अपने सगे लोगों के लिये
अब रोते रहना शेष है।"

इस संगीत ने राजकुमारी के हृदय को दुःखी कर दिया और वह इस संगीत को और अधिक सुन न सकी। वह राजमहल के एक कमरे में आ गयी और फूट-फूट कर रोने लगी। राजकुमार ने उसे दुःखी देखकर उसके दुःखी होने का कारण पूछा। उसे आश्चर्य हुआ कि जिस संगीत ने पूरे राजमहल को प्रफुल्लित किया, फिर राजकुमारी क्यों दुःखी हो गयी। राजकुमार द्वारा दुःखी होने का कारण पूछने पर राजकुमारी ने प्रथम बार अपनी जीवन-कथा सुना दी और उस विचित्र सारंगी को पाने की इच्छा व्यक्त की।

राजकुमार उसे प्रसन्न रखना चाहता था। अतः उसने आदेश दिया कि सारंगीवादी राजमहल में ही मेहमान के रूप में रहेगा। उसे खाने-पीने का सभी सामान दे दिया गया। अपना भोजन तैयार करने के बाद वह नदी में स्नान करने चला गया। जब वह बाहर चला गया तो राजमहल के नौकरों ने उस सारंगी को छिपा दिया और उसी तरह की दिखने वाली दूसरी सारंगी उसके स्थान में रख दी।

सारंगीवादक ने भोजन किया और उसके उत्तम संगीत उसके स्थान में लिये। उसे यथेष्ट पुरस्कार दिया गया। जब वह विदा होने लगा तो राजकुमार ने उसे आदेश दिया कि वह सारंगी को अब उस शहर में नहीं बजायेगा। वह सारंगीवादक बहुत प्रसन्न होकर अपने घर लौट गया। परंतु घर वापस आने पर उसने पाया कि उसकी सारंगी का जादू भरा संगीत अब समाप्त हो गया है। उसने संगीतकार का कार्य छोड़ दिया और अपने पुराने चरवाहे का काम फिर से शुरू कर दिया।

कुछ समय बाद पुराना राजा के मरने के बाद राजकुमारी रानी बन चुकी थी और राजसिंहासन पर आरूढ़ हो चुकी थी। तब तक जंगल में जाकर वह अपनी छोटी बहन की खोपड़ी हड्डियाँ आदि एकत्रित कर ली थी। अस्थि के उन अवशेषों को एक नये घड़े में पिसी हुई हल्दी चावल के आटा और सिन्दूर से सजाकर एक पूजा-स्थल (जाहेर) में रख दिया। उसने सिंगबोंगा (परमेश्वर) से बड़ी तन्मयतापूर्वक प्रार्थना की कि उसकी बहन फिर से जीवित हो जाय। सिंगबोंगा ने उसकी प्रार्थना सुन ली। सिंगबोंगा से उसने अमृत का दान प्राप्त किया जिसे कलश पर छिड़क ली। उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रही, जब उसकी बहन पुनर्जीवित हो उठी। इसके बाद दोनों बहनें बहुत दिनों तक सुखपूर्वक एक साथ रहीं।

●

8

एक नवयुवती

एक युवती की शादी तय हो चुकी थी। उसकी भाभी ने उसे जंगल जाकर पत्तियाँ तोड़कर लाने को कहा ताकि बरातियों के खाने के लिए पत्तल एवं दोना बनाया जा सके। उसने पत्तियों को रूँग की लता से बाँध कर लाने का निर्देश दिया। वह वन में जाकर पत्तियाँ ले आयी। परंतु पत्तियाँ कम होने के कारण उसकी भाभी बहुत नाराज हुई और उसे अधिक पत्तियाँ लाने हेतु फिर जंगल जाने को कहा। वह दुबारा जंगल में गयी तो काफी देर हो चुकी थी। वहाँ पत्तियाँ तोड़ते-तोड़ते उसकी मुलाकात एक विशाल बाघ से हो गयी। बाघ उससे बोला, "मेरी प्यारी पौत्री! तुम क्या खोज रही हो।" युवती ने कहा, "दादा! मुझे अपने भाइयों को गीत सुनाकर खुश करना है अपना पारिश्रमिक (पुरस्कार) प्राप्त करना है।" इस पर बाघ अपनी गुफा की ओर इशारा करके बोला, "तब ठीक है। मेरे घर में आओ और तब तक बैठो जब तक तुम्हारे भाई शिकार करके वापस नहीं आ जाते।" वह उस गुफा के द्वार पर बैठ गयीं।

जब सभी बाघ शिकार से वापस आ गये तो बड़े बाघ ने कहा, "यहाँ तुम्हारी एक बहन आयी है। उसके स्वागत के लिए तुम लोगों ने क्या किया है।"

थोड़ी देर में कोई चावल ले आया, कोई पकाने का बर्तन, कोई हल्दी, नमक आदि कोई थाली लेकर आया। उन्होंने उससे मांस-भात बनाने का अनुरोध किया। जब सभी ने खाना खा लिया तो बड़े बाघ ने युवती से कहा, "मेरी प्यारी पौत्री! अब तुम अपने भाइयों को गीत सुनाओ।" तब उसने इस प्रकार गीत गाना शुरू किया—

"बाये तेदो इतुलाद मितुलाद,
काटा ते दो दरपिल-मरपिल।"

बड़े बाघ ने उसे बीच में ही रोक दिया और कहा, "मेरी प्यारी पौत्री! इस गीता को गाकर तुम अपने भाइयों को नाराज कर दोगी। इनके लिए एक अच्छा गीत सुनाओ।" तब वह दूसरा गीता गाने लगी—

"रूपा रूपा नोड़ा गोड़्को,
तिरि रियु तिरि रियु को आदो
लिस सलङ् लिट सलङ्।"

जैसे ही उसने यह गीत गाना शुरू किया सभी बाघ मिलकर नाचने लगे।

बाघ बहुत प्रसन्न हुए और उसे कपड़ा, पायल और चुड़ी पहनने को दिया। इस प्रकार कई दिनों तक वह बाघों के साथ रहकर उनका मनोरंजन करती रही।

कई दिन बीत जाने के बाद युवती ने बड़े बाघ से कहा, ''दादा! अब मैं अपने लोगों से मिलने घर जाना चाहती हूँ। मैं तुम्हारे पास फिर आ जाऊँगी।''

उसकी बात मान ली गयी। एक टोकरी चावल, एक घड़ा डियङ् और एक खस्सी से बिदाई में दिया गया। उसे घर तक छोड़ आने के लिए बड़े बाघ ने दो बाघों को प्रतिनियुक्त करते हुए कहा कि वे उसके साथ मार्ग में अच्छा व्यवहार करेंगे।

कुछ दूर जाने के बाद उन बाघों ने पूछा कि उसका घर अब और कितना दूर है। युवती ने कहा, ''मेरा घर तन्तु-गोयाकन राज्य में है।'' बाघों ने यह प्रश्न कई बार पूछा। परन्तु उसने उन्हें यही जवाब दिया। जब वे उसके गाँव के निकट खेत में आ गये तब उसने कहा, ''मेरे भाइयों! तुमलोग अब वापस चले जाओ। मेरे माता-पिता और सम्बन्धी आ रहे हैं। वे लोग तुमलोगों को मार सकते हैं।'' उसके बाद दोनों बाघ जान बचाकर भाग खड़े हुए।

जब वह घर आयी तो उसकी भाभी इतने विलम्ब से आने के कारण बहुत बिगड़ी। उसने कहा कि वह बाघों को गीत सुनाकर पारिश्रमिक कमा रही थी। इसी कारण देर हुई। उसकी भाभी ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, ''क्या वे ही तुम्हें नया कपड़ा, पायल, बाला आदि दिये हैं जिन्हें तुम पहन रखी हो।''

समूचा वृत्तान्त सुनने के बाद वह बोली, ''तुम मुझे भी बताओ कि कौन-सा गीत तुमने बाघों को सुनाया है ताकि मैं भी उस गीत को सुनाकर आमदनी कर सकूँ।'' तब उस युवती ने यह गीत सुनाया--

''बोयेतेदे इतुलाद मितुलाद,
काटा ते दो दरपिल मरपिल।''

वह दुष्ट भाभी जंगल में गयी और बड़े बाघ से मिली। बाघ ने पूछा, ''मेरी पौत्री! तुम क्या खोज रही हो।'' उसने कहा, ''मैं अपने भाइयों को गीत सुनाकर उनका मनोरंजन करने आयी हूँ।''

उसकी ननद (युवती) की तरह ही उसे भी खाना बनाने को बाघ ने कहा और खाना खाने के बाद बड़े बाघ ने गीत सुनाकर मनोरंजन करने को कहा। तब उसने गाना शुरू कर दिया, ''बोए तेदो इतुलाद...।'' तभी बड़े बाघ ने बीच में ही रोक दिया और बोला, ''मेरी पौत्री, तुम्हारे भाई यह गीत सुनकर नाराज हो जायेंगे। तुम उन्हें दूसरा गीत सुनाओ।'' चूँकि वह दूरा गीत नहीं जानती थी, उसने उसी गीत को दोहराना शुरू किया। नतीजा यह हुआ कि सभी बाघ गुस्से में आ गये। उन्होंने उसकी खोपड़ी को नोच दिया और उसपर एक काँसे का कटोरा रखकर उसे घर वापस भेज दिया। इस प्रकार उस युवती ने अपनी भाभी से बदला ले लिया।

●

9

वीर चेंडेया

बहुत दिन हुए चेंडेया नामक एक चरवाहा रहता था। घने वन में उसकी एक झोंपड़ी थी। वह वन में बकरियों को चराता और अपनी छोटी-सी झोपड़ी में बकरियों के साथ रहता था। वन के कंद-मूल-फल और बकरियों का दूध ही उसका भोजन था। वह सुबह-सुबह बकरियों को लेकर जंगल में निकलजाता और संध्या समय घर वापस लौटता।

एक दिन राजा का पागल हाथी घूमता हुआ चेंडेया की झोपड़ी के पास आ पहुँचा। चेंडेया घर में नहीं था। वह तो सुबह से ही वन में बकरियाँ चरा रहा था। हाथी ने उसकी झोपड़ी तहस-नहस कर डाला और झूमता हुआ लौट गया।

संध्या समय अब वह वापस आया तो अपनी झोपड़ी को नष्ट पाकर बहुत दुःखी हुआ। परंतु उसने उसे फिर बना लिया।

दूसरे दिन फिर सुबह वह अपनी बकरियों को लेकर वन में चला गया। राजा का पागल हाथी फिर आया और उसकी झोपड़ी तहस-नहस कर डाला। संध्या समय वापस आने पर वह दुःखी हुआ। तीसरे दिन वह जंगल नहीं गया राजा का पागल हाथी फिर आया और उसकी झोपड़ी तहस-नहस करने लगा।

चेंडेया ने गरज कर हाथी को रोका और डाँटकर बोला, "बदमाश! तुमको मैं दो दिनों से देख रहा हूँ। क्या तुम मेरी शक्ति को नहीं जानते, मैं तुम्हारी सूँड़ पकड़ कर इस तरह फेंकूँगा कि तुम सात समुद्र पार दलदल में जा गिरोगे।"

हाथी यह सुनकर बहुत डर गया। डर के कारण उसका पागलपन भी छूट गया। महल में आने पर उसने खाना-पीना सब छोड़ दिया।

राजा उसको बहुत प्यार करता था। उसकी ऐसी हालत देखकर राजा ने इसके कारण का पता लगाया। अन्त में सही बात का पता लग जाने के बाद चेंडेया राजा के पास लाया गया। चेंडेया ने सारी बात कह सुनायी। परंतु राजा बहुत नाराज हुआ और क्रोध में आकर बोला, "यदि तुम इसे (हाथी को) सात समुद्र पार नहीं फेंकोगे तो तुम्हें कुत्तों से नुचवाऊँगा। यदि फेंक दोगे तो तुम्हें

आधा राज्य और अपनी बेटी दे दूँगा।''

चेंडेया ने शर्त मान ली। दूसरे दिन एक बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गयी। एक बड़े मैदान में हाथी को लाया गया। चेंडेया शान के साथ आगे बढ़ा। उसने हाथी की पूँछ पकड़ी और ऐसी फेंका की किसी को अता-पता भी नहीं चला कि हाथी कहाँ गिरा।

सभी लोग चेंडेया की वाहवाही करने लगे। परंतु राजा बहुत चिन्तित हो गया कि वह एक चरवाहा से अपनी बेटी की शादी कैसे करे। अतः उसने बहाना बनाया कि चेंडेया उस हाथी को फिर यहाँ ला दे तो उसे शर्त की सारी चीजें मिल जायेंगी।

चेंडेया भी हार मानने वाला नहीं था। वह हाथी की खोज में चल पड़ा। रास्ते में उसे एक बलवान् आदमी मिला। वह लोहे के हल से चट्टान को जोत रहा था। चेंडेया बहुत खुश हुआ और उसकी खूब प्रशंसा की। पर उसने कहा कि चेंडेया के आगे तो वह तिनका भर भी नहीं है। चेंडेया बहुत खुश हुआ और असली परिचय दिया। चेंडेया ने उसे अपने साथ कर लिया और दोनों सात समुद्र पार दलदल की खोज में चल पड़े।

रास्ते में उन्हें एक और आदमी मिला। वह सात बैलगाड़ियों में लकड़ी भर कर उन्हें अपने हाथों से खींच रहा था। चेंडेया उसे देखकर बहुत खुश हुआ उसकी बहुत प्रशंसा की। परंतु उस आदमी ने कहा कि वह तो कुछ भी नहीं है। सबसे बड़ा वीर तो चेंडेया है। चेंडेया ने कहा, ''मैं ही वह व्यक्ति हूँ।'' यह सुनकर वह बहुत खुश हुआ और वह भी उन दोनों के साथ चल पड़ा।

बहुत दिनों तक चलने के बाद तीनों सात समुद्र पार दलदल में जा पहुँचे। तीनों ने मिलकर हाथी को दलदल से निकाला। चेंडेया दोनों को अपनी जगह छोड़कर हाथी के साथ राजदरबार में आ पहुँचा।

राजा ने चेंडेया के साथ हाथी को देखकर हार मान ली। उसने अपना आधा राज्य चेंडेया को दे दिया और अपनी पुत्री की शादी भी उसके साथ कर दी। चेंडेया जब राजा हुआ तो अपने दोनों साथियों को मंत्री और सेनापति बनाया। कुछ दिनों के बाद राजा बूढ़ा हो गया। उसे कोई लड़का नहीं था। अतएव उसने अपना सारा राज्य चेंडेया को ही दे दिया और खुद साधु बन गया।

चेंडेया बहुत शक्तिशाली राजा हुआ। उसने बहुत-से देश जीते और शान्तिपूर्वक राज करने लगा।

●

10

रितुई गोन्डाई

प्राचीनकाल में जगरनाथपुर (कोल्हान) में जगन्नाथ सिंह नामक एक राजा रहता था। उसके पास घोड़े-हाथियों का एक बड़ा समूह था। वह जब शिकार के लिए निकलता था तो हाथी के गले में सोने का घंटा पहना देता था। उसकी कचहरी उसी जगह पर थी जहाँ गंगाराम मानकी का मकान अवस्थित है। वह कचहरी में उसी हाथी पर चढ़कर आया करता था।

मिरगीलिन्डी गाँव में रितुई गोन्डाई सिंह्कू नाम का एक हो रहता था। वह बहुत धनी था और अपनी ताकत के लिए प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि वह अकेले ही दस आदमियों के साथ मुकाबला कर लेता था।

उसकी प्रसिद्धि राजा के कानों तक पहुँची। एक दिन की बात है कि एक घाँसी ने राजा के हाथी के गले का घंटा चुराकर रितुई गोन्डाई के हाथों बेच दिया। कुछ लोगों का कहना है कि घांसी ने वह घंटा बेचा नहीं था, वरन् चुपके-से रितुई के घर के पीछे लटका दिया जिससे कि उसपर चोरी का इल्जाम लगे।

जब राजा को घण्टा की चोरी का पता चला तो उसने इलाके के सभी मानकी-मुण्डा को इत्तिला कर दिया और उस घण्टा का पता लगाने वाले को इनाम देने की घोषणा कर दी। घाँसी और सिपाही उस घण्टे की तलाश में चारों ओर निकल पड़े।

एक घर में एक मुर्गी अण्डा पर बैठी थी। जब मुर्गी बाहर निकलने के लिए उड़ी तो घण्टा से टकराने पर घण्टा की आवाज गूँज उठी। उस घर का मालिक था रितुई गोन्डाई। रितुई गोन्डाई को चोरी के इल्जाम में गिरफ्तार किया गया और राजा के पास लाया गया। राजा ने हुक्म दिया कि रितुगई को ढेंकी में कूट-कूट कर मारा जाय।

दस लोगों ने ढेंकी उठायी और बीस लोगों ने रितुई को पकड़ कर रखा। रितुई के पीठ पर सात बार ढेंकी गिराकर उसे मार डालने का प्रयास किया गया। उसे ढेंकी से कूट-कूट कर मारा गया।

रितुई का शरीर जिस स्थान पर गाड़ दिया गया था, वहाँ एक तालाब अभी भी देखा जा सकता है। वह तालाब अभी भी रितुई गोन्डाई पोखरी के नाम से जाना जाता है। वह तालाब जगन्नाथपुर के दक्षिण में अभी भी मौजूद है।

●

11

तुड राजा की पंचायत

प्राचीन काल में सिंहभूम में सिंह वंश के राजा राज करते थे। उससे भी पूर्व यहाँ कोल राजा रहते थे। कोल वंश वाले बोंगाबुरू की आराधना करते थे, जिन्होंने उन्हें रचा था।

हजारों वर्ष पूर्व पोड़ाहाट पीड़ में पूनम नामक राजा राज करता था। उनके वंशज बाद में अलग-अलग क्षेत्रों में राज करने लगे। इनमें से कुछ चकहा (चक्रधरपुर), कासे (खरसावां), सलि नदी के किनारे (सराईकेला) आदि जगहों पर चले गये और राज्य का बँटवारा कर शासन करने लगे। कुछ लोग छोटानागरा जाकर राज करने लगे।

मनोहरपुर में चूड़ामणि नामक राजा रहता था। उसकी सात रानियाँ थीं। सबसे छोटी रानी छोटानागरा में रहती थी।

एक बार राजा शिकार में गया। राजा की अनुपस्थिति में रानी ने अपने मामा के साथ गलत सम्बन्ध स्थापित किया जिसे राजा जान गया। वह इसपर बहुत क्रोधित हुआ और उसे जान से मारने का निश्चय किया।

जब रानी को पता चला तो वह डरकर भाग गयी। उसके साथ उसकी दासी भी भाग गयी। गर्भवती रानी अपनी माँ के पास चली गयी। उसकी माँ गरीब थी और उसका घर जर्जर था। उसने वहीं गोहाल घर में एक बच्चे को जन्म दिया उसका नाम ''रेको'' रखा गया।

वह लड़का बड़ा होने पर बैलों को लेकर धान का बीज बोने लगा। बैलों, भैंसों आदि की सेवा वह गोहाल में रहकर करने लगा। इसपर ''गोटो बोंगा'' उसकी सहायता करने आ गये। सिंगबोंगा भी उस पर कृपा करने लगे। वह बाघों को भी इकट्ठा करके उनकी चरवाही करता। वह बाघों से खेत को भी जोतता। उसने बाघों को खेती के काम में लगाया। इसीलिए वह ''सिंह'' वंश का कहलाने लगा।

उसने चारों दिशाओं को अपने अधिकार में कर लिया। वह हर वर्ष जमीन को खेती योग्य बनवाता गया। सभी जगह बस्तियाँ बसायी। उसने आचार-विचार

(फैसला) करने के लिए पंचायत का निर्माण किया।

उसने अपने राज्य का नाम छोटानागरा से छोटानागपुर रखा। पंचायत में विचार करने के लिए वर्ष में एक बार पंच लोग जुटते थे। वह गाँव के बारे में मुण्डा से और कई गाँवों के बारे में मानकी से राय लेता था और उनका प्रभार उन्हें सौंप दिया। उसने विभिन्न विषयों से सम्बन्धित कार्यों के निष्पादन के लिए सन्डी, गोन्डाई, सरदार, मानकी, मुण्डा, गाण्डिया, ससगड़ आदि बनाया। गाँवों में मकान बनाने के लिए लकड़ी का पट्टा देने की प्रथा चलायी। मर जाने पर गाँव के किनारे गाड़ने और पत्थर देने की प्रथा चलायी। बाद में उसने पूरे छोटानागपुर को चौरासी पीड़-बुन्डु, तमाड़, हंसदा आदि में विभक्त किया। इस प्रकार बण्डुआ से बुण्डु, पीड़ और बड़ा बुण्डु, पीड़ और बड़ा ताम्बारा से तमाड़ पीड़ बना।

●

12

एक घड़ियाल दामाद

किसी समय एक ''हो'' की पत्नी गर्भवती थी। एक अच्छे पति की तरह उसने उसकी आवश्यकताओं की ओर काफी ध्यान दिया और जब उसकी नाजुक हालत हो गयी तो उसे पौष्टिक आहार देने लगा। उसके पड़ोस में एक घड़ियाल था जो बगल के तालाब में रहता था। उसने तालाब के ऊँचे मेड़ पर कद्दू, कोंहड़ा, साग आदि लगाया। यह घड़ियाल उस ''हो'' के लिए सब्जी के पहरेदार का कार्य करता था। एक दिन दोस्ती में ''हो'' ने घड़ियाल से अपनी पत्नी की वर्तमान स्थिति के बारे में बोला। दोनों में यह तय हुआ कि यदि लड़का होगा तो वह घड़ियाल का अनन्य मित्र होगा और यदि लड़की होगी तो घड़ियाल से शादी करनी होगी। उस समय उस ''हो'' दम्पत्ति को एक लड़की हुई। वह बालिका अपने माता-पिता के घर में बढ़कर अब युवती हो गयी। एक दिन वह अपनी माँ के साथ तालाब पर गयी। उसने पानी पर एक खिले हुए कमल फूल को देखा और उसे पाने के लिए इच्छा व्यक्त की। उसकी माँ ने उसे पानी में उतर कर उस फूल को तोड़ लेने को कहा। वह जैसे ही पानी में पैर डाली कि उसका पैर घड़ियाल के पीठ पर पड़ गया जो उसे पाने के लिए मौके की तलाश में था। वह लड़की को पीठ पर लिए हुए धीरे-धीरे गहरे पानी में तैरने लगा। जब वह अपने घुटने पर पानी में गयी तो वह गीत गायी--

''माँ मेरे पैर घुटने तक पानी में है
और वे भींग रहे हैं।''

उसकी माँ ने भी गाया--

''मैं क्या करूँ प्यारी बच्ची
तुम्हारे बाप ने घड़ियाल के साथ वादा किया है
अब घड़ियाल तुम्हें पत्नी के रूप में चाह रहा है।''

वह लड़की धीरे-धीरे पानी में घुटना, छाती और गर्दन तक डूबती गयी और वह इस सम्बन्ध में गीत गाती गयी। पर उसकी माँ पहले की भाँति अपने गीत

दुहराती गयी। अन्त में वह गहरे पानी में ले जाई गयी जहाँ घड़िया का आवास था। अपने घर में उसे आराम से रखकर घड़ियाल पानी के ऊपर आया और अपनी सास से बोला कि वह पुराने समय से चली आ रही रीति को मानेगा और मधुयामिनी बिताकर वह अपनी पत्नी के साथ अपने सास-ससुर के घर जायेगा। अपने जल में बने, घर में वापस आकर उसने कहा कि उसके ससुराल जाने के लिए वह "डियङ्" तैयार करे। मधुयामिनी बिताने के बाद नव-दम्पत्ति दुल्हन के घर जाने के लिए चल पड़े। रीति के अनुसार लड़की अपने माथे पर "डियङ्" का घड़ा लेकर चल पड़ीं। घड़ियाल कभी जमीन पर चलने का अभ्यस्त नहीं था। वह पत्नी के अनजाने में पीछे रह गया।

जब लड़की घर पहुँची तो माँ ने पूछा, "हमलोगों का प्यारा दामाद कहाँ है?" "तुम्हारा दामाद सुस्त (धीरे) चलने वाला है।" लड़की ने कहा, "वह बहुत देर बाद आयेगा।"

माँ ने तब अपने लड़के को कहा, "मेरे बेटे, तुम जाओ और अपने अच्छे बहनोई को स्वागतपूर्वक ले आओ।" वह युवक बताये गये रास्ते की ओर चल पड़ा। वह बहुत दूर चला गया परंतु किसी को नहीं पाया। उसने विपरीत दिशा से एक कुरूप रेंगने वाले जीव (जन्तु) को धीरे-धीरे सरकते हुए आते देखा वह भय से काँपते हुए भाग खड़ा हुआ और अपने लोगों को अपना अनुभव सुनाने लगा। उसकी बहन ने कहा कि उसने उसे ठीक देखा है। पर वह अपने बहनोई को पहचान नहीं सका। उस लड़के को जब पता चला कि उसकी बहन का पति घड़ियाल है, तो वह अपनी हँसी रोक नहीं सका। जब घड़ियाल ससुराल पहुँचा तो काफी गर्मजोशी से उसका स्वागत हुआ। उसने सुअरों की नाद में पीने के लिए बहुत प्रयास किया। लेकिन वह नशाखोर घड़ियाल उसके हाथों को इतना जोर से नोचा और काट दिया कि उससे खून का फौवारा फूट निकला। इससे वहाँ के लोगों में क्रोध पैदा हो गया जो वहाँ जुटे थे और "डियङ्" पीकर काफी नशे में थे। वे भाला, लाठी तथा अन्य हथियारों से लैस होकर आये और उसी स्थान पर मारकर काम तमाम कर दिया।



13

दो सियार, एक बाघ और एक बन्दर

पशुलोक में सियार एक चतुर, धूर्त एवं आलसी पशु के रूप में माना जाता है। बाघ वीरता एवं मोटी बुद्धि का प्रतीक है। बन्दर चालबाज एवम् नकलची पशु माना जाता है। प्रस्तुत कहानी में इन पशुओं की चारित्रिक विशेषताएँ उभर कर सामने आयी है।

एक वन में एक सियार युगल रहते थे। जब मादा सियार को बच्चा को जन्म देने का समय आया तो उसने अपने पति से एक अच्छा एवं बड़ा माँद बनाने का अनुरोध किया। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए उसने अपनी पत्नी से भरपूर भोजन की माँग की ताकि वह शरीर से मजबूत होकर इस कठिन कार्य को सम्पन्न कर सके। वह बेचारी उसे अच्छा-अच्छा भोजन देती रही और वह माँद बनाने का आश्वासन देता रहा। जब समय निकट आ गया तो वह उस माँद में ले चलने को कहने लगी। सियार उसे लेकर एक बहुत बड़े माँद में चला गया जो बाघ का था। परन्तु उसने उसे अपना नव-निर्मित माँद बताया। उसकी पत्नी डर गयी कि कहीं कोई बाघ आकर उसे निकाल न दे। परन्तु वह समझा-बुझाकर वहीं रहा। उसके बच्चे हुए। इसी बीच वह बाघ आता दिखाई पड़ा, जिसकी गुफा थी। मादा सियार ने पति से उसकी रक्षा का उपाय करने को कहा। पर वह असमर्थ रहा। अन्त में उसे एक उपाय सूझ गया। उसने अपने बच्चों को रुलाना शुरू किया। अब बाघ दरवाजा पर आ गया तो मादा सियार ने बच्चों को डाँटकर कहा, "तुम लालची बच्चे, अभी तुम लोगों को सात बाघ का जिगर खिलायी हूँ। फिर भी तुम्हारा पेट नहीं भरा। एक बाघ आया है। जोर से मत चिल्लाओ नहीं तो वह भाग जायगा।" बाघ यह सुनकर भयभीत हो गया और भाग चला।

बाघ को रास्ते में एक बन्दर मिला जिससे बाघ ने पूरी घटना सुनाई। बन्दर ने बाघ को अपने साथ गुफा में निर्भय होकर चलने को कहा। उसने अपनी पूँछ उसकी पूँछ में बाँध ली। जब दोनों उस गुफा के सामने पहुँचे तो मादा सियार ने बन्दर को डाँटते हुए कहा, "तुम काहिल बन्दर! मैं तुम्हें सात बाघ लाने के लिए

कहा था और तुम केवल एक लाये? मैं तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगी।''

इतना सुनना था कि बन्दर को घसीटता हुआ बाघ भाग चला। कुछ दूर जाने पर खरोंच और चोट लगने के कारण बन्दर की पूँछ मुक्त हो गई।

अब बन्दर और बाघ दुश्मन हो गये और एक दूसरे से बदला लेने का अवसर ढूँढ़ने लगे। बन्दर एक बार 'सोसो' (भेलवा) का बीज फोड़ते हुए बाघ से मिल गया। बन्दर ने बताया कि वह अपने खरोंच से हुए जख्म की दवा तैयार कर रहा है। बाघ ने भी उस दवा की याचना की। बन्दर ने उसे यथेष्ट मात्रा में दे दिया। अब बाघ उस 'सोसो' तेल को जख्म पर रगड़ने लगा तो उसकी जलन से चिघ्घाड़ उठा। तब तक बन्दर गायब हो चुका था। बाघ उसे पकड़ कर मारने का अवसर ढूँढ़ने लगा। बाघ मधुमक्खी के छत्ता को 'मांदल' समझकर बजाने पर मधुक्खियों के दंश से उत्पीड़ित हुआ तो एक अन्य अवसर पर उसने बाघ को पेड़ की डाल पर बैठाकर सूखी पत्तियों में आग लगाकर उसे जलाकर मार डाला।

●

14

फूल की परी

प्राचीन काल में दो भाई रहते थे। उनके पास रहने के लिए केवल घर था। परन्तु खेती के लिए जमीन नहीं थी। वे फल-फूल खाकर ही रहते थे जिसके लिए वे प्रतिदिन जंगल जाया करते थे।

एक दिन बड़ा भाई पानी की खोज करते-करते एक तालाब के निकट पहुँचा। उसके किनारे एक गुरन्डी (गुलइची) फूल का एक पेड़ था। उसके ऊपर एक बहुत ही सुन्दर फूल खिला हुआ था। वह उसे देखकर बहुत खुश हुआ और उसे तोड़कर घर लाया। उसने उसे सुरक्षित रख दिया।

दूसरे दिन पूर्व की तरह दोनों भाई फल-मूल की खोज में जंगल में चले गये। जब वे वापस आये तो उन्हें दाल, भात और सब्जी किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा तैयार कर रखा मिला। वे खाना खाये और सोने चले गये।

दूसरे दिन वे पुनः जंगल में कन्द-मूल इकट्ठा करने चले गये। जब वे वापस आये तो पूर्व की भाँति अपना खाना तैयार पाया। उनकी उत्सुकता बढ़ गई और उनलोगों ने उस अज्ञात रसोइया का पत्ता लगाने का निश्चय किया। बड़ा भाई घर में ही छिप गया और दूसरा (छोटा) कन्द-मूल लाने जंगल चला गया। बड़ा भाई दिन-भर निगरानी करता रहा। परन्तु नमक और तम्बाकू बेचने वाले की आवाज सुनकर थोड़ी देर के लिए बाहर गया। जब वापस आया तो खाना तैयार पाया। इस प्रकार रहस्य-रहस्य ही बना रहा।

दूसरे दिन छोटा भाई निगरानी करने लगा और बड़ा भाई जंगल चला गया। छोटा भाई अपने को जलावन की लकड़ी के ढेर में छिपा लिया था। कुछ देर बाद उसने अप्रतिम सौन्दर्य से युक्त एक परी को गुरन्डी फूल से निकलकर आते देखा। जब वह जलावन की लकड़ी लेने आई तो छोटे भाई ने उसका हाथ पकड़ लिया और बड़े भाई के साथ उसकी शादी कराने का वादा किया। उसके बाद शादी हो जाने पर वह फूल की परी उसकी भाभी के रूप में उस घर में रहने लगी। वह खाना बनाने तथा घर का अन्य सभी काम करने लगी। कुछ दिनों बाद वह

गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया जो बहुत सुन्दर था।

एक दिन जब वह पानी लाने गई थी, उसका पति बच्चे को घुटने पर नचा रहा था और यह गीत गा रहा था--

"गुरन्डी के सुन्दर फूल से पैदा हुए,
ऐ मेरे प्रिय शिशु,
शरीर अभी भी सुगन्ध भरा है,
उस मधुर पुष्प की कली-सा।"

उसकी पत्नी (परी) ने गीत को सुना और कहा, "अभी तक मैं अपने लोगों से (परी लोक से) अलग रहते-रहते ऊब गई हूँ। अब आज हमारे समाज वाले मुझे वापस ले जाना चाहते हैं। अब और अधिक मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती।"

ऐसा कहकर वह तुरन्त गुरन्डी फूल में समा गई और आँखों से ओझल हो गई। जिस वृक्ष से वह फूल तोड़ लाया था, उस पर अनेक फूल खिल गये। उसका पति अपने छोटे भाई और बच्चे के साथ उस पेड़ के निकट गया और जोर-जोर से परी को पुकारा। पर सब व्यर्थ हुआ। वह परी को फिर से नहीं पा सके।

●

15

एक सांभर धातृ

एक युवक का पालन-पोषण बचपन से ही जंगल में एक मादा सांभर द्वारा किया गया था। वह उस लड़के को अपनी पीठ पर उसी प्रकार बैठाकर घुमाती चलती थी जैसे माँ अपने बच्चे को लेकर घूमती है।

एक बार निकटवर्ती गाँव की कुछ युवतियाँ जंगल में पत्ता तोड़ने और लकड़ी चुनने गई थी। उनमें से एक ने सांभर की पीठ पर उस नौजवान को बैठा देख लिया। वह उसके स्वस्थ एवं सुन्दर शरीर और लहराते केशों को देखकर मंत्रमुग्ध हो गई। वह कुँवारी युवती (डींड फाई) प्रथम दृष्टि में ही उस युवक से प्रेम कर बैठी। वह पत्ती तोड़ना और लकड़ी इकट्ठा करना भूल गई खाली टोकरी लिए घर वापस आ गई। घर आकर उसने काम करना तथा खाना-पीना भी छोड़ दिया। उसके माता-पिता ने उसके दुःख का कारण जानना चाहा। उसने कहा, ''उसे तब तक शान्ति नहीं मिलेगी जब तक सांभर की पीठ पर बैठकर घूमने वाला अजनबी युवक उसे पति के रूप में प्राप्त नहीं हो जाता।''

उस युवती के सात भाई थे। वे सातों नौजवान अपने तीर-धनुष और कुल्हाड़ी आदि लेकर उसके प्रेमी की खोज में निकल पड़े। बहुत लम्बी और थकान भरी यात्रा करने के बाद उन्हें सांभर की पीठ पर बैठा वह युवक दिखाई पड़ा। परन्तु वह सांभर इतनी तेजी से दौड़ी कि वे उसे नहीं पकड़ सके। पूरे आठ दिनों तक वे उसका पीछा करते रहे। अन्त में वह युवक अपनी सांभर धातृ से बोला, ''प्यारी माँ! तुम आठ दिनों से मेरी रक्षा करने हेतु बिना खाये-पीये भागती रही हो। ये लोग अभी भी पीछा कर रहे हैं। तुमने मेरे लिए काफी कष्ट सहे। तुम मुझे यहीं उतार दो और तुम दूर चली जाओ।''

वह सांभर धातृ बहुत समझाने पर राजी हुई और उसने युवक को जमीन पर उतार दिया और घने जंगलों में भाग गई। सातों भाई विजयी होकर उस युवक को लेकर घर आये। उसे नहलाया गया और तेल लगाया। प्रथम बार उसके केशों को कंघी से संवारा गया। पूरे हर्षोल्लास के साथ शादी सम्पन्न हुई।

शादी थोड़े दिनों बाद उस युवक ने यह प्रस्ताव किया कि उसकी सांभर धातृ को मार दिया जाय और सामाजिक भोज का आयोजन किया जाय। इस प्रकार वह अपने सात सालों के साथ जंगल में शिकार खेलने गया। वह सांभर उन्हें जंगल में मिल गयी। सातों अपने तीरों से उसे निशाना बनाने लगे। पर कोई उसे मार नहीं सके। वह सांभर निर्भय होकर अपने पोस-पुत्र के पास आई और उसे ऐसा चाटने लगी जैसे गाय अपने बछड़े को चाटती है। वह फिर जंगल में भाग गयी। वे लोग उसका शिकार करने के लिए लगातार घूमते रहे।

तीन दिन बीत जाने के बाद सांभर रुक गयी और बोली, "तुमने मुझे बहुत सताया है। मेरे कष्ट और मत बढ़ाओ। अगर तुम इसी से खुश हो तो मेरे जीवन का अन्त कर दो।"

इस पर उस युवक ने उसे तीर मार दिया और वह मर गयी। मरते समय उसने युवक से कहा, "मेरा अन्तिम अनुरोध है कि तुम मेरी हड्डियों को गाड़ दोगे। उसके सात दिन बाद तुम वहाँ जाकर देखोगे तो कुछ आश्चर्यजनक बात पाओगे।"

उस पूरे परिवार को तथा समाज के लोगों को उस सांभर के मांस से अच्छा एवं सुस्वादु भोज मिला। अकेले उस युवक ने उसका मांस नहीं खाया। उसके कथनानुसार उसने हड्डियों को लेकर चींटी के बाँबी में गाड़ दिया। सात दिनों के बाद वह वहाँ गया और उस स्थान पर गया जहाँ हड्डी गाड़ी गयी थी और वह पैर फैलाकर खड़ा हो गया। देखते-देखते वह सांभर उसे बाँबी से निकली, उस युवक को पीठ पर उठायी और पूरे वेग से उसे सुदूर जंगल में भाग गयी। उसके सातों साले उसे दूर-दूर तक खोजते रहे। पर सब व्यर्थ हुआ। वे उदास होकर घर लौट आये।

●

16

वधू का चुनाव

वीर सिंह जब बूढ़ा हो चला तब उसे अपने एकलौते पुत्र रसिका की शादी की चिन्ता हुई। रसिका की माँ भी घर काकाम-धाम अपनी बहू को सौंप कर दुनियादारी से मुक्त होना चाहती थी।

एक दिन वीर सिंह ने रसिका से कहा, "हे पुत्र! अब हम दोनों बूढ़े हो चले। अब तुम्हारी शादी हो जानी चाहिए। अपनी बहू के लिए हमने तीन कन्या को देखा है। एक गाँव के पूर्व में, दूसरी पश्चिम में और तीसरी दक्षिण में है। अब तुम तीनों में से एक को चुनकर बताओ ताकि तुम्हारी शादी अविलम्ब कर दी जाए। होशियारी से वधू का चुनाव करना। "मड़ं बुरू कंणा डोम" अर्थात् आँख रहते अन्धा न बनना।"

रसिका ने कहा कि यदि आपकी ऐसी इच्छा है, तो ऐसा ही होगा, "अयं गूगु दिरि लेकानिः" यानी मेरे लिए इशारा ही काफी है। पिताजी! अब मैं एक भिखारी का रूप धारण कर परीक्षा के लिए जाता हूँ।

वीर सिंह ने अपने बेटे को आनन्द से विदा किया।

रसिका के पिता ने चुने हुए गाँवों में से एक गाँव में पहुँच कर आवाज लगाई, "भिखारी को थोड़ा-सा अन्न मिले मालकिन! भूख-प्यास से मर रहा हूँ। कुछ मिले मालकिन!"

भिखारी को देखकर घर से एक युवती आई और बोली, "ओ भिखारी! कल भी धान नहीं कूटा गया। लो थोड़ा-सा चावल ही ले लो।"

भिक्षा ग्रहण करते हुए रसिका बोला, "युग-युग जीओ मालकिन! तुम कितनी अच्छी हो।"

और रसिका घर वापस चला आया।

वीर सिंह ने रसिका से पूछ, "क्या समाचार है बेटा!"

रसिका ने कहा, "वे तो बड़े ही धनी और दानी प्रतीत होते हैं। अच्छी तो थी, पर घर को ठीक से नहीं रख सकेगी। कल मैं दूसरे गाँव को जाऊँगा। लेकिन

एक बात है "केड़ा रेचा दिरिंगे नेली, हड़ा रेचा दुटायं लेकाइ" यानी काड़ा हो तो देख सींग कर पहचानूँ और बैल हो तब न दाँत गिनकर बताऊँ।

यह सुनकर वीर सिंह ने कहा, "नहीं जानते हो बेटा! कहा जाता है, "मोचागें सिबिला बुछु रेयां हकु, सोया रेयो ञिलु" अर्थात् बातचीत ही स्वादिष्ट है आयु की विशेष चिन्ता नहीं।

दूसरे दिन रसिका दूसरे गाँव के एक घर के पास पहुँचा और आवाज लगाने लगा, "मेरे मालिक, मुझे कुछ मिल जाए। फटा-पुराना कपड़ा ही सही, खुद्दी-चुन्नी ही सही। मिलजाय मालिक! थोड़ा-सा मांड़-पानी भी मिले मालकिन!"

घर से एक युवती निकल कर बोली, "ओह! रोज परेशान हूँ भिखमंगों से! कोई कपड़ा माँगता है, कोई चावल, कोई मांड़! तुम लोगों ने तो परेशान कर दिया।"

रसिका गिरगिराया, "बहुत भूखा हूँ माईजी!"

गिरगिराने पर युवती ने रसिका को भीख दे दी।

तीसरे दिन वीर सिंह ने रसिका से पूछा, "क्या समाचार है बेटा?"

रसिका ने कहा, "आपने कैसी वधू चुन रखी है? वह भी पसन्द नहीं आई। वह तो चिड़चिड़ी और गंवार मालूम पड़ती है। बिना विचारे, बिना देखे-सुने भीख दे बैठती है। आज तीसरे गाँव की ओर जा रहा हूँ। मेरी माताजी पानी भरने गई है। आने पर उनसे पूरा समाचार कह दीजियगा।"

रास्ते में ही माँ से मुलाकात हो गई। माँ ने आशीर्वाद दिया, "मेरे दुलारे, सकुशल आना। लौटकर खुशखबरी सुनाना। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहे।"

रसिका ने माँ को प्रणाम करते हुए कहा, "उलि दरू रे उलिगे जो ओडा यानी आम के वृक्ष पर आम ही तो फलता है।"

रसिका गाँव पहुँच गया और आँगन के समीप खड़ा होकर ऊँची आवाज में कहने लगा, "बड़ी भूख लगी है मालिक! खाने को कुछ मांड़-पानी मिल जाए।"

घर से एक युवती निकली। इस युवती का नाम था–बुधनी। बुधनी बोली, "कौन है! अरे भिखारी! इतना मोटा-तगड़ा जवान! क्या तुम भिखारी हो? शायद तुम आलसी हो! काम कर नहीं खाते, आलसी हो; जाओ, तुम्हें कुछ न दूँगी। अन्धे, लंगड़े और निकम्मे को दी जाती है। और देखो, हमारी "हो" जाति की यह प्रथा नहीं है। जाओ, चले जाओ। नहीं तो हमारे घर में नौकरी करो।"

रसिका कड़े स्वर में बोला, "खूब बचाकर रखना।" और विदा हो गया।

वीर सिंह ने रसिका को खुश देखकर पूछा, बेटा! आज तो बहुत खुश मालूम होते हो! कुछ समाचार हमें भी तो सुनाओ।

रसिका ने कहा–कल जिसके घर मैं गया था, उसका नाम और काम तो बहुत

उपयुक्त है। बुधनी वास्तव में बुद्धिमती है। उसने मुझसे कहा–पै-यम तेयां अर्थात् इतने तगड़े नौजवान! आलस में भीख माँगते हो। पिताजी, क्या यह बात सच है कि हो आदिवासी लोग भीख नहीं माँगते? तब कमजोर लोग कैसे जीते हैं?''

वीर सिंह ने उत्तर दिया, हाँ पुत्र! यह बात सही है। भीख माँगने बुरा समझते हैं। जो चल-फिर नहीं सकते, अधिक परिश्रम नहीं कर सकते, उन्हें वैसे काम दिए जाते हैं, जिन्हें वे आसानी से कर सकें। अच्छी बात है, तुमने वधू का चुनाव कर लिया। अब शादी-ब्याह की बात शुरू कर देनी चाहिए। अब हम अगुआ को भेजेंगे। तय हो जाने पर उनलोगों को बुलाकर पन दिया जाएगा उसके बाद शादी होगी। शगुन विचार होने के बाद शादी होगी।

इस तरह ब्याह सम्बन्धी बात खत्म हुई।

इसके बाद रसिका ने वीर सिंह से कहा–अब कुटुम्बों को बुलाना चाहिए, साक्षात्कार में अब कम ही दिन बचे हैं।

कुटुम्बगण आये। वीर सिंह ने कहा–''भाइयों! गौशाला में जानवर, यह लो पन का बकाया 20 रुपये और उसके अलावा यह 20 रुपये भी रख लो, जिसे साक्षात्कार के बाद पुत्र-वधू को देना है।''

उधर बुधनी पहले ही सुन चुकी थी कि युवक बड़ा बुद्धिमान है, फिर भी पन लेने के ख्याल से अपने पिता से बोली, ''बारात पहुँचने के पहले ही, हमारे गाँव के किनारे रास्ते पर एक ठेहुने भर गढ़ा खोदवाएँ, जिससे होकर बारात वाले आयेंगे गढ़ा कीचड़ से भरा हो और उसके हर ओर कटोरे में तेल रहना चाहिए। जब बारात वाले आएँ तब उनसे कहा जाय कि आप लोग इस कीचड़ से होकर आवें तब यह ठीक माना जायगा।

बुधनी के पिता ने कहा कि ऐसा ही किया जाएगा। ....

बारातवालों को देखकर मानी कहने लगा–प्रिय बन्धुगण! आप लोग इसी कीचड़ से होकर इस पार आवे और तब इस तेल को आपके पैर में मखाया जाएगा।

बारातवाले रसिका के पास जाकर कहने लगे, रसिका भाई! ये लोग तो कीचड़ की राह से पार होने को कह रहे हैं। इतना ही नहीं, पार होकर बिना धोए तेल मखाने को भी कह रहे हैं। अब क्या हो?

रसिका ने कहा, आप लोग चिन्ता न करें। चलिए, पहले पार हो जाएँ। इसके बाद मकई का डंठल देकर कहा, भाइयो! इससे पैरों के कीचड़ कुरेद कर निकाल दें तब तेल मखाया जाएगा।

इस तरह दोनों की शादी हो गई।

●

17

जंगल के देवता : बीर बोंगा

उस दिन आधी रात को जब मैं बिस्तर से उठा तो वह जाड़े की ठिठुरनभरी रात थी। कमरे में सोये मेरे सभी छात्र मित्र गाढ़ी निद्रा में सोये हुए थे। किसी को कुछ भी पता नहीं था कि मैं सुबक-सुबक कर रोने लगा था। मैंने स्वप्न देखा था कि दूर से दीखने वाले नीले पहाड़ों के बीच रहनेवाला वह बूढ़ा चरवाहा मर गया है जो मुझे बहुत प्यार करता था। जब हम बहुत छोटे थे, तो नीले पहाड़ों से घिरे उस पहाड़ी और जंगली गाँव में हम अक्सर जाया करते थे। वह बूढ़ा चरवाहा हमें बड़ी अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाया करता था। जब हम उसके पास पहुँचते थे, तो वह बहुत खुश होता। उसकी सुफेद चमकती दाढ़ी खुशी से थिरकने-सी लगती थी। वह अपने यहाँ रखे जंगली फल हमें खाने को देता और कहानियों का सिलसिला शुरू हो जाता....।

वह बूढ़ा कहता, दो जो आधे नीले, आधे हरे पहाड़ देखते हो न, उसकी तलहटी में वो जो घना जंगल है, वहाँ एक देवता रहता है, उसे वीर बोंगा यानी जंगल का देवता कहते हैं। वह जंगल के पशु-पक्षियों की रक्षा करता है। उसकी पूजा किए बिना शिकार नहीं मिलता। अगर तुम शिकार पर तीर चलावोगे भी तो या तो निशाना चूक जाएगा या तीर लगने के पहले ही शिकार भाग जायेगा। वह बूढ़ा फिर कहता कि उसी पहाड़ के नीचे एक बड़ा घना जंगल है। जंगल के बीच एक सोता है। यहीं 'मरंग बोंगा' यानी सबसे बड़े देवता का निवास है। हमारे कबीले के लोग उनकी पूजा करते हैं। उस पवित्र सोते को कभी अपवित्र नहीं किया जाता है। अगर कोई पानी पीना भी चाहता है तो पत्ती के दोने को साफ कर पानी पीकर फिर उस दोनों को दूर फेंक देना पड़ता है। दुबारे पानी पीना हो तो पुनः ताजे एवं साफ दोनों से ही पानी पीना पड़ता है। वहाँ कोई अश्लील बातें नहीं बोल सकता, पेड़ काटना, पत्ती तोड़ना और वहाँ शराब पीना वर्जित है। वह बूढ़ा कहता था कि जब 'माघे परब' के दिन मरांग बोंगा की पूजा की जाती है, तो गाँव का पुजारी तीन दिन पूर्व से ही उपवास कर आधी रात के बाद ठंडे पानी से स्नान

करता है और शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर इस पवित्र सोते (जायरा) का जल लाने जाता है। जब वह जल लाने जाता है तब पानी में दो अजगर दीखते हैं जिन्हें वह अरवा चावल की बनी गीली रोटियाँ खिलाता है। जब ये खुश होकर वहाँ से हटते हैं, तब "दिऊरी" (पुजारी) पवित्र सोते का जल पवित्र ताजे मिट्टी के दो बर्तनों में एक-एक कंधे में ढोकर लाता है और सुबह उसे सूर्य की ओर मुँह करके 'मराँग बोंगा' को अर्पित किया जाता है। इसके साथ-साथ वह अरबा चावल, उरद के बीज, लामा के बीज, बरिया के बीज, तिलमिंग के बीज, ईचा फलम पूजा में अर्पित करता है। साथ में एक मुर्गा और एक मुर्गी की बलि दी जाती है और बनैले भैंस के सींग (साकोवा) दो पुजारी के साथ लड़के नगाड़े बजाते हैं। जब घड़े में भरा पानी घटता है, तो वह कम वृष्टि का द्योतक होता है। जब पानी भरा रहता है, तो समझा जाता है कि वर्षा ठीक ढंग की होगी। जब पानी घड़े से बहने लगता है, तो वह अति वृष्टि का द्योतक माना जाता है। फिर पूरे गाँव के लोग संगीत-नृत्य में खो-से जाते हैं। बचपन में हम भी देखते थे कि ठीक ऐसा ही किया जाता था मेरे गाँव में भी। बाबा हम सभी का हाथ पकड़े रहते थे। हम उम्र के छोटे-छोटे बच्चे कांस के फूलों का गुच्छा पकड़े, नाचने वालों के सामने उसे घुमाते और काँस के फूलों से नाचने वालों के सर पर सफेद रुई छाजती थी।

मैं बाबा का हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था और दूसरे हम-उम्र के दोस्तों की तरह कांस का फूल नाचने वालों के सामने दौड़ते-नाचते घुमाना चाहता था। पर मैं ऐसा नहीं कर पाता था। चूँकि बाबा को यह मंजूर नहीं था कि छोटे-छोटे बच्चे नाचने वाले लड़के-लड़कियों एवं औरत-मर्दों के बीच जायें। यह उन्हें बिल्कुल मंजूर नहीं था। कांस के फूल पकड़ कर दौड़ने, थिरकने और नाचने की मेरी इच्छा कभी पूरी नहीं हुई। जब मैं दस वर्षों बाद 'मागे पर्व' देखने आया तब तो मैं बड़ा हो चुका था। अब तो कांस घुमाने में स्वयं ही शर्म महसूस करने लगा था···।

हाँ तो उस बूढ़े चरवाहे से मेरी अन्तिम मुलाकात एक जाड़े की सर्द रात में हुई थी। हम लोगों के खलिहानों की झोपड़ी में बड़ा-सा लकड़ी का कुंदा जल रहा था। सफेद राख के नीचे से लाल अंगारे झाँक रहे थे। अभी सुबह बाकी थी। उस रात वह बूढ़ा चरवाहा हमारे घर ही रह गया था। उसे बाबा से कुछ बातें करनी थी। वह बूढ़ा चरवाहा सफेद दाढ़ी वाला था। वह जिन्दगी में बिलकुल अकेला था। उसने शादी की ही नहीं थी। मुझे तो उस बूढ़े की कहानी से मतलब था, उसकी पिछली जिन्दगी से नहीं। वह सुनाता था कहानियाँ जंगल से सम्बन्धित···।

उस जंगल में, जो नीले पहाड़ों के नीचे है, एक खूबसूरत झरना है। उस जंगल में एक सिंह रहता था। जंगल का राजा और एक सियार उसी सिंह की खोह

के आसपास एक शिला के भीतर रहता था। ऐसी ही कहानी शुरू हो जाती और फिर धू-धू जलती लकड़ी के कुंदों के सामने कहानी खत्म भी हो जाती। जब शुक्र तारा पश्चिम में दिखाई देता, तो हम समझते कि अब सुबह होगी....।

हाँ, वह वृद्ध कहता था, वो जो मरांग बोंगा का स्थान 'देसाउली' है न, वह अगर नष्ट हो जायगा, तो गाँव में मुकदमें चलेंगे, आगजनी होगी, कोई व्यक्ति दूसरे पर विश्वास नहीं करेगा, चोरी होगी, डकैती होगी, वर्षा नहीं होगी, अकाल और महामारी होगी। इसीलिए 'मरांग बोंगा' के रहने की जगह 'देसाउली' को लोग नहीं काटते हैं, कभी काटना नहीं चाहिए, कभी नहीं। कोई दूसरा कहता है, तो उसे समझना देना चाहिए, रोक देना चाहिए....।

बातें साफ थी। उन दिनों आदिवासी-जन 'देसाउली' को काटने नहीं देते थे, न स्वयं काटते थे। लोग देसाउली को बहुत पवित्र रखते थे। हर गाँव का 'देसाउली' हो कबीले के लोगों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र होता है। वहाँ शक्तिशाली, पवित्र, अविवाहित दैविक आत्माओं का निवास स्थान माना जाता है। वह बूढ़ा चरवाहा हमें बताता कि 'मरांग बोंगा' कभी-कभी लाल खूबसूरत कलगीदार विशाल 'लाल नागराज' के रूप में दिखाई देता है; लोगों को वह कोई नुकसान नहीं करता। वह बच्चों को दिखाई नहीं देता ताकि वे डर नहीं जायें। सिर्फ हिम्मत वाले, पवित्रता से जीने वाले ही उसे देख सकते थे। वह चरवाहा कहा करता था कि मरांग बोंगा देसाउली में सफेद झबरीले बालों वाले दहाड़ते वनराज सिंह के रूप में भी दिखाई पड़ता है, पर वह किसी को नुकसान नहीं करता। जो हिम्मत वाले उसको देखने की कामना करते हैं, वही उसे देख सकते हैं। हाँ, जब हम बच्चे थे तो दूर पहाड़ों की खोहों से घने वनों की ओर से जंगल को थर्रानेवाली भयंकर दहाड़ें आती थीं। ऐसा भी लगता था, जैसे अब धरती हिल जायगी और हम नीले पहाड़ के ऊपर बने अपने घर के आँगन में खेलते-खेलते माँ के गले में भय से बाहें डालते हुए दुबक जाते थे। माँ कहती थी कि अब सूर्यास्त होने वाला है। जंगल का राजा तुम्हें सोने को कह रहा है। खेलना बन्द करो और चुपचाप सो जाओ। मुझे याद है कि हालाँकि वह दहाड़ बहुत पास से ही सुनाई पड़ती थी, पर जंगल का राजा कभी हमारी आँखों के सामने नहीं आया। शायद उस बूढ़े की बातें सही थी कि जंगल का राजा ऐसा-वैसा नहीं था। वह एक दैविक पवित्र शक्तिशाली अविवाहित पवित्र शक्ति थी जो पूरे वन-प्रान्त में वन जीवों, मनुष्यों और पेड़-पौधों की रखवाली करता था। जब बूढ़ा हमें कहानी सुनाता था तो हम जंगली हाथियों से परेशान होकर समतल मैदान में गाँव की घनी आबादी वाले हिस्से में रहने लग गए थे। काफी दूर जंगल से निकल आए थे। अतः फिर जंगल को थर्राने वाली गर्जना सुनाई नहीं पड़ी; पर उस बूढ़े चरवाहे की कहानी ज्यों-की-त्यों दिलोदिमाग में लिखी

रह गई–रहस्यमयी, स्वप्नमयी और बेहद खूबसूरत-सी...।

उस बूढ़े चरवाहे को मरे अब पूरे 16 वर्ष हो गए। वह कहता था कि मेरे मरने के बाद बहुत अशुभ घटनाएँ होंगी। 'देसाऊली' को लोग काटेंगे, देसाऊली के पवित्र जल अर्पण करने की जगह दिऊरी, मानकी मुण्डा नायकी अफसरान और सम्पन्न कुल के लोग पूजा-पाठ में भरान जंगल के देवता को चढ़ायेंगे, पहले जैसी पवित्रता लोग नहीं बरतेंगे, श्लील-अश्लील की परवा नहीं करेंगे, जूठे दोने अलग नहीं फेंकेंगे। आस्था उनकी डिगेगी जिसके चलते जंगल के देवता नाराज हो जायेंगे। फिर वर्षा नहीं होगी, अकाल पड़ेगा, लोग धान, चावल, चना, मटर, सरसों, डोला (महुआ), बारू (कुसुम), नीम, करंज के बीज एवं तेल खरीदना-बेचना बन्द कर देंगे। कबूतर, मुर्गी, बत्तख, भेड़, बकरी, गाय, भैंस, तसर पालना बन्द कर देंगे। चना, मटर, खेसारी, ऊँची सरसो, मकई, सकरकन्द, चिनियाबादाम, गेहूँ आदि की खेती करने में बाधायें आयेंगी। धतुरा और अफीम मिश्रित (रानू) मसाले से बना हंड़िया खुले बाजारों में सड़क किनारे और गाँव में औरतें बेचेंगी। पढ़ने वाले लड़के फैशनपरस्त होंगे। लोग गंदी भावनाओं से अधिक प्रेरित होंगे, आपसी कलह में डूबेंगे, प्रेम-स्नेह, परोपकार से विमुख होंगे और आपस में लड़ेंगे, अपने आगे अधिकांश प्रतिशत गरीब जनता को देखने वाला कोई न होगा। लोग ठेकेदारों के चंगुल में फँसेंगे और दूर-दराज क्षेत्रों में सामानों की तरह ठेकेदार जंगलों का सफाया करते जायेंगे। जंगल को देवताओं की जगह 'देसाऊली' की रीति-रिवाजों, परम्पराओं को नहीं जानने वाले लोग मजाक का विषय बनायेंगे और अपने कबीले के ये लोग ही उसे काट डालेंगे या ठेकेदार काटेंगे तो भी लोग समझा नहीं पायेंगे...।

मुझे विश्वास नहीं होता था कि 16 वर्ष पूर्व उस बूढ़े चरवाहे की बातें सही होंगी, पर आज देखता हूँ उस वृद्ध चरवाहे की कही हुई बातें सही निकलती जा रही हैं। शायद इसीलिए कि देसाऊली काटे गये। देसाऊली को पवित्र नहीं रखा गया। इसीलिए हजारों वर्षों से रहते आये जंगल के देवता शायद आज नाराज हो गये, रूठ गये। पता नहीं, वे कहाँ होंगे। उस बूढ़े चरवाहे की कही बातें, मुझे लगा, सब सही थीं–सब सही थीं।

●

(ख) संताल लोककथाएँ

1

सूरज, चाँद और तारे

पुरखों का कहना है कि सूरज और चाँद आपस में पति-पत्नी हैं—सूरज पति है और चाँद उसकी पत्नी। उन दोनों के बहुत-से बच्चे थे। लड़के लोग अपने पिता, सूरज के साथ तथा लड़कियाँ अपनी माता चाँद के साथ रहा करती थीं। सूरज और उसके लड़के दिन में इधर-उधर घूमा-फिरा करते थे जबकि चाँद और उसकी लड़कियाँ रात में बाहर निकला करती थीं।

परंतु, सूरज और चाँद के वे बच्चे बहुत उपद्रवी थे। वे पृथ्वी के लोगों को बहुत सताया करते थे। लड़के लोग लोगों को अपने ताप से व्याकुल कर दिया करते थे। उसी तरह लड़कियाँ लोगों को ठंड से ठिठुरा दिया करती थीं। ऐसे में एक बार पृथ्वी के लोग सूरज और चाँद के पास गए और उन दोनों से बोले, ''तुम दोनों अपने बच्चों को डाँटो। वे हमें दिन-रात सताया करते हैं, कभी चैन नहीं लेने देते। यहाँ तक कि हमारा खाया हुआ अन्न भी वे पचने नहीं देते हैं।''

पृथ्वी के लोगों की यह बात सुनकर सूरज और चाँद दोनों को बुरा लगा। इस पर चाँद ने सूरज से कहा, ''हम दोनों अपने इन बच्चों को रहने न दें, क्योंकि ये लोग पृथ्वी के लोगों को बहुत सताया करते हैं। इसलिए तुम भी अपने लड़कों को मार डालो, मैं भी अपनी लड़कियों को मार डालती हूँ।''

सूरज ठहरा मर्द। वह अपनी पत्नी की चालाकी समझ नहीं सका और अपने सभी लड़कों को उसने मार डाला; परंतु, चाँद ने अपनी लड़कियों को नहीं मारा, बल्कि उन्हें एक बड़ी-सी 'डिड़मी' (टोकरी) के अंदर ढांप रखा और अपने पति, सूरज से कह दिया कि उसने सभी लड़कियों को मार डाला है।

परंतु सांझ होते ही चाँद की सभी लड़कियाँ एक-एक कर उस 'डिड़मी' से बाहर निकल आई। यह देखकर सूरज को यह समझते देर नहीं लगी कि चाँद ने उसे धोखा दिया है। अतः सूरज बहुत बिगड़ा और चाँद को मारने के लिए लाठी उठा ली। यह देख चाँद ने मार खाने के डर से झटपट अपने दो बच्चे सूरज को दे दिए। इससे सूरज का क्रोध जरा शांत हुआ, नहीं तो वह चाँद को बहुत पीटता।

सूरज और चाँद के उन्हीं बच्चों को पृथ्वी के लोग 'तारा' कहते हैं। जिन दो बच्चों को चाँद ने, मार खाने के डर से, सूरज को दे रखा है उनमें से एक सूर्यास्त से पहले और दूसरा सूर्योदय के आस-पास आसमान में चमका करता है—ध्रुवतारा और शुक्रतारा के रूप में; परंतु, पति-पत्नी में वह जो विवाद हुआ था उसी के फलस्वरूप सूरज और चाँद कभी आमने-सामने नहीं रहते; एक उगता है तो दूसरा डूब जाया करता है। सूरज को जब कभी उस घटना की याद आती है तब वह लाठी लेकर चाँद का पीछा किया करता है। इसलिए उसकी पत्नी (चाँद) मार खाने के डर से महीने में एक दिन बिल्कुल छिपी रहती है और वह दिन 'आम्बास' (अमावस) का दिन होता है।

●

2

सोहराय पर्व की कथा

कहते हैं, 'ठाकरान' (ठकुराइन) की हंसली हड्डी के पास के मैल से बने हांस-हांसिल (हंस-हंसिनी) पक्षियों ने विशाल जल-राशि पर तैरते हुए 'बिरना' (खस घास) के झाड़ में अपना घोंसला बनाया था जहाँ 'हांसिल' (हंसिनी) ने दो अंडे दिए थे, जिनसे दो मानव-शिशु उत्पन्न हुए थे। तब 'ठाकुर जिउ' (सृष्टिकर्ता) को चिंता हुई कि उन दोनों मानव-शिशुओं के आहार की व्यवस्था की जाए।

उस समय स्वर्गपुरी में 'आइनी-बाइनी कपिला गाएँ थीं। 'ठाकुर जिउ' ने 'माराङ बुरू' (महा देव) को अपने पास बुलाकर कहा कि उन गौओं को पृथ्वी पर ले जाएँ। तब तक जल-राशि की सतह पर केंचुए द्वारा जल-राशि के अंदर से उठाई गई मिट्टी से, जल-राशि की सतह पर स्थित कछुए की पीठ पर, पृथ्वी बना ली गई थी। 'माराङ बुरू' स्वर्गपुरी में ही थे, परंतु वे पृथ्वी पर 'तोड़े सुताम' (काल्पनिक तंतु) के सहारे आसानी से आ-जा सकते थे।

'ठाकुर जिउ' के आदेशानुसार, 'माराङ बुरू' बहुत अनुनय-विनय करके नर-मादा 'आइनी-बाइनी कपिला' गौओं को पृथ्वी पर ले आए और उन्हें जंगल में रखा। साथ ही, पृथ्वी पर 'माराङ बुरू' ने कौनी, सांवां आदि कुछ मोटे अनाजों के बीज जहाँ-तहाँ छींट दिए। कालक्रम में प्रथम मानव-दंपति, पिलचू हाड़ाम-पिलचू 'बूढ़ी' (लघु मानव दंपति) तथा 'कपिला गौओं' की वंश-वृद्धि हो गई। मानव-संतानें 'बाकुक् नाहेल' (हाथों से चालित हलों) से जमीन जोतकर अनाज उपजाना सीख चुकी थीं। उस पर 'माराङ बुरू' ने उनलोगों से कहा, "हस्त-चालित हलों से कब तक जमीन जोतते रहोगे? जाओ, जंगल से नर-मादा कपिला गौओं को ले आओ। उनमें से नर-गौओं (बैलों) से हल चलाया करना और मादा-गौओं (गायों) के दूध खाया-पीया करना।"

तब, वे मानव उन गौओं की खोज में जंगल को गए। वहाँ उन्हें वे गौएँ झुंड में एक ही जगह इकट्ठी मिल गईं। अतः, वे (मानव) गौओं को जंगल से हांककर अपने यहाँ ले आए जहाँ उन पशुओं के सींगों में तेल-सिंदूर लगाकर उनका स्वागत

किया गया, उनका परिछन किया गया और उन्हें 'गोहाल' (मवेशी-घर) में रखा गया, दूसरे दिन उन मवेशियों को 'गोहाल' से निकालकर चरने के लिए, चरवाहों के साथ, बाहर भेज दिया गया और गोहालों को साफ-सुथरा करके पूजा की गई। सांझ हो जाने पर वे सभी मवेशी गोहालों में अपनी-अपनी जगह पर आ गए। तब, धूप-दीपों के साथ उन मवेशियों का परिछन किया गया। साथ ही, गीत-नाद के साथ उस दिन रात्रि-जागरण किया गया। फिर तीसरे दिन, बैलों को अपने-अपने दरवाजे पर निकालकर, उन्हें सजा-धजाकर गली में गाड़े गए खूंटों में बाँधकर हड़काए जाते हुए 'खेल-कूद' किया जाता रहा। चौथे दिन घर-घर से कुछ-कुछ अन्न-पान माँगकर सहभोज किया गया और पाँचवें दिन 'बेझा तुञ' (लक्ष्य-वेध) करके गोधन-पर्व की समाप्ति की गई।

कहते हैं, 'सोहराय पर्व' का आरंभ उसी दिन से हुआ है। उस पर्व का पहला दिन 'गोट पूजा' का, दूसरा दिन 'गोहाल-पूजा' का, तीसरा दिन 'खुण्टाउ' (बैल खूंटने) का, चौथा दिन 'जाले' का और पाँचवाँ दिन 'बेझा तुञ' का दिन कहलाता है। यह पर्व प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

'सोहराय' संताल लोगों का सबसे बड़ा त्योहार है जिसमें मुख्यतः गो-पूजन किए जाने का रिवाज है। यह पर्व कहीं-कहीं (दक्षिण बिहार, उड़ीसा आदि में) दीपावली के अवसर पर, परंतु कहीं-कहीं (संताल, परगना आदि में) मकर-संक्रान्ति से ठीक पहले, भिन्न-भिन्न गाँवों में, अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार भिन्न-भिन्न दिनों में हुआ करता है। उस अवसर पर पाँच दिनों तक गाँव-भर में नाच-गान की धूम मची रहा करती है।

'माराङ बुरू' (महा देव) अर्थात् सबसे बड़े देवता के रूप में संताल लोगों द्वारा पूजित हैं। उसी प्रकार, 'जाहेर एरा' (जाहेर' देवी) इनलोगों की सबसे प्रमुख देवी है। दोनों प्रत्येक संताल गाँव के 'जाहेरथान' नामक धर्मस्थान में संस्थापित (पाषाण-खंडों के रूप में) रहते हैं। 'जाहेरथान' में कोई देवालय नहीं होता, पाषाण-खंडों के रूप में इनलोगों के देवी-देवता, विभिन्न वृक्षों के मूलों के पास, संस्थापित रहते हैं।

●

3

बेझा की कथा

किसी समय 'चाय-चंपा गढ़' में संताल जाति के एक राजा थे। उनकी रानी बड़ी सुंदरी और चतुर थीं। राजा-रानी दोनों बड़े प्रेम से रहा करते थे। बड़ी खुशहाली से उनके दिन गुजर रहे थे।

राजा साहब अच्छे शिकारी थे। वे जब-तब शिकार को निकल जाया करते थे। उनके राजनगर के आस-पास कई-एक घने जंगल थे। राजा साहब का शिकार उन्हीं जंगलों में हुआ करता था। उन्हीं में से एक जंगल में एक बहुत बड़ा साँप रहा करता था। पता नहीं कैसे, रानी साहिबा को उस साँप से प्रेम हो गया था।

एक बार रानी साहिबा ने राजा साहब से कहा, ''आप इधर-उधर शिकार करने जाया करते हैं। अच्छी बात है; आप जहाँ चाहें वहाँ जाएँ, लेकिन अमुक जंगल में शिकार करने मत जाएँ।'' रानी साहिबा का इशारा उस जंगल से था जहाँ उनका प्रेमी साँप रहा करता था।

रानी साहिबा की बात सुनकर राजा साहब चुप ही रहे, कुछ बोले नहीं, परंतु उनके मन में यह सन्देह हुआ कि आखिर उस जंगल में शिकार करने को जाने से रानी साहिबा मना क्यों करती हैं। ऐसा सोचकर राजा साहब एक दिन अपने सिपाहियों के साथ उसी जंगल में शिकार करने जा पहुँचे जिस जंगल में जाने से रानी साहिबा ने उन्हें मना किया था। वहाँ उन्होंने उस बड़े साँप को देख लिया और उसे मार डाला।

वह साँप चोरी-छिपे रोज रानी साहिबा से मिल जाया करता था। परंतु, जिस दिन वह मारा गया उस दिन वह नहीं आया। मरा हुआ साँप आए भी तो कैसे? इस पर रानी साहिबा को कुछ संदेह हुआ। उन्होंने राजा साहब से पूछा, ''कल आप किधर शिकार करने गए थे?'' उत्तर में राजा साहब ने कहा, ''जिस जंगल की ओर जाने से तुमने हमें मना किया था, उसी जंगल में कल हम शिकार करने गए थे।''

तब रानी साहिबा ने अपने सिपाहियों से पूछा, ''कल जो आपलोग राजा

साहब के साथ शिकार करने गए थे तब किन-किन जंतुओं का शिकार किया?'' सिपाहियों ने उन्हें बताया कि शिकार तो अनेक जंतुओं का किया गया जिनमें एक बड़ा-सा साँप भी था। उसे हमलोगों ने मारकर जंगल में ही छोड़ दिया।''

रानी साहिबा वह बात सुनकर बहुत नाराज हुईं और कुछ सिपाहियों को भेजकर उस मरे हुए साँप को अपने पास मँगवा लिया। उन्होंने देखा कि वह तो वही साँप था जिससे उन्हें प्रेम था। खैर, रानी साहिबा ने उस मरे हुए साँप के दाँत उखड़वा लिए और अपने पास रख लिए। उस मरे हुए साँप को कहीं फेंकवा दिया गया। फिर, रानी साहिबा से उस साँप के दाँतों को एक पोटली में अच्छी तरह बाँध लिया और राजा साहब के पास जाकर बोली, ''चलिए, हम दोनों में हार-जीत की एक बाजी हो जाय। आप बताएँ कि इस पोटली के अन्दर क्या है। यदि आप ठीक-ठीक कह देंगे तो आपकी जीत हो जाएगी; तब आप मुझे जान से मार डालें; परंतु यदि आप ठीक-ठीक नहीं कह सकेंगे तो जीत मेरी होगी और मैं आपको मरवा दूँगी।''

राजा साहब रानी साहिबा की बात मान गए। निश्चय किया गया कि उस बाजी के निर्णय के लिए पाँच दिनों का समय रहे।

रानी साहिबा की पोटली में क्या है, यह सोचते-सोचते राजा साहब बड़े असमंजस में पड़ गए। वे सोच ही नहीं सकते थे कि उस पोटली में क्या हो सकता है। उन्हें चिंता हुई कि यदि वे ठीक-ठीक बता नहीं पाएँगे तो, शर्त के अनुसार, उनकी रानी उन्हें मरवा डालेंगी। अतः उन्होंने सोचा कि यदि मेरी जान जाएगी ही तो अन्तिम बार अपनी बहन से भेंट तो कर लूँ। यह सोचकर उन्होंने अपनी बहन को खबर कर दी कि वह निश्चित तिथि के पहले आकर उनसे भेंट कर लें। संभव है कि उन्हें अपनी जान गँवानी पड़े।

खबर मिलते ही राजा साहब की बहन अपने भाई (राजा साहब) से मिलने हेतु ससुराल से चल पड़ी। ससुराल दूर थी। चलते-चलते थक जाने पर वह जंगल के एक विशाल सेमल के पेड़ तले कुछ देर सुस्ता लेने के ख्याल से जा बैठी। उस पेड़ पर कुछ चील-गिद्ध अपने बच्चों को सांत्वना दे रहे थे कि घबड़ाओ नहीं, बेनतुरी के राजा की रानी ने साँप के दाँत एक पोटली में बंधवा रखे हैं और राजा साहब के साथ शर्त लगाई है कि उस पोटली में क्या है, यह बात राजा साहब ठीक-ठीक नहीं कह सकेंगे तो वे मरवा दिए जाएँगे। निश्चय ही राजा साहब उस पोटली का भेद ठीक-ठीक खोल नहीं सकेंगे; अतः वे मारे जाएँगे। फिर तो हम सबको भरपूर खाना मिल जाएगा। अतः, सब्र करो और वहाँ जाने को तैयार रहो।

राजा साहब की बहन ने उन चील-गिद्धों की बातें सुन लीं। इसलिए वह झटपट वहाँ से उठकर राजा साहब के यहाँ चल पड़ी। भला, वह अपने भाई को

मारे जाते कैसे देख सकती थी? अपने भाई की जान बचाने के लिए वह बेचैन हो उठी। फलतः, वह जल्दी-जल्दी अपने भाई के यहाँ जा पहुँची और सबसे पहले रानी साहिबा से मिलकर उनसे बोली, "दुष्टा रानी! तुम मेरे भाई की जान लेना चाहती हो! भला, देखूँ कि उनकी जान तुम कैसे लेती हो!" उसके बाद वह अपने भाई, राजा साहब से मिली और उनसे बोली, "भैया, आप घबड़ाएँ नहीं। आपकी जान मैं नहीं जाने दूँगी। उस दुष्टा रानी ने पोटली में साँप के दाँत बाँध रखे हैं। आप यह बात निर्भय होकर बतला दें। घबड़ाएँ नहीं।"

थोड़ी देर में राजा साहब और रानी साहिबा के बीच होनेवाली हार-जीत की बाजी देखने-सुनने के लिए लोगों की भारी भीड़ लग गई। सबके सामने रानी साहिबा ने राजा साहब से कहा, "अब आप बताएँ कि इस पोटली में क्या है?"

राजा साहब ने अपनी बहन के कथनानुसार कह दिया, "इस पोटली में साँप के दाँत हैं।" तब, सबके सामने उस पोटली को खोलकर देखा गया तो सचमुच उससे साँप के दाँत ही निकले। फिर क्या था, रानी साहिबा की हार हो गई और क्रुद्ध भीड़ के लोगों ने उन्हें तत्काल जान से मार डालने का निश्चय कर लिया।

अतः, उस रानी को नगर के छोर पर ले जाया गया और उन्हें वहाँ खड़ा करवाकर तीरों से बींधकर मार डाला गया।

और, उसी समय से 'साकरात' पर्व के अन्तिम दिन गाँव की गली के छोर पर केले का एक थंभ खड़ा करके उस पर तीर मारने का रिवाज चल पड़ा है जिसे 'बेझा तुञ' (तीर से लक्ष्य-वेध करना) कहा जाता है। (संताल लोगों में) यह प्रथा अब भी चल रही है।

'साकरात' (मकर संक्रांति) संताल लोगों के सबसे बड़े त्योहार 'सोहराय' से लगा हुआ त्योहार है। 'बेझा तुञ' (लक्ष्य वेध) उसी अवसर पर हुआ करता है। इसलिए उसकी भर्त्सना में, आखेट के समय, जंगल में रात्रि-विश्राम के समय, शिकारी लोग अश्लील गीत ('बिर सेरेञ' अर्थात् जंग के गीत) गाते हुए नाचते हैं।

'चाय-चंपा गढ़' नामक स्थान में किसी समय संताल जाति के 'किसकू' गोत्रीय राजा होने की बात कही जाती है। कुछ लोगों का मानना है कि बिहार के वर्तमान हजारी-गिरिडीह जिला के 'छैया' (प्राचीन) और 'चौपारन' नामक स्थान ही 'चाय-चंपा' थे।



4

दमागुड़गुड़िया और मालिन बुढ़िया

पुराने जमाने की बात है। एक राजा की लड़की और एक सौदागर के लड़के में बड़ी दोस्ती थी। बचपन से ही वे दोनों आपस में हिले-मिले थे। बड़े हो जाने पर उन दोनों की दोस्ती और गाढ़ी हो गई। इस पर दोनों ने एक दिन विचार किया, "चलो, हम दोनों कहीं भाग चलें। यहाँ हम दोनों साथ-साथ नहीं रह सकेंगे।" ऐसा विचार करके वे दोनों एक दिन भिनसारे एक घोड़े पर चढ़कर कहीं चल पड़े।

चलते-चलते वे दोनों एक गाँव में जा पहुँचे और विश्राम करने के ख्याल से एक बड़ा-सा घर देखकर वहाँ जा घुसे। उस घर में एक बुढ़िया रहा करती थी। उन दोनों को देखते ही वह बुढ़िया बहुत खुश हुई और उनसे बोली, "आओ, आओ; यहाँ विराजो। लगता है, तुम दोनों कहीं दूर से आ रहे हो, इसलिए बहुत थक गए होंगे। अतः, तुम दोनों यहीं आराम करो और जब तक जी चाहे यहाँ रहो।" यह कहकर उस बुढ़िया ने अपने बड़े घर के बगलवाले छोटे घर में उन दोनों को ठहरा दिया और रसोई बनाने की सामग्री उन्हें देते हुए बोली, "तुम दोनों यहाँ रसोई बना लो और खा-पीकर आराम करो।"

राजकुमारी रसोई बनाने लगी; परंतु वह आग जला ही नहीं पा रही थी। चूल्हा भींगा हुआ था और लकड़ी कच्ची थी। आग फूँकते-फूँकते उसकी आँखें लाल हो गईं। हार-पारकर वह रोने लगी। अपना दुखड़ा गुहारती हुई वह कहने लगी,

"हाय, कुंअर हे !
भींगा चूल्हा, कुंअर, कच्ची लकड़ियाँ;
आग फूँकते-फूँकते आँखें हो गईं लाल हैं,
धक्कड़ आग जलती ही नहीं।"

उधर, सौदागर का बेटा लेटे-लेटे जरा आराम कर रहा था। उसे नींद आ गई थी। राजकुमारी का रुदन सुनकर वह जागकर उठ बैठा। तब, उसने लकड़ियों पर थोड़ा-सा घी डाल दिया जो उस बुढ़िया द्वारा उन्हें दिया गया था। तब जाकर चूल्हा जला और भोजन बना। अतः, वे दोनों भोजन करके रात-भर वहीं सोए रहे। सबेरा

होने पर जब वे दोनों वहाँ से चलने की तैयारी करने लगे तब उस बुढ़िया ने उनसे कहा, "ऐ बच्चे! मेरे लड़के बाहर गए हुए हैं। वे अब आते ही होंगे। तुम दोनों उन लड़कों के आने की प्रतीक्षा करो; उनके आने के बाद ही यहाँ से कहीं जाओ।" परंतु, उन दोनों ने उस बुढ़िया की बात नहीं मानी और अपने घोड़े पर चढ़कर वहाँ से चल निकले। वैसी स्थिति में उस बुढ़िया ने थोड़ी-सी सरसों, एक पोटली में करके, उनके घोड़े की पूँछ में चुपके से बाँध दी। राजकुमारी और सौदागर के बेटे को उसकी भनक तक नहीं मिली।

वे दोनों जब बुढ़िया के यहाँ से चल निकले तब उस बुढ़िया ने अपने बड़े घर में आग लगा दी। वह घर धू-धू जलने लगा। उस घर को जलता हुआ देखकर उस बुढ़िया के लड़के दौड़ते हुए अपने घर को वापस आए। आग बुझाई गई। उस पर वह बुढ़िया बोली, "तुमलोग क्यों नहीं जल्दी लौट रहे थे? हाय, एक अति सुंदरी बहू आई थी, जो अभी-अभी यहाँ से चली गई। इसीलिए मैंने इस बड़े घर में आग लगा दी ताकि तुमलोग शीघ्र आ जाओ।" उसके लड़कों ने पूछा, "किधर गए वे दोनों? हमलोग उन दोनों का पीछा करेंगे।"

उस बुढ़िया ने हाथ का इशारा करते हुए बतलाया कि वे दोनों उस ओर गए हैं अपने घोड़े पर चढ़कर। मैंने चुपके से उनके घोड़े की पूँछ में सरसों की एक पोटली बाँध दी है। तुमलोग उन दोनों का पीछा करते हुए जहाँ कहीं सरसों के दाने गिरे हुए देखोगे, समझ लेना कि वे दोनों वहीं कहीं आस-पास ठहरे हुए हैं।

उस बुढ़िया के लड़के क़द में ढिंगने और नाटे-नाटे थे। इसलिए वे लोग 'दमागुड़गुड़िया' कहलाते थे। उस इलाके के अन्यान्य लोग भी उसी तरह के थे। वे लोग दौड़ने में बहुत तेज होते थे; परंतु, उन्हें पत्नियाँ आसानी से नहीं मिला करती थीं। अतः उस बुढ़िया के सभी लड़के मनचाही पत्नियों की खोज में घर से निकल जाया करते थे। अपनी माँ से उन्होंने कह रखा था कि हमारी गैर-हाजिरी में यदि कोई साधारण-सी लड़की यहाँ आ जाए तो तुम अपने छोटे घर में आग लगा देना; परंतु यदि कोई बहुत सुंदरी लड़की आ जाए तो अपने बड़े घर में आग लगा देना। तब, हम कहीं भी रहें, दौड़कर घर आ जाएँगे। उसी के अनुसार उस दिन उस बुढ़िया ने अपने बड़े घर में आग लगा दी थी और उसके लड़के दौड़े-दौड़े घर आ गए थे।

जो हो, अपनी माँ की बातें सुनकर वे सभी दमागुड़गुड़िया झटपट राजकुमारी और सौदागर के बेटे की तलाश में निकल पड़े। चलते-चलते एक जगह उन्होंने देखा कि सरसों फूली हुई हैं। अतः, वे वहाँ से आगे बढ़ गए। दूसरी जगह देखा गया कि सरसों में फूल लगनेवाले हैं। फिर, वहाँ से आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि कुछ सरसों एक जगह जनम रही हैं। इस तरह वे उन सभी जगहों से आगे बढ़ते गए। तब, एक जगह उन्होंने देखा कि जमीन पर कुछ सरसों गिरी हुई हैं।

इसलिए उनलोगों ने समझ लिया कि राजकुमारी और सौदागर का बेटा इसी के आस-पास कहीं होगा। सचमुच वे दोनों घोड़े पर चढ़े चले जाते हुए पास ही में दिखाई पड़े। इसलिए वे दमागुड़गुड़िया लड़के फुर्ती से उन दोनों से आगे निकल गए। उन्हें देखते ही राजकुमारी ने सौदागर के लड़के से कहा, ''कुंअर जी, वह देखें, हमारे दुश्मन हमारा पीछा कर रहे हैं।''

इस पर सौदागर का लड़का अपने घोड़े से नीचे उतर आया और अपनी तलवार से उसने एक-एक को काट डालना शुरू किया; परंतु उन पर दमागुड़गुड़ियों में सबसे छोटा भाई घोड़े की टाँगों के बीच घुस गया और सौदागर के बेटे से बोला, ''ठहरो, मुझे मत मारो; अपने साथ ले चलो, अपना दास बना लो; मैं इस घोड़े के लिए घास काटकर ला दिया करूँगा।'' इस पर राजकुमारी ने आपत्ति की और कहा, ''नहीं-नहीं; इसे भी मार डालो। कर्ज और दुश्मन को छोटा नहीं समझना चाहिए, दोनों को खत्म ही कर दिया जाना चाहिए।'' परंतु, सौदागर के बेटे ने कहा, ''सो तो ठीक है, लेकिन जब यह इतना गिड़गिड़ा रहा है तब इसे अपने साथ लिए चलने में कोई हर्ज नहीं। यह हमारा सेवक बना रहेगा।'' अतः, उन दोनों ने उस छोटे दमागुड़गुड़िया को अपने साथ कर लिया और आगे बढ़ चले।

रास्ते में चलते-चलते उस दमागुड़गुड़िया लड़के ने सौदागर के बेटे से कहा, आप अपनी लाठी मुझे दे दें, मैं ही लिए चलूँगा; आप-जैसा बड़ा आदमी वह लाठी लिए चलें और मैं खाली हाथ टहलता चलूँ, यह मुझे अच्छा नहीं लगता है।'' इस पर सौदागर के बेटे के बेटे ने अपनी लाठी उस लड़के को दे दी। फिर, कुछ दूर आगे बढ़ने पर उस लड़के ने कहा, ''मालिक! अपनी तलवार भी मुझे दे दें। मेरे रहते आप खुद इन चीजों को ढोते चलें, यह मुझे अच्छा नहीं लगता है।'' इस पर सौदागर के बेटे ने अपनी तलवार भी उस लड़के को दे दी।

फिर, आगे चलते-चलते उस दमागुड़गुड़िया ने एकाएक सौदागर के बेटे पर तलवार चला दी और उसे घोड़े से मार गिराया। राजकुमारी बोल उठी, ''अरे! यह क्या किया तुमने! अपने मालिक को ही मार डाला।''

उस लड़के ने जवाब दिया, ''इसने मेरे भाइयों को मार डाला है, उसी का बदला मैंने लिया है। अब मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊँगा। चलो, मेरे साथ मेरे घर।'' लेकिन राजकुमारी ने कहा, 'अब तो कोई चारा नहीं। मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे यहाँ जरूर चलूँगी; परंतु, अब तो सांझ हो रही है। ऐसा किया जाए कि आज हम दोनों यहीं रुक जाएँ। इस बीच इस सौदागर के बेटे की लाश का कोई उपाय कर लिया जाए। फिर, सुबह होते ही हम दोनों तुम्हारे यहाँ चलेंगे।'' वह लड़का राजी हो गया, वे दोनों वहीं रुक गए।

रात हो जाने पर उस लड़के को तो नींद आ गई। वह सो गया; किंतु,

राजकुमारी को नींद कहाँ? उसने उस लड़के को निभोर सोया हुआ देखकर वह तलवार उठाई और उस लड़के की गरदन काट डाली। वह मर गया। ऐसे समय में राजकुमारी को सौदागर के बेटे और अपने माँ-बाप की याद बुरी तरह सताने लगी और वह बिसूरती हुई रोने लगी–

गाय रोवे होमा-होमा,
बछरू रोवे ओमा-ओमा;
मेरे माँ-बाप भी वैसे ही रोते होंगे,
सुनो, कुंअर हे!

इस तरह जब रात अधिक हो गई तब सारा जंगल भांय-भांय लगने लगा। भय से राजकुमारी का दिल धड़कने लगा। वैसे समय में एक नाग फुफकारता हुआ उस राजकुमारी के पास आ धमका और उससे बोला, ''इस मरे हुए व्यक्ति को तुम क्यों अगोर रही हो? इसे यहीं फेंक दो और यहाँ से चली जाओ। मैं इस लाश को खाकर अपना पेट भरूँगा।'' इस पर वह राजकुमारी रुदन करती हुई बोली :

पहले खाओ इस घोड़े को,
फिर, खा जाना तुम मुझको,
तब खाना इस लाश को।

ऐसा कहते हुए राजकुमारी उस सौदागर के बेटे की लाश और उसका कटा हुआ सिर अपने पास रखकर बैठी रही। ऐसा देखकर वह नाग वहाँ से धीरे-धीरे विदा हो गया।

उसके बाद एक सिंह दहाड़ता हुआ वहाँ आ उपस्थित हुआ और राजकुमारी से बोला, ''क्यों इस लाश को तुम बेकार अगोर रही हो? इसे छोड़ दो। मैं इसे खा जाऊँगा।'' परंतु, राजकुमारी ने रोते हुए उसे भी कह सुनाया–

पहले खाओ इस घोड़े को,
फिर, खा जाना तुम मुझको,
तब खाना इस लाश को।

इस पर वह सिंह भी वहाँ से चलता बना। राजकुमारी सौदागर के बेटे की लाश और उसका कटा हुआ सिर अपने पास रखे बैठी रही।

उसी प्रकार रात-भर कभी कोई भालू, कभी कोई भेड़िया तो कभी कोई सियार राजकुमारी के पास आते रहे और सौदागर के बेटे की लाश को खा जाने की बात कहते रहे; परंतु, राजकुमारी ने सबको एक ही जवाब दिया कि खाना हो तो सबसे पहले इस घोड़े को खा जाओ, फिर मुझे और अंत में इस लाश को खाना। इस प्रकार एक-एक कर जो भी जीव-जन्तु आए, राजकुमारी का जवाब सुनकर सब-के-सब वापस चलते गए।

राजकुमारी ने सारी रात रोते-बिसूरते बिताई। जब भोर होने-होने को था तब एक बूढ़ा आदमी राजकुमारी के पास आया। वह एक साधु की तरह दिख पड़ता था। उस आदमी ने बहुत प्यार से राजकुमारी से कहा, "इस लाश को तुम कब तक अगोरती रहोगी, बिटिया? इसे यहीं छोड़ दो और जहाँ से आई हो वहीं लौट जाओ।" परंतु, राजकुमारी उस साधु बाबा की बात पर राजी नहीं हुई और रोती-बिसूरती ही रही। उस साधु बाबा द्वारा तरह-तरह से डराए और बहकाए जाने पर भी जब राजकुमारी ने अपनी जिद नहीं छोड़ी तब साधु बाबा ने उससे कहा, "अच्छा तो, ऐसा करो कि इस व्यक्ति के कटे हुए सिर को इसके धड़ से जोड़ दो और अंगोछे से इस सिर और धड़ को ढंककर अपनी नजर दूसरी ओर घुमा लो।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया जैसा उस साधु बाबा ने कहा था। सौदागर के कटे हुए सिर और धड़ को एक-दूसरे के साथ सटाकर उसने उसे अंगोछे से ढंक दिया और कुछ देर के लिए अपनी नजर दूसरी ओर फेर ली। फिर, कुछ देर के बाद जब उसने अपनी नजर घुमाई तो देखा कि साधु बाबा तो गायब हैं और सौदागर का बेटा अंगड़ाई लेते हुए उठ बैठा है और कह रहा है, "अरे! मैं इतनी देर तक सोया रहा!" तब, राजकुमारी बोली, "तुम सोये क्या खाक थे! तुम्हें तो उस दमागुड़गुड़िया लड़के ने काटकर मार डाला था।" फिर, उसने सारी घटना सौदागर के बेटे से कह सुनाई जिसे सुनकर वह आश्चर्यचकित हो गया।

राजकुमारी और कुंअर (सौदागर का बेटा) कुछ समय तक विश्राम कर लेने के बाद वहाँ से अन्यत्र चल पड़े। चलते-चलते वे दोनों एक पेड़ के पास पहुँचे और उस पेड़ के तले विश्राम करने को रुके। वहीं सौदागर के बेटे ने राजकुमारी से कहा, "तुम यहीं बैठी रहो; मैं पास ही के गाँव के किसी के यहाँ से आग माँग लाता हूँ; 'चुट्टी' (सिगारनुमा एक चीज) पीए हुए मुझे बहुत देर हो गई है, मेरा मुँह चुटचुटा रहा है।" यह कहकर वह गाँव की ओर चला गया, राजकुमारी अकेली उस पेड़ के तले बैठी रही—अपने कुंअर की प्रतीक्षा में।

वैसे ही समय में कहीं से एक राक्षसी राजकुमारी के पास आ धमकी और उसे मारकर खा जाना चाहा; परंतु राजकुमारी ने उसे अपनी तलवार से मार डाला तथा उसके नखों और दाँतों को काटकर अपने आँचल में बाँध रखा।

उधर, सौदागर का बेटा, जो आग लाने गाँव की ओर गया था, शाम तक भी वापस नहीं आया। बात यह हुई कि गाँव से आग माँग लाने को जाते हुए उस सौदागर के बेटे की भेंट एक मालिन बुढ़िया से हो गई थी जो किसी सुन्दर लड़के या सुन्दरी लड़की को देख लेने पर उसे अपने जादू से भेड़ा या भेड़ी बनाकर अपने यहाँ रख लिया करती थी। उसने सौदागर के बेटे को एक राजकुमार-जैसा देखा तो उसे भी भेड़ा बनाकर अपने यहाँ रख लिया। बेचारा वापस आए भी तो कैसे?

इधर, राजकुमारी ने जब देखा कि उसका कुंअर शाम हो जाने पर भी वापस नहीं आया तब वह निराश होकर एक युवक का वेश धारण करके घोड़े पर चढ़कर वहाँ से चल निकली। उसका भाग्य अब उसे जहाँ ले जाए।

उन्हीं दिनों उस राज्य के राजा ने ढिंढोरा पिटवा रखा था कि जो उस भयावह राक्षसी को (जो उस राजकुमारी के हाथों मारी गई थी) मार डालेगा उसे वह (राजा) अपनी बेटी और अपने राज्य का एक हिस्सा (उस राक्षसी को मारनेवाले को) दे देगा। संयोग की बात कि उसी दिन एक डोम अपने ढोल के साथ कहीं जा रहा था। तभी रास्ते में उसने उस मरी हुई राक्षसी को देख लिया जो रास्ते के किनारे पड़ी हुई थी। फिर तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसने खुशी के मारे अपना ढोल वहीं फेंक दिया और उस राक्षसी की लाश को उठाकर अपने यहाँ ले गया और यह कहते हुए अपनी पत्नी को भी अपने घर से निकाल दिया कि अब तो मैं राजा का दामाद बनूँगा, राजा बन जाऊँगा; तुम जैसी निठल्लू स्त्री मेरी पत्नी बनी रहने के लायक नहीं रही। निकल भागो इस घर से।

उसके बाद वह डोम खुशी से मानो उछलते हुए राज-दरबार में जा पहुँचा और राजा साहब के पास कहलवा भेजा कि उसने (उस डोम ने) उस भयावह राक्षसी को मार डाला है और उसकी लाश उसके घर में है। राजा साहब ने तहकीकात के लिए अपने कुछ सिपाहियों को उस डोम के यहाँ भेजा। जो सिपाही उस डोम के यहाँ गए थे उनलोगों ने वहाँ से लौटकर राजा साहब से कहा, ''जी हाँ, सरकार! यह डोम जो कह रहा है वह सच ही है। हमलोग उस राक्षसी की लाश इस डोम के यहाँ देख आए हैं।''

राजा साहब को पूरा विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने उस डोम से कहा, ''अच्छी बात है, तुम्हें अपनी बहादुरी का पुरस्कार अवश्य मिलेगा; परंतु, यह ता बताओ कि तुमने उस राक्षसी को किस हथियार से मारा तथा प्रमाण के लिए उसके कुछ चिह्न भी दिखाओ।'' इस पर वह डोम हक्का-बक्का हो गया। झूठ कब तक छिपा रह सकता था? वह डोम राजा साहब को कोई जवाब नहीं दे सका। प्रमाणित हो गया कि वह डोम झूठा है। अतः, राजा साहब ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इस डोम को मार-पीटकर तुरंत यहाँ से भगाओ। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि उस राक्षसी के मारे जाने के बारे में असली बात का पता लगाया जाए।

बेचारा डोम बुरी तरह मार खाकर अपना-सा मुँह लिए किसी तरह राज-दरबार से भाग निकला और अपना फेंका हुआ ढोल उठाकर अपने यहाँ जा पहुँचा और बड़ी चिरौरी-विनती करके अपनी पत्नी को फिर अपने यहाँ ले आया। उसे झूठ का फल मिला।

उधर, राजा साहब ने अपने राज्य-भर में मुनादी करवा दी थी कि जिस

किसी ने उस खतरनाक राक्षसी को मारा है वह उसका सबूत राजा साहब के यहाँ जाकर दे; सबूत मिल जाने पर उसे घोषित पुरस्कार दिया जाएगा। राजा साहब की वह मुनादी कानों-कान उस राजकुमारी के कानों में भी पड़ी जो एक युवक के वेश में अपने कुंअर (सौदागर के बेटे) की खोज में इधर-उधर भटक रही थी। अतः, वह एक दिन अपने घोड़े पर राजा साहब के पास पहुँची और उनसे कहा, "राजा साहब, उस राक्षसी को मैंने ही मारा है।" जब राजा साहब ने उसका सबूत माँगा तब उस युवक वेशधारिणी राजकुमारी ने उन्हें वह तलवार दिखा दी जिसमें उस राक्षसी का खून तब तक लगा हुआ था। साथ ही, उसने अपनी गांठ से खोलकर उस राक्षसी के नख और दाँत भी राजा साहब के सामने पेश कर दिए। राजा साहब को विश्वास हो गया कि उस राक्षसी का वध करनेवाला वह युवक ही है। अतः, अपनी घोषणा के अनुसार, उन्होंने अपनी राजकुमारी के साथ उस छद्मवेशी युवक की शादी करवा दी, उसे अपने राज्य का एक हिस्सा तथा रहने के लिए एक अच्छा-खासा महल दे दिया। दोनों पति-पत्नी के रूप में उस महल में रहने लगे।

उस प्रकार, कुछ दिन एक साथ रहते-रहते नई राजकुमारी से कोई बात छिपी नहीं रह गई। पहली राजकुमारी ने, जो युवक के वेश में थी, सारी बातें उस नई राजकुमारी से कह सुनाई। साथ ही, यह भी कहा कि उसे अपने कुंअर की चिंता लगी हुई है। पता नहीं, वे कहाँ किस हालत में होंगे।

लोगों को मालूम था कि एक मालिन बुढ़िया है जो सुन्दर युवक और सुन्दरी युवतियों को भेड़ा और भेड़ी बनाकर अपने यहाँ रखा करती है और उन सबसे अपना स्वार्थ सिद्ध किया करती है। उस मालिन बुढ़िया का पता उस नई राजकुमारी को भी था। अतः, तय किया गया कि उस मालिन बुढ़िया को पकड़कर अपने यहाँ मंगवाया जाए और उससे सारा भेद खुलवाया जाए। तदनुसार, एक दिन सिपाहियों के द्वारा उस मालिन बुढ़िया को अपने यहाँ मंगवाया गया और उसकी अच्छी पिटाई करवाई गई। अंत में मार के डर से उस बुढ़िया ने अपनी सारी करतूत खोल दी। उसने कबूल कर लिया कि उसी ने सौदागर के बेटे को भेड़ा बनाकर अपने यहाँ रख लिया है। अतः, जितने लोगों को उस बुढ़िया के यहाँ भेड़ा-भेड़ी बनाकर रखा गया था उन सबको उस बुढ़िया के सामने ले लाया गया और उससे कहा गया कि सबको अपने-अपने असली रूप में कर दो, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।

तब, उस मालिन बुढ़िया ने डर के मारे सभी भेड़ों को, अपने जादू-टोने के सहारे, आदमी बना दिया। जैसे ही वह सौदागर का बेटा भेड़े से आदमी बन गया वैसे ही पहली राजकुमारी ने उसे पहचान लिया। दोनों गले मिले और बहुत खुश हुए। फिर, नई राजकुमारी के बारे में सारी बातें की जानकारी उसे दी गई। राजा

साहब भी सभी बातों से वाकिफ हुए। तब, बड़ी धूमधाम से सौदागर के बेटे से उस नई राजकुमारी और पहली राजकुमारी की शादी रचाई गई और सब लोग एक साथ मिल-जुलकर रहने लगे।

यह किस्सा यहीं खत्म हो गया। जैसे उनलोगों के अच्छे दिन फिरे वैसे ही सब लोगों के फिरें।



5

जुड़वाँ भाई-बहन

किसी जमाने में एक राजा की दो रानियाँ थीं। उस राजा का परिवार तो धन-धान्य से भरा-पूरा था, लेकिन उन्हें कोई संतान नहीं थी। इसी से राजा साहब बहुत उदास रहा करते थे।

एक बार एक साधु बाबा कहीं से घूमते-घामते उस राजा साहब के यहाँ पहुँचे। राजा साहब ने उस साधु बाबा का बहुत स्वागत-सत्कार किया। साधु बाबा ने उस राजा साहब को बहुत उदास देखकर उनसे पूछा, "राजा साहब, आपके यहाँ तो किसी चीज की कमी नहीं है, फिर भी आप बहुत उदास दिखते हैं। इसका कारण क्या है?" राजा साहब ने जवाब दिया, "साधु बाबा, सब-कुछ तो ठीक-ठाक ही है, लेकिन हमें कोई संतान नहीं है जबकि मेरी दो रानियाँ हैं। इसीलिए मन उदास रहा करता है। इसके लिए आप ही कोई उपाय बताएँ तो बड़ी कृपा होगी।"

उस पर उस साधु बाबा ने कहा, "आप ऐसा करें कि जिस आम के पेड़ पर एक ही गुच्छे में दो फल हों उन्हीं दोनों फलों को लग्गी से तोड़ लें। ध्यान रहें कि उन फलों को जमीन पर न गिरने दें, उन्हें गिरते हुए अपने हाथों में ही लपक लें और अपनी दोनों रानियों को खाने के लिए दे दें। फिर, आप देखेंगे कि दोनों रानियों के बच्चे होंगे।"

राजा साहब ने वैस ही किया जैसा उन्हें उस साधु बाबा ने बतलाया था। एक ही गुच्छे में लगे हुए दो आम जब पक गए तब राजा साहब ने उन्हें लग्गी लगाकर आहिस्ता-आहिस्ता तोड़ लिया और अपनी बड़ी रानी को देते हुए कहा कि तुम दोनों इन दोनों फलों को बाँटकर खा लेना। परंतु, बड़ी रानी ने बेईमानी की। दोनों फल वह स्वयं खा गई और छिलकों को पास ही में फेंक दिया। उस समय छोटी रानी वहाँ नहीं थी। वह जब वहाँ आई तब देखा कि आम तो एक भी बचा हुआ नहीं है, केवल उन फलों के छिलके वहाँ पड़े हुए हैं। बेचारी क्या करती? सौतिया डाह वह समझ गई थी। हार-पारकर उसने वहाँ पड़े हुए छिलके ही उठाकर बड़े प्रेम से खा लिए और उसी से सन्तुष्ट रही।

कुछ दिनों के बाद छोटी रानी गर्भवती हुई और समय आने पर उसके दो जुड़वाँ बच्चे हुए—एक लड़का और एक लड़की। यह देखकर बड़ी रानी डाह से मन-ही-मन जल-भुन गई। अतः, उसने झटपट उन दोनों बच्चों को चुपके से उठाकर जिस जगह से एक कुम्हार बरतन बनाने के लिए मिट्टी काटकर ले जाया करता था उसी गड्ढे में फेंक आई और छोटी रानी के पास एक लोढ़ी और एक झाड़ू लाकर रख दी। छोटी रानी तो बेचारी प्रसव-पीड़ा से बेसुध थी। उसे बड़ी रानी की करतूत का कुछ भान नहीं हुआ।

उधर, राजा साहब को जब मालूम हुआ कि छोटी रानी के दो जुड़वाँ बच्चे हुए हैं तब वे बहुत खुश हुए और दौड़े-दौड़े उन्हें देखने आए; परंतु, बच्चों की जगह छोटी रानी के पास एक लोढ़ी और एक झाड़ू देखकर वे बहुत दुःखी हुए और अछता-पछताकर रह गए। क्या करते? तकदीर में जो लिखा रहता है वही तो हुआ करता है।

उधर, वह कुम्हार मिट्टी कोड़ने के लिए उस गड्ढे के पास गया तो उसने देखा कि दो नवजात बच्चे वहाँ पड़े हुए हैं, जो गुमसुम हैं, रोते भी नहीं हैं। उस कुम्हार को उन पर दया आ गई, वह उन दोनों को उठाकर अपने यहाँ ले गया। उसकी पत्नी उन बच्चों को देखकर बहुत खुश हुई। उस कुम्हार दंपति को अपनी कोई संतान नहीं थी। इसलिए पति-पत्नी दोनों ने उन दोनों बच्चों को बड़े लाड़-प्यार से पाल-पोसकर बड़ा किया।

बड़े होने पर दोनों जुड़वाँ भाई-बहन राजा साहब के तालाब में स्नान करने जाया करते थे। दोनों अपना-अपना खिलौना वहाँ लिए जाते थे। लड़के का खिलौना एक लकड़ी का घोड़ा और लड़की का खिलौना एक सुपती थी (छोटे आकार का सूप)। वे दोनों स्नान करने के पहले कुछ देर उस तालाब की मेंड़ पर खेलते रहते। खेल-खेल में वह लड़का कहा करता—

लकड़ी का घोड़ा, पटसन का जीन
बाप के पोखरे का पानी पीयो रे, पीयो।

और, वह लड़की कहती—

सुपती-मौनी, सुपती-मौनी,
बाप के पोखरे का पानी पीयो री, पीयो।

संयोगवश एक दिन राजा साहब की बड़ी रानी उस तालाब में स्नान करने गई तो उसने उन दोनों बच्चों को उसी तरह बोलते हुए खेलते देख लिया। वह समझ गई कि वे दोनों जरूर वही बच्चे हैं जिन्हें उसने कुम्हार के गड्ढे में फेंक दिया था। अतः, उसने सोचा कि इन दोनों बच्चों को मरवा डालना चाहिए; क्योंकि वे दोनों जीवित रहेंगे तो किसी-न-किसी दिन सारा भेद खुल जाएगा और मेरी बड़ी

फजीहत होगी। इसलिए उसने उन दोनों बच्चों को मरवा डालने का उपाय किया।

एक दिन बीमार होने का बहाना करके बड़ी रानी पलंग पर पड़ी रही। राजा साहब को उसकी बीमारी की बात मालूम हुई तो वे उसके पास जा पहुँचे और उसे दिलासा देते हुए बोले कि कोई बात नहीं, दवा-दारू का प्रबंध करते हैं, तुम शीघ्र ही अच्छी हो जाओगी। चिंता की कोई बात नहीं। परंतु, उस रानी ने कहा, "राजा साहब, मेरी बीमारी बहुत गंभीर है, जैसे-तैसे दवा-दारू से यह बीमारी जानेवाली नहीं है। यह बीमारी तो तभी छूटेगी जब उस कुम्हार के दोनों बच्चों को मरवाकर उनके खून से मुझे स्नान करवाया जाएगा। आप वैसा कर सकते हैं तो ठीक, नहीं तो मुझे मर ही जाने दें, कोई दूसरा-तीसरा इलाज करवाने की कोई जरूरत नहीं।"

राजा तो राजा ही ठहरा, उन्होंने अपने सिपाहियों को भेजकर उस कुम्हार को अपने पास बुलवाया और उससे कहा कि तुम अपने दोनों बच्चे मुझे दे दो; उनके एवज में तुम्हें भरपूर धन दिया जाएगा जिससे तुम्हारी गरीबी दूर हो जाएगी। किंतु, वह कुम्हार किसी भी कीमत में उन दोनों बच्चों को देने के लिए राजी नहीं हुआ। उसने कहा–राजा साहब, धन के लालच में अपने बच्चों को आपके हाथों कैसे सौंप दूँ? हम दोनों पति-पत्नी ने बड़े लाड़-प्यार से दोनों बच्चों को पाला-पोसा है। हमारे लिए उन दोनों बच्चों से बढ़कर दूसरा कोई धन नहीं है। इसलिए हम अपने बच्चे आपको नहीं दे सकते। इस पर राजा साहब ने अपने सिपाहियों से जबरदस्ती उन दोनों बच्चों को अपने यहाँ मँगवा लिया और अपने तालाब की मेंड़ पर ले जाकर उन दोनों का वध करवा डाला तथा उनका खून लाकर उससे अपनी बड़ी रानी को नहलवाया। बड़ी रानी ने उन दोनों बच्चों के खून से स्नान करते ही बहाना किया कि अब वह बिल्कुल चंगी हो गई है। मारे गए दोनों बच्चों के शव उस तालाब में ही डाल दिए गए।

कुछ दिनों के बाद उस तालाब में दो फूल पैदा हुए–एक कमल और कोईं का फूल। खिलने पर दोनों फूल बहुत सुन्दर दिखते थे। जो कोई उन दोनों फूलों को देखता, उनकी सुंदरता पर मोहित हुए बिना नहीं रहता।

एक दिन राजा साहब उस तालाब की ओर टहलने को गए तो उन दोनों फूलों पर उनकी दृष्टि पड़ी, उन दोनों फूलों की सुंदरता पर रीझकर उन्हें तोड़ने के लिए उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया; परंतु जैसे ही उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया वैसे ही दोनों फूल उस तालाब के किनारे से हटकर जरा अंदर चले गए। राजा साहब उन्हें तोड़ नहीं सके। तब, उन्होंने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि उन दोनों फूलों को तोड़ लाए। उनके सिपाहियों ने उन दोनों फूलों को तोड़ लाने की कोशिश की, परंतु कोई उन्हें तोड़ नहीं सका; क्योंकि जैसे-जैसे उन्हें तोड़ने के लिए कोई अपना हाथ बढ़ाता वैसे-ही-वैसे दोनों फूल तालाब के अंदर चलते जाते थे।

तब, राजा साहब ने अपनी बड़ी रानी से कहा कि वही उन दोनों फूलों को तोड़ लाएँ। वह तो उस तालाब में स्नान करने जाया ही करती है। उसे मालूम ही होगा कि कहाँ कितना पानी है और कैसे उन फूलों को आसानी से तोड़ा जा सकता है।

बड़ी रानी उस तालाब पर गई। उस समय दोनों फूल किनारे पर ही थे; परंतु जैसे ही उस रानी ने उन्हें तोड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया वैसे ही दोनों फूल पानी के अंदर चले गए। रानी उन्हें तोड़ नहीं सकी।

अंत में राजा साहब ने अपनी छोटी रानी को हुक्म दिया कि वह उन दोनों फूलों को तोड़ लाए। उस पर छोटी रानी उस तालाब में गई और घुटने-भर पानी में उस तालाब में पैठी। इतने में ही दोनों फूल उस रानी के पास आ गए और उनके अंक में जा लगे। फिर, देखते-देखते दोनों फूल दो बच्चे हो गए—एक लड़का और एक लड़की; और, दोनों (बच्चे) उसके स्तन-पान करने लगे। राजा साहब और उसके सिपाहियों ने देखा कि वे दोनों बच्चे वही थे जिनका वध, बड़ी रानी को उनके खून से नहलवाने के लिए, करवाया गया था। सब-के-सब उस दृश्य पर आश्चर्यचकित थे।

राजा साहब को यह समझते देर न लगी कि सारी कारगुजारी उनकी बड़ी रानी की ही थी। उसने अपनी बड़ी रानी को बुलवाकर पूछा कि असली बात क्या है उससे यह भी कहा गया कि वह सब बात सच-सच बतला दे, नहीं तो उसका अंजाम बहुत बुरा होगा। तब, बड़ी रानी ने कबूल किया कि वे दोनों बच्चे छोटी रानी के ही हैं जिन्हें उसने सौरी से ही उठाकर कुम्हार के गड्ढे में फेंक दिया था। उनके एवज में एक लोढ़ी और एक झाड़ू छोटी रानी के पास रख दी थी।

राजा साहब अपनी बड़ी रानी की दुष्टता पर बहुत क्रुद्ध हुए और तत्काल (बड़ी रानी को) मरवाकर फेंकवा दिया तथा छोटी रानी और अपने दोनों बच्चों के साथ खुशी से जीवन-यापन करने लगे।

किस्सा खत्म हुआ। जैसे उन जुड़वाँ बच्चों के अच्छे दिन फिरे वैसे ही सब लोगों के दिन फिरें।

●

6

चरवाहा और बाघ

एक चरवाहा था। एक दिन जब वह अपनी बकरियाँ एक वन में चरा रहा था तब उसने एक लोहटन (छिपकली की जाति का एक जंतु) को देखकर उसे पकड़ लिया और उसे मार डालना चाहा; परंतु, उस लोहटन ने उस चरवाहे से निहोरा किया कि, 'मुझे मत मारो, मैं तुम्हारा दास बनकर रहूँगा और जरूरत के मुताबिक तुम्हारी मदद किया करूँगा।' उसकी बात पर उस चरवाहे को हँसी आई कि वह छोटा-सा जीव उसकी मदद, भला, कर ही क्या सकेगा? फिर भी, उस चरवाहे ने उस लोहटन को मारा नहीं, और शाम को जाने पर उसे अपने यहाँ लेता गया।

दूसरे दिन जब वह चरवाहा अपनी बकरियाँ चराने को वन की ओर चला तब उस लोहटन को भी अपने साथ लेता गया। वन में पहुँचकर वह चरवाहा एक पेड़ तले सोया रहा और वह लोहटन उस पेड़ पर चढ़कर वहीं से बकरियों की देखभाल करने लगा। चरवाहे को थोड़ी देर में नींद आ गई, परंतु वह लोहटन जागा रहा।

कुछ देर में कहीं से एक बाघ निकला और बकरियों की तरफ लपका। तभी उस लोहटन ने पेड़ पर से ही उस बाघ से कहा, ''अरे! तुम हमारी बकरियों को हड़का रहे हो? जरा मुझे इसा पेड़ से उतरने तो दो, तब तुम्हें मजा चखाऊँगा।'' यह सुनकर वह बाघ बोला, ''बड़े बहादुर बनते हो! जरा पेड़ से नीचे तो आओ; मैं तुम्हें निगल जाऊँगा।''

वह लोहटन उस पेड़ से नीचे कूद गया और बाघ के पास जाकर बोला, ''निगलो तो, भला; देखूँ कि तुम मुझे कैसे निगलते हो!'' उस पर उस बाघ ने उस लोहटन को निगल जाने के लिए जैसे ही अपना मुँह खोला वैसे ही वह लोहटन उसके मुँह में कूद गया। बाघ उसे जिंदा ही निगल गया; परंतु उसके पेट में पहुँचकर वह लोहटन ऊधम मचाने लगा; उछल-कूद करने लगा। उस पर वह बाघ दर्द से छटपटाने और किकियाने-गरजने लगा। उसकी किकियाहट सुनकर उस चरवाहे की नींद टूट गई। बाघ को छटपटाते देख वह चरवाहा हँस रहा था; परंतु बाघ बोला, ''अरे, भाई! मैं तो दर्द से मरा जा रहा हूँ, और तुम हँस रहे हो? जरा

झटपट मेरी मदद तो करो। एक लोहटन मेरे पेट में घुसकर ऊधम मचा रहा है! उसे मेरे पेट से निकाल दो तो मैं तुम्हें हर रोज एक हिरन मारकर ला दिया करूँगा।''

वह चरवाहा बोला, ''ठीक है; अपना मुँह खोलो।''

बाघ ने अपना मुँह खोला और उस चरवाहे के बुलाने पर वह लोहटन उसके पेट से बाहर आ गया। फिर, बाघ अपने वायदे के मुताबिक कुछ ही देर में एक हिरन मार लाया और उस चरवाहे को देते हुए बोला, ''देखो, जो हुआ सो हुआ; इस घटना का जिक्र तुम किसी से नहीं करना, नहीं तो तुम्हें ही मारकर खा जाऊँगा।'' उसके बाद वह बाघ वहाँ से खिसक गया और वह चरवाहा भी अपनी बकरियों और उस लोहटन के साथ अपने घर वापस गया।

दूसरे-तीसरे दिन भी वह चरवाहा उस लोहटन के साथ अपनी बकरियाँ चराने जाया करता और वह बाघ हर रोज एक हिरन मारकर उसे ला दिया करता। लोग जब उस चरवाहे से पूछते कि तुम हर रोज एक हिरन कहाँ से मार लाते हो तब वह चरवाहा किसी को कुछ बताता नहीं था। उसे डर था कि बाघ के साथ हुई घटना किसी से कह देगा तो वह बाघ उसे मार डालेगा।

एक दिन वह चरवाहा अपने कुछ साथियों के साथ कहीं खेल रहा था। खेलते-खेलते उसे उस बाघ और लोहटन की बात एकाएक याद आ गई और वह (चरवाहा) हँस पड़ा। उस पर उसके साथियों ने उससे पूछा, ''क्यों हँस रहे हो, भाई। कुछ कहो भी तो।'' उस चरवाहे ने कहा, ''नहीं भाई, कहूँगा नहीं, क्योंकि कह दूँगा तो एक बाघ मुझे मार डालेगा।'' उसके साथियों ने कहा, ''हमलोगों के रहते कोई बाघ तुम्हें मार नहीं सकता है। हम-सब तुम्हें बचा लेंगे; लेकिन कहो भी तो कि बात क्या है?''

उस चरवाहे ने लोहटन और बाघवाली घटना अपने साथियों को सुना दी। उधर, वह बाघ भी ताक में था कि कब वह चरवाहा किसी से उस घटना का जिक्र करे कि वह (बाघ) उसे मार डाले। और, जैसे ही उस चरवाहे ने उस घटना के बारे में अपनी बात खत्म की, वैसे ही वह बाघ वहाँ दौड़ा आया और उस चरवाहे को उसके साथियों के बीच से उठा ले भागा। उस समय उस चरवाहे के कुरते की जेब में एक टीन का डिब्बा था जिसमें पत्थर की गोटियाँ भरी हुई थीं। इसलिए उस डिब्बे से टकर-टकर की आवाज निकल रही थी। इसलिए उस बाघ ने उस चरवाहे से, जिसे वह पकड़े हुए दौड़ा जा रहा था, पूछा, ''अजी! यह आवाज कैसी है?'' उस चरवाहे ने जवाब दिया, ''यह तो उसी लोहटन की आवाज है जो तुम्हारे पेट में घुस गया था। वही (लोहटन) निकलने के लिए तड़फड़ा रहा है।''

यह सुनते ही वह बाघ घबड़ा गया और बोला, ''नहीं, नहीं; उसे निकलने

मत दो; वह बहुत ऊधमी जीव है।" उस चरवाहे ने कहा, "मुझे तुम छोड़ दो तो उस लोहटन को निकलने नहीं दूँगा, नहीं तो वह निकल आएगा। फिर, तुम जानो और वह (लोहटन) जाने।"

उस बाघ ने डर के मारे झटपट उस चरवाहे को अपने चंगुल से छोड़ दिया और घने वन की ओर भाग गया। वह चरवाहा भी उस बाघ से छुटकारा पाकर अपने घर चला गया। उसकी जान बच गई।

●

7

जभी बयार, तभी जाड़ा

एक घना जंगल था। उस जंगल में रहनेवाले एक बाघ और एक भालू में बड़ी दोस्ती थी। एक बार, जाड़े के दिनों में, उन दोस्तों में बातचीत हो रही थी। उसी बातचीत के सिलसिले में बाघ बोला, "जाड़े के दिनों में जाड़ा ज्यादा लगता है।" परंतु, भालू ने कहा, "नहीं, नहीं; ज्यादा जाड़ा बरसात के दिनों में लगता है।" उसी बात को लेकर उन दोनों दोस्तों में विवाद उठ खड़ा हो गया। बाघ बार-बार अपनी बात कहता रहा, इधर भालू अपनी इस बात पर अड़ा रहा। उन दोनों में से कोई भी दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं था। विवाद बढ़ता ही जा रहा था।

बात यह थी कि बाघ और भालू दोनों की ही बातें अपनी-अपनी जगह पर सही थीं। इसलिए कि भालू के शरीर में तो लंबे-लंबे घने बाल होते हैं जिसके चलते पूस-माघ जैसे जाड़े के दिनों में उसका शरीर उन बालों से ढंका रहता है और उसे जाड़ा कम लगता है, जबकि बाघ के शरीर में बाल छोटे-छोटे रहने के कारण उसका शरीर, भालू की तरह, ढंका नहीं रहता है जिससे उसे जाड़ा ज्यादा महसूस होता है। उसके विपरीत, बरसात में भालू के शरीर के बाल भींगे रहते हैं जिसके चलते उसे जाड़ा महसूस होता है, जबकि छोटे-छोटे बालों के रहने की वजह से बाघ के बाल भींग जाने पर भी जल्दी सूख जाते हैं और उसे जाड़ा कम महसूस होता है।

वह बाघ और वह भालू दोनों उस विवाद में बहुत देर तक उलझे रहे। उसी समय उन्हें, कुछ दूर पर, एक सियार दिखाई पड़ा। अतः, दोनों ने तय किया कि चलो, हम दोनों उस सियार से फैसला करवा लें कि जाड़ा जाड़े के दिनों में ज्यादा लगता है या सावन-भादो जैसे बरसात के दिनों में।

वैसा तय करके उन दोनों, बाघ और भालू ने, उस सियार को पुकारकर कहा, "सियार भांजे! हम दोनों में इस बात का विवाद चल रहा है कि जाड़ा जाड़े के दिनों में ज्यादा लगता है या बरसात के दिनों में। इस विवाद का फैसला तुम्हीं कर दो।"

सियार तो बहुत चतुर हुआ करता है। उसने कहा, ''मुझे पूरी बात तो बताओ कि इस बारे में तुम दोनों में से किसका क्या कहना है। पूरी बात जाने बिना फैसला मैं कैसे करूँगा?''

इस पर बाघ ने कहा, ''मेरा कहना है कि जाड़ा जाड़े के दिनों में ज्यादा लगता है, परंतु भालू का कहना है कि नहीं, जाड़ा बरसात के दिनों में ज्यादा लगता है। इसी बात का विवाद हम दोनों में है। यदि तुम्हारा फैसला भालू के पक्ष में होगा तो मैं तुम्हें मारकर खा जाऊँगा।'' भालू ने भी कहा, ''यदि तुम्हारा फैसला बाघ के पक्ष में होगा तो मैं तुम्हें मारकर खा जाऊँगा।''

बेचारा सियार बहुत असमंजस में पड़ गया। वह सोचने लगा कि दोनों ओर तो खतरा ही है। यदि बाघ की बात को सही करार दूँ तो भालू मुझे मार डालेगा और यदि भालू की बात को सही बतलाऊँ तो बाघ मेरी जान ले लेगा।

अतः, वह सियार थोड़ी देर चुप रहा और मन-ही-मन उसने अपनी बुद्धि दौड़ाई। तभी उसे एक युक्ति सूझ पड़ी। उसने अपना फैसला इस तरह दिया, ''मामा जी, मैंने आप दोनों की बातों पर अच्छी तरह विचार किया और इस निर्णय पर पहुँचा कि जाड़ा न तो जाड़े के दिनों में ज्यादा लगता है और न बरसात के दिनों में, बल्कि जब हवा चलती है तभी जाड़ा ज्यादा लगता है।''

सियार पांड़े का वह फैसला सुनकर बाघ और भालू दोनों चकित रह गए। वह फैसला न तो बाघ के पक्ष में था और न भालू के पक्ष में ही, उन दोनों ने सोच रखा था कि सियार पांड़े हम दोनों में से किसी-न-किसी के पक्ष में अपना फैसला देंगे ही और मारे जाएँगे, जिसका लाभ हम दोनों दोस्त मिलकर उठाएँगे।

अंत में बाघ और भालू दोनों अछता-पछताकर रह गए। उधर सियार पांड़े ने अपना फैसला सुनाकर झटपट अपनी राह ली। जान बची तो लाखों पाए।

●

8

सात भाई और एक बहन

किसी जमाने में एक गाँव में सात भाई थे। उनकी एक ही बहन थी। सातों भाई अपनी बहन को बहुत प्यार करते थे। यह देख-सुनकर उस लड़की की भौजाइयाँ उस लड़की से जलती रहती थीं और उसे सताने की ताक में लगी रहती थीं।

एक बार सातों भाई काम-काज करने के लिए जाने लगे तो उनलोगों ने अपनी पत्नियों से कहा, ''हमलोग तो काम-काज करने के लिए बाहर जा रहे हैं; कब तक घर वापस आएँगे, इसका कोई ठिकाना नहीं है। तुमलोग हमारी बहन को कोई तकलीफ मत होने देना, इससे अच्छा बर्ताव करना।''

जब वे सातों भाई बाहर चले गए तब उस लड़की की भौजाइयों ने उसे तंग करना शुरू कर दिया। एक दिन उन सातों ने अपनी ननद से कहा, ''जाओ, जंगल से जलावन की लकड़ियाँ बिना बाँधे ले जाओ, नहीं लाई तो तुम्हें खाना नहीं दिया जाएगा।''

वह लड़की जंगल गई, ढेर सारी सूखी लकड़ियाँ उसने इकट्ठी कर लीं, परंतु उन्हें बिना बाँधे घर कैसे ले जाया जाए, यह एक बड़ी समस्या थी। जब उसे कोई उपाय नहीं सूझा तब वह लड़की फूट-फूटकर रोने लगी। तभी, उसका रोना सुनकर, एक साँप उसके पास आया और उससे बोला, ''बबुई, तुम क्यों रो रही हो?'' उस लड़की ने जवाब दिया कि मेरी भौजाइयों ने जलावन की लकड़ियाँ बिना बाँधे ले जाने को कहा है। उसके लिए उनलोगों ने मुझे कोई रस्सी नहीं दी है। मैंने लकड़ियाँ तो चुनकर जमा कर ली हैं, लेकिन इन्हें बिना बाँधे ले कैसे जाऊँ, यही सोचकर रो रही हूँ। इस पर उस साँप ने कहा, ''अच्छा, तुम रोओ मत; मैं उसका उपाय किए देता हूँ।'' यह कहकर वह साँप रस्सी की तरह उन लकड़ियों के बोझे में लिपट गया और बोला, ''तुम इस बोझे को आहिस्ता-आहिस्ता उठाओ और घर ले जाकर धीरे-धीरे जमीन पर रख देना। मैं तुम्हारी भौजाइयों की नजर बचाकर वहाँ से निकल जाऊँगा।'' उस लड़की ने वैसा ही किया। उसने सारी लकड़ियाँ बिना

बाँधे घर पहुँचा दीं। वह देखकर उसकी भौजाइयाँ विस्मित रह गईं।

फिर, एक दिन उन भौजाइयों ने उस लड़की को एक ऐसा घड़ा दिया जिसमें एक छेद था, उससे कहा कि जाओ पोखरे से पानी भर लाओ, नहीं तो तुम्हें खाना-पीना नहीं मिलेगा। उस पर वह लड़की वह घड़ा लेकर पोखरे पर पहुँची; परंतु, उस छेदवाले घड़े में पानी भरकर कैसे ले जाया जाए, यह सोचकर वह उस पोखरे की मेंड़ पर बैठकर रोने लगी। उसका रोना सुनकर, उस पोखरे से एक बड़ा-सा मेंढक निकलकर उस लड़की के पास आया और उससे बोला, ''बबुई, तुम क्यों रो रही हो?'' उस लड़की ने कहा, ''देखो न, मेरी भौजाइयों ने यह घड़ा देकर मुझसे कहा हे कि इसमें पानी भर लाओ; परंतु, इस घड़े में तो एक छेद है, इसमें पानी भरकर घर तक जाते-जाते तो सारा पानी ही चू जाएगा। फिर, पानी कैसे ले जाऊँ? इसीलिए मै। रो रही हूँ।'' इस पर उस मेढ़क ने कहा, ''कोई बात नहीं; तुम रोओ मत। मैं इस घड़े में घुसकर जहाँ छेद है वहाँ चिपक जाता हूँ। तब तुम पानी-भरा घड़ा लेकर घर ले जाना।''

यह कहकर वह मेढ़क कूदकर उस घड़े के अंदर चला गया और जहाँ उसमें छेद था वहाँ चिपक गया जिससे पानी चूना बंद हो गया। इस तरह वह लड़की वह पानी-भरा घड़ा उठाकर घर ले गई। उसकी भौजाइयाँ भौंचक रह गईं।

परंतु, यहीं उस लड़की के दुःखों का अंत नहीं था। एक दिन उसकी भौजाइयों ने उससे कहा, ''हमें दवा के लिए बाघिन के दूध की जरूरत है। तुम यह मटका लो और जंगल जाकर बाघिन का दूध ले आओ; नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।'' बेचारी लड़की वह मटका लेकर जंगल तो चली गई, किंतु बाघिन का दूध उसे मिले कैसे! हार पारकर वह एक पेड़ के तले बैठकर रोने लगी। उसका रोना सुनकर जंगल से एक बाघिन उसके पास आई और उससे बोली, ''बिटिया, तुम क्यों रो रही हो?'' उस लड़की ने कहा, ''मेरी भौजाइयों ने कहा है कि मैं बाघिन का दूध उन्हें ला दूँ, नहीं तो वे मुझे खाना-पीना तो देंगी ही नहीं, मार-पीट भी कर सकती है। यही सोचकर मैं रो रही हूँ।'' इस पर उस बाघिन को उस लड़की पर बहुत दया आई और उसने उस लड़की से कहा, ''तुम्हारी भौजाइयों की साजिश मैं खूब समझती हूँ; लेकिन, तुम चिंता मत करो। लाओ, अपना मटका इधर करो। मैं अपना दूध उस मटके में गार देती हूँ। उस दूध को ले जाकर तुम अपनी भौजाइयों को दे आओ। यदि वे लोग कहें कि बाघिन का दूध होने का सबूत क्या है तो तुम उन्हें मेरे पास ले आना। सबूत मैं दूँगी उन्हें।'' यह कहकर उस बाघिन ने उस मटके में अपना दूध गार दिया। वह लड़की उसे लेकर अपनी भौजाइयों को दे आई। उसकी भौजाइयों ने सोचा था कि बाघिन का दूध लाने में ही उस लड़की की जान चली जाएगी; परंतु, वे यह देखकर आश्चर्यचकित रह गईं कि वह लड़की

बाघिन का दूध लिए सही-सलामत वापस आ गई है।

उस लड़की की भौजाइयाँ उसे किसी और संकट में डालने की साजिश कर ही रही थीं कि उसके सातों भाई बाहर से घर वापस आ गए। उन्होंने घर आने पर देखा कि उनकी बहन बड़ी बुरी हालत में है। वह पहले से दुबली तो हो ही गई थी, उसके चेहरे की रौनक भी चली गई थी। उसके बाल बिल्कुल रुखड़े थे जैसे कई दिनों से संवारे न गए हों। उसकी वैसी स्थिति देखकर उसके भाइयों ने जानना चाहा कि उसकी वह स्थिति क्यों है। उस लड़की ने अपने पर बीती हुई सारी बातें अपने भाइयों से कह सुनाईं। इस पर उसका छोटा भाई तो अपनी और अपने भाइयों की पत्नियों को माकूल सबक सिखाने को उतावला हो उठा, परंतु बड़े भाई ने शान्ति और चतुराई से काम लेने की सलाह देकर उसे शांत किया।

उसके बाद उन सातों भाइयों ने एक कुआँ खुदवाया और उसकी (कुएँ की) विधिवत् उड़ाही करने के लिए सातों गोतनियों को तेल, सिंदूर आदि लेकर कुएँ पर पहुँचने को कहा। साथ ही, उनलोगों ने अपनी बहन को चुपके से कह दिया कि जब उनकी भौजाइयाँ उस कुएँ की उड़ाही के सिलसिले में उस कुएँ के पास बैठी या खड़ी रहेंगी तब तुम उन्हें मौका देखकर एकाएक उस कुएँ में ढकेल देना।

उस योजना के अनुसार, जब सातों गोतनियाँ उस कुएँ की उड़ाही की रस्म पूरा करने उस कुएँ के पास पहुँचीं तब उनमें से कुछ गोतनियाँ तो उस कुएँ के पास बैठीं और कुछ वहीं खड़ी रहीं। ठीक उसी समय मौका पाकर उस लड़की ने अपनी बड़ी और मंझली भौजाइयों को, जो सारी खुराफातों की जड़ थीं, अपने दोनों हाथों से एकाएक उस कुएँ में ढकेल दिया; परंतु, बाकी चार भौजाइयाँ वह देखते ही वहाँ से भाग खड़ी हुईं और कभी वापस नहीं आईं। अपनी छोटी भौजाई को उस लड़की ने कुएँ में नहीं ढकेला, क्योंकि वह उस लड़की (अपनी ननद) से सहानुभूति रखा करती थी। यद्यपि अपनी जेठानियों के सामने उसकी (छोटी गोतनी का) कुछ चलती नहीं थी। बड़ी और मंझली भौजाइयाँ उसी कुएँ में डूबकर मर गईं।

●

9

तीरंदाज का घमंड

कहा जाता है कि एक गाँव में एक बहुत ही कुशल तीरंदाज था। वह हर रोज अपनी पत्नी को अपने सामने, कुछ दूरी पर, खड़ी कर दिया करता और निशाना साधकर उसके कान में पहने हुए कुंडल के बीच से अपना तीर पार कर डालने का अभ्यास किया करता था। उसकी पत्नी को डर लगा रहता था कि किसी दिन उसका निशाना चूक गया तो बहुत बड़ी आफत आ जाएगी। इसलिए एक दिन वह अपने पति से बोली, ''आप अपने को बहुत बहादुर समझते हैं! यह आप का घमंड है, जो किसी दिन मेरी जान ले लेगा। क्या आपने कभी अपने गाँव से बाहर जाकर देखा है कि दुनिया में और कोई बहादुर है या नहीं? नहीं देखा है तो कभी बाहर जाकर देख आइए?''

उस तीरंदाज को अपनी पत्नी की बात लग गई और वह एक दिन दुनिया देख आने को अपने घर से निकल पड़ा।

चलते-चलते उस तीरंदाज ने एक जगह देखा कि एक मोटा-सा आदमी अपनी पठारी जमीन में मडुआ रोपवाने के लिए बहुत-से लोगों को लगाए हुए है और खुद अपनी हथेली पर एक बड़ा-सा बरगद लिए हुए है जिसकी छाया में उसके मजदूर काम कर रहे हैं! यह देखकर उस तीरंदाज को बहुत अचंभा हुआ। वह चुपचाप वहाँ से आगे बढ़ गया।

कुछ दूर आगे जाने पर उसने देखा कि एक आदमी खड़ा-खड़ा आसमान पर अपनी आँखें गड़ाए हुए है, इधर-उधर ताकता तक नहीं है। अतः, उस तीरंदाज ने उसके पास पहुँचकर उससे पूछा, ''भई, तुम यहाँ खड़े-खड़े आसमान की ओर क्यों टकटकी लगाए हुए हो?'' इस पर उस आदमी ने जवाब दिया, ''अरे, मैं क्या कहूँ; देखो न मैंने कल अपना एक तीर ऊपर की ओर छोड़ा जिसे यहीं वापस आ जाना है; परंतु वह तीर अब तक वापस नहीं आया है। मैं उसी तीर के वापस आने की प्रतीक्षा में हूँ। देखूँ, वह तीर कब तक वापस आता है। पता नहीं; वह तीर कितना ऊपर चला गया है!''

उस आदमी की वह बात सुनकर उस पहले तीरंदाज का घमंड चूर हो गया। उसने समझ लिया कि दुनिया में एक-से-एक बहादुर भरे पड़े हैं। अतः किसी को अपनी बहादुरी पर घमंड नहीं करना चाहिए।

फिर, वह तीरंदाज अपने घर लौट आया और निशाना साधकर अपनी पत्नी के कुंडल के बीच से अपना तीर पार करना उसने छोड़ दिया। पति-पत्नी खुशी-खुशी रहने लगे।

●

10

एक महाजन और एक गरीब आदमी

एक गाँव में एक गरीब आदमी था। उसने एक दूसरे गाँव में एक महाजन से कुछ ऋण लिया था; लेकिन समय पर वह आदमी ऋण अदा नहीं कर पा रहा था। इसलिए वह अपने महाजन की नजरों से अपने को बचाए रखने के लिए प्रायः अपने घर से बाहर ही रहा करता था।

एक बार जब वह महाजन तकाजे के लिए उस कर्जदार के यहाँ पहुँचा तब उसे घर पर नहीं पाने पर उसकी पतोहू से उस महाजन ने पूछा, ''बहू, तुम्हारे सास-ससुर कहाँ गए हैं?''

पतोहू ने जवाब दिया, ''ससुर जी तो नाक रहते हुए नाक बनाने गए हैं और सासु जी हवा रहते हुए हवा लाने गई हैं।''

उस महाजन की समझ में उस पतोहू की दो में से एक भी बात नहीं आई। वह बिना कुछ बोले वहाँ से वापस जा रहा था। संयोग से रास्ते में उसकी मुलाकात उस आदमी (अपने कर्जदार) से हो गई। तब, वह उस आदमी से बोला, ''ऐ मांझी, तुम कहाँ भागे-भागे रहते हो? तुमसे तो मुलाकात ही नहीं होती। आज मैंने तुम्हारी पतोहू से तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी के बारे में पूछा तो उसने जवाब दिया कि ससुर जी नाक रहते नाक बनाने गए हैं और सासु जी हवा रहते हवा लाने गई हैं। यह कैसी बातें हुईं? मेरी समझ में तो तनिक भी नहीं आई।''

उस आदमी ने कहा, ''अच्छी बात है; अपनी पतोहू से पूछकर आपको बताऊँगा कि उसकी बातों के मतलब क्या थे। इस समय तो मेरी समझ में भी कुछ नहीं आ रहा है।''

उसके बाद जब वह आदमी अपने घर पहुँचा तब उसने अपनी पतोहू से पूछा, ''बहू! महाजन को आपने क्या कहा था कि उसकी समझ में कुछ नहीं आया?''

पतोहू ने जवाब दिया, ''बाबू जी, जब वे यहाँ आए थे तब आप खेतों में काम करने गए थे। वहाँ आप खेत की मेड़ पर कुदाल से मिट्टी चढ़ा रहे होंगे। इसी से मैंने कहा था कि आप नाक रहते नाक बनाने गए हैं। मेड़ तो खेत की

नाक ही है न, बाबू जी?"

"और, अपनी सास के बारे में क्या कहा था?" ससुर ने पूछा।

पतोहू ने जवाब दिया, "उनके बारे में मैंने कहा था कि वे हवा रहते हवा लाने गई हैं। मेरा मतलब यह था कि सासु जी सूप खरीदने गई हैं। उस समय सासु जी सूप ही खरीदने हाट गई हुई थीं।"

उसके दूसरे दिन जब वह महाजन पुनः उस आदमी के यहाँ आया तब वह अपने घर पर ही था। उसने उन दोनों बातों का खुलासा उस महाजन से कह सुनाया। इस पर वह महाजन उस आदमी की पतोहू की बातों पर बहुत खुश हुआ और बोला, "ए मांझी, तुम्हारी पतोहू की बातों पर मैं बहुत खुश हूँ। जाओ, तुम्हारा सारा ऋण माफ कर देता हूँ।"

इस प्रकार, अपनी पतोहू की बुद्धिमानी से उस आदमी को ऋण की अदायगी से छुटकारा मिल गया। सब लोग खुशी-खुशी रहने लगे।

●

11

अंधविश्वास

उत्तर, दक्षिण और पश्चिम दिशा में पहाड़ से घिरा बाड़ेडीह गाँव बसा है। इस गाँव में धनी-गरीब सभी तरह के लोग हैं। घर में कुल्ही पींडा में शाम के समय सभी गपशप करते हैं।

इसी गाँव का रहनेवाला है झादगा उसके दो बच्चे हैं एक लड़की और एक लड़का। लड़की बड़ी थी, जिसका विवाह साउडीबीर ग्राम में हुआ था। जो उनके गाँव के नजदीक है। झादगा का परिवार छोटा है। खेती अधिक नहीं है फिर भी सालोभर के लिए अनाज हो जाता है। एक दिन दोनों दम्पत्ति आपस में बातें कर रहे थे कि बेटी-दामाद कैसे हैं? उन्हें देख कर आये।

बैशाख-जेठ महीने की चिलचिलाती, तपतपी धूप का दिन था। इस धरती पर पानी पड़ा। रास्ते के पेड़ों में झींगुरों की रे रे...आवाज गूँज रही थी। धरती इतनी वीरान लग रही थी, मानो धरती में जीव-जन्तु है ही नहीं। झादगा चलते-चलते बेटी-दामाद के घर पहुँचा। घर में सभी लोग थे। बैठने के लिए उसे खटिया दिया गया। उसकी बेटी ने पैर धोने के लिए लोटा में पानी दिया और उन्हें प्रणाम किया। उसके छाते को पींडा में रख दिया। उसके बाद दामाद आये प्रणाम कर बीड़ी पीने को दिया। एक दूसरे का हाल-समाचार लेते हुए बातचीत हुई।

वह उनके खाने-पीने की व्यवस्था करने लगा। कुछ देर के बाद थकावट दूर करने के लिए महुआ रस पिलाया गया पर बहुत अधिक पीने से झादगा को नशा हो गया। इधर सूर्यास्त होने लगा। धीरे-धीरे शाम ढलने लगी। उनके लिए भोजन तैयार हुआ। खाने के लिए उसे बुलाया गया लेकिन वह उठा नहीं। अपने बेटी-दामाद से उसने झगड़ा करना शुरू कर दिया। वो वहाँ से हट गये। झादगा बरामदा में सोये हुए बड़बड़ाना शुरू कर दिया। चुप रहने का नाम ही नहीं लेता। अंत में नशे के गुस्से में घर लौटने लगा। इधर रात हो चुकी थी। अंधेरे में ही पींडा में रखे झाड़ू को छाता समझकर काँख में दबा कर बिना पूछे चला आया। नशे के झोंक में उसके आगे कोई डर भय नहीं था। वह रास्ते में गिरते-पड़ते घर पहुँचा।

अपनी पत्नी को दरवाजा खोलने के लिए चिल्लाया। गहरी निद्रा में सोने के कारण तब जागी नहीं। तब वह साथ में झाड़ू लिए बाहर पींडा पर सो गया।

सबेरे जब उसकी पत्नी जागी, बाहर के पींडा में उसे सोया देख आश्चर्य चकित हुई और डर गई। उसे जगाई लेकिन उसे चोट के कारण पूरे शरीर में दर्द था। हाथ-पैर चेहरे में नोचने जैसे निशान देखकर पत्नी बोली, ''शायद तुमको रास्ते में डायन मिली थी, नहीं तो झाड़ू कहाँ से मिली। ऐसा सुना जाता है कि डायन लोग झाड़ू की साड़ी पहनती हैं। तुम्हें डायन पकड़ा था और जीभ को उल्टा दिया है जिससे तुम बता न सको ऐसा कहते हैं।'' झादगा अपनी पत्नी की बातों से भयभीत हो गया और उसे कँपकँपी और बुखार हो गया।

एक दिन गुजर गया तब भी उसे खाना खाने का मन नहीं हो रहा था और न ही बुखार उतर रहा था। तब उसकी पत्नी ने सोचा, ओझा से झाड़-फूँक कराई जाय। अपने गाँव के टिरा नाम के एक ओझा को उसने बुलाया....जो झादगा का हाथ पकड़ कर कहा कि उसे श्मशान स्थान में कुछ हुआ है।

टिरा ओझा बोला, ''साल पत्ता में तेल देखना होगा।'' उसने चार-पाँच पत्तों को मोड़ कर जमीन पर रखा। कुछ देर के पश्चात् एक-एक करके प्रत्येक मोड़े हुए पत्तों को खोला और कहा, ''इसे श्मशान में डायनों ने छेका था। इसका भाग्य अच्छा था जो बचकर आया।'' उसकी पत्नी बोली....साथ में झाड़ू भी था। टिरा ओझा बोला....''मैंने ठीक ही कहा। कुछ पूजा-पाठ कराना होगा, तभी डायन भूत छुड़ाये जा सकते हैं। धूप, धूवन, अरवा चावल, सिन्दूर, मेढ़क, गिरगिट और काली मुर्गी आदि की बलि देनी होगी, तभी डायन, भूत भागेंगे।'' इन सारी चीजों को लाया गया। इधर झादगा की पत्नी ने बेटी-दामाद को यहाँ आने का न्यौता भेजवाया। रात को ओझा ने पूजा-पाठ किया।

दूसरे दिन उनके बेटी-दामाद पहुँच गए उन्होंने पूछा क्या हुआ? उनकी माँ ने जवाब दिया, ''तुम्हारे यहाँ गये थे आधी रात को घर लौटे। लौटते वक्त रास्ते में डायन मिली थी। जिससे तुम्हारे पिता डर गये। ऐसा ओझा ने कहा है। डायन की झाड़ू को भी घर ले आये हैं।''

तब उनकी बेटी ने कहा, ''वह झाड़ू कहाँ है?'' झाड़ू को देखकर बेटी बोली, ''यह झाड़ू तो हमलोगों का है। छाता समझकर झाड़ू को ले आये हैं।'' यह बात सुनकर झादगा की आँखों के सामने से अंधविश्वास का पर्दा हट गया और सबको वास्तविकता समझ में आ गई।

●

(ग) मुंडा लोककथाएँ

1

महाप्रलय

एक बार चिन्तामणि ने अपने पति मनु को दतुवन करने के लिए लोटे में पानी दिया। मनु ने देखा कि पानी में एक मछली का बच्चा है, जो मनु से कह रहा था, मनु, तुम मुझे बचाओ तो मै। भी एक दिन तुम्हें बचाऊँगी। मछली की बात सुनकर मनु को बड़ा आश्चर्य हुआ। मनु ने पूछा, हे मछली, तुमको मैं कैसे बचाऊँ? और तुम किस विपत्ति से मुझे बचा सकोगी? मछली ने कहा कि जब तक मैं बड़ी नहीं हो जाती तब तक मेरे लिए बहुत डर है, क्योंकि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को खा जाती हैं, इसलिए तुम मुझे एक घड़े में रख दो। जब मैं कुछ बड़ी हो जाऊँ तो मुझे पोखरे में छोड़ देना। और बड़ी होने पर नदी में ले जाना जब बाढ़ आवे तो एक नाव बनाकर तुम उसी नदी में ले जाना और उस नाव पर चढ़ जाना। उस बाढ़ से सारी दुनिया डूब जाएगी और सभी मनुष्यों का नाश हो जाएगा। केवल तुम्हीं लोग बचोगे।

मछली की बात सुनकर मनु ने वैसा ही किया, उस वर्ष भयंकर बाढ़ आयी। मछली ने मनु की नाव को अपने सींग पर रख लिया। सारी दुनिया डूब गयी। पानी ऊँचे पर्वतों के भी ऊपर चढ़ गया। पचास दिन तक सारी धरती डूबी रही, सभी जीव-जन्तु मिट गये केवल वही दोनों शेष रह गये।

बाढ़ उतरने पर मनु बड़े चिन्तित हुए कि इस पृथ्वी पर फिर पेड़-पौधे और जीव-जन्तु कैसे पैदा होंगे। उन्होंने भगवान की पूजा के लिए वेदी बनाई और बलि दी। फिर भगवान से वरदान माँगा।

भगवान ने प्रसन्न होकर धरती पर फिर पेड़-पौधे और जीव-जन्तु पैदा किये। मनु की आठ सन्तान हुईं, जिसमें चार लड़के और चार लड़कियाँ थीं। उनके बड़े होने पर आपस में विवाह हुआ सबको अलग-अलग काम सौंपा गया। बड़े लड़के का नाम मुण्डा, मझले का रोडा, तीसरे का नाम मनका और सबसे छोटे का सोदूती था।

पीछे मनु के उन्हीं लड़कों की सन्तान सारे देश में फैल गई।

●

2

धरती की बेटी

धरती माता की एक बेटी थी। वह बहुंत सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता की बात सारी दुनिया में फैल गई थी। धरती माता की एक दासी भी थी। जब माँ दुनिया में घूमने जाती तो बच्ची को दासी के साथ छोड़ जाती थी। दासी बच्ची की आग के घेरे में घेर कर उसकी रखवाली करती थी।

एक दिन दासी काम में इस तरह लीन हो गई कि आग का घेरा लगाना भूल गईं। बच्ची अन्य बच्चों के साथ नदी के किनारे खेलने चली गई। पानी में उसने एक कमल खिला हुआ देखा। जब उसे निकालने के लिए पानी में समाई तो उसी में डूब मरी।

माँ जब शाम को घर वापस आई तो बच्ची को नहीं देख कर बहुत घबराई। वह इधर-उधर दौड़-धूप करने लगी, उसने दासी से पूछा कि बिद्दी क्या हो गई? दासी ने बताया कि वह यहीं तो लड़की के साथ खेल रही थी। जब लड़की से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि वह फूल के लालच में पानी में घुसी और डूब कर मर गई।

धरती बेटी की चिन्ता में पागल हो गई। उसने नित्य का काम-धन्धा छोड़ दिया। पानी बरसना बन्द हो गया। नदी-नाले सूख गए। गाछ-वृक्ष, तृन-घास मुरझा गए। धरती उजाड़ होने लगी और सभी जीव-जन्तु, पखी-पखेरू के प्यास के मारे तड़पने लगे। आदमी पानी के बिना परेशान होने लगे।

गीत

हाय विधाता हमलोगों पर अकाल पड़ा।
हाय विधाता हम विपत्ति में पड़े।
जोड़ी पोखरी सूख गई।
जोड़ा तालाब खाली हो गया।
लोग हाय-हाय कर रहे हैं।
लोग त्राहि-त्राहि मचा रहे हैं।

विधाता प्राणियों की पुकार सुनकर धरती पर आए और बोले कि हे माँ, तुमने नित्य का काम क्यों छोड़ दिया है? सारी भूमि झुलस रही है और जीव-जन्तु दुख पा रहे हैं, तुम जल्द पानी बरसाओ और सबका दुख दूर करो।

धरती माता ने कहा, और हमारा दुख कौन दूर करेगा?

विधाता ने कहा, तुम्हें कौन-सा दुख है? बताओ। धरती बोली–हे मालिक, मेरी बेटी मुझसे छीन ली गई है। जब तक वह नहीं मिलेगी तब तक सभी तड़पते रहें।

यह सुनकर विधाता बड़ी चिन्ता में पड़े और बोले कि अच्छा मैं तुम्हारी बेटी को खोजने जा रहा हूँ। बिना उसे लिए वापस नहीं आऊँगा।

विधाता यमराज के लोक में पहुँचे और रास्ते पर ही बिद्दी को खेलते हुए पाकर उससे पूछा कि क्या तुम अपनी माँ के पास नहीं जाना चाहती? बिद्दी बोली, हे मालिक जाने की तो इच्छा है, लेकिन मुझे यहाँ लाने वाले से पूछ लो।

तब विधाता ने यमराज के पास जाकर पूछा कि तुम बिद्दी को क्यों उठा लाए हो? उसकी चिन्ता में धरती माता ने काम-धाम छोड़ दिया है और सब कुछ बरबाद हो रहा है। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि इस बच्ची को उसकी माँ के पास लौटा दो।

यमराज ने कहा, हे विधाता तुम्हारी बात तो ठीक है, लेकिन अब इस बच्ची का जाना नहीं हो सकता, इसने मेरा अन्न खा लिया है।

विधाता बोले–क्या तुम यह पसन्द करोगे कि यह आधे वर्ष यहाँ और आधे वर्ष धरती के घर रहा करे?

यमराज ने यह बात मान ली। और पूछा कि क्या इतने से इसकी माँ प्रसन्न हो सकेगी?

यमराज की बात का उत्तर लाने के लिए विधाता, धरती के पास आए। और सारी बात बता दी। सदा के लिए खोई हुई बेटी को आधे वर्ष के लिए भी पाने के समाचार से धरती बहुत प्रसन्न हुई और उसने जीव-जन्तुओं को सुखी बनाया। वृक्षों में नए पल्लव लगे। फूल खिले। और आदमियों ने प्रसन्न होकर सरहुल मनाया।

विधाता फिर यमलोक पहुँचे और आषाढ़ महीना आते ही बिद्दी को लेकर धरती पर लौटे। माँ आनन्द से भर उठी। मूसलाधार पानी बरसा। नई हरियाली लहलहा गई और सभी जीव-जन्तु आनन्द से झूमने लगे।

मनुष्यों ने बीज बोए, बीज उगे, बढ़े। अन्न के भंडार से धरती भर गई।

कुछ दिन बीतने पर फिर बिद्दी की बिदाई का समय आया। फिर परिवर्तन शुरू हुआ, पानी बरसना बन्द हुआ। तृन-घास सूखने लगीं। पेड़-पौधे पीले पड़ने

लगे। और सारी धरती उदास हो गई।

बिद्दी तबसे आधे वर्ष धरती पर और आधे वर्ष यमलोक में रहती है। उसे पाकर धरती आनन्दपूर्वक काम करती है और उसके चले जाने पर विरह में काम-धन्धा छोड़कर उदास बैठ जाती है।

●

3

मुंडाओं की उत्पत्ति

धरती के नीचे पाताल लोक में राजा कालिन्द राज करते थे। और धरती के ऊपर राजा दशरथ का राज था। जब राजा कालिन्द धरती पर आये तथा उन्होंने देखा कि राजा दशरथ बहुत सुखी हैं, हँसी-खुशी में उनका दिन बीत रहा है। इससे राजा कालिन्द को बड़ी ईर्ष्या हुई। उन्होंने सोचा कि किसी तरह राजा दशरथ को तंग किया जाय और उनकी कोइल रानी को ले भागने का उपाय रचने लगे।

एक दिन जब राजा दशरथ दरबार में गये थे, उस समय कालिन्द की कोइल रानी से मुलाकात हो गई। उसने रानी से पूछा, क्या तुम्हें मेरे साथ चलना स्वीकार है?

रानी ने कहा, इतने बड़े प्रतापी राजा दशरथ को मैं कैसे छोड़ दूँ?

कालिन्द ने कहा, एक दिन सब छोटे-बड़ों की बात माननी चाहिए या नहीं?

रानी–माननी चाहिए।

कालिन्द–तुम्हारे पति रात को किसी समय क्या कहीं जाते हैं?

रानी–सबेरे जिस समय मुर्गा बाँग देता है उस समय राजा नहाने जाते हैं।

राजा कालिन्द ने मुर्गा के यहाँ जाकर कहा कि आज तुम आधी रात को बोलो। मुर्गा ने कहा, तुम तो पाताल के राजा हो और मैं राजा दशरथ की नौकरी करता हूँ, मैं नित्य के समय पर ही बोलूँगा।

कालिन्द–किसी-किसी दिन सबकी बात सुननी चाहिए या नहीं?

मुर्गा–चाहे तुम जितना भी कहो लेकिन मैं उसी समय बोलूँगा जिस समय हवा चलेगी।

तब राजा कालिन्द हवा के पास गये और उससे बोले कि हे हवा, तुम आज आधी रात में ही बहो।

हवा ने कहा, मेरा मालिक दूसरा है। तुम्हारी बात कैसे मानूँ?

कालिन्द–किसी-न-किसी दिन सबकी बात सुननी चाहिए या नहीं?

हवा ने कहा–चाहे तुम लाख कहो, लेकिन जिस समय चाँद डूबेगा उसी समय बहूँगी।

तब राजा कालिन्द चन्द्रमा के पास गये और बोले, कि तुम आज आधी रात में ही डूब जाओ। बहुत कहने पर चाँद ने मान लिया।

उस दिन चाँद आधी रात को ही डूब गया। आधी रात को ही हवा बहने लगी और हवा का बहना देखकर मुर्गा बाँग देने लगा। तब राजा दशरथ नहाने चले। उधर कालिन्द राजा दशरथ के महल में घुस गया।

राजा दशरथ के नहाते समय तीन बार मुर्गा बोला तब भी सवेरा नहीं हुआ। उन्होंने सोचा, रोज तो मुर्गा के तीन बार बोलने पर ही सबेरा हो जाता है, आश्चर्य है कि आज क्यों नहीं हो रहा है? अवश्य घर में कोई आफत आई होगी। अब मुझे घर लौटना चाहिए। वे सोने के खड़ाऊँ पर घर लौट चले।

घर के पास आने पर उन्हें रानी के साथ किसी की बातचीत सुनाई पड़ी। उन्होंने सोचा कि वह व्यक्ति लज्जित होगा और मेरी भी बदनामी होगी, इसलिए घर में घुसना ठीक नहीं है। तब उन्होंने बाहर से पुकार कर पूछा कि तुम कौन हो? तीन बार पुकारने पर भी जब कोई आवाज नहीं आई तब वे एक दूसरे बरामदे की ओर चले गये। वहाँ उनकी दासी रहती थी, उन्होंने दासी से पूछा कि घर में कौन है? दासी ने कहा, मुझे तो कुछ भी पता नहीं है। तब राजा ने अपनी बहन अंजनी के घर में जाकर उससे पूछा, अंजनी ने कहा, दादा मैं तो कुछ नहीं जानती। उधर राजा की पूछताछ की बातें सुनकर कालिन्द भाग गया।

पीछे राजा महल में अपनी पत्नी के पास आये और क्रोधित होकर उससे पूछा कि तुम किसके साथ थी? वह चुप हो गयी? राजा क्रोध से भर गये और शाप दिया कि तुमने मुझे पति के रूप में नहीं देखा और मेरे अधीन नहीं रही, इसलिए तुम्हारा पाखाना का रास्ता बन्द हो जाएगा। तुम बैठ नहीं सकोगी और लोगों की भीड़ के पास ही रहा करोगी।

रानी चमगादड़ बन गई। जो गाँव के बीच इमली के ऊँचे पेड़ों पर पैरों के सहारे टंगी रहती है।

उसके बाद राजा दाई के पास पहुँचे और शाप दिया कि तुमने धोखा दिया इसलिए तुम आकाश में पैर ऊपर करके सोओगी। और हेटेटेयो पक्षी बनोगी। तभी से हेटेटेयो चिड़िया अपने चंगुल में पत्थर फँसाकर और पैर ऊपर करके सोती है। नींद आ जाने पर वह पत्थर छूटकर उसी के बदन पर गिर जाता है और वह बादल गिरा ऐसा जानकर रोने लगती है।

फिर राजा बहन के पास गये और बोले कि तुमने मुझे नहीं बताया, इसलिए तुम बिना पति के ही गर्भवती होगी।

भाई की बात सुनकर अंजनी जंगल गई। उसने निश्चय किया कि मैं पुरुष का मुँह भी नहीं देखूँगी। देखूँगी कि कैसे गर्भवती हूँगी और कैसे भाई की बात सच होगी।

बहन ने जंगल में एक वृक्ष के कोटर में समाकर उसे चारों ओर से बन्द कर दिया, केवल हवा घुसने के लिए एक छेद रख छोड़ा और उसी में रहने लगी।

उसी जंगल में एक ब्राह्मण, बिना माता-पिता के ही एक मुरूडुम वृक्ष में पैदा हुआ था। एक दिन वह घूमते-घूमते उसी कोटर के पास आ पहुँचा। उसे मनुष्य की गन्ध मिली। उसने सोचा कि अवश्य कोई मानव सन्तान यहाँ कहीं है? और पूछा कि यहाँ यदि कोई है तो जवाब दे!

भीतर से अंजनी ने कहा मैं दशरथ राजा के शाप से जंगल में आई हूँ।

ब्राह्मण--तुम्हारा नाम क्या है?

अंजनी--मेरा नाम अंजनी है!

ब्राह्मण--तुम गुरुमुख हुई हो या नहीं?

लड़की--नहीं!

ब्राह्मण--बिना गुरुमुख हुये यहाँ किस प्रकार रह रही हो?

लड़की--मेरे भाई ने मुझे किसी का मुँह नहीं देखने का शाप दिया है। किस तरह गुरुमुख होती।

ब्राह्मण--साँस लेने की कोई राह है या नहीं?

लड़की--है।

ब्राह्मण--तब उस रास्ते पर अपना कान लगाओ।

लड़की के कान लगाते ही ब्राह्मण ने उस छेद को कपड़े से ढक दिया और फूँक मार कर चला गया। अंजनी इसी से गर्भवती हो गई।

अब वह घबराने लगी और कोटर से बाहर निकल आई। थोड़े दिन में उसे बच्चा पैदा हुआ। माँ ने 'राम' लता के पत्ते पर उसे सुला दिया। बच्चा रोने लगा। इसी समय एक नाग साँप ने वहाँ जाकर अपनी पूँछ बच्चे के मुँह में डाल दी और जैसे-जैसे सूरज की किरण उसपर पड़ने लगी वैसे-वैसे वह बच्चे पर फन की छाया करने लगा।

उसी समय मुण्डाओं के पुरखे, लुटुकुम हड़म और लुटुकुम बुढ़िया जंगल में माटा साग तोड़ने गये थे। बच्चे का रोना सुनकर उसे ढूँढ़ा और जब बच्चा मिल गया तब बुढ़िया ने कहा, इसे घर ले चलें, यह हमारे बच्चे के साथ खेलेगा।

बूढ़े ने कहा, नहीं इसे ले चलना ठीक नहीं है, यह हमारे बच्चे के साथ झगड़ा कर लेगा। आखिर बुढ़िया नहीं मानी और उसे घर ले आई। घर का बच्चा बड़ा था। जंगल से लाया हुआ लड़का उसे भइया कहकर पुकारने लगा।

एक दिन भगवान ब्राह्मण का वेश बनाकर बूढ़ा-बुढ़िया के घर आये। उन्होंने कहा तुम लोग एक बैल और एक बकरा मारकर उसका माँस पकाओ। उन्होंने वैसा ही किया। तब ब्राह्मण ने साखू और बड़हर की पत्ती के दो छोटे-छोटे बड़े पत्तल बनवाये और दोनों बच्चों को नहाने के लिए भेजा। दोनों के लिए दो महीन और मोटी धोतियाँ जुटाई गईं।

बच्चों के आने पर पूछा गया कि तुम लोग जिस धोती को पसन्द करते हो उसे चुन लो। बड़े ने मोटी और छोटे ने महीन धोती पसन्द की। अब खाने की बारी आई। बड़हर की पत्तियाँ बैल को और साखू की पत्ती पर बकरे का मांस परोसा गया था। बड़े ने बैल का और छोटे ने बकरे का मांस लिया।

खाने के बाद एक भार तैयार किया गया और थोड़ी दूर एक घोड़ा बाँधा गया। दोनों से कहा गया कि जाओ एक-एक चीज लेकर देश घूम आओ। पहले छोटा लड़का भार ढोने पहुँचा और बड़ा लड़का घोड़े पर चढ़ने लगा। मगर चढ़ नहीं सका। तब वह सीढ़ी लाने गया। उधर छोटे लड़के ने भार रख दिया और घोड़े के पास जाकर अचानक छलाँग मारकर चढ़ बैठा। उसने बड़े लड़के से कहा–भइया अब मैं चढ़ गया। बड़े ने कहा, तुमने अच्छा किया। अब मैं भार ले जाऊँगा। दोनों चल पड़े।

थोड़ी दूर भार ढोते-ढोते बड़ा भाई थक गया और वहीं बैठ गया। तब उसने छोटे भाई से कहा, जाओ भाई तुम आगे बढ़ो। मैं अब यहीं खेत बनाऊँगा और गाँव बसाऊँगा और तुम्हें कर दिया करूँगा।

छोटे लड़के का नाम नागवंशी राजा और बड़े का नाम कुम्पाट मुण्डा हुआ।

●

4

सोय गोत्र

एक मुण्डा ने चिलुवा ईकिर नामक नदी के किनारे अपने खेत में कपास बोया था। नदी की एक बहुत बड़ी सोय या सोयल मछली ने नदी से लेकर खेत तक जमीन के भीतर-भीतर माँद बना लिया था। वह हर रात उस बिल से खेत में आती और कपास को बरबाद कर दिया करती थी। किसान बड़ी चिन्ता में पड़ा कि वह चोर कौन है? एक रात वह पता लेने के लिये छिपकर बैठ गया। काफी रात गये उसने देखा कि एक बड़ी मछली कपास को खा रही है। उसने तीर चलाकर मछली को मार डाला। लेकिन वह मछली इतनी बड़ी थी कि उसे अकेले उठा सकना किसान के लिए कठिन था। उसने सहायता के लिए अपने भाइयों को बुलाया और सब उसे उठाकर गाँव ले गये। उसके टुकड़े किये गये, जो सभी भाइयों में बाँटे गये।

जिस मुण्डा ने तीर से मछली को मारा था, उसका सुइंग सोय गोत्र हुआ।

जिसने उसकी हड्डियाँ काटीं उसका जंग-सम, सोय गोत्र हुआ।

जिसने मांस के हिस्से लगाये उसका तिल सोय गोत्र हुआ।

जिसने उन हिस्सों की लोगों में बाँटा उसका ओर-सोय गोत्र हुआ।

जिसने मांस के हिस्सों को रखने के लिए पत्तियाँ लाई उसका गोत्र हुआ पतरा पैरः सोय!

एक भाई ने गेरूये रंग के गमछे में अपना हिस्सा बाँधा इसलिए उसका गमछा सोय गोत्र हुआ। गमछा सोय गोत्र के आदमी गेरूवे रंग के गमछे का व्यवहार नहीं करते। और इन विभिन्न तरह के सोय गोत्र वालों में से कोई भी सोय मछली नहीं खाता।

सोय गोत्र के दूसरे विभाग हैं—मंडी-सोय, तिकी-सोय, तुला-सोय, अदोय-सोय, रूरा मंडी-सोय, वांडा-सोय गोत्र। सब उसी सोय से निकले हैं।

●

5

केरकेटा गोत्र

परमात्मा ने पहले पहल आदम और हौवा दो व्यक्तियों को बनाया। वे दोनों अदन वाटिका में रहने लगे। उन्हें आनन्द से रहते देखकर एक दिन शैतान ने उन्हें ठगा और वे दोनों पाप में पड़ गये। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें वाटिका से निकाल दिया। उनकी सन्तान धरती पर भर गई और तरह-तरह के पाप करने लगी। यह देखकर भगवान को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने उसका नाश करने का विचार किया।

उन्हीं लोगों में एक धर्मी पुरुष था उसका नाम 'तू' था। भगवान ने तू से कहा कि तुम एक नाव बनाओ। तू ने वैसा ही किया। नाव बहुत लम्बी-चौड़ी थी। उसे देखकर लोग हँसी उड़ाते थे। तू ने भगवान के कहे अनुसार सभी जीवों का जोड़ा नाव पर रखा और अपने घर वालों के साथ नाव पर चढ़ गया। उसके बाद पानी बरसने लगा। पानी 40 दिन तक बरसता रहा। धरती के सभी जीव-जन्तु डूब मरे। बहुत दिन बाद पानी उतरा और नाव अरारात नामक एक पर्वत के पास रुकी।

तू ने यह देखने के लिए कि पानी सूखा या नहीं कबूतर और कौवे को बारी-बारी से भेजा। पानी सूख जाने के बाद भगवान ने उनका आदर किया और कुछ दिन बाद बहुत भारी आँधी आई और तू मर गया।

उसके बाद उसका परिवार बहुत बढ़ गया। उन्होंने एक दिन विचार किया कि हमलोग एक गुम्बद बनायेंगे और भगवान से बातचीत करेंगे। उनका यह विचार जानकर भगवान ने उनकी भाषा को बदल दिया। अबसे वे दूसरी भाषा बोलने लगे।

धीरे-धीरे वे सारी धरती पर भर गये। तब उन्होंने विचार किया कि हमलोगों का अलग-अलग गोत्र रहना अच्छा है। उसके बाद उन्होंने गाँव-गाँव के मुण्डा को चुना। मुण्डा ने बैठक बुलाकर एक दिन सभी प्रकार की वस्तुओं को एकत्र कराया और सबसे कहा कि तुमलोग किसे पसन्द करते हो उसे चुनो। वही तुम्हारा गोत्र

होगा। तब किसी ने साँप, किसी ने चिड़िया, किसी ने धान, किसी ने मछली, जो भाया चुना। एक व्यक्ति ने केरकेटा पक्षी को चुना। उसी के वंशज केरकेटा कहलाते हैं।

●

6

सोहराई पर्व

एक आदमी एक दिन नदी की ओर गया था। उसने कुछ बछड़ों को देखा। उनके सारे शरीर में धूल और कीचड़ लगा हुआ था। आदमी ने उन्हें पानी से धोकर साफ किया। बछड़ों ने कहा कि अब तुम जल्दी से यहाँ से भाग जाओ। नहीं तो अब हमारी मायें आयेंगी तो तुम्हें मार डालेगी। आदमी ने कहा कि मैं तुम्हारी माताओं को देखना चाहता हूँ। वह एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद जब गायें आईं तो अपने बछड़ों को साफ-सुथरा देखकर बहुत प्रसन्न हुई। उन्होंने बछड़े से पूछा, तुम्हें इतना साफ-सुथरा किसने बनाया? बछड़ों ने कहा कि एक आदमी आया था उसी ने हमें धोकर साफ किया। गायें बोली कि वह कहाँ है? हमलोग उसे देखना चाहती हैं। बछड़ों ने कहा यदि हम उसे बुलाये तो तुमलोग मार डालोगी। इसलिए हम नहीं बुलायेंगे। माताओं ने कहा कि हम मारेंगी क्यों? वह तो हमारा दयालु सहायक है।

माताओं की यह सुन्दर बात सुनकर बछड़ों ने उसे पुकारा। आदमी पेड़ से उतर आया। उसके उतरने पर गायों ने कहा कि हमलोग तुम्हारा घर देखना चाहती हैं, हमें ले चलो।

आदमी उन्हें अपने घर ले आया। उसका घर देखकर गायों को फिर लौटने की इच्छा नहीं हुई। उन्होंने आदमी से कहा, हे मालिक! अब तुम हमें अपने ही साथ रखो। हम तुम्हारी सेवा करेंगी और तुम्हारी सारी बातें मानेंगी।

आदमी ने उनकी बात मानकर अपने ही साथ रख लिया। उसने एक टेढ़ी लकड़ी खोजकर हल बनाया और बछड़ों को जोतने लगा। वह उन्हें चराने और चारा पानी का भी प्रबन्ध करने लगा।

जब भादो का महीना आया तब गोड़ा धान पक गया। आदमी उसे काटकर घर लाया और अकेले ही खा गया। उसने गाय-बैलों को नहीं दिया। जानवरों के मन में बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने आपस में विचार किया कि हम सबने मिलकर काम किया, लेकिन खाने के समय यह आदमी अकेले ही खा गया। जान पड़ता है

कि इसे हमारी चिन्ता नहीं है, इसलिए हमें फिर जंगल में चले जाना चाहिए।

ऐसा निश्चय करके वे आदमी को कोसते हुए जंगल को चल पड़े। जंगल के रास्ते में भगवान ने उनकी बात सुन ली और उनसे पूछा कि तुमलोग क्या बात करते जा रहे हो? गाय-बैलों ने कहा कि हमने आदमी के साथ मिलकर काम किया लेकिन जब अन्न उपजा तो उसने अकेले ही खा डाला। इसीलिए हमारा मन दुःखी है और हम फिर जंगल को लौटे जा रहे हैं। सिङबोंगा (भगवान) ने कहा कि तुमलोग दुःखी मत हो। उस आदमी का पालन-पोषण तो मैं भी करता हूँ लेकिन मुझे भी कुछ नहीं दिया। किन्तु इसमें उसकी कोई गलती नहीं, मेरी गलती है। मैंने इस बात का कोई नियम-धरम उसे नहीं बताया है। इसलिए चलो, लौट चलो। मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

सब आदमी के घर लौटे। भगवान ने उसे समझाया कि काम करते समय इन गाय-बैलों ने तुम्हारी सहायता की लेकिन उपजने पर तुमने इनका भाग इन्हें नहीं दिया और अकेले ही खा गए। इसलिए आज से ऐसी भूल कभी मत करो। तुम इनकी सेवा के लिए एक दिन निश्चित करो और सब मिलकर खाओ-पीओ। मैं भी यह देखने के लिए आऊँगा। इनके घरों-गोहारों में दीये जलाओ। और लक्षी-लक्ष्मी से वरदान माँगो।

आदमी ने भगवान के आज्ञानुसार आनन्दपूर्वक गाय-बैलों का पर्व मनाया। पीछे चलकर उसके बाल-बच्चे भी वैसा ही करने लगे।

तभी से लोग गाय-बैलों का शृंगार करते हैं। मांदर बजाकर नाचते-गाते हैं और दीया जलाकर दिवाली मनाते हैं जिससे सिङबोंगा को दुःख न हो।

●

7

पेरवा घाघ का देवता

पटड़ियाँ गाँव के दक्षिण में एक तालाब है जो पेरवा-घाघ से मिला हुआ है। पेरवा-घाघ में एक बार दो छोकरे गये, उन्होंने घाघ में कमल का फूल पाया। वे फूल तोड़कर घर लाये। उनकी एक छोटी बहन थी। फूल देखकर वह लुभा गई और भाइयों से कहने लगी, दादा, तुमने यह फूल कहाँ पाया? मुझे उसी जगह पर पहुँचा दो। लड़की के बार-बार हठ करने पर भाइयों ने उसे घाघ के पास पहुँचा दिया। और स्वयं घर लौट आये।

लड़की फूल तोड़ने के लिए घाघ में उतरी। फूल बहुत निकट था, लेकिन ज्यों-ज्यों लड़की उसे तोड़ने के लिये हाथ बढ़ाती वह दूर होता जाता था। लड़की लोभ के मारे बढ़ती गईं और घाघ में डूब गई।

जब वह शाम हो जाने पर भी वापस नहीं लौटी तो माता-पिता बड़ी चिन्ता में पड़े। जब रात को भी नहीं आई, तो सन्देह हुआ कि वह घाघ में डूबकर मर गई। आखिर निराश होकर सब लोग सो गये।

माता-पिता दोनों ने अलग-अलग स्वप्न देखा। पेरवा-घाघ का देवता उनसे कह रहा था कि मैंने ही तुम्हारी लड़की को अपने घर पर रखा है। तुमलोग चिन्तित मत होना। उसका दाम मैं भेज दूँगा। तुमलोग एक गोशाला बना रखना।

सवेरे पति-पत्नी दोनों अपना-अपना स्वप्न एक-दूसरे को बताने लगे। दोनों का स्वप्न एक ही था, इसलिए उन्होंने उसे सत्य मान लिया। बूढ़ा गोशाला बनाने के लिए मदद माँगने अपने भाइयों के पास गया किन्तु किसी ने उसे मदद नहीं दी। उसने अकेले ही काम चलाने लायक एक गोशाला बना लिया।

रात होने पर उस गोहार में बहुत से हिरण आये, लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्हें हिरणों को मारने की इच्छा हुई। हिरण डर कर भाग चले, उनकी भागदौड़ से आसमान धूल से भर गया और जमीन में गड्ढा हो गया। एक भी हिरण लोगों के हाथ नहीं आया। बूढ़े के गोहार में एक हिरण रह गया जिससे पीछे चलकर गाय-बैल बने। जमीन में बने हुए गड्ढे तालाब बने और आसमान में भरा

हुआ धुवाँ बादल बनकर बरसा।

घाघ के देवता ने स्वप्न में यह भी कहा था कि मैं तुम्हारे यहाँ साँप का रूप धरकर आऊँगा, तुमलोग भयभीत मत होना। स्त्री-पुरुष, बेटी-दामाद की राह देखने लगे। आखिर वे आयें। दामाद एक विशाल साँप था। बूढ़े-बूढ़ी ने चटाई बिछायी। साँप वहीं लेटा। दो-तीन दिन तक वहाँ रहकर दोनों वापस गये।

वे कुछ दिन बीतने पर उसी तरह आते और थोड़ी मेहमानी करके वापस जाते। जिस समय वे आते थे उस समय खूब पानी बरसता था। अब उन्होंने आना बन्द कर दिया है।

सोहराई के दस दिन बाद अब भी वहाँ मेला लगता है। लोग मानते हैं कि पति-पत्नी फिर ससुराल आ रहे हैं।

पीछे चलकर वे बहुत धनी हुये। उनके घर में धान-चावल की ढेरी लगने लगी। अकाल के समय वे लोगों को मुफ्त अन्न बाँटते थे।

लोग उनके पास टोकरी लेकर जाते और कहते कि मुझे इतना धान चाहिये। मैं अगले वर्ष सूद सहित वापस कर दूँगा। वे अपनी टोकरी छोड़कर लौट जाते। दूसरे दिन उनकी टोकरियाँ धान से भरी रहती थीं। वे ले जाते। अगले साल लौटा देते।

एक बार एक आदमी ने देवता के यहाँ से धान लेकर काम चलाया। अगले वर्ष लौटाते समय उसके पास करहनी का धान था जो काला था, उसने उसे ही लौटा दिया। देवता ने देखा कि किसी ने जला हुआ धान रख छोड़ा है। उसने क्रोधित होकर उस दिन से धान देना बन्द कर दिया।

पेरवा-घाघ का देवता अब भी स्वप्न में लोगों से कन्या माँगता है। लोग उससे बहुत डरते हैं। वहाँ का पाहन लड़कियों के पैदा होते ही उन्हें सिन्दूर का टीका लगा देता है। देवता यह समझ कर कि इसकी शादी हो चुकी है उसे छोड़ देता है।

●

8

हड़िया का जन्म

एक साधु ने एक मैना, एक सुग्गा, एक बाघ और एक सूअर चार जन्तु पाल रखे थे। साधु सबको बोलना सिखाता था। जानवरों ने आपस में बातचीत करने का अभ्यास कर लिया।

अचानक एक दिन साधु मर गया। वे उसे जलाने के लिए नदी ले गये। साधु के जल जाने पर चारों जन्तु चिन्ता में पड़े कि अब हमारा पालन-पोषण कौन करेगा। इस दुख से दुखित होकर उन्होंने भी चिता में जलकर अपनी जान दे दी।

थोड़े दिन बाद वहाँ झाड़ियाँ उगीं और एक सुन्दर पेड़ निकला। पेड़ के बढ़ने पर चरवाहे वहाँ गाय-बकरी चराने जाते और छाया में विश्राम किया करते। एक दिन खेल-खेल में कुछ लड़के उस पेड़ की छाल खा गये और थोड़ी देर में मात कर जमीन पर लोटने लगे। बाकी लड़कों ने गाँव में इस बात की खबर की। गाँववालों ने आकर लड़कों को जहाँ-तहाँ लुढ़कता देखा और उन्हें उठाकर घर ले गये। लोग चिन्ता में पड़े कि इन पर किस चीज का नशा इस तरह छा गया है। तब शेष अनमाते लड़कों ने बताया कि उन्होंने उस पेड़ का छिलका खा लिया था।

उस भेद को जान लेने पर लोगों ने छिलके को भात में डालकर भात को गलाया और उसका नशीला रस पीने लगे। उस रस में उन पाँचों जीवों का प्रभाव आ गया। इसीलिए जब आदमी हड़िया पीने जाता है तो पहले साधु के समान मौन बैठ जाता है। पहले दोने पर मैना के समान बोलने लगता है, दूसरे पर तोता के समान गाने लगता है, तीसरे पर बाघ के समान गरजने लगता है और चौथा दोना पीते ही सूअर के समान लोट जाता है।

●

9

डोम का ऋण

किसी जगह एक बुढ़िया रहती थी। बूढ़ा नित्य भीख माँगकर लाता, जिससे उनकी जीविका चलती थी। लेकिन बुढ़िया इस दशा से सन्तुष्ट नहीं थी। इसलिए बूढ़ा कहीं से भी घर में आता था बुढ़िया जल्दी से उसका स्वागत नहीं करती थी। बेचारा बूढ़ा चुप रहता।

एक दिन बूढ़ा भीख माँगते-माँगते एक गाँव में जा पहुँचा। उस समय उस गाँव में चेचक की बीमारी फैली हुई थी और लोग मर रहे थे। केवल दो दिन की ही बीमारी के बाद उनकी अन्तिम क्रिया का समय आ जाता था।

उस गाँव के बाहर लाशों को खाने के लिए गीधों और चीलों का झुण्ड उतर रहा था। भीख माँगने वाले बूढ़े ने देखा कि एक गीध चारों तरफ लाशों की ढेरी छोड़कर एक छोटे बच्चे का मांस खाने में लगा है। उसने गीध से पूछा कि उतने बड़े-बड़े मुर्दों को छोड़कर इस छोटे से बच्चे को खाने में तुम्हें कौन-सा स्वाद मिलता है?

गीध ने कहा, सच्चा मनुष्य यही है, इसीलिए इसे खा रहा हूँ और ये जो बड़े-बड़े कुत्ते बिल्ली हैं उन्हें मैं छोड़ देता हूँ। बूढ़े ने पूछा, तुम कैसे पहचानते हो कि वह बच्चा आदमी है और दूसरे कुत्ते-बिल्ली हैं? गीध ने अपना एक पंख उखाड़ कर बूढ़े को दिखाते हुए कहा, इसी के द्वारा मैं पहचानता हूँ कि कौन आदमी है और कौन दूसरी चीज! यह देखकर बूढ़े ने गीध से पंख ले लिया और इस बात की जाँच करने लगा कि सचमुच आदमी कौन-कौन हैं। तब उसे दिखाई पड़ा कि स्वयं उसकी बुढ़िया भी कुत्ता है। उसने सोचा कि इसी से वह मुझे रातदिन गाली देती है। उसे अन्य आदमी भी इसी तरह कुत्ता-बिल्ली कुछ-न-कुछ दिखाई पड़े। उसने जितने आदमियों को देखा उनमें डोम की एक लड़की थी जो वास्तव में आदमी थी। कुछ देर बाद वही लड़की वहाँ डाड़ी में पानी भरने आई।

जब वह पानी भरकर जाने लगी तब आदमी उसके पीछे लग गया। लड़की के घर पहुँचने पर वह भी उसके घर पहुँचा और पुकारने लगा कि घर में कौन है?

लड़की के बाप ने बाहर आकर पूछा, तुम किसे ढूँढ़ रहे हो? भिखारी ने कहा, मुझे तुमसे एक बात कहनी है। क्या उसे मान लोगे। लड़की के पिता ने स्वीकार करके कहा–बोलो।

भिखारी ने कहा–मैंने तुम्हारी लड़की को डाड़ी के पास देखा। मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मेरी इच्छा है कि जैसे भी बन पड़े मेरे साथ उसका विवाह कर दो। लड़की के बाप ने बात मान ली और विवाह हो गया।

विदाई में उस भिखारी को एक सूअर और एक कौवा मिले। वह अपनी नई स्त्री के साथ सूअर और कौवा को लेकर एक बड़े जंगल में चला गया। उसने अपनी स्त्री को घर पर ही छोड़ दिया। उस घनघोर जंगल में उन लोगों को छोड़कर और कोई नहीं था। सूअर ने बड़े-बड़े टीलों, गड्ढों को तोड़-फोड़ कर बराबर किया। इधर बूढ़ा वृक्षों को काट-काटकर गिराने लगा। वह एक ओर से जंगल काटता जाता था और दूसरी ओर से आग लगाता जाता था। इस तरह से उसने बहुत से खेत बना लिए।

कौवे को कोई काम नहीं था। वह केवल देवताओं के गाँव में जाकर उनकी बातचीत सुना करता था। दिनभर में एक बार वह अवश्य वहाँ जाता।

जब धान बोने का समय आया तब एक दिन कौवा देवताओं के घर के पास जाकर एक वृक्ष पर बैठ गया। शाम होने पर देवता बात करने लगे कि इस वर्ष जिधर पहाड़ जंगल है उधर ही पानी बरसायें। मैदान की ओर सूखा पड़ेगा। आदमियों को धन का अभिमान हो गया है। वे हमलोगों की जरा भी चिन्ता नहीं करते! कौवे ने सारी बातें ध्यान से सुनी और घर लौट पड़ा।

उधर किसान कौवे की चिन्ता में पड़ा और देर तक उसे नहीं आता हुआ देखकर ढूँढ़ने निकला। रास्ते में उनकी मुलाकात हुई। कौवे ने बताया कि मैं उस जंगल की ओर गया था। देवता लोग वहाँ बातचीत कर रहे थे। मैंने उनकी बातें सुन लीं। वे कह रहे थे कि इस वर्ष जंगल पहाड़ की ओर पानी बरसायेंगे और आदमियों को कष्ट देंगे। इसलिए हमें इस वर्ष जंगल, पहाड़ की ओर ही खेती करनी चाहिए। आदमी बहुत प्रसन्न हुआ, दूसरे दिन से ही वह जंगल की ओर तरह-तरह के बीज बोने लगा।

जैसा कि देवताओं ने कहा था पहाड़ों पर झमाझम पानी बरसा जो तराई में उमड़ता हुआ आया और सारे बीज जमकर बढ़ चले। देवता यह देखकर चकित हो गये।

जब फसल के फूलने-फलने के दिन आये, तब देवता बातचीत करने लगे कि इस आदमी को बरबाद करना चाहिए। इसकी फसल के लिए हमलोग चाँया को बनावें, बातचीत के समय कौवा वहीं था।

उसने किसान को सारी बात बता दी। उसने किसान से कहा कि जाओ खेत की चारों ओर पत्तियाँ इकट्ठी करो और जब कीड़े आवे तो पत्तियाँ जला दो। बूढ़े ने वैसा ही किया, सारे चाँया आग में जल मरे। देवता चकित हो गये और इसी से उनका मन जल उठा।

एक दिन जब कौआ देवताओं के घर के पास गया था तब देवता बातचीत कर रहे थे कि उस बूढ़े पर हमारे सारे उपाय असफल हुए। इसलिए उसकी फसल को नष्ट करने के लिए हमलोग पक्षियों को बनायेंगे जो तीन दिन में ही सारी फसल खा डालेंगे। कौवे ने घर आकर किसान से कहा कि जाओ जंगल के सारे पेड़ों को काटकर गिरा दो। केवल बीच में एक पेड़ छोड़ रखो और उसकी डालडाल पर लासा लगा दो। बूढ़े ने एक बड़ी कुल्हाड़ी लेकर पेड़ों को काट डाला और बीच के पेड़ पर लासा लगा दिया।

जब देवताओं की ओर से पंछी उतरने लगे तो और कोई सहारा न पाकर सबके सब उसी वृक्ष पर बैठने लगे। धीरे-धीरे सारे पंछी पेड़ में सट गये। नीचे से एक बूढ़ा एक बड़ी लग्गी से उन्हें मारकर गिराने लगा। और उसकी स्त्री टोकरी में इकट्ठा करने लगी। उनसे जितने पंछी खाये जा सके उनहोंने खाये और बाकी को फेंक दिया।

देवता सब तरह से हार गए। फसल काटकर खलिहान में लाई गई। किसान बहुत दिन रखवाली करने के डर से देवरी करने की बात सोचने लगा।

उधर कौआ फिर देवताओं की बात सुनने गया। उनमें बात चल रही थी कि अब बूढ़ा देवरी करेगा। सो ऐसा हो कि एक बार की देवरी में एक ही काठ धान निकले। कौआ लौट आया और आदमी से बोला कि तुम एक बार में एक ही बोझे की देवरी करो। उस दिन किसान ने एक ही बोझा धान पसारा और देवताओं के कहे अनुसार उसमें काठ भर धान हुआ। इस तरह करते-करते धान की ढेरी लग गयी। उसके घर का कोना-कोना अनाज से भर गया।

उधर उस वर्ष जिन लोगों ने मैदान की ओर खेती की उनके खेतों में सूखा पड़ा, चारों ओर अकाल पड़ गया। भूख के मारे त्राहि-त्राहि मच गई। सभी तड़प रहे थे। कोई दूसरे की चिन्ता करनेवाला नहीं था।

आदमियों की यह दशा देखकर भगवान बड़ी चिन्ता में पड़े। वे उनकी रक्षा का उपाय सोचने लगे। तब उन्होंने देखा कि डोम राजा के घर में अनाज का भंडार भरा हुआ है। वे उसके घर पहुँचे और आदमियों की रक्षा के लिए ऋण माँग लिया।

इसी तरह बार-बार अकाल पड़ता रहा और भगवान का ऋण बढ़ता गया। उन्हें लौटाने का अवसर नहीं मिला। डोम राजा का वह ऋण भगवान आज तक भी चुका नहीं पाये हैं।

जंगल के वे स्त्री-पुरुष आज तक अपने ऋण के लिए भगवान को पकड़ते हैं, जिससे ग्रहण लगता है। और जब तक भगवान का ऋण समाप्त नहीं होगा तब तक सूरज और चाँद में ग्रहण लगता रहेगा।

●

10

बाघराय बाचराय

एक गाँव में दो बहुत गरीब आदमी रहते थे। वे नित्य राजा के घर भीख माँगने जाया करते थे। राजा नित्य उन्हें कुछ न कुछ देता था। राजा के घर एक गाय थी जो रुपये का पाखाना करती थी। एक दिन बूढ़े-बूढ़ी उसी गाय के लिए हठ ठान बैठे। जब वे और कुछ लेने को तैयार नहीं हुए तब राजा ने गाय दे दी। वे घर लौट आये।

गाय नित्य जंगल में चरने जाती और शाम को लौटकर रुपयों का गोबर करती। जंगल में उसे एक दिन एक बाघिन मिली। उन दोनों में मित्रता हो गई। दोनों साथ ही रहतीं और चरतीं। नदी में गाय नीचें पानी पीती और बाघिन ऊपर। उन्हें दो बच्चे हुये। बाघिन का बच्चा बड़ा और गाय का छोटा था। उनके नाम बाघराय और बाचराय पड़े। मातायें रोज चरने जातीं और लौटकर बच्चों को दूध पिलातीं। वे दोनों साथ-साथ खेलते।

धीरे-धीरे जब बच्चे बड़े हो गये तो उन्होंने एक दिन आपस में विचार किया कि माँओं के आने पर हम लोग ढाल-तलवार माँगें। शाम को जब माँयें चरकर आयीं तो बच्ची ने दूध पीने से मुँह फेर लिया। माताओं ने उनका दुख पूछा। बच्चों ने कहा कि जब तक हमारे पास ढाल-तलवार नहीं होगी तब तक हमलोग दूध नहीं पियेंगे। माओं ने कहा कि तुमलोग इसकी चिन्ता मत करो, हम बहुत जल्द ला देंगी।

एक दिन जिस रास्ते से तलवार बेचने वाले जाते थे उसी रास्ते पर गाय जाकर लेट गई और बाघिन झाड़ी में छिप कर बैठ गई। ढाल-तलवार वाले जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने गाय को मरा हुआ समझा। वे अपना सामान रखकर उसे ले जाने का प्रबन्ध करने लगे। इतने में बाघिन झाड़ी में से गरजते हुये निकली। सभी डर के मारे भाग चले। माताओं ने ढाल-तलवार लाकर बच्चों को दे दिया। उन्होंने तलवार चलाने का ढंग सीख लिया।

एक दिन गायें चरने गईं और एक जगह पानी पीने लगीं। नित्य बाघिन

धारा के ऊपर पानी पीती थी और गाय नीचे। उस दिन संयोगवश गाय ने ही ऊपर पिया। गाय के मुँह का फेन धारा में बह चला जिसे बाघिन ने पी लिया। उसे बड़ा स्वाद मिला। बाघिन ने सोचा कि जिसका फेन इतना स्वादिष्ट है उसका मांस कैसे होगा! यह सोच कर उसने गाय को मार डाला।

दोपहर होने पर भी जब मायें जंगल से नहीं लौटीं तब बच्चे रोने लगे। बाघिन गाय को खाते समय गरज रही थी उसे सुनकर वाचराय के मन में भय समा गया। उसने कहा हे भाई, जान पड़ता है तुम्हारी माँ मेरी माँ को खा रही है। बाघराय ने कहा, ऐसा नहीं हो सकता। और यदि बाघिन तुम्हारी माँ को खायेगी तो मैं उसे काट डालूँगा।

बहुत देर बाद बाघिन अकेली ही लौटी। लौटते ही बाघराय ने अपनी माँ को काट डाला। और फिर दोनों भाइयों ने वह जंगल छोड़ दिया।

एक घने जंगल में जाकर एक वृक्ष के नीचे उन्होंने आग जलाई। पेड़ के ऊपर चिड़ियों का घोंसला था। और रोज पहाड़ी साँप चिड़ियों को खाने के लिए जाता था। उस दिन साँप काफी रात बीतने पर आया। उस जलती हुई आग को देखकर साँप ने पूछा–

कौन सोया है, कौन जगा है?

वाचराय जगा था। उसने कहा, बाघराय सोया है, वाचराय जगा है। एक का ढाल जगा है, एक का तलवार जगा है।

यह बात सुनकर साँप पीछे खिसक गया। फिर वह दूसरी बार आया और वही पूछा। इस बार वाचराय तलवार लेकर आगे बढ़ा और साँप के पेट में समाकर उसे मार डाला और उसके सात टुकड़े करके पेड़ के नीचे लौट आया।

पेड़ के ऊपर चिड़िया बाचराय के उपकार से बहुत प्रसन्न हुई और उनमें से एक चिड़िया बाचराय के भोजन के लिए पेड़ से गिर पड़ी। बाचराय ने उसे आग में पकाकर कपड़े में बाँध लिया। सवेरा होने पर बाघराय ने पूछा, तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया? बाचराय ने कहा, भाई मैं अकेले ही काफी था।

वे आगे चले। नदी के किनारे मुँह-हाथ धोकर उन्होंने पकी हुई चिड़िया खाई और फिर आगे बढ़े। शाम होने पर वे एक बुढ़िया के घर पहुँचे। उस घर में एक राक्षस आकर रोज आदमियों को खा जाया करता था। इसलिए बुढ़िया ने उन्हें ठहरने से मना किया। उन्होंने कहा कि हम बहुत गरीब हैं राक्षस हमें ही खा जाय तो ठीक है। और वहीं रह गये। बुढ़िया ने उन्हें राक्षस के आने का रास्ता बता दिया। बच्चों ने रास्ते में आग जला दी और बैठ गये।

काफी रात बीतने पर राक्षस आया और उसने पूछा, कौन सोया है, कौन जगा है?

दोनों ने कहा—बाघराय जगा है, बाचराय जगा है।

एक तलवार जगी है, एक ढाल जगी है। तब राक्षस पीछे हट गया। दूसरी बार राक्षस चुपचाप आया। बाघराय और बाचराय ने पूछा, पहले तुम मारोगे या हम! राक्षस ने कहा, पहले तुम्हीं लोग वार करो। तब बाघराय ने उसके पेट में समाकर पेट फाड़ डाला और उसकी आँख, कान, पैर, हाथ सब काटकर रख लिया और नदी की ओर चले गये।

सवेरे एक कुम्हार घड़ा लेकर उसी रास्ते से आ रहा था। वह अपना बहिंगा निकाल कर मरे हुये राक्षस को मारने लगा और चिल्लाने लगा—

कुम्हार की मार!
बहिंगा की मार!

फिर घर आकर अपनी औरत को पीटने लगा कि अब मैं तुमहें क्यों रखूँ? अब तो मेरी शादी राजकुमारी से होगी। बात यह थी कि उस राज में पहले से ही राजा ने यह हुकुम सुना दिया था कि जो राक्षस को मार देगा उसे आधा राज-पाट दे दूँगा और राजकुमारी से उसकी शादी होगी।

कुम्हार ने अपनी औरत को लात मारकर घर से निकाल दिया और राजा के यहाँ पहुँचा। राजा ने उसकी बात को सच मानकर उससे अपनी बेटी ब्याह दी।

थोड़ी देर में बाघराय और बाचराय बुढ़िया से जलपान माँगने आये। बुढ़िया ने कहा, हे बाबू तुम लोग राजा के पास जाओ। कुम्हार ने राजा से कहा कि उसने राक्षस को मारा हे और राजकुमारी से उसका ब्याह होने वाला है। वहाँ तुम्हें खूब खाना मिलेगा।

दोनों राजा के महल पहुँचे। उन्होंने राजा से पूछा, कौन-सा पर्व मनाया जा रहा है? राजा ने कहा, कुम्हार ने राक्षस को मारा है इसलिए मैं उससे अपनी बेटी का ब्याह कर रहा हूँ। बाघराय ने कहा, उसके मारने का प्रमाण क्या है? और फिर दोनों ने राक्षस का हाथ, पैर और आँख-कान दिखा दिया। राजा ने कुम्हार की धूर्त्तता से उसे लात मारकर भगा दिया।

राजा ने बाघराय और बाचराय दोनों को खूब खिलाया-पिलाया और अपनी बेटी को ब्याह कर उन्हें आधा राज दे दिया। दोनों वहीं रहने लगे।

●

11

लीमन और राक्षस

किसी जंगल के किनारे एक घर था। उसमें एक विधवा बुढ़िया रहती थीं। उसे एक ही लड़का था जिसका नाम लीमन था। माँ-बेटा बहुत गरीब थे।

एक दिन जब घर में खाने के लिए कुछ नहीं था, तब बुढ़िया ने बेटे से कहा—जाओ बेटा, बाजार में यह गाय बेच आओ। और खाने के लिए कुछ खरीद लाओ। लीमन गाय को लेकर बाजार चल पड़ा। रास्ते में एक आदमी मिला। उसने लीमन से पूछा कि गाय का क्या दाम लोगे? लीमन ने कहा एक सौ पाँच रुपया। उस आदमी ने कहा मैं तुमहारी गाय के बदले में तुम्हें एक चीज दूँगा, उसने सेम का एक बीज, निकाल कर लीमन के हाथ में रख दिया। लीमन ने कहा, इससे मैं गाय नहीं बेचूँगा मेरी माँ बिगड़ जाएगी। आदमी ने कहा--जिस समय तुम्हारी माँ बिगड़ेगी उस समय चुपचाप घर से निकलकर इस बीज को घर के पिछवाड़े रोप देना और फिर देखना क्या होता है? लीमन ने बीज लेकर गाय दे दी और घर वापस लौट आया।

घर लौटने पर जब माँ ने रुपये माँगे तो लीमन ने सेम का बीज उसके हाथ पर रख दिया। बिगड़कर माँ उसे भला-बुरा सुनाने लगी। उसी समय लीमन चुपके से निकला और उसने घर के पीछे सेम का बीज रोप दिया। उसी समय बीज में अंकुर निकला, लता फैली, फूल खिले और देखते-ही-देखते फलों के गुच्छे लटकने लगे। माँ-बेटे ने उन्हें तोड़कर बाजार में बेचा जिससे गाय के दाम से भी अधिक रुपये मिले। इसी तरह वह लता उन्हें नित्य फल देने लगी।

एक दिन लीमन लकड़ी लाने जंगल गया। जंगल में एक मिठाइयों का बना हुआ घर था। लीमन वहीं जा पहुँचा। उस घर में एक राक्षस रहता था। उसने जाते ही लीमन को पकड़ लिया और घर के भीतर ले गया। घर में एक सारंगी रखी हुई थी। लीमन सारंगी बजाना अच्छी तरह जानता था। वह सारंगी उठाकर बजाने लगा। सारंगी की आवाज सुनते ही राक्षस पर मस्ती छाने लगी और वह सो गया।

लीमन का गुण देखकर राक्षस ने उसे नहीं खाया और अपने साथ रख

लिया। लीमन रोज मिठाई खाता और सारंगी बजाता था। उधर लीमन की माँ चिन्ता में पड़ी थी कि लीमन कहाँ चला गया।

राक्षस के घर में एक मुर्गी थी, उससे जब कहा जाता कि 'अन्डा दो' तब वह अंडा देती थी। एक रुपये का पेड़ था जिसमें सदा रुपया फलता था।

लीमन रोज सारंगी बजाता, जिससे राक्षस सो जाता था और फिर उठकर अन्डा पीता था।

एक दिन लीमन ने सारंगी बजाई। राक्षस सो गया। लीमन ने मुर्गी को कपड़े में छिपा लिया और अपने घर ले आया। मुर्गी को घर में छोड़कर स्वयं फिर राक्षस के घर लौट आया।

नित्य की तरह उठते ही राक्षस बोला--'अन्डा दो'। पर अन्डा कौन देता? तब उसने लीमन से पूछा कि मुर्गी को कौन ले गया? लीमन बोला--मैं तभी से यहीं तो हूँ, ले कौन जायेगा। राक्षस चुप ही रहा।

दूसरे दिन राक्षस के सो जाने पर लीमन ने रुपये का पेड़ अपने घर पहुँचा दिया।

और फिर तीसरे दिन सारंगी भी उठा ले गया। इस बार जब राक्षस सोकर उठा तब सारंगी के साथ लीमन भी नहीं था।

राक्षस क्रोध से भर उठा और लीमन के घर पहुँचा। राक्षस के पहुँचते ही लीमन ने अपनी माँ को छिपा दिया और स्वयं सेम की लता पर जा चढ़ा। राक्षस जोर से चिल्लाया। उसके क्रोध को और भी बढ़ाने के लिए लीमन चिल्लाया। लीमन को ऊपर देखकर राक्षस सेम की लता पर झूलता हुआ ऊपर चढ़ने लगा। जब वह बहुत ऊपर जा पहुँचा तो लीमन लता के ऊपर से नीचे कूद पड़ा और दौड़कर उसने दौली से लता को काट दिया। लता के कटते ही राक्षस डाल पात समेत नीचे गिर पड़ा। लीमन ने फौरन उसे मार डाला।

माँ-बेटा अच्छी तरह जीवन बिताने लगे।

●

12

हीरा राजा

मुण्डाओं के राजा भूपति राय का एक भण्डारी था। जिसका नाम बिरजू भण्डारी था। उसने राजा के लिए पिठौरिया में एक गढ़ बनवाया। राजा पविरागढ़ से पिठौरिया आता-जाता था और कुछ दिन वहाँ रहता था। वहीं उसको एक पुत्र हुआ जिसका नाम हीरा राजा रखा गया। भूपति राय के मर जाने पर हीरा राजा को राजा बनाया गया।

एक बार हीरा राजा ने महाराजा को पूरी मालगुजारी नहीं दी। महाराजा दुर्जन साल ने बिगड़कर हीरा राजा को पकड़ने के लिए अपने सिपाहियों को भेजा। दुर्जन साल के सिपाहियों ने आकर गढ़ को घेर लिया। हीरा राजा अपने साथ दो हीरे लेकर और घोड़े पर चढ़कर भाग निकला।

सिपाहियों ने हीरा राजा का पीछा किया और कुछ दिन पीछा करते-करते उसे पकड़ लिया। वे महाराजा के पास ले गए। हीरा राजा ने मालगुजारी पूरी करने के लिए एक हीरा महाराजा को दे दिया। लेकिन तिस पर भी महाराजा ने उसे नहीं छोड़ा और वर्ष भर के लिए जेल में डाल दिया।

और उसके दिए हुए हीरे की जाँच के लिए महाराजा ने एक लुहार को बुलाया। लुहार ने ज्योंही हीरे को निहाय पर रखकर घन से मारा कि हीरा निहाय में घुस गया। महाराजा चकित हो गए। उन्होंने हीरे को निकालने की बहुत कोशिश की किन्तु सफलता नहीं मिली। तब उन्होंने सोचा कि उसे हीरा राजा ही निकाल सकता है।

जब हीरा राजा को लाने के लिए सिपाही उसके पास गए तो उसने कहा कि जब तक मैं कैद से नहीं छूटता तब तक नहीं जा सकता और न हीरा को निकालने का उपाय बता सकता हूँ।

सिपाहियों से यह बात सुनकर महाराजा ने हीरा राजा को छोड़ देने की आज्ञा दी। लोग उसे महाराजा के पास ले आए। हीरा राजा ने अपना दूसरा हीरा निहाय में घुसे हुए हीरे के सामने किया। तुरन्त वह उछल कर बाहर निकल आया।

महाराजा ने उसी दिन से हीरा राजा को छुट्टी दे दी और अपने राज्य के सभी राजाओं से बड़ा बनाया।

जेल से घर आकर हीरा राजा ने पत्थर का एक गढ़ बनवाना शुरू किया। उसने नौ कारीगर बुलवाया गढ़ में नौ कोठे उठाए। प्रत्येक में नौ-नौ कोठरियाँ बनीं और नौरतन-गढ़ उसका नाम रखा।

हीरा राजा ने अपने राज्य का बड़ा उत्तम प्रबन्ध किया।

उसके राज्य में एक विधवा स्त्री के बच्चे ने एक दिन तालाब के नाले में कुमुनी रोपी। जब वह सबेरे पहुँचा तो कुमुनी में एक भी मछली नहीं थी, उनकी जगह पत्थर की गोलियाँ भरी थीं। उन्हें बेकार समझ कर केवल एक गोली लेकर लड़का घर आया। जब रात हुई तो गोली में से प्रकाश फूट पड़ा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि यदि सारी गोलियाँ लायी होती तो बड़ा अच्छा था।

एक दिन वह अपनी गोली लेकर बाजार गया और उसे एक बनिये को बेच दिया। बनिये ने पैसा तो नहीं दिया पर पाँच वर्ष तक उसके लिए हल्दी मसाला और नमक का खर्च चलाते रहने का वादा किया।

वह हीरा था। बनिया उसे हीरा राजा के पास ले गया। राजा ने पूछा कि यह हीरा तुम्हें कहाँ मिला? बनिये ने बताया कि इसे मैंने एक विधवा के बेटे से खरीदा था। लड़के ने मछली मारने वाली कुमुनी में उसे पाया था। यह सुनकर हीरा राजा ने अपने छोटे भाई के साथ मिलकर नाले को बाँध दिया।

जब बाँध बन गया तो उसमें इतना पानी भर गया कि नाली से रात-दिन बहने पर भी तालाब खाली नहीं हुआ। यह देखकर राजा ने मल्लाहों को बुलाया और अपना हीरा तालाब में फेंक कर उन्हें खोजने की आज्ञा दी। लेकिन दिन-रात खोजने पर भी वे नहीं पा सके। वे तालाब के ही अन्दर रोने लगे।

अब हीरा राजा स्वयं तालाब में घुसा और सात दिन सात रात पानी में डूबा रहा। राजा को बाहर आते नहीं देखकर लोगों ने समझा कि वह डूब मरा या पानी के जन्तुओं ने उसे खा डाला। वे सब अपने-अपने घर लौट गए। एक मल्लाह और एक घासी दो आदमी वहाँ रह गए।

सात दिन के बाद हीरा राजा अपने हाथ में तीन हीरे पकड़े हुए निकला और बोला कि यहाँ कौन-कौन आदमी है। मुझे पानी पिलाओ।

घासी ने कहा, हे राजा! मैं तुम्हें कैसे पानी पिलाऊँ? तब मल्लाह ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने मल्लाह से कहा कि आज से तुम ब्राह्मण कहलाओगे और सभी जातियों के लोग तुम्हारा पानी पीयेंगे।

राजा ने फिर घासी से कहा कि तुमने मेरे घोड़े की रखवाली की इसलिए आज से नायक कहलाओगे। राजा ने उसे सिमूहातू नामक गाँव दिया।

जिस समय हीरा राजा तालाब में डूबा हुआ था, उस समय सबने समझ लिया था कि वह मर गया। यह खबर पाकर एक बड़ाइक हीरा राजा की जगह राजा बन बैठा था। लौटने पर जब राजा ने अपनी गद्दी पर उसे बैठा देखा तो उसे बड़ा क्रोध आया और आज्ञा दी कि सारी बड़ाइक जाति को काटकर मार डालो। सिपाहियों ने उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारना शुरू किया। एक बड़ाइक भागते हुए एक जुलाहे के करघे के गड्ढे में छिप गया। सिपाहियों ने वहाँ पहुँचकर जुलाहे से पूछा कि क्या किसी को इधर भागकर आते देखा? जुलाहे ने बहाना बना दिया। जाति में वही एक बच रहा। तभी से बड़ाइक लोग कपड़ा बुनने का काम करने लगे।

कुछ दिन बाद हीरा राजा पिठौरिया से सारा धन-दौलत लेकर ढोयसागढ़ में आया और वहीं रहकर राज चलाने लगा।

●

13

महाजन और कर्जदार

एक मुण्डा ने भूख से पीड़ित होकर ऋण लिया। बहुत दिन बीतने पर भी जब वह ऋण नहीं चुका सका तो महाजन ने एक सिपाही को भेजा। उस समय किसान जंगल गया था। घर में उसकी लड़की भर थी। सिपाही ने पूछा, तुम्हारा बाप कहाँ है?

लड़की ने कहा, वह सीधी लकड़ी को टेढ़ी करने गया है।

सिपाही ने कहा, वह कब तक आयेगा।

लड़की ने उत्तर दिया, अगर आयेगा तो नहीं आयेगा। अगर नहीं आयेगा तो आयेगा।

सिपाही की समझ में कुछ नहीं आया। वह लौट गया और सारी बात महाजन को बता दी। कुछ दिन बाद महाजन ने फिर उसे भेजा। किसान के घर जाने पर वही लड़की मिली। सिपाही ने पूछा, तुम्हारा बाप कहाँ गया है?

लड़की ने कहा, वह काँटे की बारी काँटे से घेरने गया है।

सिपाही बिना समझे-बूझे लौट गया। तीसरी बार फिर एक सिपाही आया। इस बार भी उत्तर देने के लिए वही लड़की थी। पूछने पर लड़की ने बताया, मेरी माँ एक को दो करने गई है और बाप छोटे को बड़ा बनाने गया है।

सिपाही फिर लौट गया। महाजन ने उसे चौथी बार भेजा। उसने आकर लड़की से पूछा, तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं?

लड़की ने जवाब दिया, माँ बच्चों को पकाने गई है और बाप आगा-पीछा करने गया है।

सिपाही इस बार बहुत परेशान होकर लौटा और निश्चय किया कि अब मैं फिर नहीं आऊँगा। रुपया तो मिलता नहीं, उलटे मूर्ख बनना पड़ता है।

कुछ दिन बीतने पर महाजन ने फिर उसे जाने को कहा। सिपाही ने कहा, इस बार तुम भी चलो। अकेले मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। तब दोनों किसान के घर चल पड़े।

वहाँ पहुँच कर महाजन ने पुकारा, इस घर के लोग कहाँ हैं? लड़की आवाज सुनकर बाहर निकली। महाजन ने पूछा, तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं?

लड़की ने बताया, माँ बीमारों का हाथ देखने गई है और बाप सफेद को काला बनाने गया है।

बात किसी की समझ में नहीं आई। वे घर लौट आये। महाजन सोचने लगा कि वह ऋण कैसे वसूल किया जाय, अबकी बार वह अकेले किसान के घर पहुँचा। उसने लड़की से पूछा, तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं?

लड़की ने तुरन्त उत्तर दिया, माँ घर में है और बाप आकाश से पानी रोक रहे हैं।

महाजन ने जब शुरू से लेकर अन्त तक की सारी बातों को याद किया तो सोचने लगा कि इन बातों में क्या रहस्य छिपा है जो समझ में नहीं आता। उसने लड़की से कहा, बेटी इन सारी बातों को मुझे समझा दो मैं ऋण छोड़ दूँगा।

लड़की ने कहा, भला उतने रुपये और अनाज का ऋण इन बातों से उतर जायेगा?

महाजन ने कहा, मैं जरूर छोड़ दूँगा। जाओ अपने माँ-बाप को बुलाओ और मुझे इन बातों का अर्थ बताओ।

उस समय किसान छप्पर पर चढ़ घर छा रहा था। वह नीचे उतरा और महाजन के पास जाकर उसने जुहार किया। महाजन ने कहा, तुम्हारे घर आते-जाते मैं परेशान हो गया। कभी तुमसे मुलाकात नहीं हुई। किसान ने कहा, तुम जब-जब आये तब-तब मैं घर पर ही था और आज भी यहीं मिला हूँ। अब तो तुम मेरी बेटी से बोल चुके हो कि इन बातों को बता देने से मैं ऋण छोड़ दूँगा। सुनो उनका अर्थ बताता हूँ।

पहले सिपाही से मेरी बेटी ने कहा था कि मेरा आप सीधे पेड़ को टेढ़ा करने गया है। अगर आयेगा तो नहीं आयेगा। नहीं आयेगा तो आयेगा। मैं नदी के पार हल बनाने गया था। लड़की ने सीधे पेड़ को टेढ़ा करना जल बनाने के बारे में कहा था और आना नहीं आना नदी पार करने के बारे में।

दूसरी बार उसने कहा था कि मेरा बाप काँटों से काँटों को घेर रहा है। उस समय मैं बैंगन का खेत घेर रहा था।

जब लड़की ने छोटे को बड़ा करना कहा था उस समय मैं रुई धुन रहा था।

जिस समय लड़की ने कहा था कि माँ बच्चों को पकाने गई है और बाप आगा-पीछा कर रहा है उस समय माँ रहर के जलावन से रहर की दाल पका रही थी और मैं आग ताप रहा था।

जिस समय उसने बताया था कि माँ बीमारी का हाथ देखने गई है और बाप

सफेद को काला कररहा है उस समय माँ खाना बना रही थी और मैं लिख रहा था।

उसी तरह आज मैं घर छा रहा था जिसे लड़की ने बताया कि बाप आकाश से पानी रोकने गया है।

किसान का सारा ऋण छोड़कर महाजन घर लौट गया।

●

(घ) खड़िया लोककथाएँ

1

करम जतरा

एक बार महादेव और पार्वती ने करम लगाया। उनकी सात बेटियाँ थीं। बेटियों ने उपवास किया। मकई, उरद, चना, धान आदि अन्नों का जावा उठाया गया। सात दिन पूरा हुआ तो उन्होंने पहान से कहा, ''हमारे लिए करम काट दो।'' पहान करम की डाली काटकर लाया और गाड़ दिया। उपवास करने वाली लड़कियाँ डाली के चारों ओर बैठ गईं। पहान ने धूप-दीप जलाकर पूजा की। इसके बाद लड़कियों को करम का नाम-गुण बतलाया। नाम-गुण इस प्रकार हैं—

''करमा और धरमा दोनों भाई करम की सेवा-पूजा करते थे। करम के दिन धरमा ने करम के ऊपर दूध डाला। करमा ने दूध गरम करके डाला। करम नाराज हो गया और गंगा जमुना के बीच जाकर खड़ा हो गया। करमा ने करम को उसकी जगह पर खड़ा न देखकर धरमा से पूछा, ''करम कहाँ गया?'' धरमा ने कहा, ''जाओ और पूछो कि क्यों नाराज हुआ, तथा उसे बुलाकर लाओ।'' धरमा चला गया। उसने बहुत बुलाया किन्तु करम नहीं आया।

अब करमा तैयार होकर बुलाने जाने लगा। रास्ते में उसे एक गिलहरी मिली जो डाली-डाली फुदक रही थी। उसने उससे पूछा, ''ऐ ऋषि मुनि, तुमने मेरे करम को देखा है?''

ऋषि-मुनि बोला, ''मैंने देखा तो था किन्तु पकड़ न सकी।'' करमा ने सुना और प्यार से उसकी पीठ को सहलाते हुए पार हो गया। उसी समय से गिलहरी की पीठ पर पाँच उँगलियों के निशान हैं।

करमा आगे बढ़ गया। जाते-जाते रास्ते में एक गाय मिली। गाय ऊँचाई पर थी और उसका बच्चा गड्ढे में था। करमा ने गाय से पूछा, ''गाय! तुमने मेरे करम को देखा है?'' गाय बोली, ''मेरा थन फट रहा है, मेरे बछड़े को ऊपर ला दोगे?'' करमा बछड़े को ऊपर ले आया। गाय बोली, ''मैं तो मुँह से लपक लेती शायद। जाओ नाराज नहीं है। लाओगे तो आएगा।''

करमा आगे बढ़ गया। आगे बढ़ने पर एक बगुला मिला। करमा ने बगुले

से पूछा, "बगुले, तुमने इधर से जाते हुए मेरे करम को देखा है?" बगुला बोला, "मैं करम-धरम को नहीं जानता, मैं तो अपना पेट देखता हूँ।" करमा ने सुनकर बगुले के गले और पैर को पकड़ कर खींच दिया। तभी से बगुले की गर्दन और पैर लम्बे हैं।

करमा और आगे बढ़ा तो एक घोड़ा मिला। करमा ने घोड़े से पूछा, "ऐ घोड़े! तुमने इधर से जाते हुए मेरे करम को देखा है?" घोड़ा बोला, "मैं तो झुक कर अपना ही पेट देख रहा हूँ।" सुनकर करमा ने घास को दूर रख दिया और घोड़े के पैर को पीछे खींच कर बाँध दिया। तभी से घोड़े की गर्दन और पिछली टाँग लम्बी हो गई।

करमा को कुछ और दूर बढ़ने पर सिल के ऊपर बट्टा रखा मिला। सिल से करम ने पूछा, "ऐ सिल! तुमने मेरे करम को इधर से जाते हुए देखा है? सिल बोला, "हाँ, मेरे बट्टे को नीचे उतार दो। करम आएगा, तुमसे ही आएगा।"

करमा ने बट्टे को उतार दिया। उसी समय से बट्टे पर चावल पीसकर रोटी छानकर परसादी चढ़ाते हैं।

वहाँ से पार होने पर करमा को करम मिला। उसने उपवास किया और नाचते-नाचते करम को कन्धे पर लादकर ले आया और आँगन में गाड़ दिया। इसके बाद अरवा सूत उसके चारों ओर लपेटकर धूप-धुवन, दीया जलाकर सम्मान दिया। करम खुश हो गया।

तभी से वह 'करम राजा' कहा जाने लगा।

●

2

डैनेवाले घोड़े

ईश्वर, जिस प्रकार कुम्हार घड़ा बनाने के लिए बनाता है, उसी प्रकार मिट्टी को रौंद-रौंद कर आदमी बना-बनाकर सुखा दिया करता था। हंसराज, पखराज आदि नामक घोड़े थे, उन घोड़ों के डैने होते थे। सुखायी गयी मूरतों को घोड़ा आ-आकर कुचलकर चौपट कर देते थे। तब ईश्वर ने कहा कि अब दूसरा उपाय किये बिना नहीं बनेगा। ऐसा कहकर उसने चार कुत्तों को बनाया कि वे पहरा दे सकें। उन कुत्तों का नाम उसने चौंरा, भौंरा, लीली, भूली रखा। और उसने दो अन्य मूरतें बनायीं और उन बुतों के पास कुत्तों को बैठाया कि जब डैनेवाले घोड़े रौंदने के लिए उड़कर आते थे, तब कुत्ते दौड़ने लगते थे। इस प्रकार बुत-मिट्टी सूख गयी।

तब ईश्वर ने उन मिट्टी के बुतों में जीवन-साँस फूँक दी। और वे बुत जीवित मनुष्य बन गये। तब उसने घोड़ों के पंखों को काट दिया। और भगवान से कहा कि घोड़ों की पीठ पर बैठ जाओ तथा दोनों बड़े प्यार से कुत्तों को पालो।

ईश्वर की आज्ञा के अनुसार अब तक भी यही होता है। मंत्र जपने वाले आदमी अब तक भी मंत्र करते समय (देवड़ा) यह जपते हैं–

हे हंस राज घोड़े, सुन्दर रंग वाले घोड़े - असा बासीर
आ आओ, आ आओ, लीली, भूली, चौंरा, भौंरा आ आओ।।

नोट-(1) चौंरा सफेद रंग की पूँछ वाला।
भौंरा कुत्ते को यह नाम दिया जाता है।
लीली किसी बड़ी मधुमक्खी। भूली अस्पष्ट?
गुतु किसी कुत्ते को पुकारने के लिये यह शब्द प्रयुक्त होता है।

भाव–जाति में कतिपय प्रचलित प्रथा को समझाने या उस पर प्रकाश डालने के लिये इस प्रकार के प्रसंग या ऐसी लोक-कथा कही जाती है। मनुष्य का आरंभ मिट्टी की मूरत से होना और उस पर भगवान का जीवन फूँकना 'बाइबल-कथा' से प्रभावित हुआ होगा।

●

3

वनरंगी रानी

(वनभैंसा की बेटी) एक गाँव के एक घर में एक तुरी और उसकी पत्नी रहते थे। तुरी की पत्नी का गर्भ था। उसी समय तुरी और तुरी-पत्नी दोनों ही बाँस लाने के लिए वन गये। उसी दिन तुरी-पत्नी का प्रसव दिन आ पहुँचा था और वन में ही उसने प्रसव किया तो दो बच्चे हुए, एक लड़का और एक लड़की हुई। उस समय तो उन दोनों को बहुत कठिनाई हो गयी कि क्या बाँस ढोएंगे अथवा इन दोनों बच्चों को ढोएँगे। बाद में दोनों ही ने सलाह-मशविरा किया कि दो बच्चे हुए सो दोनों को ही लेंगे तो भूख से मर जाएँगे, सो नहीं, एक बच्चे को लेंगे और कुछ बाँस भी लेते जाएँगे। तब तुरी ने बाँस ढोया और उसकी पत्नी ने लड़के को लिया तथा बच्ची को कोरकोट की पत्तियाँ बिछाकर उसपर सुलाया और कोरकोट की पत्तियों से ही ढाँक कर वन में ही छोड़कर दोनों घर लौट गये।

कहीं से वनभैंस चरती-चरती बच्ची सुलायी गयी थी उधर ही गयी। बच्ची के रोने को सुनी और बोली कि कोई रो रहा है तथा देखने गयी। तब देखती है तो एक आदमी-बच्चा है। भैंस के मन में दया आ गयी और उसने धीरे से बिछायी गयी पत्तियों को हटाया और अपने सींग को नीचे लगाकर नथुने से उठाया तथा अपनी खोह में ले गयी। उसको उसके मुख में अपना दूध चुला-चुला कर पिलाने लगी। बाजार के रास्ते महाजन आदि बैलों पर ढेर के ढेर कपड़े लादकर लिया करते थे उन्हें जोरों से दौड़ायी, उस समय सभी बाजार जानेवाले उसी ओर दौड़े आ रहे हैं तो वे अपने प्राण लेकर भागे। लदनी बैल भी उछलने लगे तो कपड़ों की गठरी छूटकर बिखर गयी और बैल कहाँ से कहाँ भाग गए। भैंस गठरी आदि को उठा-उठाकर ले गयी और पहुँचा गयी। कपड़े की गठरी खोलकर कपड़े को मुलायम तौर से बिछा गयी तथा बच्ची को सुला दी। और ऊपर से भी ढाँक दी तथा ठीक से पालने लगी। पालते-पालते बच्ची बड़ी हो गयी, तब अपने दूध के घटने लगने पर बाजार के रास्ते पर घड़े के घड़े दूध और दही ला देती थी। फिर उसने चावल दाल तवा भी लूटकर ला दिया। इसपर लड़की ने खुशी-खुशी दूध भात पकाया। वह

दाल-भात पकाने और खाने लगी तथा नहाने जैसे दूध में डूबी रहने लगी। नदी जाकर नहाने और मलने के लिए घड़े के घड़े तेल ला रखी तथा रंग-बिरंगी साड़ियाँ जिसे पसंद उसे पहनकर सुख-चैन से बढ़ने लग गयी। अचानक कोई आयगा और मेरी बेटी को ले जाएगा शायद कहकर भैंस ने उससे कहा, जिस समय मैं नहीं रहूँगी, उस समय दरवाजे को खुला मत छोड़ना। इस कारण लड़की दरवाजे को बंद करके ही रहने लगी। तब जब कभी उसकी माँ आती थी तब उसे खोलती थी और प्रतिदिन बंदकर ही रहा करती थी।

एक दिन की बात है कि एक राजा शिकार खेलने गया और शिकार खेलते-खेलते वन में अचानक पहुँच गया। दोपहर होने पर एक स्थान पर बैठ गया और सर-सिपाही तथा नौकर-चाकर से कहा कि देखो तो कहीं से आग लाओ, हुक्का पीयेंगे।

सबने इधर-उधर ध्यान से देखा। किसी ने कहीं भी आग का पता नहीं पाया। सबसे पीछे एक काना सिपाही जो था, वह बोला, गरीबों के राजा, बहुत दूर से एक पहाड़ पर सिर्फ धुआँ दिखाई दे रहा है। तो दूसरे सिपाहियों ने कहा, 'अबे साला काना, तुम्हारे लिए ही बहुत दीख रहा है, हमलोगों की दो आँखें हैं सो तो नहीं सूझ रहा है।' काना बोला, 'वह क्या है अरे साले लोग।' तो राजा ने कहा, 'जा रे काना' लाओ आग को।' तो काना चला गया। रास्ते पर धुआँ चक्कर लगाया फिर भी दरवाजा न दीख पड़ा। बाद में जिस स्थान पर निकल रहा था उसी स्थान पर पुकारा, 'कोई है, थोड़ी आग तो देना।' तब लड़की ने पत्थर के दरवाजे को जरा सा खोलकर आग को आँगन में फेंक दिया और द्वार बंद कर दिया। काना उसकी सुन्दरता देखकर लुभा गया। आग लेकर राजा के पास पहुँचा और बोला, 'हुजूर, गरीबों के राजा, मैंने एक अचरज देखा।'

राजा ने कहा, 'कहो जी अमुक, क्या देखा।' तो बोला, 'गरीबों के राजा कि रास्ते पर की खोह में एक अनोखी लड़की है। इतना सुन्दर कि क्या सो कहूँ। उसके समान तुम्हारी पत्नी भी सुन्दर नहीं है। उतना तो उसकी एड़ी ही सुन्दर है।'

राजा ने कहा, सच में बताना, कि ठगते हो, सच नहीं होगा तो तुमको जिंदा ही गाड़ दूँगा।' सिपाही ने कहा, 'गरीबों के राजा, मैं सच कहता हूँ।' राजा ने तुरन्त ही दूसरे सिपाहियों को उसके साथ भेजा कि देख लें। वे भी आग देखने के बहाने देखकर आये और बोले, 'गरीबों के राजा, सच में है।' राजा ने पूछा कि कितनी बड़ी लड़की है? तो उन्होंने कहा कि छोटी सी ही है। लेकिन सुन्दरता के मारे आग के साथ ही हँसी-खुशी से बात कहती है। राजा ने कहा, 'क्या कोई उसे नहीं ला सकता है?' तो वे बोले, गरीबों के राजा, दरवाजा भी तो नहीं खोलती है, दूर से ही उसने आग फेंक दी और उसी क्षण उसने द्वार बंद कर दिया।

कानना ने कहा, गरीबों के राजा, पहले भी उसने वैसा ही किया। निकलेगी तब न कोई भी ला सकेगा शायद। तो राजा बोला, चलो मुझे दिखाओगे मैं लाऊँगा ही। उस जगह पहुँचा तो राजा एक मक्खी बन गया और दरवाजे पर लटक गया। और नौकरों से आग माँगने को बोला। जैसे ही लड़की ने आग देने के लिए दरवाजा खोला, राजा ने उसी क्षण ही प्रवेश कर उसे पकड़ लिया। तब लड़की छटपटाने लग गयी और बोली कि छोड़ दो, तुम यहाँ क्यों घुसे? जाओ, नहीं तो मेरी माँ आ जाएगी तो तुमको जीने नहीं देगी। राजा ने कहा, 'प्राण जाय तो जाय मैं तुमको लिए बिना नहीं छोड़ूँगा।' तब उसने अपनी माँ को बुलाना शुरू किया। तो राजा ने भी अपने नौकरों से कहा कि तुम लोग अभी यहाँ से भाग जाओ और कल मिल-जुल कर आना। जितने सिपाही आए थे, सभी भाग गए। राजा ने अन्दर दरवाजे को ठीक से बंद कर दिया। और अन्दर ही रह गया। कुछ क्षण के बाद भैंस आयी तथा द्वार खोलने बोली तो लड़की ने कह लौटाया कि एक राजा यहाँ घुस गया है और मुझे पकड़ लिया है तो कैसे खोलूँगी। मुझे लेना चाहता है। भैंस दरवाजे को खोलते-खोलते ढूँसते-ढूँसते थक गयी और पछड़ाते-पछड़ाते रक्त से लथपथ हो गयी और मरने लगी। मरते वक्त बोली, मेरी बेटी, मैं तो मर रही हूँ और द्वार तो नहीं खोल सकी, अब तो तुमको छोड़ रही हूँ सो नहीं, जाते समय मेरे एक सींग को उखाड़कर लेती जाना और उसे कभी नहीं छोड़ना। किसी दिन कोई दुःख तकलीफ होगी तो इसे गाड़ देना और खड़ा कर देना। तब जहाँ-जहाँ गाड़ोगी, वहाँ-वहाँ तुम्हारे लिए सभी वस्तुएँ प्राप्त होंगी। और बहुत देर तक गिरी, छटपटायी और मर गयी?

दूसरे दिन राजा के सिपाही जमा होकर दूर से ही देखते-देखते आये तो क्या देखते हैं कि दरवाजे पर ही बहुत बड़ी भैंस मर गयी है। और दरवाजा बंद ही है। डर-भय से दूर से ही पुकारा तो राजा दरवाजा खोलकर बाहर आया। और देखता है तो भैंस मर गयी है और उसकी बेटी भभक-भभक कर रो रही है। राजा ने अपने आदमियों से कहा कि यही उस लड़की की माँ थी। मैंने अंदर से द्वार बंद कर दिया था, उस समय यह बाहर से दरवाजा खोलते-खोलते थक गयी और गिर गयी, बड़ी छटपटायी और मर गयी। सो हम उसे जलाते हैं। भाइयों लाल-लाल लकड़ियों को लाओ। तुरन्त ही उन्होंने लकड़ी खोज-खोज कर इकट्ठा कर दी। लड़की ने एक सींग उखाड़ लिया और ले लिया। इसके बाद लकड़ी जमा करके उन्होंने आग सुलगा दी और उसको जला रखा। तब लड़की को ले लिया। उसकी सभी वस्तुओं को जिन्हें भैंस ने लाकर जमा किया था सब को लाद कर लेते चले और घर पहुँचकर लड़की के लिए नौकर-चाकर आदि को ठहरा दिया और रानी से जवान होगी तो ब्याह करूँ कहकर अपने काम राज्य-पाठ देखने ताकने में लग गया।

तब उसकी रानियाँ लड़की पर ईर्ष्या करने लगी और नौकर-चाकर छुड़वाकर उसे बकरी चराने भेज दिया और खाने के लिए थोड़ा-थोड़ा जूठा-कचरा बासी गला भात दे दिया। लड़की उसे नहीं खाती थी और फेंक देती थी और प्रतिदिन बकरी चराने के लिए उन्हें बहुत दूर लेती और क्या करती थी? कि सींग को टाँड़ में गाड़ देती है और उसी जगह साने को गढ़ कस्बा हो जाता है। नौकर-चाकर, धान, चावल, खाना-पीना और गढ़ में ही बर्तन थाल, कटोरी आदि सब सामान सिर्फ सोने के और एक हिंडोला भी बन जाते हैं। खा-पीकर सोने के हिंडोले पर ही चढ़कर सारा दोपहर सोती और सभी दासियाँ उसे झुलाने में लगी रहती हैं। कहाँ कौन नौकर बकरी चराता है? और जब सूर्यास्त हो जाता, तब वह सींग को उखाड़ लेती तथा कमर में खोंसकर रख देती और बकरियों को खदेड़ते-खदेड़ते ले जाती थी। प्रतिदिन ऐसा ही किया करती थी।

एक दिन जिस समय वह बकरी चराने गयी थी और गढ़ बन कर तैयार हुआ था तथा खा-पीकर सोने के हिंडोले पर झूल रही थी उसी समय राजा का एक सिपाही उस रास्ते से होकर कहीं जा रहा था तो उसने गढ़ को और अन्दर की वस्तुओं को तथा नौकर-चाकर को देखकर आश्चर्य किया। लौटकर उसने राजा को खबर दी कि राजा साहब मैंने एक अनोखी बात देखी। राजा ने कहा, 'बताओ, क्या देखा?' तो उसने कहा कि मैंने यह देखा कि अमुक टाँड़ पर एक सोने का गढ़ था। गढ़ के भीतर सभी चीजें सिर्फ सोने की थी और नौकर आदि भरे गये थे। और एक सोने का हिंडोला टँगा था उसी में एक औरत लेटी हुई थी। उसकी सहेलियाँ उसे झुला रही थीं। इसे देखकर मैंने सोचा कि यहाँ तो कुछ भी नहीं था तो कहाँ से ये सब आये। देखूँ तो क्या तमाशा है? और एक स्थान में छिपकर देखा कि सूर्य डूबने पर वह लड़की उठी और उसकी सहेलियों ने जल दिया और वह हाथ-मुँह धोकर खाने बैठ गयी। नौकर आदि ने खाना-पीना ला दिया। उसने खाया-पीया। तब मैं देखता हूँ तो गढ़ आदि सभी चीजें तथा नौकर-चाकर नहीं है। लड़की भर है और सरकारी बकरियों को खदेड़कर जमा करके गढ़ की ओर खदेड़ लायी। राजा ने कहा, अच्छा, दूसरे दिन जाकर फिर देखना कि कौन बकरी चराने जाता है सो खबर देना कि वह वन से मेरी लायी हुई लड़की को तो नहीं भेजते होंगे। सिपाही ने कहा कि मैं सोचता हूँ कि वह सोने के गढ़ में अच्छी-अच्छी साड़ियाँ आदि पहन लेती होगी और गढ़ के मिट जाने पर फटी-पुरानी पहन लेती है। उस जगह तो ऐसा ही मालूम होता था। 'अच्छा, कल बकरी चराने जायेगी तब देखने जाना।'

दूसरे दिन जाकर उसने देखा तो वैसी ही सभी चीजें हैं। तो लौटकर उसने राजा को खबर दी कि आज भी वैसा ही हुआ है। वही लड़की है। तीन दिनों तक

राजा ने स्वयं जाकर देखा तो वास्तव में वही लड़की है। तो छिपकर देखने लगा, तब गढ़ में नाना प्रकार की चीजें सिर्फ सोने की भरी हैं तथा नौकर-चाकर हर तरह के काम करने लगे हैं। सहेलियाँ उसे ठीक दरवाजे के सामने सिर-कान संवार-सिंगार करदे रही हैं। खाने का समय हुआ तो खाने के पहले उन्होंने लोटे में जल दिया। खा-पीकर उसी तरह हिंडोले पर लेटी और सहेलियाँ उसे झुलाने लग गयी है। उसी समय राजा मक्खी बनकर उड़कर गया और हिंडोले पर बैठ गया और हाथ को पकड़ ही दिया। और उसने कहा कि मेरा कसूर माफ करना मैंने नहीं जाना कि मेरे गढ़ में तुमको ऐसी-ऐसी कठिनाइयाँ हुईं। लड़की ने कहा कि मुझे कोई कठिनाई नहीं है। तुम्हारी रानियाँ मुझे बकरी चराने भेज देती हैं और खाने के लिए जूठा-कचरा देती है तो क्या दुःख है। मुझे खाने-पीने की कोई कमी नहीं है। जिस दिन तक विवाह न होगा उस दिन तक बकरी ही चराऊँगी तो क्या ही दुख होगा, और मुझको कुछ कमी भी क्या है? पर तुम अपने वादा का ध्यान दो। मुझको कैसा लाया और यहाँ कैसा रखते हो? मैं अभी तुम्हारी बकरियों को छोड़कर कहीं भी चली जाती तो मुझे क्या हर्ज होता? कि क्या मुझे कोई कमी है? परन्तु तुम अपने प्राणों को छोड़कर मुझे लाने गए थे, इसी कारण मैं तुम्हारे वचन की आशा देख रही हूँ और तुमने कहा है कि जवान हो जायगी तो विवाह करूँगा, एक दिन तुम मुझे खोजोगे। राजा ने कह कि बकरी-पठरू आदि को छोड़ दो और मेरे साथ चलो। तो लड़की ने कहा, नहीं, अभी मेरा काम यही है छोड़कर कैसे जाऊँ। इस तरह एक दिन के ठोकर का कारण कैसे होने दूँ। तुम्हारी रानियों ने मुझे बकरी चराने भेजा है। तुम्हारा इतना ही दोष है कि तुमने किसी समय भी मुझे न ढूँढ़ा। मुझे कोई फिक्र नहीं। आज तक मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई है। तुम चले जाओ, मैं तो अपने काम के लिए आयी हूँ। मैं रात को तुम्हारे गढ़ में जाऊँगी ही, सो तुम क्या चिंता करने लगे हो।

तब राजा लौट गया और उस दिन से उसका बकरी चराना छुड़वा दिया तथा कुआँ खुदवाना आरंभ किया। जब कुआँ तैयार हो गया तब ही उसने अपनी रानियों को कुएँ की पूजा-भेंट करने को कहा। जैसे ही वे कुएँ की उद्घाटन-पूजा में गयी वैसे ही उसने उनको कुएँ में ढकेल दिया और मिट्टी चलवा दी। और उस लड़की से विवाह करके राज्य-पाट करने लग गया।

●

4

सात भाई और भाजी साग

एक गाँव में सात भाई और एक बहन रहती थी। लड़के रोज शिकार खेलने जंगल जाते थे। लड़की घर का काम करती थी। एक दिन बहन साग काट रही थी तो उसकी उँगली कट गयी। वह अब सोचने लगी कि, इस खून को कहाँ पोंछे। ''कपड़े पर पोंछूँगी तो भाई देखेंगे। भीत पर पोंछूँगी तो भी भाई देखेंगे, सो नहीं, साग पर ही पोंछ दूँगी।'' सोचकर उसने साग में खून पोंछ दिया।

जब जंगल से उसके भाई लौट कर आए और खाने बैठे तो साग में बड़ा स्वाद आया। वे पूछने लगे, ''कौन-सा साग बनायी हो जो इतना स्वादिष्ट है।'' वह बोली, ''भाजी साग पकायी हूँ।''

उसके भाई बोलने लगे, ''भाजी साग इतना स्वादिष्ट कभी नहीं लगा था। बताओ तुमने क्या मिलाया है?'' ऐसा कहकर जब वे बहुत दबाव डालने लगे तो बहन ने बता दिया, कि साग काटते समय उसकी उँगली कट गयी थी कपड़े पर या दीवाल पर तो भाई खून को देख लेंगे सोच कर साग में ही खून पोंछ लिया था।

खाने के बाद सभी भाई आराम करने लगे और आपस में बातें करने लगे कि जब इसका खून ही इतना स्वादिष्ट है तो मांस तो और भी स्वादिष्ट होगा। अतः इसको मार कर खाना चाहिए। इस तरह सलाह करके दूसरे दिन उन्होंने एक मचान बनाया और उसमें ले जाकर बहन को खड़ा किया और बारी-बारी से उस पर तीर चलाने लगे। सबसे पहले बड़े भाई ने तीर चलाया। उसका निशाना ठीक नहीं बैठा। इस पर वह लड़की मचान पर से गाने लगी–

''मार-मार दादा, छाती ताइक ताइक दादा, छाती ताइक ताइक।
तोर तीर दादा दाएँ-बाएँ जाए दादा, दाएँ-बाएँ जाय।''

क्रमशः छहों भाइयों ने तीर चलाया, लेकिन किसी का तीर निशाने पर नहीं बैठा। पर छोटे भाई का तीर लग गया। लड़की गिर कर मर गई। जब बहन मर गयी तब बाकी छहों भाई छोटे भाई से कहने लगे, ''जाओ जी, तुमने मारा है, अब ढोकर लाओ।'' वह गया और बहन को ढोकर उतार लाया। फिर उसके भाई कहने

लगे, ''मांस काटो, तुमने मारा है।'' छोटे भाई ने रोते-रोते मांस काटा। बड़े भाइयों ने उसको पानी लाने के लिए भेजा, तो सात छेद वाला घड़ा दिया। वह घड़ा लेकर गया और डाड़ी (चूँआ) कच्चा कुआँ के किनारे बैठकर रोने लगा। उसका रोना सुनकर एक मेंढक निकला और पूछने लगा, ''क्यों रो रहे हो?'' लड़के ने बताया, ''मेरे भाइयों ने सात छेद वाला घड़ा मुझे पानी लाने के लिए दिया है।'' मेंढक बोला, ''रो मत, हम सात मेंढक छेदों में, चिपक जाते हैं। तुम पानी लेकर दूसरे घड़े में डाल देना। तब हम वापस चले आएँगे।'' उसने वैसा ही किया। पानी भरते समय कुछ मछलियाँ और केंकड़े भी उसने पकड़े।

इसके बाद लड़के ने खाना पकाया, मांस पकाया और अपने लिए मछली और केंकड़ा बनाया। सभी भाइयों को परोसा। अपने लिए परोसा और ओलता (अंधकार) में खाने बैठा। जब सभी भाई मांस खाते थे, तो वह मछली खाता था। जब वे हड्डी चबाते थे तो वह केंकड़ा खाता था। खा चुकने के बाद लड़के ने सभी हड्डियों को बटोर कर एक बिल (दीमक की बाँबी) में डाल दिया। कुछ दिनों के बाद उसमें एक बाँस उगा।

एक दिन उसी रास्ते से एक जोगी गुजर रहा था। बाँस के निकट आने पर उसे पाखाना लगा। वह वहीं झाड़ियों की आड़ में बैठा। अब तो बाँस गीत गाने लगा, ''पारे हागू, पारे हागू जोगी बसायला जोगी बसायला।''

जोगी उठकर इधर-उधर देखने लगा। कोई नहीं दिखाई दिया तो वह फिर बैठने लगा, परन्तु फिर बाँस से वही गीत सुनाई दिया। जोगी उठकर उस बाँस को देख लिया। वह गया और उसको केंदरा बनाने के लिए काटने लगा। बाँस गीत गाने लगा–

''धीरे काटू, धीरे काटू जोगी बाथेला, जोगी बाथेला।''

लेकिन जोगी नहीं माना और बाँस काट कर ले गया। उसने उसका केंदरा बना लिया। तब उसको लेकर गाँव-गाँव भीख माँगने जाने लगा। केंदरा बजाने पर गीत निकलता था :-

''बाजे बाजे केंदरा न बाजे केंदरा ई तो मोर दुश्मन भाई।''

गीत सुनकर लोग बहुत खुश होते थे और उसको बहुत भीख मिलती थी।

एक दिन वह उन्हीं भाइयों के गाँव में पहुँचा। उसने बड़े छहों भाइयों के दरवाजे पर जाकर जब बजाया तो वही गीत निकला–

''बाजे-बाजे केंदरा न बाजे केंदरा ई तो मोर दुश्मन भाई।''

भाइयों ने सुना तो वे उसको डाँटने लगे। भाग, भाग, कैसा गीत गाते हो? वे जल्दी-जल्दी थोड़ी-सी भीख देकर भगाने लगे। अंत में वह छोटे भाई के दरवाजे में गया। वहाँ जब बजाने लगा तो गीत निकला :-

"बज, बज रे केंदरा ई तो मोर दुलारो भाई।
बज, बज रे केंदरा इ तो मोर बलारो भाई।"

छोटा लड़का सुनकर समझ गया। वह जोगी से बोला, "ठीक से बजाओ न जोगी, एक ही बार बजाने से कितनी भीख मिलेगी?" जोगी खुश होकर और बजाने लगा। तब छोटे लड़के ने खाना पका कर खाने के लिए कहा और जोगी को रात को अपने यहाँ रोक लिया। उसने जोगी को रात में खूब शराब पिलायी। जोगी नशे में सो गया। मौका देखकर उस लड़के ने केंदरा छिपा दिया। उसकी जगह फटा-टूटा केंदरा रख दिया। सुबह को उठकर जोगी अपने रास्ते चला गया। किन्तु जब बजाने लगा तो ठीक नहीं बजा। फिर जोगी उसी भाई के पास वापस आया और बोलने लगा, "यह मेरा केंदरा नहीं है, मेरा वाला दे दो।" लेकिन लड़का बोला, "यह तो तुम्हारा ही केंदरा है, हमारे पास कहाँ से केंदरा आएगा?" आखिर जोगी टूटा-फूटा केंदरा लेकर वापस चला गया।

इधर घर में लड़का रोज जंगल जाता था। उसके जंगल जाते ही केंदरा से उसकी बहन निकलती थी और घर का सारा काम करके घुस जाती थी। लड़का आकर देखता था तो उसे बड़ा आश्चर्य होता था कि कौन उसके घर का काम करता है। एक दिन टोह लेने के लिए जंगल जाने के बदले मक्खी बनकर दीवाल पर चिपक गया। घर में सन्नाटा होते ही लड़की निकली और वैसा ही सब काम करके जाने ही वाली थी, कि मक्खी से लड़का बनकर उसने उसे पकड़ लिया। लड़की बोलने लगी, "न छू, न छू मोंय डोम हेकों, चमार हेकों।" लेकिन लड़के ने नहीं छोड़ा। बाद में दोनों भाई-बहन प्रेम से रहने लगे।

●

5

सात भौजाई और ननद

एक गाँव में सात भाई और एक बहन रहते थे। सातों भाई की शादी हो चुकी थी। सातों भाई बहन से बहुत प्रेम रखते थे, इसलिए भौजाइयाँ ननद से बहुत चिढ़ती थीं। जब उनके पति नहीं रहते थे तो भौजाइयाँ ननद को सताती थीं।

एक बार सातों भाई मलंग जा रहे थे। उन्होंने अपनी-अपनी पत्नियों से जाते वक्त कहा कि वे उनकी बहन को अच्छी तरह रखें, न सतावें। अपनी बहन से भी उन्होंने कहा कि वह दुःखी न हो, जितनी जल्दी हो सकेगा वे लौट आएँगे।

इधर पुरुषों का निकलना था कि स्त्रियों ने अपनी ननद को सताना शुरू कर दिया। उन्होंने एक टाँड़ में उरद बोया और लड़की से कहा, ''जाकर सभी उरद को बीन डालो। थोड़ा-सा घटने पर भी तुम्हारी खैर नहीं।'' आखिर लड़की क्या करती टाँड़ पर जाकर रोने लगी। उसका रोना सुनकर पेड़ पर बैठा कबूतर उससे पूछा कि वह क्यों रो रही है? लड़की ने बताया, कि ''उसकी भौजाइयों ने उरद बो दिया है और अब उससे चुनने को कह रही हैं।'' कबूतर बोला, ''मत रो, मैं अपने साथियों को बुला देता हूँ। हम सब मिलकर थोड़े ही समय में तुम्हारा काम कर देंगे।'' यह कहकर उसने आवाज दी। आवाज सुनते ही बहुत से कबूतर उतर आए और सारा उरद चुन दिया। लड़की उरद लेकर घर चली गयी।

उसकी भौजाइयों ने देखा कि ननद को वे हरा नहीं पा रही हैं, तो दूसरे दिन एक खेत में उन्होंने तिल बो दिया और बोली कि जाकर खेत का सारा तिल बीन दे, एक भी कम नहीं होना चाहिए। लड़की जाकर खेत में बैठ गई और रोने लगी। उसे एक पंडुक ने देखा। वह उससे पूछने लगा कि क्यों रो रही है? लड़की ने बताया कि उसकी भौजाइयों ने तिल बोकर उसे बिनने को कहा है। पंडुक ने कहा, ''मत रो, हम तुम्हारी मदद करेंगे।'' ऐसा कहकर अपने साथियों को उसने बुलाया और सबने मिलकर सारा तिल बिन दिया। लड़की तिल लेकर चली गई।

दूसरे दिन उसकी भौजाइयों ने एक खेत में सरसों बो दिया और लड़की को

चुनने के लिए भेज दिया। उस दिन तिलोइया पंडुकों ने उसकी मदद की। सब तरफ से हार कर स्त्रियों ने सताने का दूसरा उपाय निकाला।

एक दिन लड़की को बिना कुल्हाड़ी और रस्सी के जंगल में लकड़ी काट लाने भेजा। जंगल जाकर लड़की बैठ गई और रोने लगी। रोने की आवाज सुनकर एक हाथी आया और पूछने लगा, कि वह क्यों रो रही है? उसने बताया कि उसकी भौजाइयों ने उसे बिना कुल्हाड़ी के लकड़ी लाने भेजा है। अब वह लकड़ी कैसे काटेगी? हाथी ने उसे नहीं रोने के लिए कहा और ढेर सी लकड़ियाँ तोड़ दीं। अब लकड़ी बिना रस्सी के बाँध कर कैसे ले जाए? वह फिर रोने लगी। तब एक नाग ने आकर, उससे कहा कि "मत रो, मेरी नागिन नेठो बन जाएगी, मैं लकड़ी बाँध दूँगा। तुम जाकर लकड़ी मत पटकना धीरे से रख देना, हम लोग लौट आएँगे।" लड़की ने ऐसा ही किया और साँप लौट गए।

कुछ महीनों के बाद उसके भाई मलंग से लौट आए। बहन ने अपनी भौजाइयों की करतूत बता दी। सुनकर उन्होंने अपनी पत्नियों को पीट-पीट कर घर से निकाल दिया और सभी भाई-बहन आपस में प्रेम से रहने लगे।

●

6

एक साही और बूढ़े की कहानी

बहुत दिनों की बात है कि एक बूढ़ा रहता था। वह लकड़ी छीलने के लिए अपनी कमर में अपना बसूला खोंसकर जाने लगा। जिस समय वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ काम कर रहा था, अपने बसूले को खोजने लगा। खोजते-खोजते वह थक गया। तब उसने यह कहा, 'अरे वन के जानवर, अगर कोई यहाँ है तो मुझे बसूला खोजने में मदद दो, जो पाएगा उसे मैं अपनी बेटी दे दूँगा।' पास ही साही रहता था। वह इस बात को सुन रहा था। वह तुरन्त ही मदद देने के लिए आया और बोला, 'आपने क्या कहा बूढ़ा?'

बूढ़े ने कहा, 'कुछ भी नहीं।' साही ने फिर कहा, 'सच में आपने कुछ तो कहा।' तब अंत में बूढ़ा बोला, 'मैंने अपना बसूला खो दिया है उसे जो कोई भी खोजकर ला देगा उसको मैं अपनी बेटी दूँगा।' साही ने कहा, 'बूढ़े जी, आपका बसूला तो आपकी कमर पर ही है।' आखिरकार बूढ़े को अपनी बेटी देना ही पड़ा और उसने यही कहा कि जिस समय यह खजूर का वृक्ष मर जाएगा, उसी दिन मेरे यहाँ आना। साही प्रतिदिन उस खजूर-वृक्ष को देखने जाता था, परन्तु वह मरता ही नहीं था। साही ने एक चूहे से मित्रता कर ली और उसने चूहे से कहा, 'तुम खजूर के पेड़ की जड़ को कुतर देना तो वह मर जाएगा।' खजूर का वृक्ष मर गया और साही उसकी डाली को पकड़कर उसके घर गया। उस समय वह युवती आँगन बुहार रही थी। साही को देखकर लड़की ने कहा, 'पिताजी साही आ रहा है।' उसके पिता ने कहा, 'नहीं बेटी, साही नहीं है, दामाद बेटा है।' थोड़े दिन रहने के बाद उसने साही के साथ उसे भेज दिया। अब वे जा रहे हैं और अखंड वन में चले गए जहाँ कि साही का महल था। वहाँ वे रहने लगे। साही उसके खाने के लिए प्रतिदिन कंदमूल लाया करता था। इस प्रकार खा-पीकर वे अपना जीवन बिताने लगे।

एक दिन क्या हुआ कि राजा अपने सिपाहियों के साथ शिकार खेलने के लिए उसी वन में गए। राजा ने कहा, 'देखो तो किसी ओर धुआँ उठ रहा है।' तो सभी इधर-उधर देखने लगे। एक ओर धुआँ उठ रहा था। वे खोजने के लिए गये।

तो उन्हें वन के बीच में एक राजा का महल मिला। दस कोठरियों के अंदर वह औरत बंद थी। सैनिकों ने उसको देखकर उससे आग माँगी। आग लेकर वे चले गये और राजा को उसके बारे में बताया। राजा ने इस बात पर विश्वास किया और स्वयं आया। वह राजा के महल में पहुँचकर खिड़की से देखने लगा। और उसने रानी को देखा और दरवाजे पर पहुँचकर यही कहा, 'अगर मैं एक माँ का जनमाया हुआ बेटा हूँ तो एक ही लात में दसों दरवाजे खुल जाएँगे।' एक ही लात में दस दरवाजे खुल गए। वह भीतर जाकर रानी को अपने घोड़े पर चढ़ा लिया और उसे ले गया। जिस समय वह उसे लेजा रहा था, उस समय रानी ने कहा, 'मुझे अपने साथ एक चीज लेने दीजिए—यानी साही की पगड़ी।' क्योंकि साही ने कहा था कि यदि तुमको ले जाएँगे तो मेरी पगड़ी को लेते जाना और जाते समय उसी को फाड़ते चली जाना और उसने वही किया।

जिस समय साही आया और उसने देखा कि रानी को भगा लिया गया है, तब वह उसे खोजने चला। वह ठीक उसी समय पहुँचा जब राजा विवाह कर रहे थे। इसे देखकर राजा ने पूछा कि तुम क्या खोजते हो। उसने कहा, कुछ भी नहीं। राजा गुस्से में आ गया और उसने कुत्तों को उसके पीछे छोड़ दिया और कुत्तों ने उसे चीर-फाड़कर रख दिया। रानी ने यही आज्ञा दी कि उसे लकड़ी देकर आग लगा दो। उन्होंने आग लगायी। रानी भी एक बंडा हाथी पर चढ़कर देखने गयी। वह अपने साथ मिर्च पीसकर लेती गयी। उसने सबसे यही कहा—देखो दिन के बीच में तारा निकल आया है। सभी ऊपर देखने लगे, तब उसने पीसे हुए मिर्च को उनकी आँखों में छींट (बो) दिया और स्वयं आग में कूदकर साही के साथ जलकर राख हो गयी।

●

7

सात भाई और राक्षसी

एक गाँव में सात भाई रहते थे। एक दिन वे खेत में अपना-अपना काम कर रहे थे। उसी समय एक सुन्दर-सी लड़की हँसती हुई उनके पास आई और हँस-हँसकर बातें करने लगी। उसकी सुन्दरता से सातों भाई मुग्ध हो गए। सभी भाई उससे विवाह करने के लिए आपस में लड़ने लगे। अन्त में उन्होंने तय किया कि बड़ा भाई ब्याह करे ताकि भौजी का रिश्ता हो और सभी भाई बातचीत, हँसी-मजाक कर सकें। छोटा भाई यदि ब्याह करेगा तो किमिन (बहू) होने के कारण बड़े भाई उससे हँसी-मजाक नहीं कर सकेंगे। तब बड़े भाई से विवाह हो गया।

कुछ समय बीत गया। इसके बाद एक दिन लड़की अपने पति से बोली, ''चलो, मैं तुम्हें अपना नैहर दिखला दूँ। तुमने तो अपना ससुराल भी नहीं देखा है।'' पति राजी हो गया। पूरी तैयारी के बाद दोनों जाने लगे। स्त्री आगे-आगे रास्ता दिखाती हुई जा रही थी। जाते-जाते उन्हें घना जंगल मिला। जंगल पार करने के बाद एक नदी मिली। नदी का नाम ''महुरा नदी'' था। वहाँ पहुँचने पर लड़की बोली, ''बहुत थक गए हैं। धूल-गर्द से भी सन गए हैं। चलो इस नदी में हाथ-मुँह धो लें।'' पति राजी हो गया। वह नीचे हाथ-मुँह धोने लगा। स्त्री ऊपर चली गई। उस स्त्री ने पानी में पेशाब कर दिया। पानी विषैला हो गया, क्योंकि वह राक्षसी थी। जब विषैले पानी से उसका पति हाथ-मुँह धोने लगा तो अन्धा हो गया। वह बोला, ''अरे मेरी आँखों को क्या हो गया?'' स्त्री उसका हाथ पकड़कर नदी पार ले गई। पार होने के बाद स्त्री का व्यवहार बदल गया। वह उसे धकेलती ले गई। कुछ दूर जाकर वह चिल्लाने लगी और अपने सभी रिश्तेदारों को बुलाने लगी। उसके रिश्तेदार आवाज सुनकर चिल्लाते हुए उसके पास आए। वे सब मिलकर लड़के को खा गए।

तीन दिन बाद स्त्री लौट आई। वह अपने देवरों से बोली, ''तुम्हारे भाई की तबियत अचानक खराब हो गई। सो चलो कोई देख आना।'' दूसरा भाई तैयार हो

गया। दोनों साथ जाने लगे। जब जंगल पार करने लगे तो एक पंडुक मिला। वह पंडुक पहले की सब घटना देख चुका था। वह पेड़ पर से गाने लगा–

"आगे देखवे दादा, पीछे देखवे,
चील बने दादा, बाघ बने।"

लड़के ने गाना सुनकर भौजाई से पूछा, "यह चिड़िया कैसा गाना गा रही है?" भौजाई बोली, "जंगल में अनेक पक्षी अनेक तरह के गीत गाते हैं, तुम उन पर ध्यान मत दो।" आगे चलकर उन्हें वही नदी मिली। वहाँ उसी तरह दोनों ने हाथ-मुँह धोया और लड़का अन्धा हो गया।

नदी पार करने के बाद स्त्री उसे धकेलती हुई ले गई। फिर अपने रिश्तेदारों को बुलाया और सब मिलकर उसे खा गए।

इसी तरह छहों भाइयों को धोखा देकर वह खा गई। जब-जब वह आई एक ही बहाना करती रही। सातवें भाई की जब बारी आई तो उसे सन्देह हो गया, कि– "छहों भाई बीमार पड़ें और न लौटे, बड़ी अजीब बात है। हो न हो वे मर चुके हैं।" उसने भौजाई को दो दिन रोक लिया। उसने अपने लिए लोहार से लोहे की पोशाक और हथियार बनवा लिया। फिर दोनों घर से निकले। लड़का आगे-आगे चलने लगा। वह तेज चल रहा था जिससे उसकी भौजाई उसको नहीं पहुँचा पा रही थी। वह उससे बोलने लगी, "तुम क्यों इतनी तेज चल रहे हो। देखो मैं तुम्हें पहुँचा भी नहीं पा रही हूँ।" लड़का बोला, "उधर मेरे भाई मर रहे हैं या जी रहे हैं। मुझे बहुत घबराहट हो रही है। इसलिए मैं धीरे चल नहीं पाऊँगा। तुम दौड़ती हुई चलो।"

जब वे दोनों घने जंगल में पहुँचे तो पंडुक फिर गा उठा–

"आगे देखबे दादा, पीछे देखबे,
चील बने दादा, बाघ बने।"

लड़के ने भौजाई से गीत के बारे में पूछा। भौजाई ने कहा, "जंगल में अनेक तरह के पक्षी अनेक तरह के गीत गाते हैं। तुम उन पर ध्यान मत दो।" तब वे "महुरा नदी" पहुँचे। स्त्री फिर उससे हाथ-मुँह धोने के लिए बोली।

लड़के ने जवाब दिया, "मुझे हाथ-मुँह नहीं धोना है। मुझे भाइयों की चिन्ता है।" यह कहते हुए वह नदी पार कर गए। लड़का अन्धा नहीं हुआ, जिससे वह नदी पार के सभी दृश्य देखने लगा! जंगल पार पहुँचकर स्त्री अपने रिश्तेदारों को चिल्ला-चिल्लाकर बुलाने लगी। रिश्तेदार खाने के लिए मुँह फाड़ते हुए आए। लड़का तो तैयार था ही, वह उन्हें मारने लगा। लोहे की पोशाक होने के कारण वे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके। उसने सबको मार डाला। इस लड़ाई के समय राक्षसी छिपी हुई थी। जब उसके सारे रिश्तेदार मारे गए और लड़के को रहस्य

मालूम हो गया, तो गुस्से से वह राक्षसी चिल्लाती और मुँह फाड़ती हुई खाने के लिए दौड़ी। लड़का भागने लगा। भागते-भागते एक आम का पेड़ मिला। लड़का उसपर चढ़ गया और एक आम से बोला, "यदि मैं सच माँ-बाप का जन्माया पुत्र हूँ तो फट जा।" आम का फल फट गया। लड़का उसके बीच में बैठ गया और बोला, "यदि मैं सच माँ-बाप का जन्माया पुत्र हूँ तो सट जा। आम का फल सट गया। टुकड़े चिपक गए और आम गोल हो गया।

तभी एक तोता आया और आम को तोड़ कर उड़ गया। इधर राक्षसी आम के निकट पहुँची और ढूँढ़ने लगी। नहीं पा सकी तो बात समझ गई और तोता को दौड़ाने लगी। तोता आम को सँभाल नहीं पा रहा था सो एक राज्य के ऊपर से उड़ते हुए आम तालाब में गिर गया। उस तालाब में राजा स्नान करता था। जैसे ही आम गिरा, आम को एक मछली खा गई।

आम को तालाब में गिरते देख राक्षसी एक अत्यन्त रूपसी बनकर तालाब के किनारे बैठ गई। तभी राजा वहाँ नहाने आया। लड़की को देखकर राजा मुग्ध हो गया। उसने उससे शादी की इच्छा प्रकट की। राक्षसी ने शर्त रखी, कि "मेरा शृंगार तालाब में गिर गया है। अगर तुम तालाब छिटवाकर वहाँ से मेरा शृंगार निकलवा दो तो मैं शादी करूँगी।"

राजा ने शर्त मान लिया। दूसरे दिन उसने डुगडुगी पिटवा कर प्रजा को तालाब छींटने का आदेश दिया। प्रजा तालाब छींटने लगी। पानी छींटते समय वह मछली भी जो आम खायी थी, पानी के साथ बाहर फेंक दी गई। पानी खत्म होने पर वह राक्षसी उस आम को ढूँढ़ने लगी पर कुछ न मिला। लेकिन राक्षसी शर्त हार गयी थी, इसलिए राजा से शादी कर रानी बन गई थी।

राजा के राज्य में एक बूढ़ा-बूढ़ी थे। वे निस्संतान थे। बुढ़िया उस दिन बूढ़ा से बोली, "ए बूढ़ा! चलो आज राजा का तालाब छींटा जा रहा है, सो हम दोनों भी नीचे की ओर डोभा सबमें मछली पकड़ें। बड़ी नहीं तो छोटी मछलियाँ तो मिलेंगी।" यह कहकर दोनों मछली मारने गए। वे दोनों उसी डोभा में मछली पकड़ने लगे, जहाँ आम निगलने वाली मछली थी। वह मछली बूढ़े के हाथ लगी। जब बूढ़ा मछली को पकड़ने लगा तब मछली बोली, "धीरे धरबे बूढ़ा बथेला।" बूढ़ा अवाक् रह गया, पर चुप रह गया। घर लाकर फिर बूढ़ा मछलियों को काटने लगा तब वह मछली, "धीरे काटबे बूढ़ा, बथेला" बोली। बूढ़े ने मछली को धीरे से काटा तो उसके पेट से एक शिशु निकला। उस सुन्दर से बच्चे को देखकर दोनों बहुत खुश हुए। वे दोनों उसे छिपाकर पालने लगे। क्योंकि उन्हें डर था कि पड़ोसी यदि जान जाएँगे तो हो सकता है उन्हें बच्चे से हाथ धोना पड़े। लेकिन कब तक छिपाकर रखते, बच्चा जब चलने-फिरने लायक हुआ तो बाहर निकलने लगा और लोग

गया। दोनों साथ जाने लगे। जब जंगल पार करने लगे तो एक पंडुक मिला। वह पंडुक पहले की सब घटना देख चुका था। वह पेड़ पर से गाने लगा–

"आगे देखवे दादा, पीछे देखवे,
चील बने दादा, बाघ बने।"

लड़के ने गाना सुनकर भौजाई से पूछा, "यह चिड़िया कैसा गाना गा रही है?" भौजाई बोली, "जंगल में अनेक पक्षी अनेक तरह के गीत गाते हैं, तुम उन पर ध्यान मत दो।" आगे चलकर उन्हें वही नदी मिली। वहाँ उसी तरह दोनों ने हाथ-मुँह धोया और लड़का अन्धा हो गया।

नदी पार करने के बाद स्त्री उसे धकेलती हुई ले गई। फिर अपने रिश्तेदारों को बुलाया और सब मिलकर उसे खा गए।

इसी तरह छहों भाइयों को धोखा देकर वह खा गई। जब-जब वह आई एक ही बहाना करती रही। सातवें भाई की जब बारी आई तो उसे सन्देह हो गया, कि– "छहों भाई बीमार पड़ें और न लौटे, बड़ी अजीब बात है। हो न हो वे मर चुके हैं।" उसने भौजाई को दो दिन रोक लिया। उसने अपने लिए लोहार से लोहे की पोशाक और हथियार बनवा लिया। फिर दोनों घर से निकले। लड़क्रा आगे-आगे चलने लगा। वह तेज चल रहा था जिससे उसकी भौजाई उसको नहीं पहुँचा पा रही थी। वह उससे बोलने लगी, "तुम क्यों इतनी तेज चल रहे हो। देखो मैं तुम्हें पहुँचा भी नहीं पा रही हूँ।" लड़का बोला, "उधर मेरे भाई मर रहे हैं या जी रहे हैं। मुझे बहुत घबराहट हो रही है। इसलिए मैं धीरे चल नहीं पाऊँगा। तुम दौड़ती हुई चलो।"

जब वे दोनों घने जंगल में पहुँचे तो पंडुक फिर गा उठा–

"आगे देखबे दादा, पीछे देखबे,
चील बने दादा, बाघ बने।"

लड़के ने भौजाई से गीत के बारे में पूछा। भौजाई ने कहा, "जंगल में अनेक तरह के पक्षी अनेक तरह के गीत गाते हैं। तुम उन पर ध्यान मत दो।" तब वे "महुरा नदी" पहुँचे। स्त्री फिर उससे हाथ-मुँह धोने के लिए बोली।

लड़के ने जवाब दिया, "मुझे हाथ-मुँह नहीं धोना है। मुझे भाइयों की चिन्ता है।" यह कहते हुए वह नदी पार कर गए। लड़का अन्धा नहीं हुआ, जिससे वह नदी पार के सभी दृश्य देखने लगा! जंगल पार पहुँचकर स्त्री अपने रिश्तेदारों को चिल्ला-चिल्लाकर बुलाने लगी। रिश्तेदार खाने के लिए मुँह फाड़ते हुए आए। लड़का तो तैयार था ही, वह उन्हें मारने लगा। लोहे की पोशाक होने के कारण वे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके। उसने सबको मार डाला। इस लड़ाई के समय राक्षसी छिपी हुई थी। जब उसके सारे रिश्तेदार मारे गए और लड़के को रहस्य

8

आलसी लड़का

एक लड़का बड़ा कोइढ़मारा (आलसी) था। वह बड़ा परपँचिया (बात बनाने वाला) भी था। जब वह नौजवान हो गया तो उसकी माँ उसको हल जोतने के लिए भेजने लगीं। घर से निकल कर लड़का प्रतिदिन जाता था, किन्तु हल नहीं जोतता था। बैलों को खोलकर चरने के लिए छोड़ देता था और आप गुलेल लेकर जंगल में घूमता और चिड़िया मारता था। समय होने पर नहा-धोकर आता था। उसकी माँ पूछती थी, 'हल जोता।' लड़का कहता था, 'हाँ'। माँ बोलती थी, ''तो ये चिड़िया कहाँ से ला रहे हो?'' लड़का झट बोलता था, ''हाँ तो, ये चिड़िया भी तो झुरमुट में बैठती थी, उस समय अरई डंडे से मारा हूँ।''

वह इसी तरह रोज ठगता था। जेठ का महीना आया। सब लोग धान बोने के लिए इधर-उधर होने लगे। उस समय उसकी माँ भी बोली, ''चलो बेटा, जहाँ-जहाँ जोते हो, दिखा दो तो हम भी धान बो देंगे।'' माँ ऐसा बोल कर खांची में धान लेकर चली। लड़का, 'चलो' बोला और जाकर एक खेत को दिखाया। जब वहाँ धान बोया जाने लगा तो एक आदमी ने मना किया। तब लड़का बोला, ''अई, मैं भूल गया था'' और उसने दूसरा खेत दिखा दिया। जब उसमें धान बोया जाने लगा तो एक दूसरे आदमी ने मना किया कि वह उसका खेत है।

जब लड़का यहाँ-वहाँ दिखाने लगा तो उसकी माँ समझ गई कि लड़के ने खेत नहीं जोता था और बहाना कर रहा था। माँ ने गुस्से से एक डांग लेकर लड़के को मारने के लिए दौड़ाया। लड़का भागा। माँ बहुत दूर तक दौड़ाती रही। लड़का भागते-भागते एक स्थान पर पहुँचा जहाँ बिल था। वह बिल एक सियार का था। बिल में बकरी की आँत पड़ी थी। लड़का उसी बिल में घुस गया। माँ ने बिल में डंडा घुसेड़ा। लड़के ने डंडे में आंत लपेट दी। जब माँ ने डंडे को बाहर खींचा तो पाया कि उसमें आँत लिपटी हुई थी। उसने सोचा कि उसका बेटा मर गया, वह रोती हुई घर लौट गई। शाम होने लगी तो माँ अपने लिए रोटी पकाने बैठ गई। इधर लड़के को भी खूब भूख लगी थी, सो वह घर आया और किवाड़ के बाहरसे झाँक कर देखने लगा। फिर उसने रोटी माँगने के लिए हाथ बढ़ाया। माँ ने समझा, उसके लड़के की 'छाया' घर आई है और खाने के लिए रोटी माँग रही है। माँ ने

जान गए कि उन निस्सन्तान दम्पत्ति के यहाँ एक बच्चा है। वे उनसे पूछने लगे। पहले तो बूढ़े ने बात छिपाने की कोशिश की। लेकिन अंत में उसने बता दिया, "जिस दिन राजा ने तालाब छींटवाया, हम दोनों नीचे की ओर मछली मारने गए। वहीं गड्ढे में एक मछली मिली। जब मैं उसे पकड़ने लगा तो वह बोली, "धीरे धरबे बूढ़ा।" फिर जब मैं काटने लगा तब बोली, "धीरे काटबे बूढ़ा बथेला।" जब मैंने काटा तो उसके पेट से छोटा सा लड़का बच्चा निकला। यही वह लड़का है जिसे हम दोनों पाल रहे हैं।

पड़ोसियों ने इस बात को जानने के बाद बात फैला दी और यह बात राक्षसी के कानों तक जा पहुँची। वह सारी बातें समझ गई। इधर राजा ने बूढ़े से लड़के को पाने के बारे में पूछा, तो बूढ़े ने सारी बातें बता दीं। तब लड़के को बुलाया गया, उसने पूरी कहानी दुहरा दी और राजा को रहस्य भी बता दिया कि, "जिस रानी से आपने शादी की है, वह रानी नहीं वही राक्षसी है।" तभी रानी बनी राक्षसी मुँह फाड़ती हुई लड़के को खाने के लिए दौड़ी। लड़का तैयार था ही, उसने राक्षसी को मार डाला। लड़के की बहादुरी से राजा बहुत खुश हुआ। लड़का तो अच्छे खानदान का था ही, अतः रानी ने अपनी राजकुमारी से उसकी शादी कर दी।

लड़का बूढ़ा-बूढ़ी को भी नहीं भूला, वह उन्हें भी अपने यहाँ ले आया। वे बहुत दिनों तक खुशी से रहे और राज्य किया। दो राज्य मिलकर विशाल राज्य बन गया।

●

मोहित हो गयी। उसने प्रण कर लिया, ''यह बाल जिस लड़के का है, उसी से शादी करूँगी।'' राजकुमारी ने हठ कर ली। राजा ने ऐसे बाल वाले लड़के को खोजने के लिए चारों ओर आदमी दौड़ा दिए। किन्तु किसी को वह लड़का नहीं मिला। कैसे मिलता? वह तो घने जंगल में निवास कर रहा था।

कुछ दिनों के बाद लड़का नदी स्नान करने के लिए गया। उसने अपनी बाँसुरी किनारे छोड़ दी। राजा के राज्य के कौवे उस लड़के को पहचानते थे। एक कौवे ने लड़के को राजा के पास पहुँचाने की सोची। उसे उपाय सूझा। जब लड़का बाँसुरी रखकर नदी में उतरा, कौवे ने बाँसुरी चोंच में दबा ली और उड़ चला। बाँसुरी को ले जाते देख लड़का, कौवे के पीछे-पीछे, नीचे दौड़ने लगा। कौवा उड़ते-उड़ते जाकर राजा के महल के ऊपर बैठ गया और बाँसुरी नीचे आँगन में गिरा दी। लड़का जब वहाँ पहुँचा तो सिपाहियों ने उसे पहचान लिया और पकड़ लिया। कुछ दिनों के बाद राजकुमारी से लड़के की शादी हो गयी।

लड़के को कुछ दिनों तक तो राजमहल में अच्छा लगा। किन्तु बाद में ऊबने लगा। उसे जंगल की अपनी भैंसें याद आने लगीं। जंगल का स्वतन्त्र जीवन याद आने पर लड़का उदास रहने लगा। एक दिन रहा नहीं गया तो राजा से बोला, ''मैं कुछ दिनों के लिए अपनी भैंसों के पास जंगल जाना चाहता हूँ।'' राजा चालाक था। यह सुनकर वह जान गया कि लड़का वहाँ से जाने के बाद फिर लौट कर नहीं आएगा। इसलिए उसने कहा, ''यहीं एक बड़ा-सा बाड़ा बना लो। लकड़ियों का घेरा डाल दो और अपनी भैंसों को यहीं ले आओ। लड़का राजी हो गया। उधर भैंसें भी लड़के के बिना व्याकुल थीं।

राजा के कहने की देर थी, एक बड़ा-सा लकड़ी का घेरा बनाया गया। तब लड़के ने अपनी बाँसुरी में गीत गाया–

''भोंइसनाइञ को, भोंइसनाइञ को,
हो हारें भोंइसनाइञ को........
भोंइसनाइञ को तोबडअ लेटे डेलता
हो होरे भोंइसनाइञ को।
डेड़ेब ठोओता हरा पिग्रता,
खुर ठोओता सोरेड़ पअता,
हो हारे भोंइसनाइञ को।''

जंगल में भैंसें चर रही थीं, बाँसुरी की आवाज सुनते ही सब फां-फों दौड़ी आईं और बाड़े में घुस गयीं। जो समा न सकीं वे बाहर ही रह गयीं। बाद में बाहर रहने वाली भैंसें लौट गयीं। बाड़े की भैंसें पालतू बना ली गयीं।

●

बिना पीछे फिरे, पीछे की ओर रोटी फेंक दी। लड़के ने रोटी को पकड़ लेना चाहा, किन्तु रोटी ऊपर उड़ गई। लड़के ने रोटी को दौड़ाना आरम्भ किया। रोटी उड़ती हुई जंगल की ओर निकल गई, जहाँ एक पेड़ से टकराकर रोटी रुकी, तब लड़के ने रोटी पकड़ी और खाया। रात थी इसलिए लड़का वहीं रुक गया।

दिन हुआ। किन्तु लड़का जाए तो कहाँ जाए। तभी एक पेड़ के नीचे उसने कडरू (भैंस का बच्चा) देखा। इन बच्चों को एक स्थान पर छोड़कर भैंसें चरने चली गई थीं। लड़के का उन बच्चों से खेलने का मन हुआ। वह उन्हें सहलाया और प्यार किया। उन बच्चों को भी लड़के का साथ अच्छा लगा। लेकिन वे जानते थे कि उनके माँ-बाप लौटकर आयेंगे तो लड़के को मार डालेंगे। लड़के को बचाने के ख्याल से कहा, हमारे माँ-बाप लौटकर आएँगे तो तुम्हें मार डालेंगे, इसलिए तुम छिप जाओ। उनकी बात मानकर लड़का ढोढ़री (खोंढ़र) में छिप गया। जब भैंसा-भैंस लौट आए तो उनको आदमी की गंध मिली। वे फां फों इधर-इधर सूँघने लगे और बोले, ''यहाँ तो मानुस-गंध आ रही है, बताओ हमारा कौन दुश्मन आया है।'' बच्चे पहले तो इनकार करते रहे, लेकिन माँ-बाप जान गए कि बच्चे कुछ छिपा रहे थे। खतरे को महसूस करते हुए भैंस-भैंसों ने निर्णय लिया, कि वहाँ तक मनुष्य पहुँच गया था, और भय था कि मनुष्य सबको मार डालेंगे, इसलिए उस जगह को छोड़ देना चाहिए।

यह सुनकर कड़रू बड़े दुःखी हुए। आखिर उन्होंने बता दिया कि उस आदमी ने उन्हें बहुत प्यार किया था। बच्चों ने कहा, कि यदि वे उसको नुकसान नहीं पहुँचाएँगे तो वे उसके बारे में उन्हें बताएँगे। भैंसों ने आश्वासन दिया कि वे उसका कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। लड़का यह सुनकर खोंढ़र से बाहर निकल आया। उसने उन बड़े भैंस-भैंसों को भी प्यार किया।

जंगल में रहते-रहते सब घुल-मिल गए। सभी एक दूसरे से बहुत प्रेम करने लगे। उन्होंने लड़के को अपना दूध पिलाया। दूध पीकर वह हृष्ट-पुष्ट तो हुआ ही, सिर और देह पर भी लगाने लगा। इस कारण बाल चमकीले, सुन्दर लम्बे और सुनहले रंग के हो गये। जंगल में रहते-रहते उसने एक बाँसुरी बनाई। उसके बाँसुरी बजाने पर भैंसा-भैंसें जहाँ भी होती थीं, दौड़ी चली आती थीं।

एक दिन लड़का नदी स्नान करने गया। सिर धोने पर उसके बाल टूटे तो वह सोचने लगा कि बालों को फेंकना नहीं चाहिए। सो उसने बेल तोड़कर दो टुकड़े किए। गूदा निकालकर फेंक दिया और बाल को उसमें बंद कर नदी में बहा दिया। नदी में नीचे तरफ एक राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ नहा रही थी। उसने बेल को तैरते देखा तो अपनी सहेलियों को लाने के लिए कहा। जब बेल लाकर खोल कर देखा गया तो उसमें सुन्दर बाल था। उस बाल को देखकर लड़की

जैसा एक पोटली बनायी। बाघ घुस गया और बन्दर ने पोटली को अपने मालिक की सहायता से बाँध दिया। उन्होंने उसे एक वृक्ष के नीचे ले लिया और एक डाल पर लटका दिया। नीचे उन्होंने बड़ी-बड़ी लकड़ियों को जमा किया और आग सुलगा दी। जिस समय बाघ जलने लगा तब वह जोर से रोने लगा। बन्दर ने उसे डाँटकर कहा, चुप रहो मूर्ख, मुझे भी तो लग रहा है, मैं तो नहीं रो रहा हूँ। जैसे-जैसे आग की आँच बढ़ती जाती थी, वैसे बाघ और अधिक चिल्लाने लगा। बन्दर ने और ठूंठ लकड़ी जमा कर दी तथा बाघ का तमाशा देखने लगा। अंत में बाघ का बँधा हुआ रस्सा जल कर गिर गया और बाघ आग में जलकर राख हो गया। बन्दर अपने मालिक को दुःख से बचाया। इसी तरह जन्तु भी कभी-कभी अच्छा कार्य करते हैं।



9

बाघ और बन्दर

एक आदमी ने एक बन्दर पाला था। उस आदमी का नाम था धुन्धा। धुन्धे ने उस बन्दर का नाम चामू रखा था। धुन्धा जिधर काम करने जाता था तो साथ में चामू को भी लेता जाता था। जिस समय शिकार खेलने जाते थे तो बन्दर कुत्ते के ऊपर चढ़ जाता था, मान लिया कुत्ता उसका घोड़ा था। जब वे गिलहरी पाते थे, तो बिना मारे नहीं लौटते थे (नहीं छोड़ते थे)। यदि गिलहरी वृक्ष पर चढ़ जाता था तो बन्दर भी चढ़ता और दौड़ता था। नीचे उतरता था तो आदमी और कुत्ता। कोटर में घुसता था तो बन्दर भी घुसता था। और निकालता था। ऐसा में उसको शिकार खेलने का शौक था।

एक बार धुन्धा और चामू आषाढ़ महीने में गुंगु की पत्ती तोड़ने के लिए वन गए। गुंगु की लता खूब घनी थी। उस झाड़ी में एक बाघ रहता था। वह नहीं जानता था कि यहाँ बाघ है। बन्दर है तो बन्दर ही, वह एक स्थान में नहीं रहता है। वह इधर-उधर दौड़ने लगा, इस शाखा से उस शाखा में उछलता था। उसी समय उसने बाघ को देखा। बाघ आदमी को खाने के लिए दुबकते हुए आदमी की ओर जाने लगा था। ऐसे समय में बन्दर का कार्य देख लें। उसने अपने मालिक को बचाने के लिए क्या किया? उसका मालिक पत्ती तोड़कर एक पोटली बना रहा था। वह एक पत्थर पर बैठा था। उसका मालिक बाघ के बारे में अनजान था। बन्दर ने झट अपने मालिक को छिपा लिया और अपने मालिक के स्थान पर वह काम करने लगा। बाघ आया और बन्दर से पूछता है कि बड़े भैया, चामू, क्या बनाने में लगे हो? बन्दर बोला—'ढाढू कहीं के (मति मूर्ख) आज तक तुम अनजान हो। देखोगे आग बरसनेवाली है। इसी आग की वर्षा से बचने के लिए पोटली बना रहा हूँ। मैं इस पोटली में घुस जाऊँगा और अग्नि-वर्षा से बच जाऊँगा।' इस बात को सुनकर बाघ डर गया और बन्दर से बोला, 'भैया चामू, मेरे लिए पहले पोटली बना दो। मैं तो बड़ा हूँ, इसलिए मेरे लिए पहले एक बड़ी पोटली बनाओ बाद में अपने लिए बनाना।' बन्दर ने इस बात को पसंद किया। बन्दर ने बाघ के समाने

जब-जब पिघला हुआ लाह टपकता, बन्दर वैसा ही बोलता रहा। उसकी सास भी वैसा ही जवाब देती रही। इसके बाद तो आग धधक कर जलने लगा। बन्दर अन्दर ही जल कर मर गया। लड़की को बन्दर के मरने का पता चला तो बहुत रोई। राजा बोला, "मैं अपने दामाद का दाह-कर्म धूमधाम से करूँगा।"

सारी तैयारी करने के बाद बन्दर की लाश को हाथी पर ले जाया जाने लगा। तभी राजा से उसकी बेटी बोली, "पिता जी, आदमी का जलाना देख चुकी हूँ, बन्दर का जलाना नहीं। सो मुझे देखने जाने की आज्ञा दें।"

राजा मान गया। लड़की ने अपने साथ ढेर-सा मिर्च पीस कर रख लिया और एक बंडा हाथी पर बैठ कर श्मशान जाने लगी। इधर श्मशान में लाश जलाने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। लड़की काफी पीछे थी। वह हाथी को जल्दी चलने के लिए गाते चली–

"चल रे चल रे बंडा हाथी,
सैया मोरा पोड़ातहे,
सैया मोरा पोड़ातहे।"

हाथी जल्दी-जल्दी चला और लड़की श्मशान घाट पहुँच गई। चिता को आग लगा दी गई। राजकुमारी बोली, "देखा तो रे मनवा मन, दिन माझे का तइरगन उइग है।" सुनते ही सभी लोग ऊपर ताकने लगे। वह तैयार बैठी थी, लोगों के ऊपर ताकते ही उसने मिर्च का पाउडर ऊपर छीट दिया। सबकी आँखों में मिर्च पड़ा तो वे हाय-हाय करने लगे और आँख मलने लगे। अवसर देखकर लड़की चिता में कूद गई और जल मरी।

●

10

बन्दर और राजकुमारी

एक राजा की सात बेटियाँ थी। वे प्रतिदिन तालाब नहाने जाती थीं। पोखर के किनारे सेमल का एक ऊँचा पेड़ था। एक दिन सातों राजकुमारियाँ स्नान करने गईं। वे कपड़े उतार कर जैसे ही तालाब में घुसी, एक बन्दर उनके सारे कपड़े लेकर पेड़ पर चढ़ गया। नहाने के बाद जब वे पानी से बाहर निकलीं तो अपने कपड़े न पाकर इधर-उधर देखने लगीं। किसी को न देख कर उन्होंने ऊपर पेड़ पर ताका, तो देखा कि बन्दर उनके कपड़ों को गठरी बनाकर बैठा था। वे जाकर "दो बन्दर कपड़ा", बोलीं, तो सबसे पहले उसने बड़ी बहन के कपड़े फेंके। फिर मझली, सझली कर क्रमशः छहों बड़ी बहनों के कपड़े फेंक दिए। छोटी लड़की ने जब, "ऐ बन्दर कपड़े दो," कहा तो बन्दर ने उसके कपड़े का एक छोर नीचे गिरा दिया और दूसरे छोर को पकड़े रहा। जैसे ही लड़की ने छोर पकड़ा, बन्दर ने उसे खींच कर ऊपर चढ़ा लिया और ले भागा।

बन्दर और उस राजकुमारी ने जंगल में झींगी, कैथा इत्यादि बोया। फल तो लड़की लेकर प्रतिदिन गाँव-गाँव बेचने जाने लगी। बन्दर भी उसके पीछे-पीछे जाता था। वह गाँव में पहुँच कर कहती थी--

"ले कैथा झींगी कि मौर्य बन्दरक लोग-लोगो।"

एक दिन बेचते-बेचते राजा के दरवाजे पर पहुँची और वैसा ही बोली, "ले कैथा-झींगी, कि मोंय बन्दरक लोग-लोगो।" आवाज से माँ-बाप और बाकी बहनों ने उसे पहचान लिया कि वह उनकी बहन है। उन्होंने उन दोनों को उस रात के लिए मेहमान रख लिया।

रात को बन्दर के लिए छोटा-सा लाह का घर बनवाया गया। खाने-पीने के बाद लड़की और बन्दर को लाह के कमरे में सुलाया गया। बन्दर के सो जाने के बाद लड़की को हटा दिया गया और घर में आग लगा दी गयी। जब लाह पिघल-पिघल कर बन्दर के ऊपर गिरने लगा तो बन्दर बोला, "ओदे यो, तोर तोर बेटी तो कोंथेला" लड़की की माँ सुनकर बोली, "न कोंथा-कोथा होवा बेटी, चुपे-चुपे सुइत रहा।"

1

खरवार की उत्पत्ति

प्राचीन काल में जब भगवान ने जल प्रलय के बाद धरती की रचना की तब उसने इस धरती पर बहुत जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि का सृजन किया। उनके द्वारा सृजित 'हंस' के जोड़े महासागर में रहते थे। एक बार एक मादा हंस उड़ कर धरती पर आयी। कुछ दिनों तक जंगल में रहने के बाद उसने दो अंडे दिये। उन्हीं दो अंडों से दो मानव शिशुओं का जन्म हुआ। उनमें से एक बड़ा होकर अहिरी पिपरी नामक स्थान में जाकर बस गया और 'संथाल' कहलाया। दूसरा जाकर हरादुत्ती नामक स्थान में जाकर बस गया और 'खरवार' कहलाया। उन्हीं दोनों भाइयों से संथाल और खरवार जनजाति का विकास और विस्तार हुआ।

(कर्नल डाल्टन ने भी इस कथा का प्रसंग अपनी पुस्तक 'इथनालॉजी ऑफ बंगाल में दिया है।)



(ङ) खरवार लोककथाएँ

मृत्यु का समाचार सुनकर हरिश्चन्द्र भी बहुत दुखी हुए। परन्तु डोम राजा का नौकर बने हरिश्चन्द्र शैव्या से अन्तिम संस्कार के टैक्स के रूप में कफन का आधा भाग माँग लिये। शैव्या ने पहले पति को कफन देने में अपनी असमर्थता जतायी क्योंकि उसके पास कफन का कपड़ा नहीं था। परन्तु अपनी माँग पर हरिश्चन्द्र के अड़े रहने पर शैव्या ने कोई उपाय न देखकर अपने आँचल में लिपटे रोहिताश्व के मृत शरीर को जमीन पर रखकर अपना आँचल फाड़ कर कफन के रूप में देने का निश्चय किया। रोती-बिलखती शैव्या जैसे ही अपना आँचल फाड़ कर देने को तैयार हुई, कि वहाँ महामुनि विश्वामित्र प्रगट हो गए। उन्होंने कहा, ''महाराज हरिश्चन्द्र, आप और आपकी रानी शैव्या दोनों महान हैं। आप अपनी परीक्षा में सफल हुए। आपका सम्पूर्ण राज्य और राजकोष मैं आपको वापस करता हूँ।''

उन्होंने जमीन पर पड़े रोहिताश्व को छूकर कहा, ''बेटा रोहिताश्व, उठो। देखो, तुम्हारे माता-पिता तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'' थोड़ी देर में रोहिताश्व भी आँखें मलता उठकर खड़ा हो गया और अपनी माँ से लिपट गया। मुनि ने रोहिताश्व को आशीर्वाद दिया, ''रोहिताश्व, तुम बड़े होकर इस पूरे पर्वत प्रदेश के राजा बनोगे और बहुत समय तक राज करोगे।''

जब रोहिताश्व बड़े हुए तो उनका राज्याभिषेक कैमूर पर्वत पर हुआ। उन्होंने अपने नाम पर एक विशाल किला बनवाया, जो आज भी 'रोहतासगढ़ किला' के नाम से प्रख्यात है। रोहिताश्व सूर्यवंश के महाप्रतापी राजा हुए और काफी वर्षों तक राज्य किया।

●

2

रोहिताश्व की कथा

प्राचीन काल में हरिश्चन्द्र नाम के एक महा प्रतापी, दानी और सत्यवादी सूर्यवंशी राजा राज करते थे। उस समय रोहतास पहाड़ के आसपास (कैमूर पर्वत पर) विश्वामित्र मुनि का आश्रम था। वे बड़े क्रोधी और सिद्ध मुनि थे।

एक बार राजा हरिश्चन्द्र उनके क्षेत्र में शिकार करने आये और अनेक वन्य पशुओं का शिकार किया। शिकार के कारण विश्वामित्र की तपस्या में विघ्न पड़ गया और वे बहुत क्रोधित हुए। राजा हरिश्चन्द्र मुनि से बिना मिले शिकार करने के बाद अपने महल को लौट गए। परन्तु विश्वामित्र मुनि ने राजा को दंड देने का निश्चय किया।

एक बार वे हरिश्चन्द्र के दरबार में गए। उस समय राजा सभी आने वाले याचकों को दान में अन्न-धन बाँट रहे थे। जब विश्वामित्र मुनि की बारी आई तो राजा ने हाथ जोड़ कर कहा, ''मुनिवर, आप अपनी इच्छित वस्तु माँग लें। मैं उसे आपके चरणों में रख दूँगा।''

विश्वामित्र ने उनसे उनका सम्पूर्ण राज्य एवं राजकोष माँग लिए। राजा ने संकल्प कराकर मुनि को सम्पूर्ण राज्य और राजकोष दान में दे दिया। तब मुनि ने दान के बाद अपनी दक्षिणा की माँग की। अब राजा असमंजस में पड़ गए क्योंकि दक्षिणा में देने के लिए उनके पास कुछ बचा ही नहीं था। अतः उन्होंने स्वयं को बेचकर दक्षिणा चुकाने का विचार किया। उन्हें दास के रूप में खरीदने के लिए वहाँ श्मशान घाट का मालिक डोम राजा तैयार हो गया। हरिश्चन्द्र अपने को बेचकर दक्षिणा की राशि विश्वामित्र को देकर श्मशान घाट की रखवाली करने लगे।

कुछ दिनों बाद उनकी पत्नी शैव्या अपने बेटे रोहिताश्व के साथ वन से कन्द-मूल लाने गई थी। उसी समय मुनि की प्रेरणा से एक साँप रोहिताश्व को काट लिया और उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। किस्मत की मारी शैव्या रोती-पीटती अपने मृत पुत्र को लेकर उसका अन्तिम संस्कार करने श्मशान पहुँची। पुत्र की

लगा। नाचते-नाचते अनायास उसका हाथ उसके सिर पर चला गया और देखते-देखते वह जल कर भस्म हो गया। इस प्रकार भगवान विष्णु ने भस्मासुर से भगवान शिव की जान बचाई। भगवान शिव कैमूर पहाड़ के जिस गुफा में छिपे हुए थे, वह अब 'गुप्ता धाम' के नाम से जाना जाता है। अब यह स्थान (गुफा) अधौरा प्रखंड में एक प्रमुख तीर्थ स्थल बन गया है।



3

भस्मासुर की कथा

आदिकाल की बात है, भस्मासुर नामक एक महाप्रतापी और बलवान असुर राजा हुआ था। वह शिव जी का भक्त था। उसने अपने को अमर और अजेय बनाने के लिए कठोर तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और भस्मासुर से वरदान माँगने को कहा। भस्मासुर ने हाथ जोड़ कर भगवान शिव से कहा, ''हे भगवन! मुझे ऐसा वरदान दें कि मैं किसी के द्वारा नहीं मारा जाऊँ और मैं जिसके सिर पर हाथ रख दूँ, वह जल कर भस्म हो जाय।''

भगवान शिव ने 'तथास्तु' (अर्थात् ऐसा ही हो) कहकर उसे उसका मनोवांछित वरदान दे दिया। इस वरदान को पाकर वह असुर दम्भ से भर गया और अपने वरदान के प्रभाव की परीक्षा शिव पर ही करने का विचार किया। शिव उसके इस अनैतिक विचार से अवगत होते ही वहाँ से चल दिये। परन्तु भस्मासुर अपने निर्णयानुसार उनका पीछा करना शुरू किया। भगवान शिव भागते-भागते कैमूर पर्वत की एक गुफा में जाकर छिप गए। भस्मासुर उनकी खोज में इधर-उधर घूमता रहा और उस गुफा को नहीं पा सका।

यह दृश्य विष्णु के साथ अन्य देवता भी स्वर्ग लोक से देख रहे थे। शिव ने भी विष्णु से मदद की प्रार्थना की। विष्णु शिव की मदद के लिए एक सुन्दर अप्सरा का मोहिनी रूप धारण कर कैमूर पहाड़ पर स्वर्ग से आ गए और वहाँ पहुँच गए, जहाँ भस्मासुर शिव की खोज में घूम रहा था। उस सुन्दर अप्सरा को वहाँ एकांत में पाकर भस्मासुर उस पर मोहित हो गया और उसे पाने के लिए व्यग्र हो उठा। उसने उस परम सुन्दरी को अपने साथ में चलने का आमंत्रण दिया और काफी अनुनय-विनय किया। इस पर मोहिनी ने उसके साथ जाने के लिए एक शर्त रखा। उसने कहा, ''हे महाप्रतापी असुर सम्राट, यदि तुम मुझे इतना ही चाहते हो तो तुम्हें एक अच्छे नर्तक की तरह मुझे अपना नाच दिखाना होगा। अगर तू नाचने में खरे उतरे तो मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूँगी।''

इस प्रस्ताव से भस्मासुर सहमत हो गया और विभिन्न मुद्राओं में नृत्य करने

5

झांपी का बूढ़ा

प्राचीन काल की बात है, एक धनी खरवार अपने लड़के के लिए एक लड़की देखने और शादी की बात करने गया। बातचीत के बाद 'नियर पानी' के लिए अंजोरिया में तृतीय तिथि का दिन तय हुआ। उस दिन लड़का के तरफ से पाँच आदमी लड़की के घर गए। लगनपान कराने के बाद भात, मांस और हंड़िया से उनका स्वागत हुआ। पूरे गाँव के खरवार उनलोगों का 'सहर हांड़ी' से स्वागत किए। लड़के के पिता ने लड़की के पिता को हल्दी रंगा पीला चावल देकर कहा, "कल आप लोग बारात में अस्सी आदमी आइयेगा और उसमें एक भी बूढ़ा नहीं होना चाहिए।"

लड़के के पिता ने कहा, "हमारा भी एक शर्त है। हम आपके इच्छानुसार अस्सी जवान लोगों को बारात में ले जायेंगे। परन्तु आपको हमलोगों के लिए अस्सी खस्सी और अस्सी घड़ा हंड़िया देना पड़ेगा।" लड़की का पिता सोचा कि अस्सी आदमी का अस्सी खस्सी का मांस कैसे खा सकेंगे और अस्सी घड़ा हंड़िया कैसे पी सकेंगे। ऐसा सोचकर वह लड़के वाले की शर्त मान लिया।

दूसरे दिन अस्सी युवा खरवार बारात में जाने के लिए एकत्रित हुए। लड़के के पिता ने सोचा, "जवान तो अनुभवहीन होते हैं। शादी में कहीं कुछ गोलमाल होगा तो राय-सलाह कौन देगा।" ऐसा सोचकर उसने अपने आजा बूढ़ा को बाँस की बनी झांपी में छिपाकर ले जाने का निश्चय किया। एक बक्सा में कपड़ा-लत्ता और झांपी में आजा बूढ़ा को बैलगाड़ी पर रखकर बारात बाजा-गाजा के साथ चल पड़ी। जब बारात जनवास में पहुँच गई तब लड़की वाला देखा और पाया कि बारात में कोई बूढ़ा नहीं आया है। अतः अपने वादे के अनुसार वह अस्सी खस्सी और अस्सी घड़ा हंड़िया (चावल की शराब) लाकर जनवास में रखवा दिया।

सभी बाराती सोचने लगे, भला इतना खस्सी का मांस कैसे पचेगा। उन्हें चिन्तित देखकर लड़के का पिता झांपी में छिपे अपने आजा बूढ़ा से इसका समाधान पूछा। झांपी का बूढ़ा बोला, "एक-एक खस्सी काटते जाओ और हल्दी-नमक

4

भुजबल राय की कथा

खरवार के संबंध में यह मिथक या आख्यान भी प्रचलित है कि खरवार की उत्पत्ति सूर्य और लक्ष्मी की पुत्री से हुई है। इस संबंध में प्रचलित लोक कथा निम्न प्रकार है :-

''प्राचीन काल की बात है, लक्ष्मी देवी की एक पुत्री अत्यन्त सुन्दरी थी। वह सारा नामक नगर में रहती थी। उसके रूप पर सूर्यदेव मोहित हो गए और उससे शादी करना चाहा। सूर्य शंख बजाकर उसकी ध्वनि से अपने प्यार को अभिव्यक्त करते थे।

एक बार जब वह शंख में जल डाल कर उसे बजा रहे थे, उस समय लक्ष्मी पुत्री बाहर खड़ी होकर शंख की मधुर ध्वनि सुन रही थी। उसी समय शंख से एक बूँद जल गिरकर उसके मुँह में चला गया और वह गर्भवती हो गई। उसकी भुजा से भुजबल राय नामक पुत्र और जंघा से जंघराय नामक पुत्री पैदा हुई। भुजबल राय सूर्य का औरस पुत्र था इस कारण वह महाप्रतापी और परम तेजस्वी राजा हुआ। परन्तु कुछ दिनों बाद उसे अपने बल और धन पर बहुत घमंड हो गया।

एक बार लक्ष्मी जी उसकी परीक्षा लेने के लिए भिखारिन के वेश में भिक्षा माँगने उसके राजमहल के सामने गई। वह यह जाँचना चाहती थी कि उस भुजबल राय को धनवान बनाकर उन्होंने अच्छा किया या नहीं। अपने राजमहल के सामने भिक्षा पात्र लिए एक वृद्धा को देखकर भुजबल राय क्रोधित हो गया और बिना भीख दिये उसने उस वृद्धा को भगा दिया। लक्ष्मी उसके इस दंभी आचरण से बहुत रुष्ट हुई और उसे श्राप दिया, ''तुम और तुम्हारे वंशज खरवार बराबर गरीब और विपन्न रहेंगे और जंगल में रहकर अपना भरण-पोषण करेंगे।'' तभी से खरवार विपन्न बन गए और जंगल में रहकर खैर पेड़ की लकड़ी से कत्था बनाकर अपना भरण-पोषण करने लगे।

●

6

ऊँट और सियार

पुराने जमाने की बात है, एक जंगल में एक बहुत चालाक सियार रहता था। वह जंगल के अनेकों पशुओं से दोस्ती कर अपना मतलब साधता था और बाद में उन्हें मूर्ख बनाकर उन्हें छोड़ देता था।

एक बार उसने एक ऊँट से दोस्ती की। बरसात में एक दिन वह ऊँट से बोला, ''मित्र, कुछ दूर पर एक खेत में मकई का भुट्टा खूब गदराया है। चलो, आज वहीं भोज खाया जाय।'' बेचारा सीधा ऊँट तैयार हो गया। दोनों उस मकई के खेत में पहुँचे। सियार खेत में घुसकर मकई खाना शुरू कर दिया। ऊँट भी मकई का बाल पेड़ समेत खाने लगा। सियार के जब पेट भर गया तो वह स्वभाववश ''हुआं, हुआं'' करने लगा। सियार की बोली सुनकर खेत का मालिक लाठी लेकर दौड़ा। सियार तो भाग गया, परन्तु ऊँट नहीं भाग सका। खेत वाले ने उसकी डंडे से पिटाई कर उसे भगाया। ऊँट सियार के इस व्यवहार से बहुत दुःखी हुआ और सियार से बदला लेने का निश्चय किया।

कुछ दिन बाद ऊँट सियार से मिला और बोला, ''दोस्त, नदी पार बहुत सा कच्छमच्छ लगा हुआ है। चलो तुम्हें आज भोज कराते हैं। मछली आदि की बात सुनकर सियार के मुँह में पानी आ गया और वह सियार ऊँट के साथ चल पड़ा। नदी पार जाकर वह मछली, केंकड़ा आदि जी भर कर खाया। इसी बीच नदी में बाढ़ का पानी आ गया। सियार बोला, ''ऊँट भाई, तुम तो नदी पार कर जाओगे। लेकिन मैं कैसे पार करूँगा?''

ऊँट बोला, ''मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार करा दूँगा।'' सियार ऊँट की पीठ पर बैठ गया। ऊँट नदी पार करने लगा। जब वह नदी के बीच में आया तो नदी में बैठने लगा तो सियार बोला, ''ऊँट भाई, यह क्या कर रहे हो, इससे तो मैं नदी में डूब जाऊँगा।'' ऊँट बैठते हुए बोला, ''तुम हमको भोज के नाम पर पिटवाये थे। अब हम तुमको बहा रहे हैं।''

ऊँट के बैठते ही सियार नदी की तेज धार में डूब कर मर गया।

●

(च) उराँव (कुडुख) लोककथाएँ

1

सिरजन-बिरजन गही खीरी (सृष्टि कथा)

कहा जाता है कि जिस समय ईश्वर ने स्वर्ग और धरती की रचना की, उस समय धरती में प्रकाश नहीं था। सारा संसार अंधकारमय था। जमीन नहीं दिखायी दे रही थी। चारों ओर ऊपर-नीचे पानी ही पानी था। सर्वप्रथम ईश्वर ने जल में रहनेवाले जीव-जन्तुओं को बनाया। उसके बाद धरती के ऊपर रूखा-सूखा जमीन में रहनेवाले जीव-जन्तु बनाया और उसके रहने योग्य जमीन बनाने के लिए पानी में रहनेवाले जीव-जंतुओं को मिट्टी लाने के लिए भेजा। सबसे पहले पानी में रहने वाला केंकड़ा आया और भगवान के वचन के अनुसार पानी के अंदर गया। पानी के अंदर केंकड़ा जाकर अपने पैर से मिट्टी उठाया, फिर चलने लगा। केंकड़ा का पकड़ा हुआ मिट्टी पानी में घुल गया। वह छूंछा हाथ भगवान के सामने हाजिर हुआ। भगवान ने केंकड़ा से कहा, कहाँ है मिट्टी। केंकड़ा बोला, क्या करेंगे प्रभु मेरा हाथ की मिट्टी पानी में चलते-चलते, आते-जाते पानी में घुल गयी। केंकड़ा की बात सुनकर भगवान ने श्राप दिया और बोले- 'देखने में तुम सीधा दिखायी देते हो, परंतु तुम्हारा चाल टेढ़ा है, तुम कैसे चलते हो। जाओ तुम आज से टेढ़ा एवं अड़की ही चलना।' उसी दिन से केंकड़ा टेड़ा एवं अड़की चाल चलता है और तिरछा देखता है।

इसके बाद भगवान चिन्तित थे कि पानी के अंदर से मिट्टी लाने के लिए किसको भेजूँ। इसी समय एक कछुआ मुस्कराते हुए आया एवं छाती पीटते हुए बोला कि प्रभु मैं मिट्टी लाने जाऊँगा, मैं आपका काम करूँगा। भगवान ने कहा, जाओ, अब कछुआ पानी के अंदर गया और मिट्टी खोद कर पूरे पीठ में लाद लिया और सोचने लगा कि समूची मिट्टी-धरती को उसने ले लिया है ऐसा ही सोचते हुए भगवान के पास आया। पानी में तैरते हुए आने के कारण कछुआ की पीठ की सारी मिट्टी घुल गयी। भगवान के पास जब कछुआ आया तब भगवान ने पूछा -'कहाँ है मिट्टी?' कछुवे ने भगवान से कहा, "प्रभु मैं मिट्टी को पीठ पर लाद कर एवं उसे ढोकर आ रहा था किंतु आते-आते पानी से सारी मिट्टी घुल

गयी। क्या करें।" ऐसा कहकर और लज्जित होकर अपना सिर एवं चेहरा तथा आँख को छिपा दिया। उसी दिन से कछुवा आदमी को देखते ही सिर को छिपा लेता है।

अब भगवान चिन्तित होने लगे कि मिट्टी किनके द्वारा मंगायी जाये। मिट्टी ले आने के लिए किसको भेजा जाये। उसी समय एक जोंकटी आया और भगवान से बोला, "भगवान मैं मिट्टी लाने जाऊँगा। मैं आपका काम करूँगा, किंतु मिट्टी नहीं ला सका तो मुझे क्षमा कीजियेगा।" जोंकटी इसलिए पहले ही क्षमा माँग ली कि वह मिट्टी नहीं लायेगा, तो उन्हें भी भगवान का श्राप न मिल जाय। तब भगवान बोले कि "तुम बिना टोकरी का कैसे मिट्टी लाओगे। केंकड़ा को तो पकड़ने के लिए संड़ासीनुमा हाथ था, कछुवा को मिट्टी ढोने के लिए पीठ थी। फिर भी वे नहीं ला सके। जोंकटी बोला -'मैं उपाय करूँगा।' तब भगवान ने कहा, जाओ। जोंकटी पानी के अंदर गया और भरपूर मिट्टी को खाया और पानी से ऊपर आया। तब भगवान ने पूछा, "कहाँ है मिट्टी!" भगवान की बात सुनकर जोंकटी भगवान के हाथ में मुँह से मिट्टी निकालने लगा। फिर जमीन का निर्माण फैलते गया। वही जमीन फैलते गया अंत में भगवान ने सभी जीव-जंतुओं का निर्माण किया।

कहा जाता है कि भगवान ने एक जोड़ा आदमी को मूर्ति बना कर सूखने के लिए रखा। मिट्टी की मूर्ति सूखने के बाद उन्हें आग की भट्ठी में पकाना था और उसमें प्राण देना था। किंतु भगवान को हंसराज एवं पंखराज घोड़ा गुस्से से मिट्टी की मूर्ति को रौंद डाला। घोड़ा को शंका हुआ कि मनुष्यों की वृद्धि होगी, तो वे घोड़ों से भी अपना सभी काम करायेंगे। भगवान पुनः आदमी की मूर्ति को मिट्टी से बनाया। मिट्टी का मूर्ति देख कर घोड़ा मूर्ति को रौंदने आया। परंतु इस बार भगवान का कुत्ता घोड़ा को काटने दौड़ाया और भगवान ने आदमी का पहरा देने के लिए कुत्ता को बनाया था। भगवान ने देखा कि और भी घोड़ा मूर्ति को पैर से रौंदेगा। इस कारण भगवान ने कच्चे मिट्टी की मूर्ति में ही प्राण फूँक दिया। उस समय नर एवं मादा दो ही मनुष्य थे, उसी दो मनुष्य नर एवं मादा से पूरी धरती में मनुष्य फैलते गये। कच्ची मिट्टी की मूर्ति में प्राण फूँक देने के कारण ही मानव को इस धरती में मरना पड़ता है।

●

2

बोंगदा पहाड़ और पकरा के देवता

राँची-सिमडेगा सड़क के पोकला और कुदा गाँव से दक्षिण कोस भर की दूरी पर बोंगदा पहाड़ है। बोंगदा का अर्थ खड़िया भाषा में समाप्त हुआ पानी, पानी में रहने वाला विषविहीन ढोंढ साँप और बिना आचरण वाला है। इस कथा में इन्हीं का अर्थ बताया गया है। रोहतासगढ़ से आने के बाद खड़ियाओं के पुरखे बेड़ो, बडरू, कोने, सरालोः तेलमिङ, ढेकलाः, रगड़ेज लपाः कारो नदी के दक्षिण पार रामतोलोः, कुली, कनालोया, पंकुद, कुदा, कराकेल, रायकेल, राबा, कोमडोल, पाःकेल और कोयल नदी के पार दक्षिण रामपुर, डोलोंगसेरा लोयोंकेल तुरमोंः, महाबुआंग आदि खड़िया गाँव में रहते थे। अब भी कुछ गाँवों में खड़िया जाति के लोग हैं।

यह उस सतयुग की कथा है जब दोनों बड़ी नदियों कारो और कोयल ने 'सखी' जुड़ाया था। एक नदी में पानी समाप्त होता था तो दूसरी नदी से पानी आता था। इसी प्रकार नदी में बाढ़ आ जाने से इस नदी का पानी उस नदी में और उस नदी का पानी इस नदी में चला जाता था। पानी के इस नदी से उस नदी में बहने के लिए अन्दर ही अन्दर, एक बड़ा सोता था जो दोनों नदियों को मिलाता था। उस सोते के अन्दर में केवल पानी नहीं बहता था बल्कि नदी में रहने वाले जीव-जन्तु केंकड़ा, मेंढ़क, मछली साँप आदि भी आते-जाते थे।

एक बार ऐसा हुआ कि एक विशाल और थोड़ा दूसरे रंग का ढोंढ साँप आकर इस माँद रूपी सोता में रहने लगा। साँप उस सोते में रहने वाले मेंढक, मछली, केंकड़ा और तो और छोटे साँपों तक को खाने-निगलने लगा। साँप भरपूर खा-खाकर खूब गोल-मटोल हो गया। विशाल तो था ही, अब उसे किसी का डर और शर्म भी नहीं रह गया। वह उद्दंड हो गया। वह छोटे-बड़े नाता-रिश्ता, उठने-बैठने का कोई महत्त्व नहीं रखता था। कहावत है कि एक दिन बाघ भी सियार से हार मानता है। साँप से परेशान होकर इस माँद रूपी सोता से जुड़े दोनों नदियों के जलचरों ने बैठक की। सुकुरडा घाट के एक विशाल डोका नामक पेड़ के पास गहरे जलाशय में माघ महीने में बैठक हुई। इस बैठक में अजगर साँप ने भाग नहीं

लिया और कहला भेजा–"छोटी मक्खी की बैठकी में हाथी। हमलोग उस माँद में नहीं रहेंगे। हमलोग कारो-कोयल नदी के घने जंगलों की लताओं और गुफाओं में रहेंगे।" बैठक का अध्यक्ष हल्दी रंग के एक हृष्ट-पुष्ट, भीमकाय और विद्वान मेंढक को मनोनीत किया गया। सचिव का काम झिंगा मछली को सौंपा गया। सभा के अगल-बगल मोगरी मछली और केंकड़ा थे। सभा में गड़बड़ी होने पर इन्हें ही देखने और सँभालने का भार सौंपा गया था। बैठक का मूल निर्णय यह हुआ कि "इस मदहोश बिगड़े सर्प का सामना कौन करेगा? किसकी शक्ति उसे परास्त करेगी? इसलिए उसके नाश के लिए सर्वषक्तिमान पाट देवता (पोनोमेसोर पाःटो) के पास सभी सात दिन-रात उपवास कर प्रार्थना-निवेदन करेंगे।

दोनों नदियों के जलचरों ने ने अपनी-अपनी नदी में ही प्रार्थना-निवेदन के लिए स्थान निश्चित किया किन्तु उस माँद रूपी सोते के मेंढक, केंकड़ा और साँप ने सोचा, "हमलोग कहाँ जाएँगे? कहीं ऐसा न हो कि जाते समय हमें रास्ते में ही कोई दबोच ले। इसलिए वर्तमान में पहाड़ के उत्तरी तराई में जो झरना है, उसी जगह पानी में निकल कर प्रार्थना-निवेदन करने लगे। उपवास प्रार्थना और निवेदन शुरू करने के चार-पाँच दिन होते-होते वह विशाल साँप भूख से अत्यधिक क्रोधित हुआ। इधर-उधर दौड़ने लगा। बच्चे दिये हुए शेरनी की तरह हड़पने के लिए इधर-उधर घूमने लगा। ढोंढ साँप खा-खाकर इतना मोटा हो गया था कि माँद के दोनों छोर के दरवाजे से निकलना भी संभव नहीं था। वह थककर निढाल हो गया और शक्तिहीन हो गया। एक जगह सिमट कर सातवें दिन चल बसा। वही सिमट कर मरा हुआ साँप आज "बोंगदा पहाड़" है। उस मृताष्म साँप से माँदरूपी सोता बंद हो गया। पानी तो जमीन से फूटकर झरना बन गया। इस झरने को आज भी पहाड़ के उत्तरी तराई में देख सकते हैं। इसी से फूटकर निकले पानी के कारण ही इस गाँव का नामकरण हुआ "पकरा" (पाःकेल)।

एक दिन मुण्डा अल्हड़ युवती मर्चा गाँव से अपने पिता के साथ अपने मामा के घर सिसकारी गाँव जा रही थी। उसके पिता अमीन का काम करते थे। बेटी ने पिता से कहा–"पिताजी, यहाँ का झरना के पानी तो निर्मल है। मैं स्नान कर लूँगी।" पिता ने उत्तर दिया–"हाँ बेटी, यहाँ से मामा का घर अधिक से अधिक कोस भर है। अभी दोपहर भी नहीं हुआ है। हमलोग अपराह्न के पहले ही पहुँच जाएँगे। बीते सप्ताह मंगलवार के दिन रायकेल बाजार में हम दोनों के आने की सूचना दी गई है।" उस अल्हड़ युवती ने हाथ-पैर, चेहरा धोकर और चिकनी मिट्टी से बाल साफ कर स्नान किया। उस झरने के किनारे ही एक खूँट-पाट का स्थान था। वर्तमान में यहाँ पर एक 'देबी गुड़ी' है। वह युवती उस पवित्र स्थान का कुछ मान-सम्मान नहीं रख सकी। झाल्लरदार मुलायम और कमर तक लम्बे अपने

बालों को कन्धों से झाड़कर कल टूटे बालों को उसने एकत्र किया तथा उन्हें एक साथ मरोड़ा और थूककर फेंकते हुए बोली–"थुक्की रे खूँट और पाट देवता सब शक्तिहीन हो जा।" युवती के परिवार वाले नये विश्वास में दीक्षित थे; इसलिए उसको भूत-प्रेत, देवी-देवता, खूँट-पाट आदि से भय नहीं था। लेकिन तब तक महा खूँट की शक्ति बरकरार थी। महा खूँट ने बिगड़ कर उसको अभिशाप दिया– "जाओ अल्हड़ लड़की, मामा के घर। किन्तु तुम्हारे पिता कोढ़ रोग से ग्रस्त होंगे। कपास की जड़ की तरह तुम्हारा एकमात्र भाई पागल हो जाएगा। तुम्हारा चेहरा तीन वर्षों तक तावे के पेंदे की कालिख की तरह काला हो जाएगा। यही बोंगदा पहाड़ घूमकर कोयल नदी पार तुम अपना ससुराल जाओगी। जिस घर में तुमको ब्याहकर ले जाएँगे उस घर में केवल एक रात बिताओगी। तुमहारा जीना-खाना खड़िया राज के पुरझेइर (दिशा का ज्ञान नहीं) गाँव में ही बीतेगा। वहाँ से कभी नहीं निकल सकोगी। तुम्हारे बेटे जीवाष्म ढोंढ़ साँप की तरह अपना रास्ता खो देंगे। तुमने उस खड़िया पाट को आदर नहीं दिया। अतः तुम्हारी बहुएँ खड़िया जाति की होंगी। तुम्हारे बेटे खड़िया भाषा और संस्कृति के दीवाने होंगे। किन्तु हाँ, तुम्हारे भले आचरण के कारण तुम्हारी बेटियों की शादी अच्छी तरह होगी। वे तुम्हारे व्यवहार और आचरण में चलेंगी। तुम मेरे सामने न डरी न शर्मायी इसीलिए तुम सम्मानपूर्वक 80 वे अधिक वर्षों तक जीवित रहोगी।"

हमारे पास ज्ञान और शक्ति है किन्तु हम डोढ़ साँप की तरह मद्मस्त और अंगड़-बंगड़ होकर पत्थर हो जाते हैं। उस मुण्डा अल्हड़ युवती की तरह हमारी बेटियाँ और बहनें ऊपर-ऊपर तैरने वाली मछलियों की तरह न हों। हमारे खूँट-पाट तो हमारी अगुवाई करने वाले बड़े लोग, शुद्ध खड़िया संस्कृति, शुद्ध भाषा और हमारे माता-पिता ही हैं। हमलोग इन्हें मानें, समझें, आदर-सम्मान दें और उनकी सेवा करें तब ही यह खड़िया संस्कृति बड़ी नदी की तरह बहती चली जाएगी।

●

3

बाल हृदय

एक गाँव में एक भाभी थी जिसे अपने देवर और ननद लोगों से खास लगाव था। उसी गाँव की एक लड़की जो गाँव से दूर राँची पढ़ने गई थी, होली की छुट्टी में छुट्टियाँ बिताने के लिए गाँव वापस आयी। जब उसकी भाभी को इस बात का पता चला तो वह उससे मिलने के लिए दौड़ी चली आती है। बहुत दिनों के बाद मिले अतः दोनों के बीच खूब बातें हुई। उसी बीच उसकी भाभी ने उससे आग्रह किया कि क्यों न चलकर दोनों खेत में साग तोड़ें और खूब बातें करें। 'हरा भरा चिमटी साग' सुनकर ननद हँसने लगी और मजाकिया लहजे में बोली कि जिस खेत में सुबह सभी 'मैदान' के लिए जाते हैं, वहाँ साग हरा-भरा कैसे नहीं होगा? बातों ही बातों में ननद भाभी खींचा-तानी शुरू हो गई और दोनों उसी धुन में खेतों की ओर चल पड़ी।

खेतों में जाकर दोनों काम और बातों में इतनी मग्न हो गई कि उन्हें समय का पता ही न चला। भाभी अपनी टोकरी भरने के बाद पहाड़ की ओर जाते हुए बोली "मैं पत्ता और दतवन तोड़ने जा रही हूँ। तू साग तोड़ती रहना।"

"ठीक है जाओ, लेकिन अगर तुम्हें बंदर उठा ले जायेगा तो मैं भइया को क्या जवाब दूँगी?" कहकर लड़की ने उसे छेड़ा। दोनों ननद-भाभी में अच्छी पटती थी। भाभी काफी अच्छी थी। हर काम में निपुण, घर का काम हो या खेत-खलिहान का, सारे काम बहुत जल्द तथा बारीकी से करना उसे अच्छी तरह से आता था। पूरे गाँव वाले उससे बहुत खुश रहा करते थे। उसकी कोयल जैसी मीठी आवाज सुनकर सभी मुग्ध रहते थे।

इधर वो लड़की पूरे गाँव में अकेली पढ़ने वाली, पर गाँव के लोगों का सम्मान करना भी उसने माता-पिता से सीखा था। उसे अपने गाँव से बहुत लगाव था। अचानक भाभी की मधुर आवाज उसके कानों में सुनाई पड़ी।

पहाड़ लकड़ी लाने जाना रे, साँस रुकने जैसी पानी की प्यास लगती है, लकड़ी का बोझा फेंको रे लकड़ी, साँस रुकने जैसी पानी की प्यास लगती है।

भाभी, तुम कभी नहीं सुधरोगी, कभी नहीं। छः बच्चों की माँ बनने के बाद भी आवाज में वही कशिश आज भी बरकरार है। ऊँचे पत्थर पर बैठकर वह अपने अतीत की गहराई में खो गई जहाँ उसका बचपन हिलोरे ले रहा था। चेहरे पर एक अनोखी मुस्कराहट की वजह से वह खिल उठी।

वो बीते दिन, वो बचपन, शायद लौटकर कभी नहीं आयेंगे। अपने नन्हें दोस्तों के साथ घर-द्वार खेलना, जमीन पर घुलटना, गर्मी में आम के मंजर का शरबत पीना तथा तालाब में नंगु-पंगु नहाना। दादी की गोद में बैठकर किस्से कहानी सुनना। कितना आनन्ददायक था। धूल में हँसते-खेलते अचानक कब स्कूल जाने का समय आ गया पता ही नहीं चला।

गाँव के निकट में स्कूल नहीं रहने के कारण उसके माता-पिता ने उसे पढ़ने के लिए गाँव से दूर चैनपुर भेज दिया। जहाँ उसकी मौसी रहती थी। स्कूल में दाखिला लेकर उसने अपनी पढ़ाई शुरू की। वह पढ़ाई में ठीक थी परन्तु उसे माता-पिता तथा गाँव की याद इस कदर सताती कि वह बेचैन हो उठती, उनसे मिलने के लिए। उसे अपना गाँव याद आने लगता।

वो प्यारा सा गाँव, चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ। ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर, हरे-भरे पौधे, कलकल करते झरने व पेड़ लताओं के झुण्ड जिसमें गाय, बैल चरते समय अक्सर लुका-छिपी खेलते थे। सावन के महीने में लकड़ी चुनने के बहाने अपनी सखियों के साथ झूला झूलना तथा सोहराय के पहले बनरपटा तथा गर्मी के मौसम में चार, पियार केऊँद आदि खाने के लिए पागलों की तरह घूमना तथा प्यास लगने पर झरने का पानी हाथों से पीना। चट्टान पर छुटछुटिया खेलना। अपने पिता के कन्धे पर बैठकर बाजार जाना। कभी-कभी गेडुवा में बैठकर खेत जाना तथा अपनी माँ की ममता, ये सारी यादें उसे हमेशा सताती थी।

स्कूल में अपने जैसे बच्चों को देखकर उसे अच्छा लगता था। पर जैसे ही छुट्टी की घंटी बजती उसका चेहरा उतर जाता था। उसे पुनः अपने गाँव की सखियों तथा माता-पिता की याद आती थी। उधर उसकी माँ तथा सहेलियों को भी उसकी याद आती थी। सबसे छोटी बेटी होने के नाते उसकी याद और भी आती थी। उसकी माँ उसे ऊँची शिक्षा दिलाना चाहती थी। इसलिए कलेजे पर पत्थर रखकर सब कुछ सहन करती रही। कुछ दिन बीतने के बाद उसने अपने पति से आग्रह किया कि क्यों न जाकर वे बच्ची को देख आयें। वह तुरन्त चलने को तैयार हो गयी। और वे दोनों अपनी बच्ची को लिए मडुवा रोटी, बादाम, चावल, दाल आदि की पोटली बाँधकर चले। अपने माता-पिता को देखकर वह आनन्दित हो उठी, पर उसके माता-पिता वहाँ ज्यादा समय तक नहीं रुके। अपनी माता को वापस जाते देख उसका दिल पुनः उदास होने लगा। वह उनका पीछा करते हुए

काफी दूर निकल गई। ये बातें उसकी मौसी को पता नहीं थी।

माँ का दिल अपनी बच्ची को यूँ छोड़कर जाते हुए रो रहा था। पर क्या करती, उसे तो जाना ही था। यादों में खोयी वह अपनी बच्ची का मनन करती हुई चली जा रही थी। अचानक पीछे पलट कर देखा तो पाया कि उसकी हमारी बच्ची।

अपने माता-पिता के पास पहुँचकर मासूम चेहरा लिए खड़ी हो गई। उसे अंदर ही अंदर ये भय सता रहा था कि इस गलती के लिए उसे गाली या थप्पड़ तो नहीं मिलेगा। वह कभी नहीं चाहती थी कि उसकी गलती के कारण उसके माता-पिता को कोई तकलीफ हो। लेकिन उसे तो अपने गाँव की याद यहाँ तक खींच लायी थी। उसकी माँ इस बात को अच्छी तरह जानती थी। वह उसे प्यार से देखकर पूछ बैठी। बेटी, तू क्यों आ रही है? बेटी मिठाई लेने का बहाना बनाते हुए अपने मन की बात को टाल गई।

बच्ची की बात सुनकर दोनों एक दूसरे को देखने लगे। क्योंकि उनके पास गाड़ी भाड़े के सिवाय और पैसे नहीं थे। फिर भी उसके लिए मिठाई खरीद कर उसे थोड़ी दूर तक वापस छोड़ने लौटे। उसे सीधे मौसी के पास जाने की हिदायत दे गए। हाथों में मिठाई थी। बच्ची का दिल खुश था। कुछ पल के लिए अपने सारे गमों को भूलकर वह खुशी-खुशी वापस लौटी।

पर मिठाई कितनी देर तक उसके हाथों में होती। जैसे ही मिठाई खत्म हुई वो पुनः माता-पिता के पास जाने के लिए मुड़ी। मन ही मन सोचती रही कि इस बार वह उनसे मिठाई नहीं माँगेगी बल्कि घर ले जाने के लिए आग्रह करेगी। उधर उसके माता-पिता बाकी बचे पैसों से कुछ दूरी तक गाड़ी में चढ़कर चले पर बाकी रास्ता पैदल नापते हुए काफी दूर निकल गए।

आसमान अचानक काले बादलों से घिर गया। जोरों की हवा चलने लगी। बादल की गड़गड़ाहट एवं बिजली की चमक के साथ बारिश शुरू हो गई। वह सोचने लगी बारिश इतनी है कि थमने का नाम ही नहीं लेती। पर बच्ची के मन में कोई डर भय नहीं। वह अपने रास्ते चलती रही। सप्ताह के हर चौथे दिन चैन्पुर में बाजार लगता है। लोग बारिश से बचने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे। चारों ओर अंधेरा छा चुका था। ऐसा लग रहा था कि मानों बादल अभी धरती पर गिर पड़ेंगे। सावन की पहली बारिश थी। बच्ची भींगने के बाद ठंड से ठिठुर रही थी।

ऐसी अवस्था में एक माँ उसे देख रही थी। उसका दिल बार-बार कह रहा था कि ये बच्ची अकेली है और उससे रहा नहीं गया। वह उसके पास जाकर पूछी–

कहाँ जा रही हो मँइया?

अपने घर!

उसने दुबारा पूछा—

तुम्हारा घर कहाँ है?

नदी के उस पार!

तुम्हारे माता-पिता?

चले गए।

उस माँ को समझ आ गया कि बाजार में अपने माता-पिता से भटक गई है। छाता के नीचे बारिश से बचाती हुई वह उसे अपने घर ले गई। वहाँ उसे खूब प्यार से खिलायी-पिलायी और अपने साथ सुलायी। सोने के पहले उसने पूछा—तुम किसकी बेटी हो?

'मरियाना मेरी माँ का नाम।' उसने शादी नहीं की है। जवाब माँ को उलझन में डाल गया। ''क्या यह नाजायज औलाद है? क्या इसलिए उसे बाजार में छोड़ दिया गया था? खैर, जो भी हो, सुबह उठकर बच्ची को लेकर उसकी माँ को ढूँढ़ा जायेगा। ये सारी बातें सोचते-सोचते वह सो गई।

सुबह चार बजे उठकर माँ ढेकी कूटने लगी। अचानक बच्ची की नींद टूटी। वह उठकर बाहर की ओर जाने लगी। बाहर जाते देखकर उसने कहा—दूर मत जाना अभी थोड़ा अंधेरा है। धीरे-धीरे सूरज की लालिमा चारों ओर फैलने लगी। सूर्य की रोशनी पूर्णतः फैल चुकी थी। काफी देर इन्तजार करने के बाद जब वह वापस नहीं लौटी तब उसे आस-पास की झाड़ियों में ढूँढ़ा गया पर वह नहीं मिली और न वापस आयी।

वह अपने गाँव का रास्ता ढूँढ़ते हुए बढ़ती जा रही थी। बच्ची काफी निडर थी। रास्ते में सन्नाटा छाया हुआ था। फिर भी पहाड़-पर्वत के बीच अकेली अपने गन्तव्य की ओर बढ़ रही थी। कहा जाता है कि इस मौसम में गाँव की ओर काटने वाले ओंटगा लोग घूमते-फिरते थे। डर-भय सब कुछ भुला कर वह उछल-कूद करते हुए खुशी-खुशी बच्ची आगे बढ़ ही रही थी कि अचानक सामने एक बड़ा नाला दिखाई दिया, नाले में पानी लबालब भरा था।

बाल हृदय कभी सोच नहीं पाया कि नाला कैसे पार करें। थोड़ी देर के लिए वह कुछ सोचने लगी। फिर अचानक कपड़े उतार कर उसने छलांग लगायी। तीव्र गति से बहते नाले का पानी उसे अपने साथ बहा ले जाने लगा। पानी के अंदर उसका दम घुट रहा था। वह अपने हाथ-पाँव फेंकने लगी। इसी क्रम में नाले के किनारे का घास उसकी पकड़ में आ गई और वह उसी तिनके के सहारे बाहर आई। पर उसे लग रहा था कि वह नाला पार कर जायगी। अतः उसने पुनः छलांग लगायी। इस बार नाले के पानी का बहाव कुछ ज्यादा था। वह सीधी नदी की धार

में बह रही थी। काफी पानी उसके नाक, कान, मुँह में घुस चुका था और धीरे-धीरे अपना होश खोती जा रही थी।

इधर इसके माता-पिता को लग रहा था कि बेटी वापस चली गई होगी। और उसकी मौसी सोच रही थी कि वह माता-पिता के साथ घर में होगी। पर यहाँ तो बच्ची जिन्दगी और मौत के बीच जूझ रही थी। अचानक एक मछुवारे की नजर डूबती बच्ची पर पड़ी और वह उसे बचाकर अपने घर ले आया। वहाँ कुछ दवा-दारू की गई। काफी देर के बाद उस बच्ची को होश आया। उसने अपनी छोटी-छोटी आँखों को खोला तथा खुद को वहाँ पाकर अचम्भित हुई। उसे कुछ समझ में नहीं आया। उसकी आँखों से आँसुओं की धार बहने लगी। यह देखकर मछुवारे को उस बच्ची पर तरस आई और उससे कहा–

"बेटी तुम चिन्ता मत करो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा दूँगा। तुम्हारा नाम क्या है?" अपने प्रति अपनापन की भावना देखकर बच्ची ने उसे अपना नाम बताया–'सुदमा'!

"तुम्हारा घर कहाँ है?"

"पहार टोली, नदी के उस पार। मुझे अपने घर जाना है।" कहते हुए बच्ची पुनः रोने लगी।

मछुवारे तथा उसके घर वाले को बच्ची पर खूब तरस आया। मछुवारे ने उसे प्यार से समझाया, नदी में बाढ़ उतर रहा है जिसमें हम दोनों को खतरा है। बाढ़ का पानी कम होने पर तुम्हें पहुँचा दूँगा। रात हो गई थी अतः बच्ची सो गई।

सुबह होते ही लोगों की भीड़ उसे देखने पहुँचने लगी। कोई उसे दया की दृष्टि से देखता, कोई उसे अचम्भित होकर यह कहता कि "यही वह बच्ची है जिसे मछुवारे ने नदी के बाढ़ से निकाला। पता नहीं इसे किस हालत में छोड़ा? इसके माता-पिता कैसे हैं जो इसको अकेले छोड़ गये?" लोगों की ये बातें उसके हृदय में तीर की तरह चुभ रही थी। बाल हृदय अपने माता-पिता को याद कर लोगों के सामने रो देता था। भीड़ में वो अपने माता-पिता को ढूँढ़ती थी। उसे ऐसा लगता था कि किसी न किसी दिन उसके माता-पिता उसे लेने आयेंगे। धीरे-धीरे वह बच्ची उस घर के सदस्यों से घुल-मिल गई। वे काफी अच्छे थे। हमेशा उसका ख्याल रखते थे। वह बच्ची अपने प्रति उसके प्यार को समझ चुकी थी। गरीब मछुवारा उसे मडुवा, लड्डू तथा खिचड़ी खिलाकर बहुत प्यार से रख रहा था। उसकी पत्नी भी उस बच्ची को बेहद प्यार करने लगी थी।

कुछ दिनों बाद नदी का पानी कम हुआ। अब मछुवारा बच्ची को उसके घर छोड़ने के लिए गया। घरवालों ने उसे दुखित हृदय से विदा किया। रास्ता ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे दोनों गाँव पहुँच गए। बच्ची ने डर से दूर से ही मछुवारे को अपना घर

दिखाया और खेलने के लिए चली गई। मछुवारे ने घर जाकर उसके माता-पिता को सारी घटना से अवगत कराया। उसकी माँ अपनी बच्ची को देखने के लिए लालायित हो उठी। वह आँखों में आँसू लिए उसे ढूँढ़ने गयी। अपनी बच्ची को सकुशल देखकर उसने उसे छाती से लगाकर खूब प्यार किया।

गाँव वालों को इस घटना के बारे में पता चला तो सभी मिलकर उस मछुवारे को मेहमान की तरह खातिर किये।

पर बच्ची को ये सब बातें समझ में नहीं आ रही थी। वह सोचने लगी मेरी माँ मुझसे क्यों गुस्सा नहीं कर रही है? वह मुझे क्यों प्यार कर रही है, मैंने बहुत बड़ी गलती की है। पर सभी मुझे गोद में क्यों उठा रहे हैं?

बच्ची की माँ उसे गोद में लिए रोने लगी। यह देखकर बच्चे बिना सोचे समझे खुद भी रोने लगी।

पहाड़ ऊपर गया जोड़ी
तुम्हें कुछ सुनाई दिया या नहीं।

ये भाभी की आवाज थीं अचानक उसे सामने देखकर वो अपने ख्यालों से बाहर आई। उसकी आँखों में सचमुच के आँसू बह रहे थे। वह उसे भाभी से छुपाने की कोशिश कर रही थी। भाभी उसके गाल पर प्यार से चपत मारते हुए बोली, पगली लड़की क्या सोच रही है? तुम्हारी आँखों में ये आँसू! उत्तर दिये बिना वह टोकरी उठाए हुए मुस्करा दी और अपने गाँव की ओर चल पड़ी।

●

4

अच्छा भाई

एक समय की बात है कि एक गाँव में सात भाई अपनी इकलौती बहन के साथ रहते थे। ये सातों भाई अपनी बहन से बहुत प्यार करते थे। पर इनमें से सबसे छोटा भाई अपनी बहन से कुछ ज्यादा ही प्यार करता था और उसकी हर इच्छा को पूरा करता था। एक बार बहन की नजर एक बहुत ही सुंदर चिड़िया पर पड़ी और वह उसे पाने की जिद करने लगी। छोटे भाई ने अपने भाइयों की कही को अनसुनी करते हुए दूर जंगल से उस चिड़िया को पकड़ लाया। बहन चिड़िया को देखकर बहुत खुश हई और उस जगह जाने की जिद करने लगी जहाँ से चिड़िया लाई गई थी। छोटे भाई के लाख मना करने पर भी बहन नहीं मानी और भाइयों को उसे दुर्गम रास्ते से होते हुए जंगल ले जाना पड़ा।

बहन वहाँ जाकर वहाँ की खूबसूरती देखकर बहुत खुश हुई। उसने वहीं रहने का फैसला कर लिया। भाइयों ने बहुत मना किया पर उनकी एक न चली और अंत में वह अपनी बहन के लिए एक छोटा-सा घर बनाकर उसे वहीं छोड़ अपने काम पर चले गये।

दिन में वह नदी एवं पहाड़ों पर घूमती, पक्षियों और जानवरों के साथ खेलती थी पर अंधेरा होते ही उसे डर लगने लगता था, क्योंकि उस घने जंगल में वह बिल्कुल अकेली हो जाती थी। एक रात एक बड़ा-सा भालू वहाँ आया, लड़की ने जैसे ही उसे देखा वह जोर-जोर से गाना गाने लगी, गाना सुनकर भालू को लगा कि वहाँ कोई शेर है, अतः वह डर कर भाग गया। कुछ दिनों के बाद एक बड़ा-सा राक्षस वहाँ आया, लड़की ने फिर से गाना गाना शुरू कर दिया पर राक्षस डरने के बजाय उसका गाना सुनकर मंत्रमुग्ध हो गया और उसने उस लड़की से शादी कर ली और उसे अपनी गुफा में ले आया।

इधर जब भाई अपनी बहन से मिलने वहाँ पहुँचे तो अपनी बहन को वहाँ न पाकर घबरा गये, उनका सबसे छोटा भाई जादूगर था, अतः उसने अपने जादुई शीशे में देखकर पता कर लिया कि उसकी बहन उस राक्षस के गुफा में है। इधर

जब राक्षस को पता चल जाता है कि उसकी बीवी का भाई वहाँ पहुँच चुका है। तो उसने उसे पकड़ने के लिए एक तरकीब लगायी। जब वह जल्दी आने को कहकर जाता वह देर से आता और जिस दिन वह देर से आने को कहता वह जल्दी आ जाता। पर उसकी यह तरकीब ज्यादा दिन तक नही छुपी रह सकी और लड़की को इसका पता चल गया। इसलिए जब राक्षस नहीं होता था तो दोनों भाई-बहन खूब खेलते थे और राक्षस के आने के पहले लड़की अपने भाई को छुपा देती थीं।

एक दिन दोनों भाई बहन वहाँ से भागने की तरकीब सोचते हैं। दोनों एक बिल्ली को मार कर चूल्हे के ऊपर टाँग देते हैं और चूल्हे के ऊपर तवा रख देते हैं। तवे पर बिल्ली का खून गिरता रहता है जिससे ऐसा महसूस होता है कि रोटी बन रही है। राक्षस जब घर लौटा तो उसे लगा कि उसकी बीवी खाना बना रही है। पर शीघ्र ही उसे पता लग गया कि उसकी बीवी अपने भाई के साथ भाग गयी है।

तब राक्षस उसकी खोज में निकल जाता है और वह जल्दी ही उसे खोज निकालता है। राक्षस अपनी बीवी को पकड़ना चाहता है पर उसका भाई अपने जादू से धुंध पैदा करता है, पर वह राक्षस वहाँ से निकल जाता है। फिर लड़की का भाई कई यत्न करता है लेकिन राक्षस नहीं मानता है और अपनी बीवी को पकड़ना चाहता है। लेकिन छोटा भाई राक्षस को मार डालता है और अपने अन्य भाइयों के पास वे दोनों आ जाते हैं। वैसे तो अन्य भाई उन्हें देखकर खुश होते हैं साथ ही साथ अपने छोटे भाई से उन्हें जलन होने लगती है। और सब मिलकर उन दोनों को मारने की योजना बनाते हैं। छह भाई मिलकर लाह का घर बनाकर दोनों बहन भाई को उसमें सोने भेज देते हैं और जब दोनों सो जाते हैं, तो उसमें आग लगा देते हैं। उस आग में उसकी बहन जल जाती है। छोटा भाई किसी तरह से बच निकलता है। और जंगल में जाकर अकेला रहने लगता है। पर वह रोज देखता है कि कोई उसके लिए खाना बनाकर रख जाता है। वह अपने जादुई आइने में देखता है तो पता चलता है कि उसकी बहन रोज आकर उसके लिए खाना बना जाती है। उसका भाई फिर उसे आइने से बाहर निकाल लेता है।

एक दिन जमींदार के बेटे की नजर उस लड़की पर पड़ती है और दोनों शादी कर लेते हैं। बहन अपने भाई को भी साथ ले आती है और फिर तीनों खुशी-खुशी साथ में रहने लगते हैं।

●

5

दू भाई-बहिन

एक ठो गाँव में दु झन छोट-छोट भाई बहिन रहें। भाई, बड रहे और बहिन छोट। इमन के छोटे में छोइड के माय-बाप माइर गेलांय। बहिन बड़ रहे से ले हिंया-हुंवा भूती-बनी कइर के मजदूरी में मिलल धान के घर लनत रहे। छोट भाई उसनल बाद धान के खिजूर कर पटिया में सुखात रहे। एक दिन अपन दीदी के काम नी मिललक से ले दूनो भाई-बहिन पटिया में धान सुखाय लगलांय। ओहे समय एक कौवा एक पकल केंद के ऊ मनकर धान पटिया में गिराय देलक। दूनो भाई-बहिन ई पकल केंद के बाँइट के खाय गेलांय और जानलांय कि बन में केंद पकाथे।

दूनो भाई-बहिन केंद खोजेक लागिन पतरा बटे चाइल गेलांय। बीच बन में ई मन के केन्द गाछ मिललक। ऊपरे देखलांय तो गाछ में लाले-लाले केन्द पकल आहे। गाछ छोट और थेपड़ी ले रहे। लड़का कर दीदी गाछ में चाइढ़ गेलक और ढेर सन पकल केन्द के गिरालक। दूनो भाई-बहिन एक जगन बैठ के भरपेट केन्द खलांय। ई मने एतना केन्द खलांय कि प्यास लगे लगलक। भला प्यास का ले, नी लगी कि जेठ-बैसाख कर महीना रहे। अक्सर एहे महीना में केंद पके लगेला। खूब गर्मी में भी रहे। प्यास के मारे ई मन व्याकुल रहैं। आस-पास में कहीं पानी नी रहे। से ले अपन बहिन छोट भाई के एक बड़का गाछ कर ढोड़रो में लुकाय के अपने पानी खोजेक ले गेलक। आसे-पासे कहीं पानी की मिलबक। ढेर दूर में पानी बहेक आवाज सुनालक। से हुनहे ढेर दूर गेलक आउर भाई ले पानी लेते अलक और जोन गाछ केर ढोड़रो में उके लुकाय रहे हुंवा खोजेक लगलक लेकिन ऊ छौवा के नी पालक।

ऊ कांदते-गगाते घर घुरेक लगलक। डाहर में उके एक राजा बेटा मिललक। ई उकर कांदेक कर कारन पूछलक तो ऊ सारी घटना के बताय देलक। राजा बेटा के लड़की केर दुःख-तकलीफ पर मया होय गेलक। लड़की सुन्दर भी रहे से ले राजा बेटा के लड़की पर मोह भेलक। लड़की बेसहारा होय रहे। राजा बेटा ऊ

लड़की के अपन राजदरबार में ले गेलक आउर धूमधाम से शादी काइर लेलक और उके अपन रानी बनालक। ई राज-दरबार में सुख-शान्ति से रहेक लगलक। ऊ लड़का के अकेले पाय के बहुत सन बन्दरा मने तीर-फाइड़ के खाय गेलांय और ऊ लड़का कर छेवरा के बन्दरा मने डाहर में छोइड़ देलांय। ओहे डरहर से एक योगी आवज रहे। ऊ योगी ई चमड़ा के देइख लेलक आउर योगी ई छेंवरा (चमड़ा) से एक केन्दरा बनालक एहे केन्दरा के बजाय के भीख माँगत रहे। इकरे से उकर जीना-पानी चलत रहे। एक दिन ऊ योगी ओहे राजमहल में जहाँ लड़का कर दीदी रानी बइन रहे भीख माँगे गेलक। केन्दरा के बजाय लगलक।

केन्दरा से आवाज आवे लगलक–तिमखी तिडिंग, तिमखी तिडिंग पानी अने गेले दीदी हुंवाए रहले दीदी हुंवाए रहले। सात सै बन्दरा दीदी चीर खलांय दीदी, फाइर खालैं।

योगी केर केन्दरा कर गाना के सुइन के रानी के, अपन छोट भाई कर याद भेलक। ऊ दौड़ते बाहरे निकललक और देखात हे कि योगी केन्दरा बजात हे। उकर भीतरे से उनकर छोट भाई कर विलाप और रोवेक आवाज अवातहे, जे रानी अपन दीदी कर हृदय के अघात करते जातहे। अपन दीदी ई गाना के सुइन के बर्दास्त करे नी पारलक। ऊ कान्दे लगलक। राजा रानी से कान्देक कारन पूछलक। रानी सारी कहानी बताय देलक। रानी योगी के घर भीतरे ले गेलक और मुँह माँगा पैसा योगी के देलक और केन्दरा के अपन जगह राइख लेलक। जब योगी पैसा ले काइर के चइल गेलक तब रानी ऊ केन्दरा के जोर से पटइक देलक। जैसे केन्दरा फूटलक उकर भीतर से रानी कर छोट भाई झकमकाते हँसते निकललक राजा-रानी उ लड़का के देइख के अजाम खुश भेलांय। दोनों भैया-बहिन खुशी के मारे गला मिलाय लेलांय।

इकर बाद रानी अपन भाई के अपन राजमहल में राईख लेलक। दोनों भाई-बहिन प्यार, खुशी आउर आनन्द से संगहे रहे लग लांय। विपत्ति में भगवान दुःखी के सहारा करेला।

6

अन्धा-अन्धी राजा-रानी

एक राईज में राजा और रानी रहैं। इमने खूब धनी-मानी रहैं। इनकर एक सुन्दर लड़की रहे। उकर नाम पार्वत्ती रहे। उ मन के कोई लड़का नी रहैं, केवल एक ओहे लड़की रहे। लड़की जब जवान-सेयान भे गेलक तब उमन के अपन बेटी के शादी करेक चिन्ता होवे लगलक। इमने बेटी लागिन लड़का खोजेक ले राइज-राइज भूललांय लेकिन उमन कर मोताबिक सुन्दर आउर धनी-मानी धर कर लड़का नी मिललक। उमने हाइर-गुइन के लड़की के अपने से लड़का खोजेक ले कहलांय।

रानी बेटी अपन से लड़का खोजेक ले निकललक। ऊ हिने-हुने लड़का खातिर घूमेक-फिरेक लगलक। जात-जात उके एक लड़का से भेंट भेलक उकर नाम रहे सत्यवान। ऊ एक अत्यन्त गरीब घर कर लड़का रहे। ऊ लड़का छागरी चरात रहे। छागरी के खियायक ले डाहुरी काइट के उतरेक बेरा गाछ से गिर गेलक से के रानी बेटी बचाय लेलक। उकर सेवा सुश्रूषा करलक। दूनों कर बीच में आपस में प्यार भे गेलक। रानी बेटी लड़का के कहलक कि तोंय मोके शादी करबे? लड़का जवाब देलक मोंय एक गरीब घर कर हिकों। राज-खानदान में मोंय शादी नी करबों। लड़की अपन माय-बाप से पूछलक उमने भी गरीब लड़का संगे शादी करेक ले राजी नइ भेलांय।

एक बार ऊ लड़का सत्यवान अगम जोर से बीमार भे गेलक। ऊ मरेक-मरेक तरी भेलक। पार्वती याने राजा बेटी खबर पाय के उके देखेक ले उकर घर गेलक। ऊ मरेक नीयर भेलक से ले भगवान उके लानेक ले यमदूत मनके भेजलक। यमदूत मने उके लेगेक ले आलांय और उके लेगेक लगलांय। पार्वती उके लेगेक से यमदूत मन के मना करेला पाहें उमने नी मनायँना। तब पार्वती कहेला कि इके तोहरे मने ना ले जावा। उमने पूछायँना कि काले इके नइ लेगाब। तो पार्वती कहेला ई हमर पति हिके। दया-मया काइर के इके ना ले जावा फिर भी ई मने उके लेगायँना। पार्वती उमन कर पीछा नी छोड़ेला। तब ई मने कहलैं तोंय भगवान

से तीन वरदान माँग। तोर माँग के भगवान पूरा काइर देताइ। उनकर कहेक मुताबिक तीन वर माँगलक। पहिला उनकर माय-बाप के एक लड़का होय जाय। दूसरा–उनकर माय-बाप जे अन्धा-अन्धी हैं आँइख खुल जाय और तीसरा उनकर होवे वाले पति सत्यावान के परिवार वाला खूब धनी-मानी होय जाँय। भगवान कर दोवा से इनकर तीनों वरदान पूरा होय गेलक। तब यमदूत मने कहे लगलांय अब तो तोरतीनों वरदान तोके मिल गेलक, से ले तोंय हमरे मनकर पीछा छोइड़ दे और सत्यवान के लेगेक में बाधा ना डाल। तोंय घुइर जा। तो पर भी पार्वती उमन कर पीछा नी छोड़ेला आउर कहेला कि तोहरे मने सत्यवान के न लेगा। छोइड़ देवा, तोहरे मनके मोंय गोड़ लगोना।

तंग होय काइर के उमने भगवान से आउर एक वरदान माँगेक लागिन कहलांय तब पार्वती माँगलक कि यमदूत मने सत्यवान के छोइड़ देवोंक ऊ जी उइठ जाय। भगवान इकर चौथा वरदान के भी पूरा काइर देलक। भगवान के आदेश से यमदूत मने सत्यवान के छोइड़ देलैं। ऊ जी उइठ गेलक। सत्यवान और पार्वती खुशी-खुशी अपन-अपन घर लौट गेलांय। सत्यवान कर परिवार भी धनी-मानी होय जाय रहैं। से ले दूनों कर शादी-ब्याह बहुत धूम-धाम से होय गेलक। शादी कर बाद दोनों पति-पत्नी होइ के आराम से रहे लगलांय।

पार्वती पहिले अपने भलाइ नी देइख के माँय-बाप कर दुःख के दूर कररलक। पहिला और दूसरा वरदान माँय-बाप ले माँगलक। तीसरा वरदान अपन होवे वाले पति के परिवार के लिए माँगलक और अन्तिम, चौथा वरदान अपन जिन्दगी खातिर अपन होवे वाला पति ले माँगलक। दुनिया में इकरे लेखे दूसर मन कर भलाइ करेक चाही। सेहे ले कहल गेल है कि कर्म ही धर्म है। कहाँ रानी बेंटी आउर कहाँ एक अत्यन्त गरीब और लाचार लड़का से शादी भेलक। से हे ले कहल गेलक है कि भगवान सबकर ले दुनिया में जोड़ी भेजइ दे हैं।

●

7

बूढ़ा और बुढ़िया

एक ठो गाँव में असहाय बुढ़ा और बुढ़िया रहत रहैं। बूढ़ा रोज भीखा माँगे जात रहे। जे भी भीख में मिलत रहे ऊ अनाज, पैसा और दूसर-दूसर चीज के लाइन के बुढ़िया के घर में दे देवत रहे। बुढ़िया काठील-झुरी खोइज के खाना बनात रहे। भात बनल बाद दोनों बाईठ के प्रेम से खात रहैं। एक दिन बुढ़िया अपनी इच्छझ के बतालक और कहलक–बूढ़ा रोज हमरे मने दाइल-भात खाइला। आइज मोके रोटी खायक मन कराथे। तोंय भीख में अरवा चाउदर माँइग के लानबे। बूढ़ा कहलक हाँ जुनू आइज मोय भीख में अरवा चाउर माँइग के लानबो। बूढ़ा रोज तरी भीख माँगेक ले निकललक। ऊ दूरा-दूरा भूललक कोइ तो पैसा देवे चाइलैं कोइ धान, कोइ गोंदली-मडुवा और दूसर-दूसर चीज। बूढ़ा ऊ मनके नी लेगलक। बूढ़ा बुढ़िया कर कहल मोताबिक अरवा चाउर माँगत रहे। गरीब मन जगन भला अरवा चाउर कहाँ से मिली। एक घर से बहुत मुश्किल से थोड़ा से अरवा चाऊर मिललक। बूढ़ा उके लाइन के घर में बुढ़िया के देलक। बुढ़िया अरवा चाऊर के भिंजालक आउर सिलोट में पीस काइर के रोटी बनाय लगलक तो बहुत मुश्किल से छोट-छोट तीन रोटी बनलक।

रोटी बनल बाद दोनों रोज तरी खाय ले पाँइत में बैठलांय। दुनों के रोटी बराबाइर नी होवे लगलक। भला तीन रोटी गोटे-गोटा बराबर-बराबर काइसे हुवी। तब बुढ़िया कहे लगलक मोंय दू ठो रोटी खाबों। कहे कि बड़ी मेहनत से काठी-झुरी खोइज के रोटी बनाय हों। हुने बूढ़ा कहे लगलक मोंय दू ठो रोटी खाबों कहे कि मोंय दूरा-दूरा भूइल के थइक जा हों। से ले मोंय दू ठो खाबों। कोइ भी एक रोटी खाय ले तेयार नी होवाथैं। ऐसने बताबती होते सारा दिन बीत गेलक। केहो एक रोटी खाय ले तेयार नी भेलांय। तब आपस में फरियालैं कि जे पाछे उठी से दू रोटी खाइ। रोटी के मुड़ बाटे डाइब के दूनों पटिया डबाय के सुइत गेलांय। दूनों में कोई निंदात नी रहैं। दूनों पारी-पारी से झाइक के देखत रहैं। बुढ़िया सोचत रहे कि बूढ़ा पहिले उठलक होइ। ऊ एक रोटी खाइ और मोंय दू रोटी खाबों। कभी

बूढ़ा झाइक के देखत रहे कि बुढ़िया कहीं तो उइठ नाइ गेलक होइ। एसने करत-करत राइत बित गेलक, दिनों बित गेलक। दूनों सुइत के पटिया से ढकाल रहैं। बूढ़ा रोज दिना राइज दरबार में भीख माँगे जात रहे। दू रोज से माँगेक ले नी आलक से ले राजा के चिन्ता होलक। ऊ सोचलक कि बूढ़ा और बुढ़िया बेसे थकाल हैं। होय सकेला मोइर-हेराय गेलांय होइ। ऐसन सोइच के राजा अपन नोकर-चाकर के बूढ़ा के देखेक ले भेजलक।

नोकर-चाकर मने बूढ़ा केर घर गेलांय तो देखलांय कि दूनो झन पटिया के ढबाय के मोरल तरी सुतल हैं। दूनो झन काफी उग्रदार रहैं। से ले नोकर-चाकर सोचलांय कि होय सकेला। दूनों मोइर गेलांय होइ। ई मने आय के राजा के बताय देलांय। तब राजा ऊ मन के अराहलक कि तोहर मने उमन कर घर कर काठ-बाँस के उजड़ाय के बाँस कर सरहा बनाय लेबा और घर केर लकड़ी से चिता बनाबा और चिता में राइख के जलाय देबा। कहे कि दोनों झन मोइर गेलांय अब उनकर घर में के रहि से हमार कहल मोताबिक काम करबा। उमने राजा कर अरहाल मोताबिक उमने करलैं आउर बाँस कर सरहा में राइख के मुर्दा-घाट में ले काइर के दूनो के चिता में राइख के आइग लगाय देलैं। जैसे आइ लगलक दूनों बूढ़हा और बुढ़िया उइठ के कहे लगलांय कि हम दूठो खाब, हम दूठो खाब। नोकर-चाकर भी संयोगवश तीन झन रहैं। उमने समझलैं कि ई मरल आदमी मने भूत-प्रेत बइन के हमरे मन के ही खाय ले आय हैं। हमरेहें मन के खाय खोजाथैं। डरे ऊ नोकर मने दौड़ते और हाँफते हुए राजा जगन गेलांय और सब घटना के बतांय देलांय।

ई बात के सुइन के राजा उमन के बोलुवायक ले भेजलांय। उमने दूनों राज दरबार में आय गेलांय और अपने बीच में होवाल सब बात के बताय देलांय। राजा के उमन कर लाचारी के देइख आउर सुइन के दया-माया आय गेलक। राजा उमन अपन राज दरबार कर आँगन एक एक कोना में डेरा दे देलक और उमन के सुबह-शाम खेराकी भेजवाय लगलक। उमने दूनो बूढ़ा आउर बुढ़िया सुख से रहे लगलांय। बुढ़ापे में घर-घर भी माँगेक कर जरूरत नी भेवे लगलक। भगवान कर आशीर्वाद के कारण इमन के सुख-सुविधा मिललक।

●

8

तुरता बूढ़ा आउर बंडा सियार

एक ठो गाँव में एक बूढ़ा आउर बुढ़िया रहत रहैं। इमने खेती-बारी करत रहैं, साथे-साथे भेड़-बकरी और मुर्गी मने पोषत रहैं। बूढ़ा आउर बुढ़िया मनकर जिन्दगी एहे मन से चलत रहे। बूढ़ा गाँव के बाहरे बारी में मकाई बुइन रहे। मकाई बहुत सुन्दर उपाइज रहे। जब ई फूइट के गदराय लगलक तब बंडा सियार राइत खाने खायक सुरु करलक। बूढ़ा अपन मकाई के बचायक लागिन खेत के पहरा करेक लगलक। एक दिन बंडा सियार मकई के खायक ले जइसे खेत में घुसलक बूढ़ा सियार के मारेक ले कुदालक। मारकल भी, तो बंडा सियार बूढ़ा के धिराय के कहे लगलक रहा तो तुरता बूढ़ा तोर मुर्गी कहाँ जतै। मोंय तोर सभे मुर्गी मन के खाय जबाऊ। उकर धिरायक के सुइन के तुरता बूढ़ा एक ठो हँसुआ धाइर के अंधार में चुपे मुर्गी संगे बीच में बाइठ गेलक। साँझ बेरा अन्धार में सियार मुर्गी पकड़ेक लागिन मुर्गी घर में घुसलक आउर मुर्गी के धरे खोजलक। जै बेरा बंडा सियार मुर्गी मनके धरेक खोजे तै बेरा बूढ़ा हँसुआ से बंडा सियार कर मुड़ी के ठोठके। बूढ़ा मुर्गी तरी ठोठलक तब सियार कहे लगलक कि बूढ़ा जगन बड़-बड़ मुर्गी अहे। मोंय ई मन के धरे नी पारबों।

हताश होय के सियार घूरेक लगलक से बेरा बूढ़ा के धिरालक कि राह तो रे तुरता बुढ़्‌ढ़ा तोर छागरी कहाँ जाइ। मोंय तोर छागरी के खाय जबाऊ। बंडा सियार केर धिरायक सुइन के तुरता बूढ़ा कुटैसी धाइर के अन्धार में छागरी कर बीचे चुपके से बाइठ गेलक। सांझ बेरा अंधार में बंडा सियार तुरता बूढ़ा कर छागरी के पकड़ेक ले अंधार में छागरी केर कोठरी में घुसलक और छगरी के पकड़ेक कोसिस करलक तो बूढ़ा, सियार केर मुड़ी के कुटैसी से ठप दिना मारलक। जै बेर बंडा सियार छागरी के पकड़ेक कोसिस करलक, बूढ़ा छागरी ढुसेक नियर मारत रहे। सियार छागरी के पकड़ेक नी पारलक और कहे लगलक कि बूढ़ा जगन बड़का-बड़का छागरी अहे। मोंय उके पकड़ेक नी पारबों, वापस छूछे हाथे घूरेक बेरा बूढ़ा के बंडा सियार धिरालक–राह तो रे तुरता बुढ़ा, तोर भेड़ा कहाँ जाइ। मोंय तोर सब भेड़ा के

खाय जाबू।

उकर धिरायक के सुइन के बूढ़ा भेड़ा के बचायक ले, ढेलफोरा के धाइर के अंधार में भेड़ा कर कोठरी में उनकर बीचे चुपके बैठ गेलक। जैसे अंधार भेलक बंडा सियार भेड़ा के पकइड़ के ले जाय ले भेड़ा कर कोठरी घुइस गेलक और भेड़ा के पकड़ेक चाहलक तैसे बूढ़ा ढेल फोरा से बंडा सियार कर सिर के बजड़लक। जै बेर बंडा सियार भेड़ा के धारेक चाहलक तै बेर तुरता बूढ़ा भेड़ा केर ढुसेक नियर उकर सिर में बजड़लक। ई तरी बंडा सियार बूढ़ा कर भेड़ा के भी पकड़ेक नी पारलक। तब हाइर-गुइन के बंडा सियार बूढ़ा कर पीछा करेक के छोइड़ देलक। उकर पीछा छोड़ेक बाद दुइयो बूढ़ा-बुढ़िया निरदन्द से कमाय-खाय लगलांय।

तुरता बूढ़ा नियर आदमी मनके एसने सचेत और होसियार होवेक चाही।

●

9

पेटू हुँडार

एक बन पतरा आउर टंगरा-टोंगरी केर खोह में एक हुँडार रहत रहे। हुँडार बड़ा खदहुड़ रहे। हुँडार जेके पावत रहे उके जबरदस्ती खाय जात रहे। एक दिन ऊ भूखे-प्यासे घूमेक लगलक एहे समय एक बगुला मिललक उके ऊ धाइर के खाय गेलक। जात-जात डाइर में उके एक छागरी मिललक। ऊ हुँडार उके खायक लागिन आगे बढ़लक और उके कहेक लगलक कि मोंय तोके खाय जाबों। छागरी कहलक तोंय हमके खाबे मोंय दुइस के मोराय देबों। तब हुँडार कहे लगलक–मोंय चरक चन्दन बगुला खाली, तोके खाय नी पारबों, कइहके उके जोर-जुल्म काइर के खाय गेलक।

दूसर दिन हुँडार अपन खाना केर खोज में निकइल गेलक, तो उकर भेंट एक भेड़ा से भेलक तब उके कहलक मोंय तोके खाबों, भेड़ा कहे लागलक तोंय मोके खाय परबे। मोंय तोके ढुइस के मोराय देबों। तब हुँडार कहे लगलक–मोंय चरक चन्दन बगुला खालों। में-में छागरी खालों, से तोके मोंय खाय नी पारबों। एसन कइह के ऊ भेड़ा के भी जबरदस्ती कइर के खाय गेलक।

एक दिन हुँडार फिर खाना केर खोज में निकल पड़लक। उके डाइर में एक कडरू मिललक। उके खाय ले अब-तब होवे लगलक और कहलक कि मोंय तोके खाबों। ई पर कडरू कहलक कि तोके मोंय ढुइस के मोराय देबों, तो तोंय मोके कइसे खाबे तब हुँडार कहे लगलक कि मोंय चरक चन्दन बगुला खालों, में-में छगरी खालों, कुबुस-कुबुस भेड़ा खालों कइह करके उके पकइड़ के चीर-फाइड़ के खाय गेलक। ऊ हुँडार खाय-खाय कर एसन मोटाय गेलक कि उ चलेक नी पारे लगलक खाते-खाते और चलते-चलते थकलक तब उके प्यास भी लगे लगलक। बेचारा हुँडार कोनो तरी आगे बढलक तो एक खूब गहरा पोखरा भेटालक।

हुँडार तालाब कर पानी के कहलक मोंय तोके भी जाबों। ई पर पोखरा कहलक तोंय मोके पीये नी पारबे, तोंय ई पोखरा में डूइब मरबे। तब हुँडार अपन बहादुरी बतलाय लगलक। मोंय चरक चन्दन बगुला खाली, में-में छगरी खालों,

कुबुस-कुबुस भेड़ा खालों और ओंय-ओंय कड़रु खालों, तो मोंय तोके पीये नी पारबों कबहु के क हुँडार पोरा में पानी पीये लागिन उतइर गेलक और पेट भाइर पानी पिलक। ऊ इतना भारी भेलक कि ऊपर चढ़े नी पारलक और गढ़ा बाटे जाय कइर के डूइब मरलक।

से ले अहंकार, लालची और पया से बेसी अपने के नी समझेक चाही। से हे ले कहल गेल है कि लालच बुरी बलाय।

●

10

लेदा चराई (ढेला पक्षी)

यह पक्षी गौरैये के समान होती है जो खेत के ढेलों की आड़ में अंडा देती है।

एक खेर कर शहर रहे। ऊ खेर घास कर शहर, जब पूरबे से हवा-धुका चलेला तो ऊ शहर पछिमे डगमगायला और जोन समय पछिमे से हवा-बतास चले लागेला से समय ऊ शहर पूरबे डगमगायला। से खेर घास कर शहर में एक लेदा चराइ सात ठो बच्चा दे रहे सातो बच्चा मने सात जोनी कर रहैं। ऊ खेर कर शहर में एक दिन आइग लाइग गेलक। पति-पत्नी दोनों ढेला चराइ आपन छौवा मन कर मोह-माया में बचाय ले, जने-जने आइग लागते और बढ़ते जायला उकर ऊपरे-ऊपरे चें-चें कइरके अपने मनक छौवाइन के देखते हुए उड़त रहैं। इकरे बीच में दोनों झन आइग कर लपेट से जाइल कर मोइर गेलांय। अब छोट-छोट बच्चा मने करबैं तो का करबैं।

सातों भाई-बहिन में बैल सबसे बड़ भाई रहैं। उनकर से छोट बाघ, भालू, हुँडार, साँप, चूहा और आदमी रहैं। इनकर में मनुख (आदमी) सबकर से छोट भाई रहे। बड़ भाई बैल बढ़ल रहैं, इनकर में समझदारी रहे। बड़ भाई बैल एक-एक करके सभे भाई-बहिन मन कें मुँह से हवाइक-हवाइक के लाइन-लाइन कइर के सबसे पाललक-पोषलक और बड़ा करलक। जब ई मने पूरा बाइढ़ गेलैं तब बड़ भाई बैल सबके कहलैं-भाई-बहिन मन अब हमरे मन सब अपन से कमाब खाब। ई जंगल के हमरे मन के छोड़ेक पड़ी। एहे सोइच-बिचाइर के सातों भाई-बहिन ऊ जगह के छोइड़ के चले लागलांय। जात-जाह डाहर में टका-टुकू पहाड़ और गुफा मिललक तब बैल भाईया कहलैं भालू भाईया तोर जीना-पानी हियें चली। तोंय एहे जगह राईह जा। भालू भाईया हुवें राईह गेलक। बचल छवो भाई-बहिन आगे बढ़े लगलांय। जात-जात डाहर में भुंडू और दिंया कर टिलहा मने मिललक तब बैल भाईया साँप के कहलैं साँप भाईया तोर जीना-पानी हियें चली। ऊ मने साँप भाईया के हुवें छोईड़ देलांय। फिर ऊ माने आगे बढ़लांय। डाहर में झाड़ी-झुरमुट मिललक

तब बैल भाई कहलांय–हुँडार भाईया हुवें राइह गेलक। चलते-चलते खूब घना पतरा मिललक तब बैल भाई कहलैं–हे बाघ भाईया तोर जिन्दगी हियें बढ़िया से चली-बनी से ले तोंय एहे बन-पतरा में राइह जा। बाघ भाईया हुवें राइह गेलक। आगे बढ़लैं तो डाहर में अगम लतरा मने मिललक। बैल भाई चूहा-मुसा के हुवें छोइड़ देलांय।

अब बड़ भाई बैल और सबकर से छोट भाईया आदमी बचलैं। ई मने दूयो भाई बढ़ते गेलांय और एक राजा कर राइज में पोखरा किनारे पीपाइर गाछ कर छांई में डेरा-बसा डाललैं। ई मने हुवां राइह कइरके आदमी मन कर दवा-बिरो करे लगलैं। दवा-बिरो खातिर ऊ मन जगन ढेर आदमी मने जुटत रहैं।

एक बेरा राजा कर रानी बहुत बीमार पाइड़ गेलांय। राजा दवा-बिरो करत-करत थाइक गेलैं पाहें रानी बेस नाई भेलांय। तब उकर नोकर-चाकर राजा के बतालैं कि एक नवा चाकर आयहे ऊ खूब दवा-बिरो जानेला और आदमी मन के बेरा करेला। राजा उके बोलाय भेजलांय। नवा चाकर राइज दरबार में आय गेलक। राजा उके कहलैं। हमर रानी बहुत बीमार आहे, बहुत दवा-बिरो कराली तब भी ऊ ठीक नी होवाथैं। आदमी मने कहैं ना कि रानी बाघ और भालू कर दूध पिताइ तबे ठीक होताइ अगर तोंय बाघ और भालू कर दूध लाईन देबे तो तोके बकसीस में ढेर पैसा-कौड़ी देबाइ। राजा सोचलक कि ई पदना कहाँ से बाघ और भालू कर दूध के लाने पारी और जब दूसर दवा-बिरो से रानी के बेस कइर देताइ तो मामूली पैसा देब। नवा चाकर बाघ और भालू कर दूध लानेक लगिन गाइछ लेलक। गाछल बाद ऊ नवा चाकर अपन डेरा-बसा घुइर गेलक। राजा कर हुकुम के आपन बड़ भाई बैल के बताय देलक और सलहा पूछलक।

बड़ भाई बैल कहलक कि ई तोर ले कोनो बड़का बात नखे बुचू। आखिर बाघ और भालू हैं नी। ई मने कहिया काम देबंय। बैल भाई के कहल मुताबिक नवा चाकर ओहे जगह गेलक जोन जगह बाघ भाई के छोइड़ रहे। उ हुवां जायके बाघ भैया, बाघ भाई चिचयाय लागलक। अपन छोट भाई करबोली के सुइन के बाघ जंगल से बाहरे आलक और कहलक तोर ले का काम पइड़ गेलक बाबू। नवा चाकर राजा कर सब बात के बताय देलक। तब बाघ भाई कहलक कोनो बात नखे। मोंय तोर ले बाघिन कर दूध इन्तजाम कइर देवाथों। इकर ले तोके कोनो चिन्ता-फिकीर नखे करेक, कइह के बाघ बन भीतरे चइल गेलक और जंगल कर सभे बाघिन के साथे लाइन के अपन छोट भाई जगन आल तले बतालक कि ई तोर भाभी हिके। तोंय इकर ऊपर घोड़ा चढ़। ई तोके आगे-आगे ले जताइ। नवा चाकर अपने भौजी के पीठ ऊपरे घोड़ा चाइढ़ गेलक और आगे-आगे चले लागलक उकर पाछे बाघ-बाघिन कर बड़का झुंड रहे। ई मने चलत-चलत भालू केर डेरा

पहुँचलयैं। नवा चाकर हुंवा पहुँइच के भालू भैया भालू भैया कइह के गूल करे लागलक। भालू भाई अपन छोट भाई केर आवाज के जाइन गेलक और अपन डेरा-मांदा से निकइल के आपन छोट भाई जगन अलक। उनकर आवल पर नवा चाकर, राजा कर फरमाइस के बताय देलक। तब भालू भाई अपने मनकर मांदा में चाइल गेलक और उकर ले भालू कर दूध जुटाय देलक। अपन साथ आस, पास केर सभे भालू मन के लेते आलक और उमन कर संगे सभे लाइग गेलांय। एहे तरि सभे भाई-बहिन मनके बोलायके संगे-संगे राज दरबार बटे चललांय। नवा चाकर अपन भौजी कर पीठ में बैठ के आगे-आगे चलत रहे। राज दरबार कर पहुँचेक पहिले उकर नोकर-चाकर नवा चाकर के बाघ-भालू, हुँडार और साँप के साथ आवेक के देइख लेलांय और राजा के बताय देलांय कि नवाचाकर बाघिन में घोड़ा चाइढ़ के आगे-आगे अवाथे। राजा बाघ-भालू, हुँडार और साँप कर झुंड के देइख के डाइर गेलक और समझलक कि नवा चाकर मामूली आदमी न लगे। ऊ डर के मारे कहे लागलक कि नवा चाकर रानी ठीक भे गेलांय। तोंय सभे बाघ-भालू और तोर सभे सेना के वापाइस कइर ले। मोंय आब तोहर ले गछल सभे पैसा मनके तोके देवाथो। नवा चाकर ऊ मनके हुंवे छोइड़ कइरके राज दरबार गेलक। राजा गछल सभे पैसा के दे देलक। नवा चाकर पैसा पाय के खुशी-खुशी घुरलक और अपन भौजी कर पीठ में घोड़ा चाइढ़ के गेलक और सभे भाई-बहिन मन के अपन-अपन डेरा में छोइड़ देलक और अपन डेरा बसा में चाइल आलक। थोड़ेक दिन बाद ई राइज के ई मन छोइड़ कर दोसर राजा कर राइज में जाय के फिर तालाब फिनारे पीपर गाछ कर छांइह में डेरा डाललांय। राजा, जे बहुत भारी पैसा दे रहे ऊ पैसा के वापस करेक ले उपाय सोचे लगलक। राजा ऊ नवा चाकर के बोलायक ले भेजलक, जब नवा चाकर राज दरबार में आलक तब कहलक कि नवा चाकर हमके एक कुवाँ खुदवायक है। तोंय ई काम के कर। नवा चाकर कुइयाँ खोदेक ले गाइछ लेलक। ऊ नवा चाकर कुइयाँ खोदेक काम शुरू करलक। राजा अपने नोकर-चाकर के कहलांय कि जोन समय नवा चाकर कुइयाँ में उतइर जाइ से बेरा ऊपरे से मिट्टी गिराय के कुइयाँ के भाइठ देबा। नवा चाकर हुवें मइर जताइ। तब तोहरे मने उकर डेरा में जायके उकर सब पैसा कौड़ी के उठाय के ले लनबा। ऊ मने कहलांय हमरे रौर कहल मुताबिक काम करब।

नवा चाकर के ई चापलूसी कर जानकारी भे गेलक। ऊ नवा चाकर अपन बड़ भाई बैल के ई सब बात के बताय देलक कि राजा हमके जान से मारे खोजाथे। ई बात के सुइन के बैल भाई कहे लागलक-राजा तो जान से मारे नी पारी इकर उपाय है। तोंय जाय के चूहा भाई के बोलाय के लान। नवा चाकर अपन भाई चूहा जगन गेलक और उके बोलाय के बैल भाई जगन लानलक। बैल

भाई चूहा भैया के कहलक, राजा तोर भाई नवा चाकर के कुआँ में भाइठ के मोराय चाहेला। से तोंय दूरसे लतरा बनाव और ऊ लतरा के कुँवा कर पेंदरी तक ले जा। जोन बेरा उकर नोकर-चाकर कुँवा में मट्टी गिराबांय से खाने तोर भाई लतरा से होइ के बाहर निकइल जाई। ई तरी उकर जान बइच जाइ। चूहा कुँआ कर ढेर दूर से लतरा बनायक शुरू करलक। ई लतरा के कुँवा कर पेंदरी तक ले गेलक।

जब लतरा तेयार भे गेलक तब नवा चाकर उतरलक ऊ उताइर के नीचे गेलक सेहे समय राजा कर नोकर-चाकर कुँवा कर ऊपरे से धड़ा-धड़ मिट्टी गिरालांय और कुँवा के भाईठ देलांय। ऊ मने सोचलांय की नवा चाकर माइर गेलक। ई बात के नोकर-चाकर मने राजा के बताय देलांय। दूसर दिन ऊ मने उकर डेरा में जायके देखा़यन कि नवा चाकर सब रुपया के पटिया में सुखाथे। नवा चाकर चुहा कर लतरा से बाहरे निकइल जाय रहे ऊ मनके देखायले रुपया मन के पटिया में सुखात रहे नोकर-चाकर मने नवा चाकर कर जियल और पैसा के सुखायक बात के राजा के बतालांय। राजा ताजूब होय गेलक आउर सोचे लगलांय की नवा चाकर एक गुणी आदमी हिके। इके मोंय ठागेक और मोराएक नी पारबों। ई सोइच के राजा नवा चाकर कर पीछा छोइड़ देलक।

पहिले बताल जाय है कि नवा चाकर आउर उकर बड़ भाई बैल दूसर राजा केर राइज में जाय के पोखरा किनारे कर पिपर गाछ कर छांई में डेरा डाइल रहैं। हुंवा कर राजा कर दु-चाइर झन बेटी मने रहैं। इमन कर केकरो शादी नी भे रहे, से ले राजा बड़ बेटी के शादी करेक ले वर चुनेक वास्ते समूचे राइज केर राजकुमार मन के बोलालक राजा घोषणा काइर रहे कि जेकर साथे उनकर बड़ बेटी कर शादी होताइ से के आधा राइज आउर ढेर बगरा पैसा तिलक में मिली। वर चुनेक ले राजा एक लोटा देलक और कहलक कि राजकुमारी मने ई लोटा के तालाब में लुकाबांय ऊ लोटा के जोन राजा खोइज देतैं उकरे संगे राजकुमारी कर शादी होतै। राजकुमारी मने लोटा के लुकात रहैं ऊ लोटा के कोनों राजकुमार खोजे नी पारत रहैं और राजकुमार मनकर छिपाल लोटा के राजकुमारी मने खोइज देवत रहैं। ई तरी लुका-छिपी में राजकुमार मने हाइर जात रहैं। राजा से अनुमति ले काइर के नवा चाकर भी ई वर चुनाव में भाग लेलक। नवा चाकर कर बड़ भाई बैल उके कहलक और सलाहा देलक कि जोन समय तोंय लोटा के लुकाबे से समय मोंय पानी पियेक तरी पोखरा किनारे जाब और लोटा के मुँह में ले लेबाइ तो राजकुमारी मने लोटा के खोजे नी पारबैं। नवा चाकर राजकुमारी मनक छिपाल लोटा के खोइज देवत रहे नवा चाकर केर छिपाल लोटा के राजकुमारी मने खोजे नी परत रहैं कहे कि नवा चाकर केर छिपाल लोटा के पानी पियेक बहाना काइर के बैल उके मुँह में ले लेवत रहे। राजकुमारी मने नवा चाकर केर छिपाल लोटा के खोजे नी परत रहैं।

ई तरी राजकुमारी मने हाइर गेलांय।

घोषणा के मुताबिक राजा अपन बड़ बेटी कर शादी नवा चाकर के साथ काइर देलक। शादी बहुत धूम-धाम से भेलक। करार करल मुताबिक राजा अपन आधा राइज और रुपया पैसा नवा चाकर और अपन बेटी ले दे देलक। राइज पाइट पाय के दूनो सुख से रहे लगलांय। बड़ भाई बैल के भी अपने मन संगे राज दरबार में रखलांय।

माय-बाप कर गरल बाद बड़ भाई बैल गाय–बाप कर दाखिल भेलक। सगे भाई मनके आइग से बचालक, पाललक-पोषलक और ऊ मन के अपन-अपन रास्ता देखाय देलक। नवा चाकर के भी अकिल-बुद्धि दे काइरके राजा बनाय देलक।

●

(छ) असुर लोककथाएँ

1

मानव की उत्पत्ति

एक बार भगवान शिव अपने शिकारी कुत्तों–चौरा-भौरा और लीली-भूल्ली के साथ गंगलाखाई और बिजवान वन में शिकार करने गए। उनके हाथ में सोने की छड़ी (डंडा) और रूपा (चाँदी) की टोकरी थी। उनके कुत्ते मानव का गंध सूँघकर उस ओर दौड़े और भगवान महादेव भी उनके पीछे-पीछे दौड़ पड़े। शिकारी कुत्ते खखरा लता नामक स्थान पर रुक गए, जहाँ एक केकड़े का बिल था। इस बिल से महादेव ने दो छोटे मानव को निकाला, जिसमें एक पुरुष और दूसरी महिला थी। उन्होंने दोनों को अपनी रूपा की टोकरी में रखकर अपने घर ले आये। घर आकर उन्होंने अपनी पत्नी पार्वती से कहा, 'देखो पार्वती, इस बार के शिकार में मैं दो विचित्र जीव लाया हूँ।'

पार्वती उत्सुक होकर उन जीवों के बारे में जानना चाहा पर महादेव ने उन्हें पहले हंडिया पिलाने को कहा और उसे पीने के बाद ही उनके बारे में बताने का वचन दिया। पार्वती ने उन्हें पीने के लिए चावल की शराब (डियंग-हंड़िया) पीने को देकर उन्हें उन दो विचित्र जीवों को दिखाने को कहा। महादेव ने तब उन दो छोटे मानवों को अपनी टोकरी से निकाला। पार्वती दो नन्हें मानव युगल को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। महादेव ने उन दोनों को तेल लगाकर स्नान कराने हेतु पार्वती को कहा। उनको स्नान कराकर पार्वती ने उन्हें माँ का प्यार देते हुए खिलाया। उन दोनों को बीच में लकड़ी का एक कुन्दी रखकर एक साथ सोने को कहा। काल क्रमानुसार जब दोनों युवा (वयस्क) हो गए तब महादेव ने उनके माध्यम से मानव की सृष्टि का विस्तार करने पर विचार किया। उन्होंने दोनों को सहवास के लिए प्रेरित किया पर वे ऐसा नहीं कर सके। तब उन्होंने दोनों को चावल की शराब (डियंग) बनाने को कहा। जिसे बनाकर वे काफी मात्रा में पी गए। वे नशा में आपस के सम्बन्ध भुलाकर यौन संबंध स्थापित कर लिये। उनके सहवास से ही मानव का जन्म हुआ और मानव जाति का विस्तार हुआ। वे दोनों ही असुर जाति के प्रथम पूर्वज बन गए।

●

2

देवदूत असुर

प्राचीन काल में एक समय स्वर्ग में देवदूत निवास करते थे। देवदूत भगवान (सिंगबोंगा) की सेवा से सम्बन्धित विभिन्न कार्यों का सम्पादन भगवान के आदेश से किया करते थे। एक बार देवदूत स्वर्ग में लगे एक विशाल आईना के सामने चले गए, जहाँ उन्होंने अपने रूप-रंग आदि को भगवान की तरह आकर्षक और समान पाया। यह देखकर वे गर्व और ईर्ष्या से भर गए। उन्होंने विचार किया कि जब हम स्वयं भगवान की तरह रूप वाले हैं, तब हम उनकी सेवा दास की तरह क्यों करें। वे अपने को भगवान के समानान्तर मानने लगे। भगवान को उनका यह आचरण बहुत बुरा और असहनीय लगा।

भगवान के आदेश से उन्हें स्वर्ग से नीचे फेंक दिया गया और वे पृथ्वी पर एकासी पीढ़ी और तेरासी बांदी पर जा गिरे। इस क्षेत्र में उन्हें लौह अयस्क (लोहा पत्थर) का बहुत बड़ा भंडार मिला। वे वहाँ बड़ी-बड़ी धमन भट्ठियाँ बनाकर लोहा पत्थर को गलाकर लोहा और लोहा के अनेक प्रकार के उपकरण बनाने लगे। इस प्रकार उन पतित देवदूतों का नाम असुर पड़ गया। तभी से असुर भगवान की सेवा छोड़कर लोहा गलाने का पेशा अपना लिए और समाज में वे देवदूत की जगह असुर कहे जाने लगे।

●

3

धरम राजा और असुर

प्राचीन काल में असुर बड़ी-बड़ी धमन भट्ठियाँ बनाकर पेड़ों को काटकर और भट्ठियों में जलाकर लोहा गलाने का कार्य करते थे। इससे धरती के साथ-साथ स्वर्ग में भी इसकी गर्मी फैल गई कि भगवान का प्रिय घोड़ा हंसराज-पंखराज को भी हरा घास और ठंडा पानी मिलना कठिन हो गया। धरम राजा ने ढेंचुआ, गहरू, केरकेट्टा, जगरू तथा अन्य पक्षियों को अपना दूत बनाकर असुरों को भेजकर यह आदेश दिया कि वे दिन-रात धमन भट्ठी जलाने के बदले उन्हें दिन में या रात में एक बार जलाकर लोहा गलावें ताकि धमन भट्ठी के प्रज्ज्वलित आग से होने वाले प्रकृति में प्रदूषण और असहनीय ताप से मुक्ति मिले और सभी जीवों को खाने का अन्न आदि तथा पीने का पर्याप्त पानी मिल सके। परन्तु असुर उनके दूतों द्वारा भेजे गए धरम राज के आदेश को मानने से इन्कार कर दिए।

इस पर धरमराज ने स्वयं अवतार लेकर असुर बस्ती में आकर सभी असुरों को उनके द्वारा प्रज्ज्वलित विशाल धमन भट्ठी में डालकर भस्म कर दिया। केवल एक भाई और एक बहन (युवती) भट्ठी के बाहर रहकर बच गई। वे दोनों भट्ठी में धौंकनी (भाती) चलाकर आग को प्रज्ज्वलित कर रहे थे। जब उन्होंने भट्ठी से खून की धारा बाहर आते देख तो धरम राज ने कहा, 'यह खून नहीं, गलाये गये लोहा की धारा है। इस प्रकार भट्ठी में प्रविष्ट हुए सभी स्त्री-पुरुष जलकर राख हो गए तब धरम राजा वहाँ से अन्तर्ध्यान होने (भागने) लगे। तब दोनों ने उनसे निवेदन किया, 'बताओ, हम दोनों अपना जीवन-यापन और भरण-पोषण कैसे करेंगे?'

तब धरम राजा ने उन्हें 'दाहा' या झूमचास की विधि बताते हुए कहा कि तुम लोग झाड़ी को जलाकर उस पर खेती करोगे। उन दोनों ने वैसा ही किया। तब धरम राजा ने उन्हें बीज देकर एक लत्तावाला पौधा लगाने को कहा। जब वह पौधा बढ़ने लगा तो उन्हें चूहा काट दिया। इस पर धरम राजा ने उन्हें 'डण्डा काटा' धार्मिक अनुष्ठान कर चूहा भगाने की विधि बताई। उनको बाद में मडुआ,

गोदली, मक्का, सुरगुजिया......आदि का बीज दिया जिससे वे खेती कर अपना भरण-पोषण करने लगे।

इस प्रकार उन दोनों की सन्तानें असुरों द्वारा पूर्व में किये जा रहे लोहा गलाने को छोड़कर 'झूमचास' द्वारा मकई, मडुआ, आदि उपजाकर अपना भरण-पोषण करने लगे।

●

4

असुर राजा-रानी

प्राचीन काल में बारह भाई असुर और तेरह भाई लोधा असुर राजा-रानी के साथ पोला पहाड़ और लोहा पहाड़ पर रहकर राज करते थे। यह क्षेत्र नेतरहाट के पठार पर अवस्थित था। असुर राजा के अनुसार पृथ्वी पर पहले असुर का जन्म हुआ था और उसके बाद लोधा पैदा हुए थे। असुर राजा अपने राज्य में 'सन्सी (संड़सी) कुटासी' की पूजा धूमधाम से मनाता था, ताकि लोहा गलाने में कोई प्रेत बाधा नहीं हो। इस पूजा में असुर के साथ-साथ लोधा भी शामिल होते थे। इस अवसर पर वे इस मन्त्र का पाठ कर पूजा करते थे। पूजा में मुर्गा की बलि दी जाती थी। मुर्गा को नहलाकर अरवा चावल खिलाकर इसकी गर्दन को संडसी से पकड़कर लोहे के नेहाई पर इसके सिर को हथौड़ा से कूच कर बलि दी जाती थी। इससे उनके देवता प्रसन्न होते थे। मंत्र पाठ पहान (पुजारी) द्वारा किया जाता था।

बारह भैया असुर तेरह भैया लोधा
बारह महीना में पूजा-पाठ होवे दे।
पहिले से माई बाप चाला लेएन
सेके नामे करते-धरते जात ही।
बारह भईया असुर इदेन वेया,
तेरह भईया लोधा जे हिला जनम अवतार
से दिन तारा मन्ता-दन्ता पूजा-पाठ एम दाले।
धव ना गदह आलम टोला में,
भंगो को पाकर केले टुलु के
लोह लुवी के गराईग अच्छा से पडि जानो।।

अर्थात : हमलोग बारह भाई असुर और तेरह भाई लोधा बारह महीना पर पूजा-पाठ करते हैं। हमारे पूर्वज पहले से ही यह पूजा-पाठ करते थे, जिसे हम लोग चला रहे हैं अथवा पूजा की परम्परा को कायम रखे हुए हैं। जब से असुर के बाद लोधा पृथ्वी पर जन्म लिए तब से हम लोग इस मंत्र का पाठ कर पूजा करते आ

रहे हैं। हम आपकी पूजा कर रहे हैं ताकि लोहा गलाने में कोई प्रेत बाधा नहीं हो और आपकी कृपा से लोहा बराबर गलता रहे ताकि हम लोगों का रोजी-रोजगार चलता रहे।

सखुआपानी का खमीला असुर द्वारा यह लोक कथा प्रस्तुत किया गया। आज भी असुर होली के दिन (फागुन पूर्णमासी को) 'सरसी कुटासी पूजा' को विधि पूर्वक सम्पन्न करते हैं। अब असुर लोहा गलाने का काम छोड़ चुके हैं और कृषि एवं पशुपालन से अपना भरण-पोषण करते हैं। परन्तु अपने पूर्वजों की धार्मिक अवधारणा को वे भूले नहीं हैं। इस अवसर पर असुर अपने पूर्वजों के मूल स्थान पोला पहाड़ और लोहा पहाड़ के साथ-साथ राजा और दूरजगिया रानी की भी पूजा करते हैं।

●

5

दुष्ट प्रेतों की उत्पत्ति

बहुत समय पहले एक सेमल के पेड़ पर दो गीध रहते थे। उनके नाम थे– राय गीध और उसकी पत्नी जटा गीधनी। इस पेड़ पर उन दोनों ने अपने रहने के लिए एक विशाल घोसला बना लिया था। जट गीधनी ने उस घोसले में अनेकों अंडे दिये। छः महीने तक अंडा को सेवने के बाद सभी अंडों से गीध के बच्चे बाहर आ गए। रायगीध और जटा गीधनी नजदीक के असुर गाँव से छोटे बच्चों को लाकर और उन्हें मार कर अपने बच्चों को खिलाना शुरू कर दिया। छोटे बच्चों (शिशुओं) के गायब होने से असुर गाँव में कोहराम मच गया। असुर सरदार को पता चला कि सेमल पर रहने वाले गीध उनके बच्चों को उठाकर ले जाते हैं और उन्हें मारकर खा जाते हैं। अतः असुरों द्वारा उन मानवभक्षी विशाल गीधों को मारने की योजना बनाई गई।

वहाँ निवास करने वाले वीर असुरों ने बारह जंगलों में चारकोल (लकड़ी का कोयला) तैयार किया और सोलह जंगलों से लोहा पत्थर इकट्ठा कर ले आये। असुर एक विशाल धमन भट्ठी बनाकर उसमें लोहा गलाने का काम शुरू कर दिये। दिन-रात धमन भट्ठी जलता रहा और लोहा पत्थर से लोहा गलकर तैयार हो गया। उस लोहे से असुरों ने एक विशाल धनुष और तीरों का निर्माण किया। असुर युवती ने तीर से मार कर राय गीध और जटा गीधनी का काम तमाम कर दिया। इस प्रकार दोनों के मारे जाने के बाद असुरों ने उस सेमल वृक्ष को भी काट डाला। परन्तु वह सेमल जादुई पेड़ था। अतः कटने के बाद भी वह बढ़ने लगा। असुरों ने एक विशाल लोहे के कठौता से ढंक दिया ताकि वह बढ़कर विशाल वृक्ष न बन जाय। परन्तु वह जादुई पेड़ नीचे-नीचे बढ़कर टोंगो और गुमला के बीच चार मील में फैल गया। उनके पूर्वजों के अनुसार टोंगो और गुमला की बीच चार किलोमीटर लम्बी पहाड़ी उसी सेमल वृक्ष का बदला हुआ रूप है जिसे सारू पहाड़ कहते हैं।

उस सेमल पेड़ पर रहने वाले गीधों के बच्चे मर कर दुष्ट प्रेतों में बदल गए

और वे ही खूँटभूत, दरहा या डरहा, डाकिन, मुआ, सतबहिनी, अल्सी, फल्सी आदि नाम से दुष्ट प्रेतों के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

असुर अभी भी उन दुष्ट प्रेतों से काफी भयभीत रहते हैं और विभिन्न अवसरों पर बलि देकर उनकी पूजा कर उनसे अपनी और अपने वंश की रक्षा के लिए प्रार्थना (गोआरी) करते हैं।

●

6

धौला गिर और मैना गिर

प्राचीन काल में असुर काफी सम्पन्न और शक्तिशाली थे और वे धौलागिर और मैनागिर पर्वत पर निवास करते थे। वहाँ दो बड़ी-बड़ी झीलें थीं। वे बहुत चतुर कारीगर थे जो पालकी पर चलते थे और गला हुआ लाल लोहा खाते थे। वे खेती नहीं करते थे और केवल मवेशी पालते थे। उनके पास बड़ी संख्या में मवेशियों का झुण्ड होता था। परन्तु बाद में उराँव, जो लोधा कहलाते थे, उनके मवेशियों को भगाकर अपने पास ले गए। जब असुर भाग कर जंगल में चले गए, तब असुर प्रतिशोध की भावना से उत्प्रेरित होकर उराँव से मवेशियों को चुराकर उनका शिकार करने लगे। उराँव उनसे तंग-हार कर भगवान के पास असुरों से रक्षा हेतु निवेदन करने गए।

भगवान उनकी प्रार्थना सुनकर उनकी रक्षा करने और असुरों को सजा देने का संकल्प लिया। भगवान ने वहाँ जंगल में एक बहुत बड़ा महल बनवाया और उसमें सभी असुरों को आमन्त्रित किया। जब सभी असुर महल में चले गए तो भगवान महल का फाटक बन्द कर अन्तर्ध्यान हो गए। उन्होंने पूरे महल की चारकोल (लकड़ी का कोयला) से भर दिया। उन्होंने महल के बाहर दो असुर भाई-बहन को देखा, जो महल में प्रवेश नहीं किये थे। भगवान ने उन्हें बाहर छोड़कर महल के चारकोल में उनसे आग लगवाकर धौकनी चलाने को कहा। थोड़ी देर में चारकोल में आग लगने के बाद महल में गए सभी असुर जलकर राख हो गए। केवल दो असुर—एक पुरुष और एक महिला बच गए जिन्हें उराँव जंगल में ले जाकर छोड़ दिए। उनसे जो सन्तानें हुई असुर प्रजाति का विस्तार हुआ।

●

(ज) बिरहोर लोककथाएँ

1

बिरहोर रामायण

सिंगबोंगा (ईश्वर) ने पृथ्वी बनाकर रावण के हाथ में सौंप दी। रावण बड़ा दुष्ट स्वभाव का था। वह मनुष्यों को मारकर खाने लगा। मनुष्य त्राहि-त्राहि करने लगे। तब सिंगबोंगा ने कहा कि मैं शीघ्र ही मनुष्यावतार धारण कर जन्म लेता हूँ और रावण को मारता हूँ।

उस समय दो राजा राज्य करते थे। एक का नाम जनक और दूसरे का नाम दशरथ था। राजा दशरथ के सात रानियाँ थीं, किन्तु एक भी पुत्र नहीं रहने के कारण वे सर्वदा चिन्तित रहते थे। एक ब्राह्मण देवता ने आकर कहा कि मैं एक यज्ञ कराना चाहता हूँ। यज्ञ समाप्त होने पर तुमको चार पुत्र होंगे। उनमें से दो बड़े लड़के मैं लूँगा। यदि यह बात मंजूर है तो मैं यज्ञ कराता हूँ।

राजा दशरथ ने यह बात मान ली। ब्राह्मण के आदेशानुसार राजा ने यज्ञ किया। कुछ ही दिनों बाद राजा के चार पुत्र हुए। यह समाचार सुनते ही वह ब्राह्मण दौड़ा आया और राजा से बोला, ''अपने दो पुत्रों को मुझे दीजिए।''

तब राजा दशरथ ने भरथ और शत्रुघ्न को दे दिया। ब्राह्मण उन लड़कों को लेकर चल पड़ा। रास्ते में एक चौराहे पर ब्राह्मण ने लड़कों से कहा–''यहाँ से जाने के दो मार्ग हैं, एक शहर की ओर, दूसरा जंगल की ओर। तुम किस रास्ते को पसन्द करोगे।''

भरत और शत्रुघ्न ने उत्तर दिया–''हमलोग शहर की ओर जाना पसन्द करेंगे।'' इतना सुनते ही वह ब्राह्मण राजा के पास लौटकर बोला–''ये दोनों आपके बड़े लड़के नहीं हैं। इनको लेकर क्या करूँगा।''

तब राजा दशरथ ने उस ब्राह्मण को राम और लक्ष्मण नामक पुत्रों को दिया। ब्राह्मण लेकर चल पड़ा। चौराहे पर पहुँचकर ब्राह्मण ने दोनों को रास्ता दिखाकर पूछा कि आप लोग किस रास्ते को पसन्द करेंगे। राम और लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि हम लोग जंगल की ओर जाना पसन्द करेंगे। अब ब्राह्मण को पक्का विश्वास हो गया कि वास्तव में राजा के बड़े लड़के यही दोनों हैं। वह दोनों को साथ लेकर जंगल की ओर चल पड़ा।

राजा जनक हल जोत रहे थे। उन्हें हल जोतते समय एक लड़की मिली, जिसका नाम सीता रखा गया। सीता की अवस्था क्रमशः बढ़ने लगी और कुछ ही वर्षों में सयानी हो गयी। उसकी वीरता देखकर राजा जनक ने प्रतिज्ञा की कि जो व्यक्ति महादेव के भारी धनुष को उठा लेगा, उसी के साथ सीता की शादी होगी। रानी भी यही सोचती थी।

सीता बहुत सुन्दरी थी। अतः दूर-दूर के लोग ब्याह करने आये। किन्तु किसी से धनुष नहीं उठ सका। इसी समय उक्त ब्राह्मण देवता भी राम-लक्ष्मण के साथ आए। राजा जनक ने पूछा कि क्या ये बच्चे धनुष उठा सकते हैं? इस पर ब्राह्मण बोला कि पहले बच्चों को आजमा कर देखने भी तो दीजिए।

राम ने लक्ष्मण से धनुष उठाने के लिए कहा। लेकिन लक्ष्मण बोले कि यदि मैं धनुष उठाऊँगा तो सीता की शादी मेरे साथ हो जायेगी। अनुज-वधू होने के कारण आपकी सेवा नहीं कर पाएगी। अतः आप स्वयं उठाइए।

तब राम ने महादेव के धनुष को रुई की भाँति उठाकर बाण फेंक दिया। बहुत जोरों से आवाज हुई। आवाज सुनकर बहरे भी सुनने लगे, अन्धे भी देखने लगे तथा गूंगे भी बोलने लगे। अब सीता की शादी राम के साथ हो गई। उक्त ब्राह्मण राम, लक्ष्मण और सीता को लेकर दशरथ के यहाँ आया और वहीं छोड़ दिया।

एक दिन राम-लक्ष्मण स्नान करके घर लौट रहे थे, तभी उन्हें घर के द्वार पर राजा दशरथ के हाथ की लिखी हुई पंक्ति दिखाई पड़ी। उसमें लिखा था कि राम-लक्ष्मण जंगल चले जायें और भरत-शत्रुघ्न राज्य करें। इसे पढ़ते ही राम-लक्ष्मण सीता को साथ लेकर जंगल चल पड़े। जंगल पहुँचने पर वे लोग उठलू जाति के बिरहोरों की तरह कुटी बनाकर रहने लगे।

एक बार उन लोगों ने कुटी का निर्माण इमली के पेड़ के नीचे किया। उस जमाने में इमली के पत्ते बहुत बड़े-बड़े होते थे। वर्षा के समय इमली का पत्ता कुटी पर जल नहीं गिरने देता था। राम लक्ष्मण से बोले–"हमलोग जंगल में कष्ट उठाने आए हैं, किन्तु इमली का पत्ता वर्षा से रक्षा करता है। यदि इमली के पत्ते छोटे हो जाते तो ऐसा नहीं हो पाता।" तुरन्त लक्ष्मण ने बाण चलाकर पत्तों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। उसी दिन से इमली के पत्ते छोटे होने लगे।

कुछ काल के उपरान्त इन लोगों की कुटी खजूर के पेड़ के नीचे बनी। उस जमाने में खजूर के पत्ते भी लम्बे-चौड़े होते थे। राम के आदेशानुसार लक्ष्मण ने खजूर के पत्तों को भी बाण चलाकर छोटा कर दिया। उसी दिन से खजूर के पत्ते भी छोटे होने लगे।

इसी तरह राम-लक्ष्मण सीता के साथ जंगल में भटकते थे। सीता भोजन बनाती थी और लक्ष्मण का भाग यह कहकर देती थी कि बाबू! अपना भाग लीजिए!

जब सीता भोजन देकर चली जाती थी, तब लक्ष्मण उसे जमीन में गाड़ देते थे। वे सोचते थे कि सीता ने उन्हें भाग तो दिया किन्तु खाने के लिए नहीं कहा।

एक दिन कुटी सूनी पाकर रावण पहुँच गया। तब सीता ने रावण पर लक्ष्मण की दी हुई सरसों का एक दाना फेंका। रावण एक घण्टे तक बेहोश पड़ा रहा। होश में आने पर फिर सीता ने एक दाना फेंका। पुनः रावण एक घण्टे के लिए बेहोश हो गया। अन्त में रावण बोला–"इतना कष्ट क्यों कर रही हो? एक ही बार सरसों के सभी दाने मुझ पर फेंक दो जिससे मैं मर जाऊँ।"

सीता ने ऐसा ही किया। सरसों के दाने से अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी और रावण आग से बाहर चला आया, सीता की चोटी पकड़ कर रथ पर सवार हो गया और गायब हो गया।

उधर राम-लक्ष्मण हिरण के पीछे दौड़ रहे थे परन्तु हाथ नहीं लग सका। अन्त में शाम को ये लोग कुटी में आए किन्तु कुटी में अन्धकार का साम्राज्य था। लक्ष्मण सीता की खोज करने के लिए अन्दर गए परन्तु वहाँ पता नहीं मिल सका। लक्ष्मण के लौटने में कुछ विलम्ब हो गया अतः राम क्रुद्ध होकर बाण से लक्ष्मण को मारने चले। जब तक लक्ष्मण रोशनी जला चुके थे। रामजी कुटी के अन्दर सीता को नहीं देखकर रोने लगे। जंगल में केवल भालू और बन्दर ही रहते थे। राम ने भालू को बुलाकर शकुन किया। भालू ने पूँछ में चावल बाँध लिया और पूँछ हिलाकर बोला–"मामा जी! सीता नजदीक में नहीं है। रावण ले भागा है।"

इतना सुनते ही राम-लक्ष्मण खोजने चले। हनुमान उस समय अपनी माता के गर्भ में ही था। उसने पेट से ही चिल्लाकर कहा–"मामा जी, ठहरिए मैं तुरन्त माँ के गर्भ से निकलकर आपके साथ चलता हूँ।" इतना सुनकर राम-लक्ष्मण कुछ देर के लिए वहाँ रुक गए। हनुमान माँ के पेट से बाहर निकला और साथ में चल पड़ा।

राम, लक्ष्मण और हनुमान एक बेर के पेड़ के पास आए तथा उससे पूछा– "क्या तुमने सीता को रावण के साथ देखा है?" बेर ने उत्तर दिया–"हाँ, मैंने सीता की साड़ी पकड़ी थी। यह देखिए, अब भी कुछ सूत काँटों में मौजूद हैं।" यह सुनकर राम अत्यन्त प्रसन्न हुए और आशीर्वाद दिया–"धन्यवाद! आज से तुम कितना भी काटे जावोगे, किन्तु नहीं मर सकोगे। यदि तुम्हारी एक जड़ भी बची रहेगी तो भी तुम बढ़ जाओगे। उसी दिन से बेर का पेड़ ऐसा होने लगा।

आगे बढ़ने पर एक सारस से मुलाकात हुई। इन लोगों ने सारस से पूछा कि क्या तुमने सीता को देखा है? सारस ने कहा कि क्या मैं सीता की खोज करता फिरता हूँ? राम यह सुनकर अत्यन्त क्रोधित हुए और सारस की गर्दन पकड़ कर खींच ली। तभी से सारस की गर्दन लम्बी होने लगी।

आगे बढ़ने पर एक गिलहरी मिली। राम ने गिलहरी से पूछा–"क्यों जी,

तुमने सीता को देखा है? गिलहरी ने तुरन्त उत्तर दिया–हाँ महाराज, इसी मार्ग से तो एक आदमी जबर्दस्ती रथ पर लिए जा रहा था।

राम ने अपनी पाँचों उँगलियों से देह पोंछकर आशीर्वाद दिया कि आज से ऊँचाई से गिरने पर भी चोट का अनुभव नहीं होगा। उसी समय से राम की उँगलियों के निशान गिलहरी की पीठ पर बन गए और ऊँचे से गिरने पर भी उसे चोट नहीं लगती।

अन्त में तीनों समुद्र के किनारे आ गए। हनुमान राम से बोले–"मामाजी, आप तीर फेंकिए, मैं पार चला जाऊँगा।" राम ने हनुमान को एक अँगूठी देकर कहा कि इसे देखकर सीता पहचान जायगी। इतना कहकर राम ने बाण चलाया। हनुमान समुद्र के बीच में चला गया। फिर वहाँ से कूद कर समुद्र के पार चला गया। समुद्र के पार में हनुमान ने देखा कि बहुत-सी दासियाँ सीता के स्नान के लिए पानी भर रही हैं।

वास्तविकता यह थी कि सीता ने जादू से अपने शरीर में कई घाव बना लिये थे ताकि रावण उन घावों को देखकर स्पर्श न करे। रावण के आदेश से ही सीता को प्रतिदिन शीघ्र घाव अच्छा होने के लिए सैकड़े घड़े से स्नान कराया जाता था।

हनुमान ने अपना रूप तोते का बना लिया। उस पानी भरने वाली दासियों में एक बूढ़ी दासी भी थी। हनुमान उसी बूढ़ी दासी के नजदीक गया। उसके घड़े में अँगूठी डाल दी और कहा कि अपनी नई रानी से आँचल पसरवा कर पानी डालना। बूढ़ी को यह देखकर महान् आश्चर्य हुआ। उसने हनुमान की आज्ञा मान ली। जैसे ही वह सीता के आँचल में पानी गिराने लगी, वैसे ही अँगूठी आँचल में गिर पडी। सीता ने अँगूठी को उठाकर कहा कि यह तो मेरे पतिदेव की अँगूठी है। बूढ़ी ने स्पष्टीकरण किया कि एक तोता इसमें डाल गया था। सीता बोली कि अवश्य मेरे पतिदेव आए हैं।

इतने में हनुमान तोते के रूप में ही सीता के सामने आया। रावण के दासों ने सीता को पाँच आम खाने के लिए दिए थे। दो आम सीता खा चुकी थी। तीन आमों को हनुमान को देकर कहा आगे दे देना। हनुमान ने खाकर देखा तो पता चला कि आम बहुत मीठे हैं। वह सब आम खाकर बोला–"माँ, मैं सब आम खा गया। मुझे आम के पेड़ तक जानेवाला मार्ग बता दो।"

सीता बोली–"आम की रक्षा के लिए बहुत से पहरेदार हैं। यदि तुमको देख लेंगे, तो जान मार डालेंगे।"

हनुमान ने कहा, "फिर भी मैं कुछ-न-कुछ आम अवश्य खाऊँगा।"

सीता ने मार्ग बता दिया। हनुमान आम के बगीचे में पहुँच गया। रक्षकों से आम माँगा। उन लोगों ने चार-पाँच आम दे दिए। आम अत्यन्त मीठे स्वाद के थे,

अतः भरपेट खाने के लिए हनुमान की जीभ से पानी टपकने लगा। हनुमान पेड़ पर चढ़ गया और आम खाने लगा। उसने कुछ आम राम के लिए समुद्र के पार भी फेंक दिया। बन्दर ने बगीचे का सत्यानाश कर डाला। रक्षकों ने भगाने का विफल प्रयत्न किया। हनुमान को पकड़ने के लिए जाल फैलाया गया किन्तु वह इतना मोटा बन गया कि जाल फट गया।

यह समाचार रावण को मिला। रावण ने आदेश दिया–''कुछ बिरहोरों को बुलाओ। वे लोग बन्दर फँसाने में चालाक होते हैं।'' पता लगाया गया तब एक बूढ़ा बिरहोरी पत्नी के साथ मिला। रावण के कर्मचारियों ने उन्हें लंका लाकर हनुमान को पकड़ने का आदेश दिया। वे बहुत परेशान हुए, किन्तु हनुमान नहीं पकड़ा जा सका। हनुमान को वृद्ध दम्पत्ति की दशा देखकर दया आ गई और तब हनुमान ने उसे मजबूत जाल बनाना सिखाया। वृद्ध ने उसकी आज्ञा मानकर हनुमान को जाल में पकड़ लिया। पकड़े जाने के बाद हनुमान ने उस बूढ़े से कहा कि मुझे वध क्यों करोगे? मैं खुद मर जाऊँगा। एक उपाय बता रहा हूँ, वही करो जितने वस्त्र मिल सकें, ले आओ और उनसे पूँछ बनाकर तेल और घी में डुबो दो। तत्पश्चात् उस पूँछ को मेरे शरीर में बाँध कर आग लगा देना।

बिरहोरी दम्पत्ति ने ऐसा ही किया। हनुमान खूब उछलने लगा और लंका को जलाकर भस्म कर दिया। उसने अपनी पूँछ पकड़ कर 'केउन्द' के वृक्ष में रगड़ दिया, जिससे वह पेड़ काला हो गया और हनुमान के हाथ भी काले हो गए। फिर मुँह पोंछ लिया, जिससे मुँह भी काला हो गया।

अन्त में हनुमान समुद्र में कूद पड़ा। शरीर को खूब रगड़ कर साफ किया। सीता से मुलाकात करने के पश्चात् वह राम के पास पहुँच गया। सारा समाचार सुनाकर बोला, ''मामाजी, मेरे मरने के बाद मेरे शरीर को कौन उठायेगा?''

राम बोला–''बिरहोरी'' के वंशज ही तुम्हारे मृत शरीर को खाएँगे उसी समय से बिरहोरी बन्दरों का मांस खाने लगे।

तत्पश्चात् राम और लक्ष्मण लंका की ओर चल पड़े। हनुमान समुद्र में पड़े रहा। वे लोग उसी पर पुल के समान चढ़ कर पार हो गये। लक्ष्मण और हनुमान ने लंका निवासियों के साथ घोर युद्ध किया। लंका के सभी आदमी मारे गए, केवल एक बूढ़ी और रावण बच गया। जब रावण का सिर लक्ष्मण द्वारा कट जाता था, तब पुनः नया उत्पन्न हो जाता था।

रावण बोला–तुम लोग मुझे मारने का व्यर्थ प्रयास कर रहे हो। मैं उसी आदमी से मारा जाऊँगा, जो बारह वर्ष से भूखा हो। इसके बाद हनुमान तोते के वेश में रावण की प्राण-वायु का पता लगाने के लिए महल में पहुँचा। रावण बहुत देर तक तोते से बातें करता रहा। अंत में हनुमान को पता चल गया कि रावण

प्राण-वायु महल की सुनहरी दीवाल के अन्दर कोठरी में सुरक्षित है। हनुमान ने किसी तरह प्राण-वायु पर अधिकार कर लिया। इसके बाद लक्ष्मण ने रावण को मार डाला। रावण की मृत्यु के बाद राम-लक्ष्मण उस बूढ़ी के पास गए और बोले कि आज से लंका की महारानी तुम हुई।

इसके कुछ ही देर बाद रावण का भाई कुम्भकरण गहरी निद्रा से उठ पड़ा। कुम्भकरण बारह वर्ष सोता और बारह वर्ष जगता था। इसने राम-लक्ष्मण को कांख के नीचे दबा लिया और काली माता के पास बलि देने के लिए चल पड़ा।

वहाँ भूमि पर चावल के कुछ दाने गिरे थे। राम-लक्ष्मण से कहा गया कि इन चावलों को उठाकर खाओ। इन लोगों ने कहा कि हमलोगों ने ऐसा कभी नहीं किया है। एक बार करके दिखा दो।

कुम्भकरण सिर नवाकर दाना उठाने लगा, उसी समय लक्ष्मण ने तलवार से उसका सिर काट लिया। काली माता ने प्रकट होकर कहा कि आप लोगों ने रावण के वंश को समूल नष्ट कर दिया। अब मेरी पूजा कौन करेगा।

राम ने कहा कि आज से आपकी पूजा संसार करेगा। उसी दिन से लोग काली की पूजा करते आ रहे हैं।

●

2

हनुमान और बिरहोर

रावण राजा सीता को भगाकर लंका ले भागा था। राम लक्ष्मण और हनुमान उसे बचाने (छुड़ाने) के लिए गए। तब बिरहोर इस भाग (क्षेत्र) में निवास करते थे। जब हनुमान सर्वप्रथम रावण के महल में दिखाई दिया, तब प्रहरियों ने हनुमान को पकड़ना चाहा। परन्तु वे असफल रहे। तब रावण ने बिरहोरों को बुलाने का आदेश दिया क्योंकि वे जंगलों में रहने के कारण बन्दर फँसाना जानते थे। एक बुजुर्ग बिरहोर दम्पत्ति को बुलाया गया। परन्तु उनका समस्त प्रयास असफल रहा। हनुमान को उस बूढ़े पर दया आई उन्होंने उसे बताया कि जाल कैसे बनाया जाता है। उन्होंने कहा–"तुम अपना जाल बनाओ जो मानव शरीर से तीन गुना बड़ा हो। तब तुम लोग मुझे पकड़ने में सफल रहोगे।"

उन्होंने ऐसा ही किया और हनुमान जाल में पकड़ा गया। तब उन्होंने बिरहोर से कहा–"तुम मुझे मारना क्यों चाहते हो? मैं अपने को खुद मार दूँगा। मैं जो कहता हूँ उसे तुम करो। तुम लोग कपड़ा लाकर लपेट कर एक लम्बी पूँछ बनाकर हमारे पीछे बाँध (जोड़) दो। उसे तेल और घी से भिंगो दो और उसमें आग लगा दो।"

तब बिरहोर ने वैसा ही किया, जैसे बताया गया था। तब हनुमान अपनी जलती हई पूँछ को लेकर लंका शहर के सभी घरों पर दौड़ते हुए सब में आग लगा दी और उन्हें जलाकर भस्म कर दिया। तब हनुमान ने अपनी पूँछ को हाथ से पकड़ा और दोनों हाथ काले हो गए। तब वह अपने चेहरे पर रगड़कर हाथ को साफ करना चाहा, जिससे चेहरा भी काला हो गया। उन्होंने केन्द वृक्ष को पकड़ा तो वह भी काला हो गया। उसी समय से केन्द का वृक्ष, हनुमान का हाथ और मुँह काला होने लगा। अन्त में हनुमान अपने शरीर को साफ करने के लिए समुद्र में कूद पड़े।

तब उन्होंने राम से पूछा–"मेरा मामा कौन है जो मेरे मरने पर दाह-क्रिया करेगा?"

"वही करेंगे जो तुम्हें जाल में फँसाये थे–अथवा बिरहोर और उनका सन्तति तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को खायेगी।"

तब से बिरहोर विभिन्न प्रकार के बन्दरों और लंगूरों को खाने लगे। उसे जाल में फँसाने के लिए 'हनुमान बीर' की पूजा करते हैं।

●

3

चम्पा और केदली

एक राजा की सात रानियाँ थीं। एक दिन एक ब्राह्मण संन्यासी राजा के राजमहल में गया। उसने राजा को पुत्र प्राप्ति के सम्बन्ध में उपदेश दिया–"तुम ढाल-तलवार लेकर आम के पेड़ के पास जाओ और तलवार से मारकर अपने ढाल में लोक कर आमों को घर ले जाओ। सभी रानियों को उन आमों को खाने को दो।"

राजा ने संन्यासी की बात मान ली। परन्तु उसे एक ही आम मिला। उसने उस आम को लाकर रानियों को खाने के लिए दिए। उस समय उसकी सबसे छोटी पत्नी घर से बाहर थी। अतः उसकी अन्य पत्नियों ने उस आम को काटकर और बाँटकर खा लिया। जब छोटी रानी वापस आई और गुठली देखी तो उसने पूछा–"तुमलोगों को आम कहाँ मिला? तुम लोगों ने मेरा हिस्सा नहीं रखा है?"

उन रानियों ने कहा–"हमलोगों को अचानक यह मिल गया और तुम्हारे लिए रखना भूल गई।" तब छोटी रानी ने आंठी (गुठली) को गार कर जो भी मिला, उसे खा गई।

समय आने पर छोटी रानी के गर्भवती होने का लक्षण दिखाई पड़ने लगा जबकि अन्य रानियों के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ। जब छोटी रानी के प्रसव का समय निकट आया तो राजा वन में शिकार खेलने जाने लगा। उसने सभी रानियों और अन्य सेवकों को यह आदेश दे दिया कि यदि पुत्र होगा तो सोना का ढोल और लड़की होने पर चाँदी का ढोल बजाया जाएगा। समय आने पर छोटी रानी ने एक जुड़वाँ को जन्म दिया, जिसमें एक लड़का और एक लड़की थी। छोटी रानी को अपने नवजात शिशुओं को देखने के पूर्व ही छः रानियों ने उन्हें हटा दिया और वहाँ एक झाड़ू और एक अधजली लकड़ी सौरगृह में रख दिया। छः बड़ी रानियों के आदेश पर गुगरीन (चमाइन) ने उन दोनों शिशुओं को मिट्टी के उस गड्ढे में फेंक दिया, जहाँ से कुम्हार मिट्टी लेकर बर्तन बनाते थे।

कुछ देर बाद एक सन्तानहीन दम्पत्ति वहाँ बर्तन बनाने के लिए मिट्टी लेने आये और उस गड्डे में दो शिशुओं को देखा। वृद्ध पुरुष ने अपनी पत्नी से कहा–"इस अवसर को हमें खोना नहीं चाहिए। हम लोग इस गड्ढे से मिट्टी जब

चाहेंगे, ले लेंगे। लेकिन सन्तान की प्राप्ति बाद में नहीं हो सकती है। इसलिए इन फेंके हुए शिशुओं को लेकर घर चलो।" उन्होंने वैसा ही किया।

इसके बाद जब राजा घर वापस आए तो रानियों ने उनको सूचित कर दिया कि छोटी रानी ने एक झाड़ू और अधजली लकड़ी को जन्म दिया। ऐसा सुनकर राजा बहुत निराश हुआ और उसने छोटी रानी को महल से बाहर निकाल देने का आदेश दिया। राजा के उस आदेश का पालन किया गया।

जब कुम्हार के 'पोसपुत्र एवं पुत्री' कुछ बड़े हुए तो दोनों राजमहल के निकट खेलने लगे। रानियों ने उन्हें जब देखा तो उन्हें सन्देह हुआ कि वे कौन हैं? एक दिन जब दोनों बालक-बालिका वहाँ खेल रहे थे, उनकी सौतेली माताओं ने उन्हें जहर मिलाकर रोटी दे दी। वे जहरीली रोटी खाकर मर गए। कुम्हार ने उन्हें निकट के जंगल में गाड़ दिया। लड़का के कब्र से एक केला या केदली का और लड़की के कब्र से पिंजारा (चम्पा) फूल का वृक्ष उग आया। जब राजमहल का नौकर फूल तोड़ने आया तो उस फूल से गीत फूट पड़ा–

"सुन-सुन भाई केदली हो
राजा कर चाकर पिंजार फूल लोढ़न को आये।"

केदली ने भी गाना गाया–

"सुन-सुन बहिनी चम्पा रे,
धरती छोड़ चढ़ जो रे आकाश।"

ऐसा गीत सुनते ही चम्पा (पिंजार) फूल आसमान में चला गया। राजा का धांगड़ आश्चर्य चकित हो यह घटना राजा को कह सुनाया। तब राजा पालकी में सवार होकर स्वयं उस स्थान पर गया। राजा के जाने के पूर्व ही वह फूल अपने स्थान पर आ गया था। राजा ने जब फूल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तो फूल गा उठा–

"सुन-सुन दादा केदली रे
मोर बाबा फूलवा लोढ़न को आय।"

केदली ने उत्तर में गीत गाया–

"सुन-सुन बहिनी चम्पा रे (पिंजार रे)
धरती छोड़ तोयं चल जो रे आकाश।"

तब फूल पिंजार (चम्पा) वृक्ष सहित धरती से थोड़ा ऊपर चला गया। तब राजा ने अपनी बड़ी रानी को फूल तोड़ने के लिए बुला भेजा।

जब बड़ी रानी ने फूल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तो फूल गाने लगे–

"सुन-सुन भईया केदली रे
मोर (सौतेली) बड़ा माई फूलवा तोड़ने को आई।"

तब केदली वृक्ष ने गाया–

"सुन-सुन बहिनी चम्पा रे,
धरती छोड़ तों चढ़ि जा आकाश।"

तब चम्पा फूल आकाश में ऊपर चढ़ गया।

तब वह चम्पा (पिंजार) का पेड़ आकाश में ऊपर उठ गया। इसके बाद अन्य रानियों ने फूल तोड़ने का प्रयास किया और हर बार भाई-बहन (दोनों पेड़ों) ने गीत गाए और पेड़ आकाश में उठता गया।

इस बात को बार-बार सुनकर राजा को शक हुआ और उन्होंने छोटी रानी को बुला भेजा। रानी को नौकरों ने बाहर पाया और उन्हें राजा का आदेश सुनाया। उसने कहा—"भला मैं कैसे जा सकती हूँ? मेरे पास न तो अच्छे कपड़े हैं और न ही मैं देखने लायक रह गई हूँ। मेरे नाखून बढ़ गए हैं, मेरे केश अस्त-व्यस्त हैं और बहुत दिनों से मैं स्नान तक नहीं की हूँ।"

वे सब राजा के पास गए और रानी की बातें कह सुनाई। तब राजा ने रानी के लिए कपड़ा आदि, जो भी उसे चाहिए था, भेज दिया। तब उसने अपने नाखून काटे, नहा-धोकर नया वस्त्र धारण की और डोली पर सवार होकर उस स्थान पर पहुँची। तब उसने फूल को चुनने के लिए अपने आँचल उस पेड़ के सामने फैला दी। तब वह (चम्पा) फूल गाने लगा—

"सुन-सुन भईया केदली रे,
हे मोर भईया केदली रे,
मोर आपन माय फूलवा लोढ़न को आय"

इस पर केदली ने गाकर कहा—

"सुन-सुन बहिनी चम्पा रे,
आरे मोर बहिनी चम्पा रे,
भूई पर आ छोड़ी दे आकाश।"

इतना गाते ही केदली और चम्पा के वृक्ष लड़का और लड़की में परिवर्तित हो गए और दोनों माँ छोटी रानी की गोद में बैठ गए।

राजा हर्षोल्लास पूर्वक छोटी रानी और उसके बच्चों को घर लेकर आ गए। तब उन्होंने छः कुओं को कोड़ने का (शीघ्र-अतिशीघ्र) आदेश दिया।

जब कुआँ आधा कोड़ दिया गया तो राजा ने कहा कि जब तक 'चुमावन' का रस्म नहीं होगा, पानी नहीं निकलेगा। राजा ने छः बड़ी रानियों को कुओं का 'चुमावन' करने को आदेश दिया। जब वे कुओं का चुमावन करने कुओं के मुँह के पास गई, राजा के नौकरों ने छः रानियों को छः कूपों में डालकर मिट्टी भर दिया।

राजा छोटी रानी और उसके बच्चों के साथ महल में आकर सूखपूर्वक रहने लगा।

●

4

दो प्रेमियों की बहादुरी

प्राचीन काल में एक नगर में एक हिन्दू राजा तथा एक मुसलमान व्यापारी रहते थे और दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी। दोनों की पत्नियाँ जब गर्भवती थी तो दोनों ने वादा किया कि यदि एक को लड़का और दूसरे को लड़की हुई तो दोनों एक दूसरे के साथ शादी कर देंगे। अगर दोनों को लड़का या लड़की हुई तो मित्रता के बंधन में बाँध देंगे। समय आने पर मुसलमान सौदागर की पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया और हिन्दू राजा की पत्नी ने पुत्री को। लेकिन तब राजा ने पुत्री की शादी करने का विचार बदल दिया। राजा ने मन ही मन विचार किया–"मैं राजा हूँ। भला मैं अपनी पुत्री की शादी मुसलमान से कैसे करूँगा? यह मैं कभी नहीं करूँगा।"

जब वह लड़का और लड़की सयाने हुए तो दोनों को मिलने का अवसर काफी मिलता था और वे एक दूसरे से आबद्ध हो गए। जब दोनों युवावस्था को प्राप्त हो गए और उन्हें मालूम हो गया कि उनकी शादी नहीं हो सकती तो मुसलमान के लड़के ने राजा की लड़की के साथ एक रात भाग जाने की योजना बना ली। निर्धारित रात को राजा की लड़की ने साइस को अपने लिए एक टट्टू (घोड़ा) लेने का आदेश दिया। घोड़ा आ गया और राजकुमारी ने उसे चना खाने के लिए दिया। उसने उससे ले चलने को कहा तब घोड़ा ने जवाब दिया–"मैं तुम्हारे पिता का कुछ भी नहीं धारता हूँ। मैं उसका चना नहीं खाता हूँ। मैं मैदान में घास चर लेता हूँ।" तब उसने घोड़ा को लौटा दिया।

तब एक हाथी को बुलाया गया। उसने भी घोड़े की तरह जवाब दे दिया और उसे भी वापस कर दिया गया। उसके बाद एक ऊँट और एक गदहा लाया गया और उन्होंने भी वैसा ही जवाब दिया तथा उन्हें भी वापस भेज दिया गया। तब राजकुमारी ने राजा के खास घोड़े 'पंखराज' को लाने का आदेश साइस को दिया। तब पंखराज घोड़ा लाया गया और वह राजकुमारी को उसके इच्छित जगह पर ले जाने को राजी हो गया। वह उसके पीठ पर सवार हुई और घोड़ा उसे निर्धारित पीपल पेड़ के पास ले गया। पीपल पेड़ पर पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज हुई और उसका प्रेमी पेड़ से घोड़े की पीठ पर आ बैठा।

वे दोनों घोड़े की सवारी करते-करते काफी दूर निकल गए और उस स्थान पर आ गए जहाँ एक राक्षसी अपने सात पुत्रों के साथ रहती थी। जब वे दोनों प्रेमी राक्षसी के घर के निकट पहुँचे तो राक्षसी के बेटे किसी मनुष्य या अन्य शिकार के लिए बाहर गए थे। राक्षसी ने उनका बहुत सत्कार किया तथा उन्हें चावल, सब्जी, घी आदि तथा खाने-पकाने के लिए नया मिट्टी का पात्र तथा जल दिया। उसने कहा–"तुम लोग ठहरो तुम लोगों के भोज के लिए मैं कुछ मछली भी पकड़ कर लाती हूँ।" वह एक तालाब में गई, अपना वस्त्र उतारी और कमर भर पानी में चली गई। उसके सिर के केश इतने लम्बे और घने थे कि पानी के केंकड़ा उसमें फँस गए और छिप गए। जब वह पानी से बाहर आई तो बालों से उन्हें निकाल कर अपने घर ले आई। जब वह तालाब की ओर गई थी तो राजकुमारी ने भी उसका पीछा किया था। तालाब में उसके नंगे शरीर को देखकर वह समझ गई थी कि वह राक्षसी है। वह राक्षसी से बहुत पहले घर आ गई थी और गीली लकड़ी देखकर समझ गई थी कि राक्षसी उन्हें काफी देर तक खाना बनाने के बहाने रोक कर रखना चाहती है।

उसने अपने प्रेमी को एक कपड़े में घी डालकर आग को जलाने के लिए कहा। उसके प्रेमी ने वैसा ही किया और अग्नि शीघ्र प्रज्वलित हो उठी। चावल और सब्जी शीघ्र पक गई। वे खाना जल्दी-जल्दी खाकर घोड़े पर सवार ही होने वाले थे कि राक्षसी आ गई। "तब दामाद जी आप जरूर जाना चाहते हैं?" उसने पूछा। व्यापारी के लड़के ने जवाब दिया–"हाँ, अवश्य।" जब वे घोड़े पर सवार हो गए तो राक्षसी ने एक सेर सरसों की पोटली घोड़े की पूँछ में बाँध दिया।

जब राक्षसी के लड़के लौटकर घर आ गए तो उसने कहा–"तुम लोग थोड़ी देर पहले क्यों न आये? यहाँ एक बकरा और बकरी आये थे।" उसके लड़कों ने पूछा–"वे कितनी दूर गए होंगे?" उसने कहा–"जाओ और उनका पीछा करो। रास्ते में घोड़े की पूँछ से बँधा सरसों अवश्य गिरता गया होगा। जब तुम सरसों को सड़क पर छिटा हुआ पाओगे तो समझ लोगे कि वे ज्यादा दूर नहीं गए होंगे।"

तब राक्षसी के लड़के उस राजकुमारी और उसके प्रेमी की खोज में निकल पड़े। छः भाई आगे निकल गए परन्तु सबसे छोटा भाई पीछे रह गया। क्योंकि वह उनके खाने के लिए भात और भैंसा का मांस ढो रहा था।

जब छः भाई उन दोनों को देखे तो अपने शिकार को पाने के लिए वे दौड़कर हमला करने चल पड़े। परन्तु जब वे पीछे से हमला करते तो पंखराज के लतार से पीछे हट जाते और जब आगे से हमला करते तो व्यापारी का लड़का उन्हें अपने भाले से हमला कर मार देता। इस तरह छः भाई एक के बाद एक मारे गए। जब राजकुमारी और उसका प्रेमी घोड़े पर सवार होकर जाने ही वाले थे कि राक्षसों

का छोटा भाई आ पहुँचा और अपने भाइयों की दशा देखी। उसने एक गरीब देहाती का वेश बनाकर राजकुमारी एवं व्यापारी के पास गया और उसे साइस के रूप में रख लेने का अनुनय-विनय किया। उसकी बात मान ली गई और उसे साइस के रूप में घोड़े पर सबसे पीछे बैठा लिया गया।

जब वे जंगल में एक झरने के निकट पहुँचे तो शौचादि से निवृत्त होने के लिए सौदागर युवक अपनी तलवार, ढाल और भाला वहीं रखकर जंगल में चला गया। साइस भी घोड़े से उतरकर हथियारों को लेकर प्रतीक्षा करने लगा। जब वह व्यापारी युवक वापस आया तो साइस ने उसके सिर को तलवार से काट दिया और घोड़े पर सवार होकर भागना चाहा। परन्तु घोड़े की लतार खाकर वह गिर गया और मर गया।

तब राजकुमारी घोड़े से उतर पड़ी और अपने प्रेमी का कटा सिर और मृत शरीर गोद में रखकर करुण विलाप करने लगी। घोड़ा भी दुखी होकर आँसू बहाने लगा और हिनहिनाने लगा। उसी जंगल मार्ग से शिव एवं पार्वती हल के लिए लकड़ी काटने हेतु जा रहे थे। तब उन्होंने करुण क्रन्दन सुनी। पार्वती ने राजकुमारी के रोने से द्रवित होकर कहा—"देखो कोई दुःखी हो जोर-जोर से विलाप कर रहा है।"

लेकिन महादेव ने इसे टालते हुए कहा—"तुम स्त्रियों को तो कोई रोता-बिलखता ही सुनाई पड़ता है। मैं कहता हूँ वैसा कुछ भी नहीं है।"

परन्तु पार्वती अड़ गई और उन्होंने कहा—"चलो, देखा जाय। कोई अवश्य ही संकट में है।" तब शिव और पार्वती वहाँ गए जहाँ राजकुमारी अपने मृत प्रेमी के शव के साथ विलाप कर रही थी। महादेव-पार्वती ने उससे पूछा कि यह कैसे हो गया और उसने विस्तार से सब कुछ बता दिया। उन्होंने कहा—"देखो तो, आकाश में कितने तारे निकल आए हैं!"

जैसे ही वह ऊपर की ओर देखने लगी उन्होंने राजकुमारी की आँखों में मिर्चा की बुकनी डाल दी ताकि वह कुछ देख नहीं सके और वह आँखों को मलने लगी। इस बीच महादेव ने उस मृत व्यापारी पर जीवनदायक तरल पदार्थ छिड़क दिया और वह व्यापारी उठ बैठा जैसे वह सोकर उठा हो। उसने राजकुमारी से पूछा—"क्या मैं बहुत देर तक सोया रहा हूँ?" इस बीच महादेव और पार्वती छाया बनकर लुप्त हो गए।

राजकुमारी ने अपने प्रेमी से सारी घटना कह सुनाई। तब राजकुमारी ने यह इच्छा व्यक्त की—"यदि मैं राजा की पुत्री हूँ तो इस जंगल के मध्य में एक शहर बन जाय और इसके मध्य में रहने के लिए एक राजमहल बन जाय। ऐसा कहते ही वहाँ एक शहर बन गया और महल भी। फिर दोनों राज-रानी की तरह सुख से रहने लगे।

●

5

घांसी युवक और राक्षस

एक राजा को सात रानियाँ थी। एक घासी जाति की बुढ़िया रानियों को प्रतिदिन फूल का माला दिया करती थी। घासी बूढ़ी का लड़का 'कुमनी' से मछली मारने जाता था। एक दिन बीन्तारिका कदम्ब का सुन्दर फूल उसके कुमनी जाल में फँस गया और उसे वह घर लाया। उसकी माँ यह देखकर बहुत खुश हुई और बोली–''मैं इसे रानी को ले जाकर दूँगी और बदले में मुझे कीमती उपहार मिल जायेगा।''

वह उसे बड़ी रानी को लें जाकर दी और रानी ने उसे काफी सुन्दर और कीमती पुरस्कार दिया। अन्य छोटी रानियाँ भी उस फूल की माँग की। इस पर घांसी बूढ़ी बोली–''केवल एक ही फूल मेरे लड़के के जाल में फँसा था।'' तब अन्य रानियाँ राजा के पास जाकर बोलीं–''घांसी बूढ़ी बड़ी रानी को 'बिन्तारिका कदम्ब' का एक सुन्दर फूल लाकर दी है। उसे आदेश दें कि वह हम सभी के लिए एक-एक फूल ला दे।'' घांसी बूढ़ी और उसका लड़का को राजा ने बुला भेजा। राजा ने उस घासी लड़के को आदेश दिया–''जान देकर भी हो तो छः फूल लेकर आ जाओ।''

घासी का लड़का घबड़ा गया कि अब क्या किया जाय। उसकी माँ ने उससे कहा–''धीरज रखो बेटा। सामने की सड़क से सीधे चले जाओ। सामने का पहाड़ तुम्हारे मामा का है। तुम उस पहाड़ पर टांगी से प्रहार करोगे और तुम्हारा मामा अपने असली रूप में प्रकट होगा।''

वह नौजवान लड़का हाथ में टांगी लेकर पहाड़ी तक चलता गया। उसने जैसे ही टांगी से पहाड़ी पर प्रहार किया, मानवभक्षी (मानव का मांस का भूखा) राक्षस प्रकट हुआ और बोला–''अन्त में वर्षों बाद मुझे मानव-मांस खाने को मिला।'' ''मेरे प्रिय मामू! जोहार (प्रणाम)।'' घासी लड़के ने राक्षस से कहा। राक्षस अपने मन में विचार किया–''यह लड़का मुझे मामू कहता है अन्यथा मैं उसे खाने और अच्छी तरह चबाने के लिए अपना दाँत साफ कर लेता।''

तब राक्षस ने अपने घांसी भगिना से यहाँ आने और उसे बुलाने का कारण पूछा। उसने कहा–"मेरी माँ ने कहा है कि तुम्हारे पास 'बिन्तारिका कदम्ब' फूल है। मुझे कुछ फूलों की सख्त जरूरत है।"

राक्षस ने दूसरी पहाड़ी की ओर इशारा करके कहा–"उस पर तुम्हारा दूसरा मामू रहता है जो तुम्हें फूल दे सकता है। तुम उस पहाड़ी पर जाओ और टांगी से मारो। वह प्रकट हो जायगा।"

वह दूसरी पहाड़ी पर गया और जैसे ही एक चट्टान पर टांगी मारा उसका मामा अपने राक्षस रूप में प्रकट हुआ। इसके पहले कि वह मानवभक्षी राक्षस उस घासी युवक को पकड़कर खा जाता, उसे मालूम हुआ कि वह उसका भगिना है और 'बिन्तारिका कदम्ब' फूल लेने आया है। अतः उसे मानव-भक्षण की इच्छा को मारकर उसे अपने भगिना का अतिथि के रूप में स्वागत करना पड़ा। उसने उसे एक दाना चावल का पकाने के लिए दिया। जब वह लड़का उसे पकाने लगा तो दो घड़ा भात हो गया। जब एक दाना दाल का पकाया तो एक बड़ा घड़ा दाल से भर गया। जब दोनों भरपेट खा लिए तब घासी लड़के ने अपने मामा से पूछा–"मामू! जिस फूल के लिए मैं आया हूँ, वह कब मिलेगा?" राक्षस ने कहा–"वे मेरे पास थे। परन्तु वे अभी तुम्हारे दूसरे मामू के पास है।" उसने उस मामू का पता बता दिया।

तब घासी युवक उस मामू के पास गया और फूल के विषय में पूछा। उसने कहा–"ठीक है, वह तुम्हें शीघ्र मिल जायगा। तुम यहाँ कुछ दिन ठहरो और मेरे मवेशियों की देख-रेख करो। इस बीच मैं कुछ फूलों को खोजकर ला दूँगा।"

तब वह घासी युवक अपने मामा के मवेशियों की चरवाही करने लगा। उसने उसे एक खास दिशा में न जाने और मवेशियों को न ले जाने की चेतावनी दे गया। बाकी अन्य दिशाओं में वह जा सकता था।

वह प्रतिदिन चरवाही करने जाता था और खाने के लिए मूढ़ी ले जाता था। वह तीन दिनों तक उस दिशा में नहीं गया जहाँ उसके मामा ने जाने से मना किया था। चौथे दिन उसकी उत्सुकता बढ़ी और वह उस दिशा में मवेशियों को लेकर चराने चला गया। कुछ दूर जाने पर उसे एक तालाब मिला जिसमें 'सिंगबोंगा' की पुत्रियाँ स्नान कर रही थीं। 'सिंगबोंगा' की सबसे छोटी लड़की सबसे अधिक सुन्दर थी। उसे याद आया कि उसके मामा के एक पड़ोसी ने कहा था कि यदि वह 'सिंगबोंगा' की लड़की के स्नान के समय उसका वस्त्र गायब कर दे तो उसे वह फूल मिल सकता है। उसने स्नान करती सिंगबोंगा की लड़कियों का वस्त्र तालाब किनारे रखा देखा। सिंगबोंगा की लड़कियों ने उसे देख लिया और उसे बुलाकर बोलीं–"ऐ चरवाहा युवक! क्या तुम्हारे पास दाँत धोने के लिए ब्रश और नहाने के लिए तेल है?" युवक ने कहा–"हाँ।" अब उसने दाँत धोकर और नहाकर उन लड़कियों का वस्त्र हटा दिया

तब सिंगबोंगा की बड़ी लड़की गाकर बोली–

"घूम जो, घूम जो, ए सेपेड गोरखिया,
मोर छोट बहिन के तोहे के देब।"

इस पर जैसे ही वह घूम कर आया कि वह एक वृक्ष में परिवर्तित हो गया।

इस बीच उसका मामा को उसके इतने विलम्ब से न लौटने पर शंका हो रही थी कि कहीं वह उस वर्जित प्रदेश में तो नहीं चला गया। तब वह उस दिशा में गया और पाया कि उसका भगिना एक सेमल वृक्ष में परिवर्तित हो गया है। उसने उस पेड़ को काट दिया और उसका भगिना अपने पुराने रूप में आ गया। मामू ने उससे उस वर्जित दिशा में जाने का कारण पूछा। उसने कारण बताने से बहाना बनाते हुए कहा–"उन लोगों ने मेरे घूम जाने पर अपनी छोटी बहन से शादी करने का वचन दिया और वैसा करने पर मैं पेड़ बन गया।"

मामू ने पूछा–"क्या सचमुच उन लोगों ने कहा कि "हमलोग छोटी बहन को दूँगी?" भगिना ने जवाब दिया–"हाँ, उन लोगों ने निश्चय ही ऐसा कहा है।"

तुम इस बार जाओ और पीछे घूमकर मत देखोगे। मामू की बात पर वह पुनः तालाब किनारे गया और तेल और दातुन की बात मानकर जल्द स्नान किया और उनका कपड़ा उठाकर चल दिया। इस पर सिंगबोंगा की लड़कियों ने गाकर कहा–

"घूम जो, घूम जो, ए सेपेड गोरखिया,
मोर छोट बहिन के तोहे के देब।"

लेकिन इस बार वह घासी युवक बिना पीछे देखे भागता-भागता मामू के घर पहुँच गया। लड़कियाँ भी भागती-भागती उसके मामा के घर जाकर शिकायत कीं–"तुम्हारा भगिना हम लोगों का वस्त्र ले आया है। उसे लौटाने के लिए कृपया कह दें।"

मामा ने उनसे पूछा–"पिछली बार तुमलोगों ने उसे क्या देने का वादा किया था?" उनलोगों ने स्वीकार किया कि छोटी बहन को उसकी पत्नी के रूप में देने का वादा किया था।

"तब तुम लोग उसे मेरे भगिना को दे दो" मामा ने कहा। तब उस स्वर्ग की सुन्दरी उस घासी लड़के को पत्नी के रूप में मिल गई।

वधु ने कहा–"चलो हमारे माँ-बाप के साथ रहो।" और वह (पति) राजी हो गया। रात में जब छोटी बहन अपनी बहनों के साथ नाचने के लिए जाती थी तो घासी भी दूसरे रास्ते वहाँ पहुँच जाता था। उसे अनजान आदमी जानकर सिंगबोंगा की लड़कियाँ उसे मिट्टी का घड़ा बजाने के लिए कहती थी। वह खुशी-खुशी उसे बजाता था। जब तक उसकी पत्नी शयन-कक्ष में पहुँचती, वह पहले ही बिस्तर पर जाकर पड़ जाता।

एक सुबह उसने अपनी पत्नी से कहा–"मैं सपना देख रहा था कि तुम सातों बहन नाच रही हो और मैं ढोल बजा रहा हूँ।"

अब उसे शक हो गया कि ढोल बजाने वाला अजनबी वही था। तब उसने कहा–"चलो, तुम्हारे माँ-बाप के पास चलते हैं।"

उसने कहा–"लेकिन मुझे विश्वास है कि तुम वहाँ नहीं रह सकोगी। तब तुम्हारे बिना मैं कैसे रह सकूँगा?" उसने उसे एक बाँसुरी दी और कहा–"जब भी तुम इस बाँसुरी को बजाओगे, मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी।"

तब वह घांसी युवक बाँसुरी लेकर अपने घर चला गया। वह जब-जब बाँसुरी बजाता, उसकी पत्नी उसके पास उपस्थित हो जाती। एक दिन वह बाँसुरी भूल गया। एक दिन वह बाँसुरी सड़क पर गिर गई और दूसरा आदमी उसे लेकर बजाने लगा। इस पर घासी की स्वर्ग की पत्नी उपस्थित होकर देखी कि बाँसुरी एक अनजान आदमी को मिल गई है। वह उससे बाँसुरी लेकर भाग गई और अपने पिता के घर चली गई।

इस बीच उसका पति (घासी युवक) अपने प्रिय (पालतू) सुग्गा को लिया और मामू के पास जाकर अपने दुर्भाग्य की कथा कह सुनाई। मामा के सुझाव पर उसने सुग्गा को सन्देश के साथ अपनी पत्नी के पास भेज दिया। जैसे सिखाया गया था, सुग्गा जाकर उससे (पत्नी से) बोला–"माँ! क्या तूने मेरे पिता को हमेशा के लिए परित्याग कर दिया है?"

वह समझ गई कि यह सुग्गा उसके पति के घर से आया है। इसलिए उसने सुग्गा से एक संवाद भिजवाया और निर्धारित समय पर वह उससे मिलने गई। अब वे पुनः एक दूसरे से मिल गए। अब उन्होंने एक 'कुम्बा' बनाकर साथ रहने और अपना रोटी स्वयं कमाने का उन दोनों ने निश्चय किया।

तब वे एक राजा के शहर के निकट अपने कुम्बा बनाया। घासी युवक ने बेचने के लिए एक लकड़ी का छोटा खाट बनाया। वे उसे बाजार ले गए। जब खरीदार उसका मूल्य पूछे तो उन्होंने कहा–"तुम ले लो और यह खाट अपना मूल्य स्वयं बतायेगा।"

वहाँ का राजा सुना तो उसको उत्सुकता हुई और कहा–"मैं इस खाट से इसका मूल्य सुनना चाहूँगा। इसे मैं ले रहा हूँ।" वह उसे घर ले गया। वह उस पर रात में सोया परन्तु थोड़ी भी नींद नहीं आ सकी। यह जानकर कि राजा अब सो गया है, खाट के एक पैर ने दूसरे पैर से कहा–"अभी राजा सो रहा है। मैं शहर को देखने जा रहा हूँ, कि यह कैसा है।"

तब वह 'पौआ' पावा शहर घूमने चला गया। वहाँ शहर के एक किनारे चार चोरों को राजा के यहाँ से चोरी किये गए चाँदी और सोने के सिक्कों के ढेर को

आपस में बाँटते हुए देखा। उस पौआ ने चारों चोरों पर जबर्दस्त प्रहार किया और चोट खाकर वे मर गए। उस पावा ने शहर से आकर इस घटना की चर्चा की और अन्य तीन पावा भी शहर घूमने के लिए व्यग्र हो गए।

तब दूसरा पावा घूमने गया और देखा कि एक आदमी सड़क किनारे दूसरे की पत्नी को छाती से लगा रहा है। उसने दोनों पर प्रहार किया और वे दोनों वहीं मर गए। लौटकर आने पर उसने आपबीती दूसरे पावों को सुनाई। अब रात समाप्त होने को थी, इसलिए शेष दो पावा अगला रात को शहर घूमने का विचार किए।

राजा रात भर जग रहा था और उसने पावों की कथनी सुनी। जैसे ही सवेरा हुआ, राजा ने अपने सिपाहियों को 'पावों' द्वारा वर्णित घटना की सत्यता का पता लगाने के लिए भेज दिया। दोनों पावों द्वारा कही गई बातें सत्य पाई गई, जैसा कि राजा के आदमियों (सिपाहियों) ने आकर बताया।

तब राजा ने उस अजनबी को बुलवाया जिसने खाट बनाकर बेची थी। वह घासी युवक और उसकी स्वर्ग की पत्नी राजा के पास गए। राजा ने उनसे पूछा– "तुम लोग खाट का क्या मूल्य चाहते हो?" उसने कहा–"क्या खाट ने स्वयं नहीं बता दिया कि उसकी कीमत क्या है?" राजा ने जोर देकर कहा–"तुम्हीं बताओ, तुम कितना लोगे।" तब घासी की पत्नी ने उत्तर दिया–"हम दान रुपया नहीं चाहते हैं। क्या आप यह आदेश दे सकते हैं कि जिस कुम्बा में हम लोग रहते हैं, वह महल बन जाय।"

इसके बाद वह 'कुम्बा' महल में बदल गया और उसमें सिंगबोंगा की बेटी और उसका मानव पति बहुत दिनों तक सुख से रहकर अपना जीवन बिताया।

●

6

भाग्यशाली राजकुमार और राजकुमारी

प्राचीन काल में एक राजा रहता था जिसे सात बेटे थे। उनमें एक लड़का अपने पाठ को याद नहीं करता था। राजा ने उसे एक टट्टू (घोड़ा) देकर कहा–"तुम बिल्कुल बेकार आदमी हो इसलिए तुम्हारी यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है। यह टट्टू लो और मेरा घर छोड़कर जहाँ चाहो, चले जाओ।" राजकुमार उस घोड़े पर सवार हुआ और चल पड़ा।

काफी रास्ता तय करने के बाद उसे भूख लगी। उसके पास खाने का सामान खरीदने का पैसा नहीं था, इसलिए वह एक गाँव में प्रवेश कर घोड़े को गिरवी रखकर एक दोना भात लेना चाहा। वह चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा–"एक दोना भात के बदले कौन यह घोड़ा लेगा?" एक ग्रामवासी ने उसे घोड़ा के बदले एक दोना भात खाने के लिए दिया। राजकुमार ने उससे वचन ले लिया कि जब वह एक दोना भात लौटा देगा तो उसे घोड़ा वापस मिल जायेगा। फिर जब उसे भूख लगी तो वह गाँव में जाकर बोला–"मेरे जूतों के बदले में मुझे एक दोना भात कौन देगा?" एक आदमी उसे जूतों के बदले एक दोना भात देने को राजी हो गया। उसने उससे वचन ले लिया कि एक दोना भात वापस कर देने पर उसे जूते वापस कर देगा।

इसके बाद वह आगे बढ़ता गया और भूख लगने पर वह एक गाँव में जाकर बोला–"मेरी पगड़ी के बदले कोई मुझे एक दोना भात देगा?" तब एक आदमी उसके कपड़ा के बदले एक दोना भात देने के लिए तैयार हो गया। उसने उससे वचन ले लिया कि जब वह एक दोना भात वापस कर देगा तो अपना कपड़ा वापस ले लेगा।

इसी तरह से उसने अपने दोनों पैरों को भी बंधक रखकर दो दोना भर भात लिया और भात वापस कर देने पर पैरों को वापस ले लेने का वचन ले लिया।

इसी प्रकार उसने अपने दोनों हाथ, सिर छोड़कर शरीर को भात के लिए बन्धक रख दिया। अब राजकुमार के पास अपना केवल सिर बच गया। अब

राजकुमार का केवल सिर चलते-चलते एक झरना के नीचे पहुँच गया जहाँ सात राजकुमारियाँ स्नान कर रही थीं। उन्हें देखकर राजकुमार का सिर एक झाड़ी में छिपकर जोर-जोर से विलाप करने लगा—"मुझे पीने के लिए थोड़ा पानी दो। पीने के लिए थोड़ा पानी दे दो।"

इस दर्द-भरे फरियाद को सुनकर बड़ी राजकुमारी छोटी राजकुमारी से बोली—"तुम उस प्यासे को जाकर पानी पिला दो चाहे वह जो कोई भी हो।" तब छोटी राजकुमारी उस झाड़ी के पास गयी और उस रहस्यमय (विचित्र) सिर को पानी पिला दिया। उसने वापस आकर जो कुछ देखा, अपनी बहनों को बता दिया।

घर लौटने पर बड़ी राजकुमारी ने अपने पिता से कहा—"पिताजी, बेबी (छोटी बहन) ने एक अज्ञात कुलशील व्यक्ति को पानी पिलाई है। मेरी प्रार्थना है कि उसे घर में प्रवेश नहीं करने दिया जाय।" इस पर राजा ने उस छोटी राजकुमारी को घर से निकाल दिया। अब क्या करना चाहिए, यह समझ में नहीं आने पर उसने मन में विचार किया—"अब मेरे लिए किसी के पास जाने को नहीं रहा। अब मैं उस विचित्र रहस्यमय सिर के पास चल रही हूँ। यदि वह मुझे अपना लेगा तो मैं उसी के पास रहूँगी।"

वह उस सिर के पास गई और राजकुमार के सिर ने उसे अपने साथी के रूप में खुशी से अपना लिया। वे दोनों निकट के एक गाँव में महतो (ग्राम प्रधान) के घर गए। राजा की पुत्री होने के कारण महतो ने उन्हें अपने सम्मानित अतिथि के रूप में स्वागत किया।

उस सिर ने राजकुमारी से महतो से एक टांगी उधार माँगने को कहा और राजकुमारी ने माँग लिया। तब राजकुमारी उस सिर के अनुरोध पर कुल्हाड़ी के साथ निकटवर्ती जंगल में गई। वहाँ सिर ने उससे अनुरोध किया—"तुम एक चोप का लत्ता काट दो और उससे कुल्हाड़ी को मेरे सिर से बाँध दो।" राजकुमारी ने आज्ञा का पालन किया। सिर कुल्हाड़ी के साथ जंगल में घूमता गया और रास्ते में पड़ने वाले पेड़ कटते गए। इस प्रकार कटते-कटते 24 मील का जंगल साफ हो गया (कट गयी)। तब वे महतो के घर वापस आ गए।

काटे गए पेड़ एक महीने में सूख गए। तब सिर के आदेश पर राजकुमारी ने उन सूखे पेड़ों में आग लगा दी। इस प्रकार पेड़ जलकर राख हो गए जो उस जमीन के लिए खाद बन गए। उसने राजकुमारी से कहा—"किसी के दरवाजे से धान का भूसा एक टोकरी ले आओ।" उसने एक टोकरी धान की भूसी ला दिया। सिर ने महतो से उस जमीन को जोतने और उसे बो देने का अनुरोध किया। महतो ने 24 वर्गमील (बारह वर्ग कोस) के जमीन को जोत कर बो दिया (राजकुमारी द्वारा लायी गई भूसी को)। यद्यपि यह मात्र एक टोकरी भूसी थी, परन्तु

यह उस बड़े क्षेत्र के लिए पर्याप्त सिद्ध हुई। उस जमीन पर प्रचुर मात्रा में चावल (धान) पैदा हुआ। उन लोगों के अनुरोध पर महतो ने उस फसल को कटवा दिया। उस सिर के अनुरोध पर धान को दौनी के लिए दौनी के चबूतरे पर ले आया। महतो दो-चार बंडल धान का (बोझा) मंगवाया था कि स्वतः वह चबूतरा धान से भर गया। सिर के अनुरोध पर महतो ने दौनी के लिए दो-तीन बैलों को लगाया। बैलों के लगते ही अपने आप सभी धान पुआल से अलग हो गया। इसी प्रकार थोड़े प्रयास से ओसवनी और धान का मोरा स्वतः तैयार हो गया और मोरा में धान भर गया।

तब राजकुमारी थोड़ा चावल कूट कर उससे भात बना दी। तब उसने दो दोना भात पैर के लिए, दो हाथ के लिए, एक धड़ के लिए, दो जूता के लिए, एक पगड़ी के लिए तथा एक घोड़ा के लिए तैयार की। सभी दोनों को एक टोकरी में रखकर अपने पति (सिर) के साथ चल पड़ी। क्रमशः धड़, हाथ, पैर, जूता, पगड़ी और घोड़ा राजकुमार को भात लौटा देने पर वापस मिल गया। अब वह सम्पूर्ण शरीर वाला राजकुमार हो गया।

अब राजकुमार और राजकुमारी राजकुमार के पिता के महल के निकट ही एक आवास प्राप्त कर लिया। इस बीच राजकुमार और राजकुमारी के पिता अपनी सारी सम्पत्ति गँवाकर बिल्कुल गरीब हो गए थे। ऐसा इन दोनों को घर से निकाल देने के कारण ही घटित हुआ था। एक दिन राजकुमारी की माँ उसके (राजकुमार के) घर भीख माँगने आई। वह अपने पुत्र को नहीं पहचान सकी। परन्तु लड़के ने उसे पहचान लिया और उससे पूछा–"तुम कौन हो? तुम्हारे कितने लड़के हैं, आँखें कहाँ गई?"

उसने उत्तर दिया–"हमारे सात पुत्र थे। हमने छोटे को घर से निकाल दिया। हमलोग अपनी सारी सम्पत्ति गँवा दिए और अब भीख माँग रहे हैं। उसने उस बुढ़िया को खाने के लिए भात और वस्त्र भी दिया। उसने उससे (माँ से) कहा कि तुम अपने उन लड़कों को भी ले आओ ताकि उन्हें योग्य पाए जाने पर मजदूर के रूप में काम पर लगाया जा सके। उसने पुनः कहा–"उस बूढ़े आदमी (राजा) को भी लेती आओ।

बूढ़ी प्रसन्नतापूर्वक (खुश होकर) उनके पास गई और उन्हें अपने साथ चलने को कहा। वे पूछे–"तुम हमलोगों को कहाँ ले जा रही हो?" उसने कहा–"एक दयालु राजकुमार इस गाँव के निकट रहता है। उसने मुझे कपड़ा और खाना दिया है। वह तुमलोगों को काम दे सकता है। वे खुशी से उसके साथ चल दिए।

जब वे राजकुमार के समक्ष आए तो राजकुमार ने बूढ़े से पूछा–"तुम अपने छोटे लड़के को घर से क्यों निकाल दिए थे?" उसने कहा–"वह काम नहीं करता

था। इसीलिए उसे निकाल दिया था।'' राजकुमारी ने उन्हें सम्पुष्ट भोजन कराया। राजकुमार ने अपने पिता से कहा–''मैं ही घर से निकाला हुआ तुम्हारा बेटा हूँ। तुम्हें यह खाना कैसा लगा?'' पिता की आँखों से आँसू बहने लगे और वह उसे छाती से लगा लिया और बोला–''अन्ततः मैं अपने खोए हुए प्यारे बेटे को पा लिया। वह अपने साथ हमारा 'हुरू-चलती' (सौभाग्य या लक्ष्मी) लेते गया था।

तब राजकुमार और उसकी पत्नी अपने माँ-बाप एवं भाईयों के साथ महतो के गाँव गए और सुखपूर्वक राजा की तरह रहने लगे।

इसके बाद राजकुमारी की बहनें भी इतनी गरीबी में पड़ गई कि एक दिन वे संइला चावल माँगने आ गई। राजकुमारी उन्हें पहचान गई और बोली–''तब तुमलोगों ने आरोप लगाया था कि बेबी ने विजातीय को पानी दी है और घर से (जात से) निकलवा दिया। अब तुम लोग उसी से किस प्रकार उधार चावल माँगने आ गई। इस पर उसकी बहनें चली गई। उसके बाद राजकुमार एवं राजकुमारी उस क्षेत्र में राजा-रानी की तरह रहने लगे।

●

7

दलेल सिंह और मकुन्द सिंह

एक वृद्ध बिरहोर दम्पति को दो पुत्र थे जिनका नाम दलेल सिंह और मकुन्द सिंह था। जब टंडा (गाँव) के सभी काम में व्यस्त रहते, दलेल सिंह और मकुन्द सिंह इधर-उधर मटरगश्ती करते रहते। एक दिन वृद्ध दम्पति जंगल में रस्सी बुनने के लिए 'चोप' लाने चले गए। उन्हें लामाजुरू या गूंगा झाड़ी नामक पेड़ मिला जो फलों से लदा हुआ था जिसे (फलको) चिहोर कहते हैं। बूढ़ी फलों को तोड़कर जमा करने लगी और बूढ़ा चोप इकट्ठा करने लगा।

बूढ़ी जब काफी फल इकट्ठा कर ली तो एक फल को फाड़कर देखी तो उसमें चाँदी का सिक्का भरा हुआ पाया। दोनों पति-पत्नी ने फलों को घर ले जाने के लिए चोप का थैला बनाया। बड़ा झोला, जिसे 'पोटोम' कहते हैं। बहँगी पर बूढ़ा ले चला और छोटे झोला (दिपिल) को सिर पर रखकर बुढ़िया ले चली। जब उनके काहिल लड़कों ने 'चिंहोर' को फाड़कर देखा और उसने इतना चाँदी भरा पाया तो बहुत खुश हुए। इतना चाँदी देखकर वे अपना काहिलपन छोड़कर राजा बनने के विचार से अपने राज्य की सीमा निर्धारित करने के लिए मजदूरों की फौज लेकर चल पड़े। वे तमाड़ परगना के मोसोंगा गाँव में आकर रुक गए और वहाँ कुछ चोप गाड़ दिया जो बिरहोर राज का प्रतीक था।

इसी बीच सिंग राजा (सिंहभूम का राजा) ने छोटानागपुर के राजा पर चढ़ाई कर दिया और छोटानागपुर का राज्य अपनी राजधानी से भाग कर जोन्हा से चार मील दूर पैना पहाड़ के निकट कटकिन गढ़ में छिपे हुए थे। जब छोटानागपुर के राजा ने सुना कि दलेल सिंह और मकुन्द सिंह उनसे भी बड़ा राज्य स्थापित करना चाहते हैं तो वे दोनों को बुला भेजे। जब वे दोनों कटकिन गढ़ पहुँचे तो मालूम हुआ कि राजा हुन्डरू झरना में स्नान करने गए हैं। दोनों भाई वहीं चले गए। राजा ने उन्हें देखकर उनका परिचय पूछा। उनका नाम उनसे सुनकर राजा ने उनसे कहा, "क्या आपलोगों ने अपने राज्य की सीमा निर्धारित कर ली है।" उन दोनों ने "हाँ महाराज" कहकर जवाब दिया। तब राजा ने उनसे कहा, "तब आपलोग

जाकर देख आएँ कि सिंह राजा मेरे किला में राजधानी में है या चला गया। यदि वह वहाँ मिल जाय तो उसे कत्ल कर दें और यदि चला गया हो तो हमें सूचित कर दें। इसके बाद जो राज्य सीमा क्षेत्र आप लोगों ने निर्धारित किया है, वह आपका हो जाएगा।'' वे दोनों छोटानागपुर राजा की राजधानी में गए और पाये कि सिंग राजा अपने राज्य में जा चुका है। वे दोनों दलेल सिंह और मकुन्द सिंह कटकिन गढ़ आए और राजा को सूचित किया कि दुश्मन जा चुका है।

इसके बाद राजा उन दोनों के साथ अपनी राजधानी लौट गया। कुछ दिनों तक दोनों बिरहोर भाई राजमहल में रहें और तब राजा से पूछा कि वे अपना वचन कब पूरा कर रहे हैं और वचन के अनुसार उन्हें राज्य सौंप रहे हैं। राजा ने अपने मन्त्रियों से विचार-विमर्श कर तय किया कि जो सबसे अधिक कठिन और झंझट वाला क्षेत्र है, उसे उन्हें दिया जाय। जब वे उसे नियन्त्रित करते हुए जीवित बच जाते हैं तो वे वहाँ के शासक हो जायेंगे। तब उन्होंने उन दोनों को रामगढ़ राजा द्वारा अधिकार किए गए क्षेत्र को सौंप दिया। जब वे रामगढ़ आए तो वहाँ का राजा स्नान करने गया था। वे दोनों रास्ता में ही इन्तजार करने लगे। जब राजा वापस लौट रहा था तो फरसा से उसकी गर्दन काट दिया और उसके राज्य पर अधिकार जमा लिया। रामगढ़ में जो खंडहर दिखाई पड़ता है, वही इनकी (बिरहोर राजा की) राजधानी और राजमहल था। इसके बाद दलेल सिंह और मकुन्द सिंह ने चेनगढ़ा, करनपुरा, गोला तथा अठारह राज्य राजाओं के साथ युद्ध किया और पूरे क्षेत्र पर राज्य किया। रामगढ़ के वर्तमान राजा (पूर्ववर्ती राजागण) बिरहोर राजा दलेल सिंह और मकुन्द सिंह के वंशज माने जाते हैं।

●

8

राजकुमार और उसके कृतघ्न भाई

एक राजा को सात पुत्र थे। उसके पड़ोस में एक अन्य राजा को सात पुत्रियाँ थीं। इस प्रकार ऐसा प्रबन्ध किया गया कि सातों राजकुमारों का विवाह पड़ोस की सात राजकुमारियों के साथ कर दी जाय। सात राजकुमारों को उनके वधुओं के घर ले जाने के लिए सात डोलियाँ मंगाई गई। बड़ा राजकुमार ने कहा कि वह खुद नहीं जायेगा और अपने बदले अपना तलवार और ढाल भेज देगा।

तदनुसार उनका ढाल-तलवार उसकी पालकी में रख दिया गया और शेष राजकुमार अपनी पालकी में बैठ गए। जाते समय बड़े राजकुमार ने छोटे भाइयों को चेतावनी देते हुए कहा कि तुम लोग संक्षिप्त मार्ग से न जाकर लम्बी दूरी वाले रास्ते से जाओगे। कहा कि उस रास्ते में एक भयंकर राक्षस रहता है। तदनुसार बारात लम्बा रास्ते से ही गई।

जब पालकी वधुओं के घर के पास पहुँची तब बड़ी राजकुमारी ने देखा कि उसकी पालकी खाली है तो रो-रोकर गाने लगी—

"ए माय ए बाबा, मोर सामी ना लागे,
छः पालकी में दुहला बइसल हे,
मोर पालकी में मोर दुल्हा नाहीं,
ढाल-तलवार राखल हे।"

तब शादी का रस्म पूरा किया गया। बड़ी राजकुमारी की शादी ढाल-तलवार से तथा अन्य छः की शादी राजकुमारों के साथ सम्पन्न कर ली गयी। जब बारात नई दुलहनों को लेकर घर वापस आ रही थी तो राजकुमारों ने संक्षिप्त मार्ग (नजदीक का रास्ता) से जाना तय किया। उन्होंने विचार किया—"हमलोगों के पास इतना बड़ा लश्कर है। भला राक्षस हमारा क्या बिगाड़ लेंगे।"

तब वे राक्षसों के रास्ते से गए और राक्षस उन सभी को खा गए। वे उस बारात के साथ-साथ पालकी आदि को भी निगल गए। जब बहुत समय बीत गया और बारात पार्टी नहीं लौटी तो राजकुमार को यह शक हुआ कि अवश्य ही उन

लोगों ने छोटा रास्ता अपनाया और राक्षस उन्हें खा गए।

इसके बाद राजकुमार ने कुछ साधारण मटर एवं कुछ लोहे का मटर लिया और राक्षसों की तरफ चल पड़ा। जैसे ही राजकुमार को राक्षसों ने देखा, वे बोले– ''देखो, एक नया शिकार भी आ गया।'' राजकुमार ने उनसे कहा–''रुको, यहाँ कुछ मटर लाया हूँ। इनमें से कुछ तुम खाओ और कुछ मैं खा रहा हूँ। पहले इन्हें तुम अपने दाँतों से पीस दो, फिर मुझे खा लोगे। यदि तुम इन्हें दाँत से नहीं पीस सकोगे और यदि मैं ऐसा कर लूँगा तो मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।''

राक्षसों ने लोहे के मटर को दाँत से कुचलने का प्रयास किया पर वे असफल रहे। परन्तु राजकुमार ने असली मटर को दाँतों से चबाकर खा गया। तब राजकुमार राक्षसों को तलवार से काट डाला और उनके पेट को चीर डाला। तब राक्षसों द्वारा निगली गई पूरी बारात पार्टी ज्यों का त्यों उनके पेट से बाहर निकल गई। सभी राजकुमार, उनके वधुएँ और ढाल-तलवार, डोली के साथ बाहर आ गए।

छः राजकुमारों ने आपस में विचार-विमर्श किया और इस बात पर सहमत हुए कि–''हमारे बड़े भाई ने राक्षसों को काट डाला है। यह यदि जिन्दा रहेगा तो हमलोगों को भी एक दिन मार डालेगा। इसलिए उसे मार देना चाहिए।''

इस पर एक भाई ने उनकी रक्षा करने वाले राजकुमार के शरीर में भाला भोंककर गम्भीर रूप से घायल कर दिया और उसे छोड़कर बारात पार्टी आगे रवाना हो गई। अब बड़ी राजकुमारी अपने पिता के घर लौट आई और अन्य छः अपने पतियों के साथ चली गई।

जब राजकुमार घायल होकर व्यथा से कराह रहा था तब महादेव और पार्वती यह देखने के लिए घूम रहे थे कि पृथ्वी पर क्या स्थिति है। उस घायल और कराहते राजकुमार पर पार्वती जी की नजर पड़ी। उन्होंने महादेव से उसे चलकर देखने का आग्रह किया। तब वे दोनों घायल राजकुमार के पास गए और उसके घायल होने का कारण पूछा। उसने सारी घटना कह सुनाई। महादेव ने उससे कहा, ''देखो, आकाश में कितने तारे निकल आए हैं।'' जब वह ऊपर देखने लगा तो उन्होंने उसकी आँखों में मिर्चों की बुकनी डाल दी। जब वह अपनी आँखें मलने लगा तभी महादेव ने उसके जख्म पर अमृत (जीवनदायिनी रस) की कुछ बूँदें डाल दी। उन बूँदों के पड़ते ही उसके घाव अच्छे हो गए और वह स्वस्थ होकर खड़ा हो गया।

तब उसने अपने मन में विचार किया–''मैंने अपने भाइयों के प्राण की रक्षा की और उन लोगों ने बदले में मुझे मार दिया। मुझे अब घर वापस नहीं जाना चाहिए।''

तब वह छद्म वेष में उस राजा के घर गया जहाँ की राजकुमारी से उसकी

शादी हुई थी। वहाँ जाकर वह 'धांगड़' (मजदूर) का काम करने लगा।

एक शाम को जब वह अपने काम को खत्म कर वापस आया तो राजमहल के कुछ लड़कों ने उससे एक कथा कहने को जोर देने लगे। तब उसने अपने जीवन की ही कहानी कहने लगा जिसमें बारात से लेकर धांगड़ बनने की घटना शामिल थी। बड़ी राजकुमारी उस कहानी को सुन रही थी और वह समझ गई कि यह 'धांगड़' युवक अन्य कोई नहीं बल्कि उसका पति ही है। इसके बाद दोनों पति-पत्नी एक हो गए और सुखपूर्वक अपने घर में दाम्पत्य जीवन बिताने लगे।

●

(झ) परहिया लोककथाएँ

1

परहिया की उत्पत्ति कथा

झारखण्ड प्रदेश में अन्य जनजातियों की तरह ही परहिया जनजाति की भी उत्पत्ति एवं गोत्र की सही जानकारी नहीं है। उत्पत्ति के सम्बन्ध में लोकोक्ति है कि शिव-पार्वती किसी समय जंगल में घूमने गये थे और घूमते-घूमते किसी स्थान पर बैठ गये उसके बाद शिव जी की आत्मा से कौआ निकला। एक कौआ उड़कर अलग चला गया जिससे परहिया जनजाति की उत्पत्ति हुई। दूसरा कौआ पार्वती जी की गोद (स्थानीय भाषा में कोरा) में जाकर बैठ गया जिससे कोरवा जनजाति की उत्पत्ति हुई। अतः कोरवा एवं परहिया जनजाति शिव पार्वती की पूजा-अर्चना करते हैं। परहिया जनजाति को अपने गोत्र की जानकारी नहीं है इसलिए शादी-विवाह या किसी विशेष अवसर पर गोत्र को महत्त्व नहीं दिया जाता है।

एक समय भ्रमणशील जीवन व्यतीत करने वाली परहिया जनजाति धीरे-धीरे व्यवस्थित जीवन जीने की आदी हो गयी। परिणामतः खास गाँव या स्थान पर यह जनजाति लम्बे समय से निवास करती आ रही है, क्योंकि तत्कालीन समय में गाँवों के आस-पास जंगलों से उन्हें जीवन यापन के लिए आवश्यक चीजें उपलब्ध हो जाती थीं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर परहिया जनजाति के पूर्वजों ने वर्तमान गाँवों को अपना निवास स्थान बनाया होगा। डी.एच.जी. सुन्दर (सन्डर) के अनुसार 'परहिया जाति की मान्यता है कि वे आरम्भ से ही पलामू में निवास करते आये हैं। इनकी अपनी परम्परा और कथन के मुताबिक यह लोग वास्तव में जिले के महाराजाओं के पुजारी या पुरोहित थे' इस तथ्य से यह संकेत मिलता है कि परहिया जनजाति के पूर्वजों को यहाँ के महाराजाओं का संरक्षण प्राप्त था और इन लोगों ने इसलिए यहाँ अपना निवास स्थान बनाया, क्योंकि ये उन महाराजाओं के पुरोहित थे।

●

2

तुलवा की माय

(परहिया जीवन पर आधारित सत्य कथा)

पलामू के सुदूर पहाड़ी गाँव डोरांग (बालूमाथ प्रखंड) में परहिया टोला के कुछ व्यक्ति प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर रहते थे। इसी टोला में तुलवा की माँ रहती थी जो काफी साहसी महिला थी। उसके बेटे पर एक दिन अचानक शेर हमला कर दिया था।

तुलवा की माय लगभग दो सौ गज की दूरी पर अपनी झोंपड़ी के बाहर सखुआ के पत्ते की बीड़ी पी रही थी। उसे अपने पुत्र का आर्तनाद सुनाई पड़ा। वह चट्टान पर उपस्थित दृश्य को देखकर सन्न रह गयी। परंतु दूसरे ही क्षण वह बिजली की तरह झोपड़ी से तुलवा के बाप की लोहा मढ़ी लाठी लेकर बेतहाशा दौड़कर बेखौफ उस चट्टान पर पहुँच गयी, जहाँ बाघ तुलवा को दबोचे हुए था। वह बाघ के सिर पर लाठी से ताबड़तोड़ प्रहार करती जा रही थी। वह सहायता के लिए लोगों को चिल्लाकर बुला भी रही थी। कलुआ (कुत्ता) भी अपने दोस्त को छुड़ाने के लिए बाघ पर बार-बार झपट रहा था। तुलवा अपनी माँ का एकमात्र बेटा था, जिसे बाघ से छुड़ाने के लिए रणचंडी बनी हुई थी। अब तक काफी लोग जुट गये थे और बाघ पर चारों तरफ से हमला बोल दिये थे। बाघ का सिर भी लहूलुहान हो गया था। अपने को घिरा देखकर बाघ एक बार जोरों से गरजा और एक लम्बी छलांग लगाकर जंगल में गायब हो गया।

तुलवा की गर्दन, पीठ और कन्धा लहूलुहान हो गया। खून की धार से वह नहा गया था। उसकी माँ उसे गोद में उठाकर झोपड़ी में ले गयी। उसके जख्मों को साफ कर खून रोकने के लिए कुछ जड़ी-बूटी पीसकर चढ़ाई जा रही थी। दर्द से तुलवा 'माय रे....बाप रे....' चिल्ला रहा था। कई जगहों पर घाव काफी गहरे थे।

तभी एक गोरखिया दौड़ता हुआ आया और सूचित किया कि नीचे घाटी में तुलवा के मामा को शेर खांव पकड़ लिया है और उसे छुड़ाने के लिए बहुत से गोरखिया शेर को घेरे हुए हैं।

यह खबर सुनते ही तुलवा की माय अपनी लाठी लिए उस गोरखिया के साथ घाटी की ओर दौड़ पड़ी। लेकिन उसके पहुँचने के पहले ही गोरखियों की मार से घायल होकर बाघ तुलवा के मामा को गंभीर रूप से घायल कर भाग चुका था। तुलवा के मामा का लहूलुहान शरीर अचेत पड़ा हुआ था और उसका बलुआ उससे कुछ दूर पर पड़ा था। बाघ ने उसका गला फोड़ दिया था। लोग उसे टाँगकर उसकी झोपड़ी में लाये और जड़ी-बूटी लगाकर कपड़े से उसके जख्म को बाँध दिया गया।

वह बेहोशी में ही कराह रहा था।

उसे खाट की खटोली बनाकर लोग सड़क तक ले आये और वहाँ से उसे बालूमाथ अस्पताल ले गये। परंतु वहाँ उसे डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। शायद बालूमाथ लाने के रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया था।

तुलवा की माय छाती पीट-पीटकर रो रही थी। वह अपने बहादुर भाई की वीरता का बखान भी करती जा रही थी कि वह बाघ को चुनौती दिया करता था और बाघ उसके डर से डहर (रास्ता) छोड़ देता था। पर आज कैसे तो वह उस बाघ से हार गया था।

दूसरे दिन सुबह तुलवा की मरहम पट्टी कराकर उसके मामा का मृत शरीर लेकर लोग वापस आ गये थे। अब तुलवा के मामा के अन्तिम संस्कार में लोग लग गये थे। तुलवा का चाचा लंगड़ा परहिया तुलवा की माँ को ढाढ़स दिला रहा था पर वह लगातार रोती ही जा रही थी। आज उसे अपने एकमात्र छोटे भाई की मौत का गहरा सदमा लगा था। तुलवा की झोपड़ी में उसके मामा के स्वागत के लिए बनाया गया मकई का भात और तितली का साग पड़े-पड़े बासी हो चुका था।

उसकी यह रोमांचक सत्यकथा सुनकर ऐसा लगा था जैसे बहुत पहले से डोरांग की घाटी और पहाड़ी पर परहिया और बाघ दोनों एक दूसरे के अच्छे पड़ोसी थे। पहाड़ी के एक ओर परहिया रहा करते थे तो दूसरी ओर की गुफाओं में बाघ अपने परिवार के साथ रहते थे। कभी किसी ने एक दूसरे पर हमला नहीं किया था। यह पहली घटना थी। तुलवा इसलिए बच गया कि उसके गले में सुरक्षा कवच के रूप में 'बघनखा' (बाघ का नाखून) था। बाघ का यह हमला उसके लिए बड़ी घटना के साथ-साथ एक अशुभ संकेत था।

इस बार तो वह अपने भाई को खोकर भी अपने इकलौते बेटे को बाघ के मुँह से छुड़ा लायी थी। पर भविष्य के लिए वह काफी सशंकित हो गयी थी। यही कारण था कि वह डोरांग को छोड़कर पकरी जैसे निरापद जगह में बसने चली आयी थी।

तुलवा की माय जब उस रोमांचकारी सत्यकथा को सुना रही थी तो बूढ़ा हो गया कलुआ भी वहीं चुपचाप बैठा था, मानो उस रोमांचकारी घटना का एकमात्र यही चश्मदीद गवाह हो।

●

3

एतो बड़ो बाघ

(परहिया गाँव पकरी चेताग की घटना)

काफी वर्षों पहले पलामू जिला का बेतला क्षेत्र रॉयल बंगाल टाइगर अथवा बड़े बाघों का आदिकाल से अभयारण्य रहा था। परन्तु इसके अलावा अन्य क्षेत्रों में भी इस नस्ल के बाघ पाये जाते थे। उस कालावधि में शिकार पर पाबन्दी नहीं थी और शिकारी कभी-कभी उनका शिकार भी शौकिया किया करते थे। वर्तमाल लातेहार जिला का बालूमाथ प्रखंड भी सघन वनों से आच्छादित था और प्रखंड मुख्यालय के आसपास भी बाघों का आना-जाना लगा रहता था।

प्रखंड मुख्यालय से कुछ दूरी पर चेताग की पहाड़ी और उसके आसपास के क्षेत्र में भी बाघ रहा करते थे। चेताग के जमींदार लाल साहब शिकार के बहुत शौकीन थे और हाकिम-हुक्काम को शिकार के लिए आमन्त्रित किया करते थे। लातेहार के एक अनुमंडलाधिकारी को भी शिकार का शौक था और सांभर, हिरण, चीता आदि के वे शिकार कर चुके थे। उनकी तमन्ना बाघ का शिकार करने की अभी पूरी नहीं हुई थी। अतः उन्होंने लाल साहब से बाघ के शिकार की व्यवस्था करने के लिए सन्देश भिजवाया था। पदाधिकारी महोदय सपत्नीक बालूमाथ पधारे और काफी उत्साह से शिकार की तैयारी में लग गए। शिकार दिन में ही 'हकुआ' कराकर मचान बाँधकर सम्पन्न करने का कार्यक्रम बनाया गया। पहाड़ी की तलहटी में एक नाले के पास बरगद के पेड़ के ऊपर मचान बनाया गया और पदाधिकारी, लाल साहब और एक अन्य शिकारी के साथ मचान पर बैठ गए। लगभग पचास ग्रामवासी हरबे-हथियार के साथ 'हकुआ' द्वारा जानवरों को नाले की ओर खदेड़ना शुरू किए। कई सांभर, कोटरा, जंगली सूअर आदि नाले के पास होकर भागते गए। परन्तु शिकार का लक्ष्य बाघ था। इसलिए इन जानवरों पर किसी ने गोली नहीं चलाई।

हकुआ करनेवाले जब पहाड़ी के निकट होकर आगे बढ़े तो एक विशालकाय बाघ मचान वाले बरगद के पेड़ की ओर छलाँग लगाता हुआ दौड़ा। जब उसकी

नजर मचान पर बैठे लोगों पर पड़ी तो उसने जोरों की गर्जना की। उसका चिंघाड़ सुनते ही पदाधिकारी महोदय थर्र-थर्र काँपने लगे और उनका राइफल उनके हाथ से छूट गया। इस बीच बाघ छलाँग लगाता हुआ आँखों से ओझल हो गया था। लाल साहब को भी गोली चलाने का मौका नहीं मिल पाया। पदाधिकारी पसीने से तर-बतर थे, जबकि फरवरी माह में अभी भी सर्द हवा चल रही थी। थोड़ी देर बाद जब वे कुछ सामान्य स्थिति में आए तो लाल साहब ने कहा, ''सर, आपने एक अच्छा अवसर खो दिया। बाघ आपके सामने से गुजर गया और आप मार नहीं सके। बाघ बिल्कुल फायरिंग रेंज में था।''

पदाधिकारी का मुँह सूख रहा था। वाटर बोतल से गला तर करने के बाद बोले, ''की बोलबो लाल साहेब, एतो बड़ो बाघ कखनो देखी नाई। एटा भीषण बाघ छीलो।''

सभी लोग मचान से नीचे उतर आए और पदाधिकारी महोदय को लेकर डाक बंगला गए। उनके पहुँचते ही पत्नी ने सवाल पूछा, ''की गो, बाघ टा मारा गेलो?'' पदाधिकारी ने कहा, ''एक टुकु थाको, एखुन बाथरूम थीके आसछी''। इस प्रकार जंगल के राजा के शिकार की तमन्ना उनके लिए एक दुःस्वप्न साबित होकर रह गई थी।

●

4

एक रोमांचक युद्ध

(परहिया गाँव डाटम (हेरहंज) की घटना)

उस वर्ष पलामू जिले में पशु गणना का कार्य चल रहा था और बालूमाथ प्रखंड में मुझे भी उसका पर्यवेक्षण करने का कार्य सौंपा गया था। पशु गणना के पर्यवेक्षण में एक दिन बालूमाथ प्रखंड के डोरांग गाँव के लिए हेरहंज से सुबह नाश्ते के बाद मैंने स्थानीय जनसेवक, ग्रामसेवक तथा कल्याण सेवक के साथ प्रस्थान किया और पैदल मार्ग से पहाड़ी पगडंडी और घने जंगल के बीच से गुजरने वाली तंग घाटी के रास्ते हम सभी डोरांग गाँव पहुँचे। वह गाँव भी एक पहाड़ी पर बसा हुआ था जो चारों ओर से सघन वनों से घिरा हुआ था। गाँव के उत्तरी भाग में डोरांग नदी प्रवाहित होती थी।

डोरांग पहुँचने पर पूरा गाँव खाली था और कुछ महिलाएँ और बच्चे ही दिखाई पड़ रहे थे। पूछने पर पता चला कि गाँव से कुछ दूरी पर वहाँ के लोग एक वृहत भोज की तैयारी में लगे हुए थे। उत्सुकतावश हमलोग भी उसी ओर लोगों से मिलने के लिए चल दिये। वहाँ पहुँचने पर वहाँ का दृश्य देखकर मन आश्चर्य से भर गया। वहाँ एक विशालकाय जंगली सूअर को काटकर मांस का ढेर लगाया गया था और अब उसे आपस में बाँटने का कार्य शुरू होनेवाला था।

वहाँ के एक परिचित ग्रामीण को बुलाकर पूछने पर एक बड़ी ही रोमांचक घटना की जानकारी मिली। मालूम हुआ कि जिस घाटी से होकर हमलोग आये थे, उसी दिन सुबह लगभग तीन बजे एक बाघ अपने शिकार की खोज में पहाड़ी से नीचे उतरा था और घाटी में एक विशाल जंगली सूअर (वाराह) से उसकी भिड़ंत हो गयी थी। बाघ की दहाड़ और जंगली सूअर की गुर्राहट की आवाज से पूरा गाँव जाग गया था। दोनों का मल्लयुद्ध लगभग आधे घंटा तक चलता रहा। उसके बाद सबकुछ शांत हो गया था।

सूर्य निकलते ही गाँव के लोग टांगी, बलुआ, लाठी आदि के साथ घाटी में उतरे थे। कुछ दूर जाने पर एक झाड़ी में जंगली सूअर का क्षत-विक्षत शरीर पड़ा

हुआ था और वहाँ लगभग सौ वर्गगज के क्षेत्र का झाड़-झंखाड़ दोनों के युद्ध से तहस-नहस हो गया था। गाँव के लोग दूर-दूर तक बाघ की खोज में गये थे। कुछ दूर तक घायल बाघ के खून के छींटे मिले, परन्तु घायल बाघ का कोई अता-पता नहीं चला। लोग बाँस-बल्ली की मदद से लगभग चार मन के उस वाराह (सूअर) को टाँगकर गाँव लाये थे। वह नर सूअर था और मैं उसके दाँत को प्राप्त करने का इच्छुक था। परन्तु उसके दाँतों को किसी व्यक्ति ने पहले ही निकाल लिया था। अब गाँव वाले उसके चर्बीदार मांस के लिए अधिक लालायित थे। हमलोग भी उस रणभूमि को देखना चाहते थे। इसलिए कुछ ग्रामीणों के साथ उस घाटी की ओर चल दिये, जहाँ बाघ और वाराह का मल्लयुद्ध हुआ था। घटनास्थल पर पहुँचने पर वहाँ खून के छींटे और बाघ के रोएँ चारों तरफ काफी दूर तक फैले हुए थे। लगता था कि वाराह के नुकीले और मजबूत दाँतों से बाघ भी बुरी तरह घायल हुआ होगा। वहाँ के तहस-नहस हुए वनस्पतियों को देखने से ही दोनों के मल्लयुद्ध की भयंकरता का अनुमान लगाया जा सकता था। हम सभी पशु गणना के कार्य का पर्यवेक्षण कर दूसरे सड़क मार्ग से हेरहंज वापस आ गये। आज भी बाघ और वाराह का वह रोमांचक मल्लयुद्ध का दृश्य याद आज कर मन रोमांचित हो उठता है।

●

5

फटहा टाँड़ का नागराज

बालूमाथ के चेताग पहाड़ के दोकर परहिया टोला में पिरथा परहिया और बुटन परहिया वर्षों पहले सपरिवार जाकर बस गए थे। चेताग गाँव के लोगों का कहना था कि दोनों भाई दागी (अपराधी) भी हैं और पुलिस के डर से पहाड़ पर जा बसे हैं। इनका मुख्य पेशा पहाड़ पर मिलने वाले बाँस से सूप, दौरी आदि बनाना, इमारती वृक्षों को काटकर बेचना तथा इससे ओखल-मूसल बनाना, जंगल से गेठी-कन्दा, जड़ी-बूटी निकालना और बकरी-मुर्गी आदि की चोरी करना था। उनका सबसे छोटा भाई चोरी के जुर्म में अभी भी खेल में था। चेताग के पाठक जी का कहना था कि भूमिहीन होने के कारण पेट भरने के लिए ही परहिया चोरी-चमारी करते हैं अथवा 'वुमुक्षितं किम् न करोति पापम्' मतलब पापी पेट के लिए ही परहिया चोरी करने को विवश हैं।

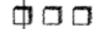
वर्ष 1960-61 में भारत सरकार (कल्याण विभाग) द्वारा इस प्रकार के अपराधी या अपराध छोड़ चुके जनजातियों के लिए पुनर्वास योजना की स्वीकृति मिली थी जिसके तहत बालूमाथ के पकरी तथा ओल्हे पाठ गाँवों में क्रमशः 11 और 12 परहिया परिवारों को बसाना था जहाँ उन्हें आवास गृह, कृषि भूमि, भरण-पोषण, भत्ता, कृषि उपकरण आदि अनुदान के रूप में देना था।

इसी पुनर्वास योजना के तहत पिरथा परहिया और बुटन परहिया का चयन ओल्हेपाट में बसाने के लिए किया गया था। अन्य परहिया लाभुकों के साथ इन्हें दो-दो एकड़ जमीन ओल्हेपाट में आवंटित किया गया था, जहाँ उनको उसे कृषि भूमि के रूप में विकसित करना था। बुटन परहिया को आवंटित जमीन का कुछ भाग 'फटहा टाँड़' के नाम से कुख्यात था, जिसके पास जाने से भी लोग डरते थे। इस भूमि के सन्दर्भ में बुटन परहिया ने जो प्रचलित लोक-कथा सुनाई वह काफी रोचक थी। उसके अनुसार—''पुराने जमाने में चेताग में एक अत्याचारी राजा (लाल साहेब) रहता था जो अपनी प्रजा पर बहुत अत्याचार करता था। एक बार उस क्षेत्र में आषाढ़ महीने के बाद भी वर्षा नहीं हुई और उस क्षेत्र में सूखा पड़ गया।

इसी बीच एक साधू घूमते-घूमते लाल साहब के पास गया और उनसे कहा–"हे राजा! तुमसे इन्दर देवता नाराज हैं, इसलिए तुम्हारे राज में वर्षा नहीं हो रही है। यदि तुम स्व्यं हल-बैल लेकर खेत जोतने का काम करोगे तो इन्दर भगवान खुश होकर जरूर वर्षा कर देंगे।"

उस साधू की बात मान कर राजा दूसरे दिन सूर्योदय के पहले स्नान कर अपने बनिहार के साथ हल-बैल लेकर उस खेत में गए और हल चलाना शुरू किये। अभी दो-तीन बार ही हल से जोतई हुई होगी कि इस टाँड़ खेत में एक भयंकर आवाज के साथ धरती फट गई और अत्याचारी राजा हल-बैल समेत उसमें समा गया। उसके बाद धरती का वह भाग बन्द हो गया। इस घटना के बाद से भयभीत होकर कोई भी इस फटहा टाँड़ के पास नहीं जाता था। वहाँ गाँव का पुराना बूढ़ा पाहन कहता था–'बरसात के शुरू होने पर इस फटहा टाँड़ से कई बड़े भयानक नागराज बाहर आते हैं। लोग यह मानते हैं कि वह अत्याचारी राजा ही नाग बनकर बाहर आता है। नागपूजा में लोग उसे मिट्‌टी के बर्तन में दूध चढ़ाते थे। पर अब लोग उसे भूल गए हैं। अभी भी लोग उस जमीन पर खेती करने से डरते हैं।

इस रोमांचकारी लघुकथा सुनने के बाद बुटन परहिया को दूसरी जमीन आवंटित की गई, जहाँ उसका आवासगृह बना और वह अपराध की दुनिया छोड़कर खेती से जुड़ गया था।



डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा

शैक्षणिक योग्यता—एम.ए. (हिन्दी), पी.एच.डी. (हो भाषा) पत्रकारिता में डिप्लोमा।

आई.सी.डी.एस. में बेसिक प्रशिक्षण तथा उन्मुखीकरण प्रशिक्षण।

सरकारी सेवा—कल्याण विभाग (बिहार-झारखण्ड) में सहायक कल्याण पदाधिकारी/ अनुमण्डल कल्याण पदाधिकारी/ जिला कल्याण पदाधिकारी / परियोजना पदाधिकारी / सहायक निदेशक (जनजातीय कल्याण शोध संस्थान) के पद पर 33 वर्षों तक कार्यरत रहकर सेवा निवृत।

वर्तमान कार्य-कलाप—अध्यापन, लेखन, प्रकाशन, पत्रकारिता, शोध-निर्देशन, परामर्शी कार्य। श्री कृष्ण लोक प्रशासन संस्थान तथा एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, राँची में आमंत्रित व्याख्याता। जे. पी. सामाजिक एवं औद्योगिक अध्ययन संस्थान, राँची में लगभग 2 वर्षों तक निदेशक का कार्य सम्पादन। 'एट ए ग्लांस' न्यूज एण्ड इन्फॉर्मेशन सर्विसेज, लालपुर थाना के निकट, राँची के लिए पटकथा लेखन एवं शोध परामर्श।

शोध कार्य—1. हो लोक कथाओं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, 2. लघु वन पदार्थो के व्यापार में टी.सी.डी.सी. की भूमिका (टी.आर.आई.), 3. जनजातीय क्षेत्र में 'डायन प्रथा' का प्रचलन (राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा प्रायोजित)

पुस्तक लेखन—(1) हो लोक कथा : एक अनुशीलन (2) हो भाषा और साहित्य का इतिहास (3) "खरवार" जनजाति का मोनोग्राफ (जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, रांची द्वारा प्रायोजित) (4) फेतल सिंह खरवार : एक जीवनी (जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, रांची द्वारा प्रायोजित) (5) पतझर और पलाश (त्रिभाषी काव्य संग्रह) (6) हो कोअः कजि जुड़ि कजी को (हो भाषा की कहावतें आदि) (7) लोक जीवन के सांस्कृतिक प्रसंग (जनजातीय प्रथा, परम्परा, संस्कृति, लोक विश्वास आदि विषयक निबंध संग्रह)। (8) 'चौथा चूल्हा' एवं 'आरण्यक' (कहानी संग्रह) (9) संबंधित पत्र-पत्रिकाएं :—आज/प्रभात खबर/हिन्दुस्तान/दैनिक जागरण/ आदिवासी / चौमासा (आदिवासी लोककला अकादमी, भोपाल/तरंग भारती) आदि।

वृतचित्र निर्माण हेतु पटकथा लेखन / शोध निर्देशन :—

(क) नियोन फिल्मस, राँची के लिए :—1. अरण्य धर्मा सौरिया पहाड़िया, 2. अरण्य धर्मा माल पहाड़िया, 3. अरण्य धर्मा बिरहोर, 4. प्रकृति की अराधना : करम का त्योहार, 5. यात्रा के पचास वर्ष। (असुर/ बिरहोर/ कोरवा/ बिरजिया/ परहिया/ सवर/ हिलखड़िया/ सौरिया पहाड़िया/ माल पहाड़िया/ हो)। (कुल 9 एपिसोड) (ख) 'एट ए ग्लांस के लिए विभिन्न विषयों पर विभिन्न विभागों के लिए वृतचित्र का प्रस्ताव / पटकथा लेखन एवं शोध परामर्शी सेवा। (ग) श्रुति विजुअल इन्फॉर्मेशन प्रा. लि., लालपुर, राँची के लिये परामर्शी (वृत चित्र निर्माण/ शोध संबंधी)। (घ) राँची दूरदर्शन केन्द्र / आकाशवाणी के वार्ताकार।

सामाजिक संगठन से सम्बद्धता :—

1. आजीवन सदस्य, भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी, राँची। 2. सचिव, प्रज्ञा शोध एवं अध्ययन केन्द्र, राँची।

3. मुख्य संरक्षक, झारखण्ड राज्य पेंशनर समाज, राँची।

पता—हेसल, पो. हेहल, राँची-834005, मोबाइल 7352139017 09431359190



विकल्प प्रकाशन

दिल्ली-110094

